Resource: बाइबल कोश (टिंडेल)

Aquifer Open Bible Dictionary

This work is an adaptation of Tyndale Open Bible Dictionary © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Bible Dictionary, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

बाइबल कोश (टिंडेल)

य

यकब्सेल, यकमाम, यकम्याह, यकम्याह, यकान, यकुन्याह, यकूतीएल, यकोन्याह, यकोल्याह, यखोल्याह, यजीएल, यतूर, यतूर के लोग, यतेत, यतेरे, यत्तीर, यदायाह, यदिद्याह, यदीएल, यदीएल, यदीदा, यद्दूतून, यद्दई, यद्दू, यन्ना, यन्नेस और यम्ब्रेस, यपलेत, यपलेतियों, यपुन्ने, यबूस, यबूसी, यब्ने (यब्नेल), यब्नेल, यब्बोक, यमीमा, यमूएल, यम्ब्रेस, यम्लेक, यरदन, यरदन के घाट, यरदन पार, यरहमेल, यरहमेलियों, यरिय्याह, यरिय्याह, यरीएल, यरीओत, यरीबै, यरीमोत, यरीहो, यरूएल, यरूब्बाल, यरूब्बेशेत, यरूशलेम, यरूशलेम परिषद (सभा), यरूशा, येरूशाह, यरेमै, यरेमोत, यरोहाम, यर्मूत, यर्हा, यशाना, यशायाह, यशायाह, यशायाह (व्यक्ति), यशीमोन, यशीशै, यशूरून, यशोहायाह, यसरेला, यसीएल, यसीमीएल, यहजयाह, यहजयाह, यहजीएल, यहजेरा, यहत, यहदीएल, यहदो, यहमै, यहलेल, यहलेलियों, यहल्लेलेल, यहस, यहस, यहस, यहस*, यहसेल, यहसेल, यहसेलियों, यहिजकिय्याह, यहिय्याह, यहुदियाह, यहुब्बा, यहुब्बा, यहूकल, यहूद, यहूदा (व्यक्ति), यहूदा (व्यक्ति), यहूदा इस्करियोती, यहूदा के गोत्र का सिंह, यहूदा बरसब्बास, यहूदा मक्काबियस, यहूदा मक्काबी, यहूदा-बाले, यहूदा के बाले, यहूदा, का गोत्र, यहूदिया, यहूदिया, यहूदिया वासी, यहूदियों का प्रवास, यहूदियों का फैलाव, यहूदी, यहूदी, यहूदी साहित्य, बाइबल के अतिरिक्त, यहूदीकरणवादी, यहूदीत (व्यक्ति), यहूश, यहेजकेल, यहेजकेल (व्यक्ति), यहेजकेल की पुस्तक, यहोअद्दा, यहोअद्दान, यहोअद्दिन, यहोआहाज, यहोएली, यहोएलियों, यहोजाबाद, यहोनातान, यहोनादाब, यहोयाकीम, यहोयाकीम, यहोयादा, यहोयारीब, यहोयारीब, यहोराम, यहोवा, यहोवा, यहोवा, यहोवा के संग्राम, पुस्तक, यहोवा-त्सिदकेनु, यहोशापात (व्यक्ति), यहोशापात की तराई, यहोशापात की तराई, यहोशावत, यहोशू (व्यक्ति), यहोशू की पुस्तक, यहोशू, यहोशूह, यहोशेबा, यहोसादाक, यहोसादाक, यहोहानान, याईर, याईरी, याएल, याकान, याकान, याखान, याकानियों का कुआँ, याकीन, याकीन, याकीन और बोअज, याकीनियों, याकीम, याकूब, याकूब का कुआँ, याकूब की सीढ़ी, याके, याकोबा, यागूर, याजक और लेवी, याजकपद, याजन्याह, याजन्याह, याजिय्याह, याजीएल, याजीज, याजेर, याजेर, यातरै, यात्रा, यात्रा का गीत, याथान, यादा, यादा, यादाह, यादोन, यानीम, यानुम, यानै, यानोह, यानोहाह, यापी (व्यक्ति), यापी (स्थान), याफा, याफो, याबाल, याबीन, याबेश (व्यक्ति), याबेश, गिलादी याबेश (स्थान), याबेस (व्यक्ति), याबेस (स्थान), यामनिया, यामीन, यामीनी, यामीनी, यारयोरगीम, यारा, यारीब, यारीम पहाड़, यारेब, यारेश्याह, यारोबाम, याला, यालाम, यालाम, यालोन, यावान (व्यक्ति), यावान (स्थान), याशार की पुस्तक, याशूब, याशूब लेहेम, याशूबी, याशेन, याशोबाम, यासीएल, यासू, यासू, यासोन, याह, याहदै, यिगाल, यिग्दल्याह, यिजलीआ, यिजलीआ, यिज्जियाह, यिज्जियाह, यिज्रह्याह, यिज्रह्याह, यिज्राही, यिज्रेल (व्यक्ति), यिज्रेल (स्थान), यिज्रेल की तराई, यिज्रेल की तराई, यिज्रेली, यितला, यित्रान, यित्मा, यित्रान, यित्राम, यित्रो, यित्रो, यिदला, यिद्लाप, यिद्वाश, यिपदयाह, यिप्तह, यिप्तहेल, यिबनायाह, यिबनायाह, यिबलाम, यिबसाम, यिभार, यिम्ना, यिम्ना, यिम्ना, यिम्नाह, यिम्नियों, यिम्नि, यिम्ला, यिरिय्याह, यिरोन, यिर्पेल, यिर्मयाह, यिर्मयाह (व्यक्ति), यिर्मयाह का पत्र, यिर्मयाह की पुस्तक, यिशपान, यिशबह, यिशबाक, यिशबोबनोब, यिशमरै, यिशमायाह, यिशी, यिशै (व्यक्ति), यिशै की जड़, यिशै की जड़, यिश्मा, यिश्वा, यिश्वा, यिश्वी, यिश्वी, यिश्वी, यिश्वी, यिश्वी, यिश्शियाह, यिश्शियाह, यिश्शिय्याह, यिसहार, यिसहार, यिसहारी, यिसहारी, यिस्का, यिस्पा, यिस्मक्याह, यिस्री, यीएल, यीएल, यीशु, यीशु का कुँवारी से जन्म, यीशु की शिक्षाएँ, यीशु के सात अन्तिम वचन, यीशु बिन सिराख, यीशु मसीह का स्वर्गारोहण, यीशु मसीह की आत्मा, यीशु मसीह की वंशावली, यीशु यूस्तुस, युगांतशास्त्र, युत्ता, युद्ध, युनानवादी, युरेसियन मृग, यूएरगेट्स, यूएल, यूओदिया, यूओदियास, यूकल, यूखारिस्ट, यूतुखुस, यूदीत की पुस्तक, यूनान, यूनानी, यूनानवाद, यूनिकॉर्न, यूनियास, यूनीके, यूपेटर, यूपोलेमस, यूबाल, यूबूलुस, यूमेनीस, यूरकुलीन, यूरकुलीन, यूलिया, यूलियुस, यूश, यूशब-हेसेद, यूस, यूसुफ बरसब्बास, यूस्तुस, यूहदा (व्यक्ति), यूहन्ना, यूहन्ना, यूहन्ना (व्यक्ति), यूहन्ना का प्रकाशन, यूहन्ना के पत्रियाँ, यूहन्ना मरकुस, यूहन्ना रचित सुसमाचार, येतेरी, येपेत, येरह, येरेद, येरेद, येलेक नामक टिड्डी, येशुअ (व्यक्ति), येशुअ (स्थान), येशुअह, येशेर, येसेबाब, येसेर, येहदयाह, येहू, योआब, योआश, योआश, योआह, योआहाज, योएजेर, योएद, योएल (व्यक्ति), योएल की पुस्तक, योएला, योकदाम, योकनाम, योकमाम, योकीम, योकेबेद, योक्तान, योक्तेल, योक्षान, योगबहा, योग्ली, योजाकार, योजाबाद, योजाबाद, योतबाता, योताम, योताम, योत्बावासी, योदाह, योनतेलेखद्दोकीम, योना (व्यक्ति), योना के पुत्र, योना, पुस्तक का, योनातान, योनादाब, योनान, जोनान, योब, योबाब, योम किप्पुर, योयाकीम, योयादा, योयारीब, योरा, योराम, योराह, योरीम, योरेश्याह, योरै, योर्काम, योशबकाशा, योशव्याह, योशा, योशापात, योशिब्याह, योशियाह, योशेब्यश्शेबेत, योसादाक, योसिव्याह, योसेख, योसेस, योहा, योहानान, योहानान बेन जक्काई, यौन, यौनिकता*

यकब्सेल

यकब्सेल

"कबसेल" का एक अन्य नाम, दक्षिणी यहूदा में एक नगर (नहे 11:25)।

देखें यकब्सेल।

यकमाम

हेब्रोन का पुत्र जो लेवी के गोत्र के कहातियों के विभाग से था (1 इति 23:19; 24:23)।

यकम्याह

यकम्याह

1 इतिहास 3:18 में केजेवी वर्तनी के अनुसार यकम्याह जो राजा यहोयाकीन का पुत्र है। *देखें*यकम्याह #2।

यकम्याह

यकम्याह

1. यहूदा के गोत्र से शल्लूम का पुत्र (1 इति 2:41)।

2. राजा यहोयाकीन के पुत्रों में से एक (1 इति 3:18)।

यकान

1 इतिहास 1:42 में एसाव के वंशज याकान की केजेवी वर्तनी। *देखें* याकान।

यकुन्याह

यकुन्याह

मत्ती 1:11–12 में यहूदिया के राजा यहोयाकीन का एक वैकल्पिक रूप।

*देखिए*यहोयाकीन

यकूतीएल

यहूदा के गोत्र से जानोह का पिता (1 इति 4:18)।

यकोन्याह

यकोन्याह

यहूदा के राजा यहोयाकीन का वैकल्पिक नाम, जिसे बाबेल की बँधुआई में ले जाया गया था (1 इति 3:16–17; यिर्म 24:1)। *देखें*यहोयाकीन।

यकोल्याह

यकोल्याह

राजा अजर्याह या उज्जियाह की माता (2 रा 15:2; 2 इति 26:3)।

यखोल्याह

यखोल्याह

2 राजाओं 15:2 में राजा अजर्याह की माता यकोल्याह की केजेवी वर्तनी। *देखें*यकोल्याह।

यजीएल

बिन्यामीन के गोत्र का योद्धा, जिसने राजा शाऊल के खिलाफ अपने संघर्ष में दाऊद का सिकलग में साथ दिया। यजीएल, दाऊद के उन योद्धाओं में से एक था जो दोनों हाथों से तीर चलाने और गोफन चलाने में निपुण था (1 इति 12:3)।

यतूर, यतूर के लोग

इश्माएल के पुत्र और उनके वंशज (उत 25:15; 1 इति 1:31); इस्राएली गोत्र जिन्होंने यरदन के पूर्व में बसने के लिए उनसे युद्ध किया (1 इति 5:19)। इन्हें इतूरैया के लोग भी कहा जाता है, वे नए नियम के समय तक जीवित रहे, और उनके नाम पर गलील के उत्तर-पूर्व में स्थित क्षेत्र इतूरैया का नाम पड़ा (लूका 3:1)। *देखें*इतूरैया, इतुरिया, इतूरैया वासी।

यतेत

एदोम के अधिपति (उत 36:40; 1 इति 1:51)।

यतेरे

यतेरे

1. गिदोन का पहलौठा पुत्र। अपनी युवावस्था के कारण, यतेरे मिद्यानी राजाओं जेबह और सलमुन्ना को मारने से डरता था (न्या 8:20)।
2. एक इश्माएली और सेनापति अमासा का पिता (1 रा 2:5, 32; 1 इति 2:17)। उसके लिए एक और नाम "यित्रो" है (2 शमू 17:25)। *देखें* यित्रो।
3. यादा का पहलौठा पुत्र, जो योनातान का भाई था। येतेर हेस्रोन के वंश से यहूदा का वंशज था। उसने कोई संतान उत्पन्न नहीं करी (1 इति 2:32)।
4. एक यहूदी और एज्रा के चार पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र (1 इति 4:17)।
5. एक आशेरी, जो तीन पुत्रों के पिता है (1 इतिहास 7:38)। वह संभवतः सोपह के पुत्र यित्रान जैसा ही व्यक्ति था (1 इति 7:37)।

यत्तीर

यत्तीर

यहूदा के पहाड़ी देश में स्थित नगर, जिसे लेवियों को दिया गया था (यहो 15:48; 21:14; 1 इति 6:57)। दाऊद ने अमालेकियों पर अपनी विजय से प्राप्त लूट को यत्तीर भेजा (1 शमू 30:27)। इसे आधुनिक खिरबेत 'अत्तीर के साथ पहचाना जाता है, जो हेब्रोन के दक्षिण-पूर्व में 13 मील (21 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है।

यदायाह

1. शिम्री का पुत्र और अल्लोन का पिता। वह शिमोनियों की वंशावली तालिकाओं में सूचीबद्ध है, जिसने हिजकिय्याह के समय में गदोर की तराई में निवास किया था (1 इति 4:37)।

2. हरुमप का पुत्र, जिसने बँधुआई के बाद यरूशलेम की दीवार की मरम्मत में सहायता करी (नहे 3:10)।

3. हारून का वंशज और 24 याजकीय विभागों में से दूसरे का प्रमुख, दाऊद के समय में मंदिर सेवा के लिए नियुक्त किया गया था (1 इति 24:7)। उसके वंशज बँधुआई से लौटे हुओं में सूचीबद्ध हैं (1 इति 9:10; एज्रा 2:36; नहे 7:39)। नीचे सूचीबद्ध व्यक्ति और परिवार संभवतः इस याजकीय वंश का हिस्सा हैं, लेकिन उनके सटीक संबंधों को निर्धारित करना कठिन है।

4. प्रांतीय याजक जिसने बँधुआई के बाद यरूशलेम में पुनर्वास के लिए सहमति दी (नहे 11:10; पुष्टि करें पद 2)।

5. बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ लौटे याजक (नहे 12:6–7)। अगली पीढ़ी में यह एक परिवार का नाम था (पद 21)।

6. बन्धुवों में से एक, जिसे जकर्याह द्वारा यहोशू ("येशुअ") के प्रतीकात्मक राज्याभिषेक के साक्षी के रूप में लिया गया था। वह ऊपर #4 या #5 के समान हो सकते है। वह बँधुआई से लौटकर महायाजक यहोशू के दिनों में मंदिर के लिए उपहार लाया (जक 6:10–14)।

यदिद्याह

इस नाम का अर्थ है "प्रभु [यहोवा] का प्रिय।" परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता नातान से कहा कि वह बतशेबा के द्वारा दाऊद के दूसरे पुत्र सुलैमान को यह नाम उसके जन्म के तुरंत बाद दे (2 शमू 12:24–25)।

यदीएल

दाऊद के समय में मशेलेम्याह का चौथा पुत्र, जो कोरहवंशी और मंदिर का द्वारपाल था (1 इति 26:2)।

यदीएल

1. बिन्यामीन के पुत्र (1 इति 7:6, 10–11), जिनके वंशज योद्धा थे, और दाऊद के समय में उनकी संख्या 17,200 थी। कुछ लोग सुझाव देते हैं कि उनकी पहचान अश्बेल के साथ की जा सकती है, जो बिन्यामीन के पुत्र भी थे (उत 46:21)।

यह भी देखें अश्बेल, अशबेलियों।

2. शिम्री के पुत्र, जो दाऊद के शूरवीर पुरुषों में सूचीबद्ध हैं (1 इति 11:45)।

3. एक व्यक्ति जिसने शाऊल को छोड़कर सिकलग में दाऊद का साथ जुड़ गए (1 इति 12:20)। यह सम्भव है कि यह वही व्यक्ति हो जो ऊपर #2 में उल्लेखित है।

4. लेवीय कुल के कोरह का एक सदस्य, जिन्हें दाऊद के शासनकाल में मन्दिर का द्वारपाल नियुक्त किया गया था (1 इति 26:2)।

यदीदा

यदीदा

अदायाह की बेटी, यहूदा के राजा आमोन की पत्नी और राजा योशिय्याह की माता (2 रा 22:1)।

यदूतून

मरारी के लेवीय परिवार के सदस्य, जो आसाप और हेमान के साथ मिलकर दाऊद के शासनकाल में निवासस्थान में संगीत का संचालन करते थे (1 इति 25:1; 2 इति 5:12; 1 इति 6:44; 15:17 में "एतान" कहा गया)। यदूतून का उल्लेख भजन संहिता 39, 62 और 77 के शीर्षकों में किया गया है। उनके कुछ पुत्रों को वीणा, सारंगी और झाँझ के साथ भविष्यवाणी करने के लिए अलग किया गया था (1 इति 25:1–3), जो स्पष्ट रूप से अपने पिता के उदाहरण का अनुसरण करते थे, जिन्हें "राजा का दर्शी" कहा जाता था (2 इति 35:15)। 1 इतिहास 16:38 और 42 में, उन्हें ओबेदेदोम के पिता के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

यद्दई

यद्दई

नबो के वंशज, जिन्हें एज्रा द्वारा बँधुआई के बाद के युग के दौरान अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:43)।

यद्दू

यद्दू

1. वह अगुआ जिन्होंने बँधुआई के बाद के युग में एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:21)।

2. एल्याशीब के वंशज और नहेम्याह के समकालीन (नहे 12:11, 22)। यद्दू के पिता, योनातान (वचन 11), एलीफैंटाइन पेपीरी में योहानान के रूप में उल्लिखित हैं (वचन 22 भी देखें)।

यन्ना

यीशु के एक पूर्वज जिनका लुका 3:24 में का उल्लेख किया गया है।

देखिए यीशु मसीह की वंशावली

यन्नेस और यम्ब्रेस

फ़िरौन के दो जादूगर, जिन्होंने मूसा का विरोध किया और यह दिखाने का प्रयास किया कि वे चमत्कार करने में मूसा के समान सक्षम थे (निर्ग 7–9)। यहूदी परम्परा में यन्नेस और यम्ब्रेस को (कुछ हद तक असंभव प्रतीत होता है) मिद्यान के भविष्यद्वक्ता बालाम के पुत्र माना गया है, जो गिनती 22–24 के मिद्यानी भविष्यद्वक्ता थे। आश्चर्यजनक रूप से, निर्गमन के अध्यायों में उनके नामों का उल्लेख नहीं किया गया है। बाइबल में इनका एकमात्र संदर्भ नए नियम में मिलता है। प्रेरित पौलुस ने यन्नेस और यम्ब्रेस और अपने समय के सत्य के शत्रु, भ्रष्ट बुद्धि वाले झूठे शिक्षकों के बीच समानता देखी (2 तीमु 3:6–8)।

इन दो नामों के बारे में बहुत अटकलें लगाई गई हैं। ये स्पष्ट रूप से यहूदी हैं, परन्तु उनका सही अर्थ स्पष्ट नहीं है। इन्हें कुमरान दस्तावेजों और बाद में यहूदियों, अन्यजातियों और प्रारम्भिक मसीही साहित्य में संदर्भित किया गया है। विविधताओं में शामिल हैं "योहन्नेह और उनके भाई" (कुमरान), "योहाने और मम्रे" (बाबेली तलमूद) और "माम्ब्रेस" (अधिकांश लातीनी और कुछ यूनानी हस्तलिपियों में 2 तीमु 3:8 का अनुवाद)। ये नाम प्लिनी (पहली सदी ईस्वी) और अपुलेयस और न्यूमेनियस (दोनों दूसरी सदी) की रचनाओं में भी दिखाई देते हैं, हालाँकि दोनों नाम हमेशा उद्धृत नहीं किए जाते।

सिकन्दरिया के कलीसियाई पिता ओरीजन ने दो बार अप्रमाणिक कार्य का उल्लेख किया जिसका शीर्षक यन्नेस और यम्ब्रेस की पुस्तक था, यह सुझाव देते हुए कि यह पौलुस के शब्दों का स्रोत 2 तीमुथियुस में था। लातीनी कलीसिया दस्तावेज जिसे गेलासियन डिक्री कहा जाता है (पाँचवीं या छठी शताब्दी?), यन्नेस और यम्ब्रेस के प्रायश्चित का उल्लेख करता है, संभवतः वह काम जिसका उल्लेख ओरीजन ने किया था।

यपलेत

यपलेत

हेबेर का पुत्र और आशेर के गोत्र में का प्रधान (1 इति 7:32–33)।

यपलेतियों

यपलेतियों

बेथोरोन के आस-पास के इलाके में एप्रैम के इलाके की दक्षिणी सीमा के हिस्से पर रहने वाले लोग (यहो 16:3)।

यपुन्ने

यपुन्ने

1. कालेब के पिता, मूसा द्वारा कनान की भूमि की खोज के लिए भेजे गए 12 जासूसों में से एक थे (गिन 13:6; 14:6; 26:65; 1 इति 4:15; 6:56)। उन्हें विभिन्न रूपों में यहूदी और कनजी के रूप में पहचाना जाता है (यहो 14:6)।

2. आशेर के गोत्र से येतेर के पुत्र (1 इति 7:38)।

यबूस, यबूसी

दीवारों वाला नगर, जो यहूदा और बिन्यामीन के बीच की सीमा पर स्थित है, दाऊद द्वारा जीता गया; इसके बाद, इसे "दाऊद का नगर" या प्राचीन यरूशलेम के रूप में जाना गया। इसके निवासी यबूसी थे (यहो 18:16)। वे कई कुलों या जनजातियों में से एक थे जिन्हें सामूहिक रूप से कनानी कहा जाता था (उत 10:15–16)। उनकी एवं उनके पड़ोसियों की भूमि, बार-बार इस्राएलियों को देने का वादा किया गया था (निर्ग 3:8; 13:5; 23:23; 33:2; 34:11; गिन 13:29; व्यव 7:1; 20:17)। यह वादा यहोशू के अधीन प्रारंभिक अभियान में आंशिक रूप से पूरा हुआ (यहो 3:10; 12:8; 18:16; तुलना करें 24:11)। कहा जाता है कि यहूदा के पुरुषों ने यरूशलेम के खिलाफ लड़ाई की और उसे ले लिया (18:28)। "हालांकि, बिन्यामीनियों ने यबूसियों को, जो यरूशलेम में रह रहे थे, हटाने में असफल रहे; आज तक यबूसी वहाँ बिन्यामीनियों के साथ रहते हैं" (न्या 1:21)। जाहिर है कि नगर यहूदा के पुरुषों द्वारा कब्जा कर लिया गया था, लेकिन इसके निवासियों को नष्ट नहीं किया गया और उन्होंने बाद में उस स्थान को फिर से बसाया।

यबूस (या यरूशलेम) दो गोत्रों के बीच सीमा पर स्थित था, और यह इसके दाऊद के समय तक जीवित रहने का कारण हो सकता है। यहूदा और बिन्यामीन की सीमाएँ इस प्रकार परिभाषित की गई हैं: "फिर वही सीमा हिन्नोम के पुत्र की तराई से होकर यबूस (जो यरूशलेम कहलाता है) उसकी दक्षिण की ओर से बढ़ते हुए उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, जो पश्चिम की ओर हिन्नोम की तराई के सामने और रपाईम की तराई के उत्तरी सिरे पर है" (यहो 15:8); "वहाँ से वह हिन्नोम की तराई में, अर्थात् यबूस के दक्षिणी ओर होकर एनरोगेल को उतरी" (यहो 18:16)। दोनों विवरण सहमत हैं: यहूदा का सर्वेक्षण पश्चिम दिशा में चलता है; बिन्यामीन का सर्वेक्षण पूर्व की ओर बढ़ता है; दोनों संकेत करते हैं कि यबूस हिन्नोम की तराई के उत्तर में "पहाड़" की दक्षिणी ढलान पर स्थित था, जो आज के पूर्व यरूशलेम का स्थान है।

नगर का अस्तित्व गीहोन के झरने के निरन्तर जल आपूर्ति और मजबूत प्राकृतिक रक्षा प्रणाली द्वारा सुनिश्चित किया गया था। यह तीन तरफ से खड़ी घाटियों द्वारा आसानी से सुरक्षित था: पूर्व में किद्रोन, दक्षिण और पश्चिम में हिन्नोम। इसलिए यबूसियों ने अपने नगर को अभेद्य मान लिया था। इससे उनमें एक प्रकार का अहंकार और आत्मसन्तोष उत्पन्न हुआ। शाऊल की मृत्यु के बाद, जब दाऊद राज्य को संगठित करने का प्रयास कर रहे थे, तब यबूसियों ने दाऊद को उनके गढ़ को जीतने की चुनौती दी (2 शमू 5:6; तुलना करें 1 इति 11:5)। क्षेत्र में यह अन्तिम शेष कनानी गढ़ था, जिसने एक अनोखी चुनौती प्रस्तुत की। योआब ने संभवतः जल मार्ग से आक्रमण की अगुवाई की और वहाँ सफल हुए जहाँ पहले के प्रयास असफल रहे थे (2 शमू 5:8)।

राजनीतिक और रणनीतिक कारणों से, दाऊद ने अपनी राजधानी हेब्रोन से यबूस स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। राजनीतिक दृष्टि से, यह यहूदा और बिन्यामीन के बीच तटस्थ क्षेत्र में स्थित था और इस प्रकार कोई जलन उत्पन्न नहीं हुई। रणनीतिक दृष्टि से, यह आसानी से सुरक्षित था और अधिक केन्द्रीय रूप से स्थित था। यह चुनाव एक बुद्धिमानी भरा निर्णय साबित हुआ। इस तथ्य के बावजूद कि यबूस-यरूशलेम किसी जलमार्ग या प्रमुख राजमार्ग पर नहीं है, यह सदियों से संसार की आत्मिक राजधानी बना हुआ है। दाऊद और सुलैमान के अधीन, यह इस्राएल का धार्मिक केन्द्र बन गया, और आज यह मानव जाति के तीन प्रमुख एकेश्वरवादी धर्मों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

यह भी देखें यरूशलेम।

यब्ने (यब्नेल)

यब्ने (यब्नेल)

यह बाइबल में वर्णित शहर याफा (आधुनिक जाफ़ा) और अश्दोद के बीच तटीय मैदान पर स्थित है, जिसका उल्लेख सबसे पहले यब्नेल के रूप में किया गया था, जो कि यहूदा के गोत्र की उत्तरी सीमा पर स्थित है (यहो 15:11)। इसका उल्लेख पलिश्ती शहरों गत और अश्दोद के साथ किया गया है, जिनकी दीवारों को यहूदा के राजा उज्जियाह ने तोड़ा था (2 इति 26:6)। मध्य कांस्य युग में यब्नेल-यम में एक बंदरगाह स्थापित किया गया था, जिसका उल्लेख संभवतः थुटमोस III ने अपने विजित शहरों की सूची में और तेल एल-अमरना पत्रों (जब्नी-इलू) में किया है। बंदरगाह के अवशेषों में सभी

अवधियों के साक्ष्य मिलते हैं—प्रारंभिक कांस्य युग से लेकर बायजान्टिन काल तक। युनानिकरण समय में यब्ने को जामनिया कहा जाता था और इसे विदेशी सेनाओं द्वारा मक्काबियों के यहूदी क्षेत्र के खिलाफ बाद के हमलों के लिए एक आधार के रूप में इस्तेमाल किया गया था। 70 ई. में यरूशलेम के विनाश के बाद, विद्वान शरणार्थियों का एक छोटा सा समुदाय यब्ने में बसा था। उनका अगुवा जोहानान बेन ज़क्कई था, जो यरूशलेम में यहूदियों के सर्वोच्च न्यायालय, महासभा का पूर्व सदस्य था। उन्होंने वहाँ एक विद्यालय की स्थापना की। उसके उत्तराधिकारी गमलिएल द्वितीय था। यहाँ पुराने नियम के प्रमाणिक ग्रन्थ को परिभाषित किया गया था। दूसरे यहूदी युद्ध (बार-कोचबा विद्रोह, ई. 132–135) के दौरान, यब्ने वीरान हो गया था। यहूदी जीवन का आत्मिक केंद्र गलील में स्थानांतरित कर दिया गया। शरणार्थी पहले ज़िपोरी और बाद में तिबेरियास में बस गए, जहाँ यरूशलेम तल्मूद को संहिताबद्ध किया गया और पुराने नियम का मसोरेटिक पाठ तैयार किया गया।

यब्नेल

यब्नेल

1. यहूदा के गोत्र में यब्ने नगर के लिए एक वैकल्पिक नाम (यहो 15:11)। *देखें*यब्ने।

2. नप्ताली की दक्षिणी सीमा पर तिबिरियास के पास गलील का नगर (यहो 19:33)। यह आधुनिक यब्नेल के दक्षिण में स्थित है।

यब्बोक

यरदन की पूर्वी सहायक नदी, आधुनिक नहर एज़-ज़ेरका या ब्लू नदी। इसका स्रोत अम्मान के पास एक झरना है, जो आधुनिक यरदन की राजधानी है (यूनानी काल में फिलदिलफिया का दिकापुलिस शहर)। अपने स्रोत से यब्बोक उत्तर-पूर्व की ओर बहती है, फिर पश्चिम की ओर मुड़ती है और एक तराई बनाती है, जो पूर्व यरदन की सहायक धाराओं की विशेषता है, जो एक घाटी में गहराई तक जाती है। यह इस दर्रे से टेल देइर अल्ला के पास निकलती है, जो प्राचीन सुक्कोत हो सकता है, अपनी धारा को शांत करती है और एड-डामियेह में यरदन से मिलती है, जो प्राचीन आदम है, मृत सागर के लगभग 15 मील (24 किलोमीटर) उत्तर में। यब्बोक अपने जलग्रहण क्षेत्र के विस्तार में उत्तरी सहचर नदी, यर्मुक के बाद आती है, यह एक अच्छी तरह से जलयुक्त क्षेत्र है, जिसमें प्रति वर्ष लगभग 30 इंच (76 सेंटीमीटर) औसत वर्षा होती है। यब्बोक की तेज, मजबूत, बारहमासी धारा है; इसके 60-कोस (96.5-किलोमीटर) मार्ग के बड़े हिस्से में, धारा प्रत्येक कोस पर औसतन 80 फीट (24.4-मीटर) की गिरावट होती है। अम्मान के उत्तर में नदी का घेरा (बाइबल का रब्बाह) एक अम्मोनी सीमा थी (गिन 21:24)। नदी ने सीहोन और ओग के राज्यों को अलग किया (न्या 11:19–22; पुष्टि करें व्य.वि. 3:1–2, 8–10), गिलाद में भूमि जो बाद में गाद, रूबेन और आधे-गोत्र मनश्शे के बीच विभाजित की गई थी (व्य.वि. 3:12, 16; यहो 12:2–6)।

*यह भी देखें*यरदन नदी।

यमीमा

अय्यूब की तीन बेटियों में से पहली, जो उनकी पीड़ा के बाद उनकी बहाली पर पैदा हुई थीं (अय्यू 42:14)।

यमूएल

शिमोन के पहले पुत्र (उत् 46:10; निर्ग 6:15)। उन्हें 1 इतिहास 4:24 में नमूएल कहा गया है और वे नमूएलियों के कुल के संस्थापक हैं (गिन 26:12)।

यम्ब्रेस

यम्ब्रेस

मूसा का एक शत्रु। पौलुस उन्हें यन्नेस के साथ उन लोगों के उदाहरण के रूप में उपयोग करते हैं जो "सत्य का विरोध करते है" और "विश्वास के विषय में निकम्मे हैं" (2 तीमु 3:8–9)।

*देखें*यन्नेस और यम्ब्रेस।

यम्लेक

यम्लेक

शिमोन के गोत्र में अगुवा (1 इति 4:34)।

यरदन

यरदन

एक प्रमुख नदी जो एक महान घाटी के तल में स्थित है, जिसे यरदन रिफ्ट (दारार) कहा जाता है। यह लंबी घाटी दक्षिण-पश्चिम एशिया के उपद्वीप (सीरिया) के निचले हिस्से से अकाबा की खाड़ी तक फैली हुई है। यह दरार एक बार

लिसान झील के कारण भर गई थी, लेकिन महत्वपूर्ण भूवैज्ञानिक गतिविधि के कारण यह छोटी हो गई। परिणामस्वरूप तीन अलग-अलग जल निकायों का निर्माण हुआ:

1. हूलेह झील,
2. गलील की झील, और
3. मृत सागर।

यरदन आज भी इनमें से प्रत्येक जल निकाय में बहती है। इब्रानी भाषा में इस धारा के नाम का अर्थ है "उतरने वाला" है।

यरदन के स्रोत

हुलेह बेसिन के उत्तरी छोर से निकलने वाली, इस नदी में चार अलग-अलग धाराएँ शामिल हैं:

1. बेरेइगिथ नहर
2. हसबानी नहर
3. एल-लिद्दानी नहर
4. बनियास नहर

हूलेह तराई के उत्तर-पश्चिम कोने में, बेरेइगिथ मर्ज एयौन के क्षेत्र के भीतर प्रकट होता है। यह एक छोटे से टीले पर स्थित एक झरने से निकलती है, जो हेर्मोन पर्वत के पश्चिम में स्थित है।

थोड़े पूर्व की ओर हसबानी नामक एक जलधारा है जो समुद्र तल से 1,700 फीट (518.2 मीटर) ऊपर स्थित एक झरने से निकलती है। यह जलधारा लगभग 24 मील (38.6 किलोमीटर) की दूरी तय करती है। ये दो छोटी जलधाराएँ एल-लिद्दानी और बनियास के साथ अपने संगम से एक मील से भी कम दूरी पर मिलती हैं।

एल-लिद्दानी, जो हसबानी नहर और बनियास नहर के बीच स्थित है, तेल एल-क़ादी (जो बाइबिल के अनुसार दान नगर है) के पास स्थित है। यह चार नदियों में से सबसे शक्तिशाली नदी है, जिसे हरमोन पर्वत की पिघलती बर्फ और 'आइन लेड्डान, एक ऐसा स्रोत जो घने जंगलों के बीच स्थित है, अपना जल प्रदान करते हैं। यह नदी तीव्र गति से और संक्षिप्त रूप में बहती है, और अंततः बनियास नहर से मिल जाती है, जो इन चार नदियों में आखिरी है।"

बनियास लगभग 1,100 फीट (335 मीटर) समुद्र तल से ऊपर, हुलह तराई के उत्तर-पूर्व कोने में एक गुफा से उत्पन्न होता है। यह नए नियम के स्थल कैसरिया फिलिप्पी के पास स्थित है। बनियास अन्य धाराओं के संगम तक एक तीव्र अवरोहण का अनुसरण करता है। ये चार धाराएं यरदन नदी का निर्माण करती हैं। वे हुलह झील में प्रवेश करने से पहले 10 मील (16 किलोमीटर) की दक्षिणी दिशा में एक साथ बहती हैं।

नदी का मार्ग और उसका स्वभाव

यरदन विशाल दरार के माध्यम से उत्तर से दक्षिण की दिशा में बहती है। यह हुलह झील (समुद्र तल से 7 फीट, या 2 मीटर ऊपर) से मृत सागर (समुद्र तल से 1,274 फीट, या 388 मीटर नीचे) तक धीरे-धीरे उतरती है। हुलह झील से यह नदी 20 मील (32.2 किलोमीटर) की दूरी तय करती है। यह उस बाजालतिक कगार से गुजरती है जो हलह जलग्रहण क्षेत्र के दक्षिणी बांध (रोश पिनाह सिल) को बनाता है। फिर यह शीघ्रता से गलील की झील की ओर उतरती है, जो समुद्र तल से 685 फीट, या 209 मीटर नीचे है।"

दक्षिण में लगभग 65 मील (105 किलोमीटर) की दूरी पर मृत सागर स्थित है। गलील की झील और मृत सागर को जोड़ने वाली नदी 200 मील (322 किलोमीटर) की घुमावदार यात्रा करती है। सांप जैसी नदी की धारा *घोर*, घाटी के तल से होकर गुजरती है।

यरदन नदी की कई सहायक नदियाँ हैं। सभी सहायक नदियाँ बारहमासी नहीं होतीं। यदि नदी के उद्गम पर कोई स्थायी जल स्रोत, जैसे कि झरना, न हो, तो ये वी-आकार की जलधाराएँ, जब तक कि मौसमी बारिश न हो शुष्क रहती हैं। बारिश के आने पर, ये सूखी और संकरी जलधाराएँ तेज़ बहाव वाली धाराओं से भर जाती हैं, जो घाटी के किनारों से होकर यरदन नदी में समा जाती हैं।

गलील की झील के उत्तर में, चार प्रमुख जल प्रणालियाँ हूलह बेसिन में नदी प्रणाली को पोषित करती हैं। दीशोन नहर और हाज़ोर नहर पश्चिम की ओर स्थित हैं। शूआ नहर और गिलबोन नहर पूर्व की ओर हैं। गलील की झील और मृत सागर के बीच निम्नलिखित प्रमुख सहायक नदियाँ बहती हैं:

1. पूर्व की ओर—यर्मूक, अरब, तैयबेह, ज़िक्लाब, जुर्म, याबिस, कूफरिंजिया, रजीब, ज़र्का, निमरीन, अबू घरूबा।
2. पश्चिम की ओर—फेज्जास, बीरेह, जलूब, मालीह, फर'आह, औजा, अल-क़ेल्त।

घोर का स्वरूप उत्तर से दक्षिण की ओर बदलता है, क्योंकि घाटी का तल समुद्र स्तर से और नीचे गिरता जाता है। गलील की झील के ठीक दक्षिण में कृषि योग्य भूमि पर बिना सिंचाई के भी खेती की जा सकती है। यहाँ निवास और बसने की क्रिया बहुत आम है।

दक्षिण में और समुद्र तल से नीचे, घाटी के सबसे संकीर्ण भाग घोर एल-वहादिना से परे, भूभाग और जलवायु में परिवर्तन होता है। जब घाटी का तल लगातार समुद्र तल से 1,000 फीट

(305 मीटर) नीचे पहुंचता है, तो जलवायु अधिक मरूभूमि जैसी हो जाती है।

इस शुष्क और उजाड़ क्षेत्र में नदी और उसके आसपास का क्षेत्र अधिक ध्यान देने योग्य हो जाता है। यह नदी अपने किनारों पर रहने वाले पौधों और पशुओं के लिए जीवन का स्रोत है। इसका प्रवाह और स्वरूप अधिक आसानी से देखा जा सकता है, क्योंकि यह मरूभूमि में एक सजीव धारा बन चुकी है। यरदन के किनारों पर आज भी घनी वनस्पति पाई जाती है, जो पशुओं के लिए लोकप्रिय निवास स्थान है। ठीक बाइबिल के समय की तरह, निचली झाड़ियाँ और झाऊ के पेड़ जमीन को घना आवरण प्रदान करते हैं।

इस घाटी के निचले भाग को ज़ोर कहा जाता है, जो *घोर* से 150 फीट (45.7 मीटर) नीचे स्थित है। घाटी का तल ज़ोर से *क़त्तारा* द्वारा अलग होता है, जो भूरे-सफेद रंग के मर्ल और चिकनी मिट्टी के जमाव से बना होता है, जो खड़ी और बंजर ढलानों का निर्माण करता है। यह क्षेत्र आमतौर पर दुर्गम और अत्यंत खतरनाक है। ज़ोर और *क़त्तारा* एक प्राकृतिक बाधा बनाते हैं, जो सिस-यरदन (पश्चिम) और ट्रांसयरदन (पूर्व) को विभाजित करता है। व्यापार, बसने की क्रिया, और यात्रा इन भौगोलिक विशेषताओं से प्रभावित होते थे।

यरदन के घाट

यरदन के पास पुराने नियम की घटनाएँ

- इस्राएली लोग यरदन को पार करके प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश किए (यहोशू 3:14–17)।
- यरदन के घाट पर यिप्तह और गिलादियों के बीच एप्रैमियों के साथ युद्ध हुआ था (न्यायियों 12:1–6)।
- एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने इस्राएल के राजा अहाब से यरदन के पूर्व में करीत नामक नदी में जाकर छिपा रहा (1 राजाओं 17:1–5)।
- एलिय्याह, एलीशा के साथ यरदन को पार करने के बाद एक बवंडर में स्वर्ग में उठा लिया गया (2 राजाओं 2:6–12)।
- नामान, अरामी सेनापति, एलीशा के आदेश पर यरदन में स्नान किए, और उसका कोढ़ ठीक हो गया (2 राजाओं 5:8–14)।
- एलीशा ने कुल्हाड़ी का फलक को यहां तैराया (2 राजाओं 6:1–7)।

यर्दन के पास नए नियम की घटनाएँ

- यीशु का बपतिस्मा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यरदन में किया गया था (मत्ती 3:13–17)।
- पतरस ने कैसरिया फिलिप्पी में यीशु को "मसीह, जीवित परमेश्वर के पुत्र" करके स्वीकार किया। यह बातचीत यरदन के एक स्रोत, बनियास नहर के पास होती है (मत्ती 16:13–20)।
- यीशु ने यरीहो में दो अंधे व्यक्तियों को चंगा किया, जो यरदन के पास स्थित है (मत्ती 20:29–34)।
- यीशु ने यरीहो में जक्कई से भी भेंट किया (लूका 19:1–10)।

यरदन के घाट

यरदन नदी के ऐसे उथले स्थान जहाँ लोग और जानवर पैदल चलकर नदी पार कर सकते थे। कई पुराने नियम के व्यक्तित्वों ने यरदन को इसके दो मुख्य घाटों पर पार किया: इनमें शामिल हैं याकूब (उत् 32:10), गिदोन (न्या 8:4), दाऊद (2 शमू 10:17; 17:22), अबशालोम (17:24), अब्नेर

और उनके लोग (2:29)। यहोशू ने जल-प्रलय के समय अपने अनुयायियों को सुखी भूमि पर यरदन पार करवाया, जो वास्तव में परमेश्वर का एक अद्भुत चमत्कार था (यहो 3:15–16)। यीशु ने भी गलील और यरूशलेम के बीच की यात्राओं के दौरान कई बार यरदन को पार किया।

यरदन के दो मुख्य घाट यरीहो (यहो 2:7; न्या 3:28; 2 शमू 19:15) और बैतनिय्याह में थे, जहाँ यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया (यूह 1:28)। कुछ स्थानों पर और कुछ समय पर यरदन नदी पार करना सम्भव नहीं था: जैसे लबानोन पर्वतों में हिम पिघलने के बाद, और मृत सागर के निकट, जहाँ यरदन नदी लगभग 100 फीट (30.5 मीटर) चौड़ी और 5 से 10 फीट (1.5 से 3 मीटर) गहरी होती है (यहो 3:15)।

*यह भी देखें*यरदन।

यरदन पार

यरदन नदी के पूर्वी हिस्से का क्षेत्र। हालांकि यह नाम बाइबल में नहीं मिलता है, लेकिन बाइबिल के इतिहास में कई घटनाएँ वहाँ घटी थीं। आज यह क्षेत्र लगभग यरदन राज्य के बराबर है। बाइबिल के समय में यह क्षेत्र बाशान, गिलाद, अम्मोन, मोआब, एदोम, और पूर्व की मरूभूमि क्षेत्रों को शामिल करता था। पुराने नियम में "यरदन के पार" का प्रयोग अक्सर इस क्षेत्र के लिए किया जाता है (उत 50:10–11; व्य.वि. 3:20; 4:47; यहो 9:10; 13:8; 18:7; न्याय 5:17), हालांकि कभी-कभी यह अभिव्यक्ति यरदन के पश्चिमी क्षेत्र के लिए भी उपयोग की जाती थी (व्य.वि. 3:25)। नए नियम के समय में, इस क्षेत्र को पेरेआ अर्थात 'यरदन पार' के नाम से जाना जाता था। *देखें*पेरेआ।

यरहमेल

यरहमेल

1. हेस्रोन के तीन पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र, छः बेटों का पिता और पेरेस के वंश से यहूदा का वंशज (1 इति 2:9–42)। वह यरहमेलियों के परिवार का संस्थापक था, जो दाऊद के समय में नेगेव क्षेत्र में रहते थे और कई शहरों पर कब्जा करते थे (1 शमू 27:10; 30:29)।

2. कीश का पुत्र और लेवियों के एक परिवार का अगुवा, जिसने दाऊद के शासनकाल के दौरान निवासस्थान में सेवा की (1 इति 24:29)।

3. यहूदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र और वह जिसे शेलेम्याह और सरायाह के साथ राजा ने बारूक और यिर्मयाह को पकड़ने का आदेश दिया था (यिर्म 36:26)।

यरहमेलियों

यरहमेलियों

यरहमेल का वंशज जो यहूदा के गोत्र से संबंधित है (1 शमू 27:10; 30:29)। *देखें*यरहमेल #1।

यरिय्याह

कहात के परिवार के लेवियों और हेब्रोन के घर का प्रमुख (1 इति 23:19; 24:23)। दाऊद ने यरिय्याह और अन्य लेवियों को राज्य के धार्मिक और नागरिक मामलों का प्रबंधन करने के लिए संगठित किया था (26:31)।

यरिय्याह

1 इतिहास 26:31 में यरियाह, एक कहाती लेवी की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यरियाह।

यरीएल

इस्साकार के गोत्र से तोला का पुत्र (1 इति 7:2)।

यरीओत

यरीओत

1 इतिहास 2:18 के अनुसार कालेब की पत्नियों में से एक।

यरीबै

यरीबै

एलनाम का पुत्र और दाऊद के वीर पुरुषों में से एक (1 इति 11:46)।

यरीमोत

यरीमोत

1. बेला के पांच पुत्रों में से एक और बिन्यामीन के गोत्र का एक प्रमुख (1 इति 7:7)।

2. 1 इतिहास 7:8 में बेकेर के पुत्र यरेमोत की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यरेमोत #1।

3. बिन्यामिनी और उन दोनों हाथों से युद्ध करने वाले वीरों में से एक, जो सिकलग में दाऊद का समर्थन करने आया था (1 इति 12:5)।

4. 1 इतिहास 23:23 और 24:30 में मूशी के पुत्र, यरेमोत की वैकल्पिक वर्तनी है। *देखें*यरेमोत #3।

5. 1 इतिहास 25:4 और 25:22 में हेमान के पुत्र यरेमोत की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यरेमोत #4।

6. 1 इतिहास 27:19 में अज्रीएल के पुत्र यरेमोत के लिए एक वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यरेमोत #5।

7. दाऊद का पुत्र और महलत का पिता। महलत का विवाह यहूदा के राजा रहबाम से हुआ था (2 इति 11:18)।

8. उन लेवियों में से एक, जिन्होंने राजा हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान मंदिर के योगदान के प्रबंधन में सहायता की थी (2 इति 31:13)।

यरीहो

यरीहो

यरदन के पश्चिमी तट पर प्राचीन नगर। यरीहो नाम प्राचीन कनानी चंद्र देवता के नाम से जुड़ा हो सकता है। चंद्रमा, महीना, अमावस्या, और यरीहो के लिए इब्रानी शब्द बहुत समान हैं।दूसरे इसे आत्मा या गंध के शब्द से जोड़ते हैं, यह मानते हुए कि इस मरूद्यान में उगने वाले फलों और मसालों की सुखद सुगंध ने इस स्थान का नामकरण किया। पुराना नियम कभी-कभी इसे "खजूर के पेड़ों का शहर" कहता है (जैसे, व्य.वि. 34:3; 2 इति 28:15)।

यरीहो यरदन नदी के पश्चिमी किनारे पर दक्षिणी घाटों से लगभग पाँच मील (8 किलोमीटर) और मृत सागर के उत्तर-पश्चिम में लगभग दस मील (16 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित था। यरदन के मैदान के विस्तृत हिस्से में होने के कारण, यह समुद्र तल से लगभग 1,000 फीट (305 मीटर) नीचे और यरूशलेम से लगभग 3,500 फीट (1,067 मीटर) नीचे है, जो कि केवल 17 मील (27 किलोमीटर) दूर था। यह सरल स्थलाकृतिक तथ्य यीशु के अच्छे सामरी के दृष्टांत में प्रासंगिक शब्दों की व्याख्या करता है, "यरूशलेम से यरीहो तक" (लूका 10:30)।

इतिहास

बाइबल पूर्व अभिलेख

बाइबल में पहली बार मिस्र से निर्गमन के संबंध में इसका उल्लेख होने से पहले, यरीहो सदियों, यहां तक कि सहस्राब्दियों तक एक बड़ा और संपन्न शहर था। वास्तव में, यरीहो दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है, जिसके अवशेष 10,000 साल पहले नवपाषाण युग और उससे भी पहले के हैं।

प्राचीन लोगों ने तीन कारणों से इस स्थान को पहले एक बस्ती और अंततः एक प्रमुख शहर के रूप में चुना होगा: (1) इसमें एक प्रचुर मात्रा में झरना है, जिसे अब एलीशा का सोता कहा जाता है (पुष्टि करें. 2 रा 2:18–22)। (2) सर्दियों में यहाँ गर्म जलवायु होती है, हालांकि गर्मियों में इसे "गरम" कहा जाता है। (3) यह रणनीतिक रूप से यरदन घाट पर और पश्चिम की ओर पहाड़ियों की ओर जाने वाले कई मार्गों के आधार पर स्थित है।

विभिन्न जनसंख्या आवागमन को केवल गैर-शिलालेखीय पुरातात्विक आंकड़े से संक्षेप में पुनर्निर्मित किया जा सकता है। सभ्यताएँ वर्षों में अधिक जटिल होती गईं, पहले एक साधारण भोजन-संग्रहण अर्थव्यवस्था से लेकर अपेक्षाकृत जटिल शहरी समाज तक, जिसमें राजा, सैनिक और अतिथि गृह शामिल थे, जिसका सामना यहोशू ने किया था। पहली निश्चित पहचान इसके निवासियों की गिनती 13:29 में होती है: “हित्ती, यबूसी, और एमोरी पहाड़ी देश में रहते हैं; और कनानी समुद्र के किनारे और यरदन के किनारे बसे हुए हैं”।

पुराने नियम में

पुराने नियम का यरीहो सबसे पहले उस शहर के रूप में जाना जाता है जिसे आक्रमणकारी इस्राएलियों ने गिरती दीवारों के चमत्कार के माध्यम से लिया था। यरदन के पूर्वी तट पर मोआब के मैदानों में कुछ समय बिताने के बाद (गिन 22:1; 26:3, 63), इस्राएलियों ने इसे विजय में पहला सैन्य लक्ष्य बनाया। यहोशू ने भेदियों को भूमि और शहर की जाँच करने के लिए भेजा। राहाब वेश्या ने उन्हें अंदर लिया और बाद में उनके भागने की योजना बनाई।उसके सहयोग के लिए, जब इस्राएल ने शहर को नष्ट किया, तो उसे और उसके परिवार को बख्श दिया गया (यहो 2, 6)। शहर का पतन तब हुआ जब इस्राएली प्रतिदिन छह दिनों तक चुपचाप शहर के चारों ओर चक्कर लगाते रहे, केवल तुरहियों की निरंतर ध्वनि के साथ। फिर, जब याजकों ने तुरहियां बजाईं, लोग चिल्लाए और दीवारें गिर गईं।

यहोशू ने यरीहो का पुनर्निर्माण करने वाले किसी भी व्यक्ति को श्राप दिया (यहो 6:26)। श्राप लगभग 500 वर्ष बाद पूरा हुआ जब हीएल ने अपने दो बेटों की कीमत पर शहर का पुनर्निर्माण किया (1 रा 16:34)।

यरीहो बिन्यामीन के क्षेत्र में था लेकिन उत्तर में एप्रैम के क्षेत्र की सीमा पर था (यहो 16:1, 7; 18:12, 21) और पुराने नियम के बाकी हिस्सों में बिखरी घटनाओं में दिखाई देता है।। 2 शमूएल 10:5 (देखें 1 इति 19:5) दाऊद ने अपने अपमानित दूतों को तब तक वहीं रुकने दिया जब तक उनकी दाढ़ी वापस नहीं बढ़ गई। यह एलीशा के लिए एक प्रकार के मुख्यालय के रूप में कार्य करता था और जाहिर तौर पर यह

वह स्थान था जहां "भविष्यद्वक्ताओं के दल" रहते थे (2 रा 2:5; पुष्टि करें 1 शमू 10:5)। आहाज के समय में, वहां बन्दियों की वापसी हुई (2 इति 28:15)। जब यरूशलेम 586 ई.पू. में गिर गया, तो शासक राजा, सिदकिय्याह, यरीहो के पास भाग गया लेकिन कसदियों द्वारा पकड़ा गया, जिन्होंने बाद में सीरिया के रिबला में उसकी आंखें निकाल दीं (2 रा 25:5; यिर्म 39:5; 52:8)। यरीहो का अंतिम पुराना नियम संदर्भ एज्रा (एज्रा 2:34) और नहेम्याह (नहे 7:36) की जनगणना सूचियों में है। यरीहो के मनुष्यों ने भी यरूशलेम की दीवार को फिर से बनाने में मदद की (3:2)।

नए नियम में

पहले, यह समझना आवश्यक है कि नए नियम समय का यरीहो हेरोदेस द्वारा पुराने नियम स्थल से एक मील से अधिक दक्षिण में, वादी किल्ट के मुहाने पर बनाया गया था। यह समझकर कि यीशु प्राचीन यरीहो (मत्ती 20:29; मर 10:46) से गुजर रहे थे और हेरोडियन यरीहो (लूका 18:35)के पास आ रहे थे, सहदर्शी सुसमाचार में दृष्टिहीन पुरुषों के चंगाई की घटनाओं को सुलझाना संभव है। आधुनिक शहर यरीहो में दोनों स्थल शामिल हैं। जब यीशु यरीहो से गुजरे (19:1) तो उन्होंने नए रोम यरीहो के धनी मुख्य कर संग्रहकर्ता जक्कई से मुलाकात की और उनके साथ भोजन किया। यह शहर अच्छे सामरी (10:30–37) के दृष्टांत में भी आता है।

बाइबल के बाद का अभिलेख

जबकि प्राचीन यरीहो यहोशू के तहत इसके विनाश के बाद छोटा महत्व का था, लेकिन हेरोदेस के समय में यरीको एक सुंदर और महत्वपूर्ण शहर था। फिर भी, यह शहर रोम प्रभाव की कमी के साथ पतन की ओर बढ़ गया। आधुनिक काल तक इस शहर के बारे में जो कुछ भी हम जानते हैं, वह पवित्र भूमि के परदेशियों की लिखावटों से आता है। वे आमतौर पर बाइबल से संबंधित कुछ वस्तुएँ, जैसे कि वह पेड़ जिस पर जक्कई चढ़ा था, देखने का विवरण करते हैं, लेकिन वे यह भी विवरण करते हैं कि यरीहो एक गंदा और दुखी मुस्लिम गांव था।और ऐसा ही यह अपेक्षाकृत हाल के समय तक रहा, जब यह एक प्रमुख पश्चिमी तट शहर के रूप में आकार और महत्व में बढ़ गया।

यरूएल

तकोआ के दक्षिण-पूर्व में स्थित जंगल जो एनगदी के पास और सीस की चट्टान के ठीक ऊपर और पश्चिम में है (2 इति 20:16)। कुछ लोग इसे एल-हसासा के साथ पहचानते हैं।

यरूब्बाल

यरूब्बाल

गिदोन को यह नाम तब दिया गया जब उसने बाल की एक वेदी को नष्ट कर दिया (न्या 6:32)। इस नाम का अर्थ है "इस पर बाल आप वाद विवाद कर ले।" *देखें*गिदोन।

यरूब्बेशेत

यरूब्बेशेत

इस्राएली न्यायाधीश गिदोन का एक और नाम (2 शमू 11:21)।

देखें गिदोन।

यरूशलेम

एक ऐतिहासिक नगर जो मसीहियों, यहूदियों और मुसलमानों के लिए पवित्र है; यह प्राचीन फिलिस्तीन और आधुनिक इस्राएल राज्य का प्रमुख नगर है।

पूर्वावलोकन

- नाम का अर्थ
- भौगोलिक स्थिति
- इतिहास

नाम का अर्थ

मिस्री में अर्थ

इस नाम का सबसे पहला उल्लेख मिस्री श्रापग्रन्थों में मिलता है, जो 19वीं और 18वीं शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, जिसमें इसे सम्भवतः *उरुसलीमुम*के रूप में लिप्यंतरित है।

सामी में अर्थ

14वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, यह नाम अब्दी-हेपा के टेल-एल-अमरना के पत्रव्यवहार में *उरुसलीम*के रूप में प्रकट होता है। बाद में, यह अश्शूरी सम्राट सन्हेरीब के शिलालेखों में *उरुसलीम्मु*के रूप में पाया गया। इस नाम के दो स्पष्ट रूप से सामी तत्व हैं, *उरु* (नगर) और *सलीम* (एक दिव्य नाम), इन तत्वों ने मिलकर इसका अर्थ "सलीम [देवता] का नगर" बनाया। प्राचीन पश्चिमी एशिया के दुनिया में स्थानों के नामों में दिव्य नाम जोड़ना एक सामान्य प्रथा थी, और देवता सलीम, या शालेम (अक्कादी, शुलमानु; पुष्टि करें सुलैमान), एमोरी देवालय के सदस्य थे (पुष्टि करें यहेज 16:3)। पुराने नियम प्रमाणित करते हैं कि यरूशलेम मूल रूप से एक इब्रानी नगर

नहीं था। पुरातन पाठ्य साक्ष्य मिस्री, पश्चिमी सामी, और अक्कादी केवल *उरुसलीम* को मान्यता देते हैं, इसलिए, सम्भावना है कि इस नाम की सामी व्युत्पत्ति ने "सलीम [देवता] का नगर" अर्थ को उत्पन्न किया।

इब्रानी/अरामी में अर्थ

इब्रानी पुराने नियम में यरूशलेम को यरूशलाईम लिखा गया है, और अरामी भागों में इसे *येरूशलेम* लिखा गया है। इसमें यारा ("नींव बनाना," पुष्टि करें अय्यू 38:6) और शलेम (एक दिव्य नाम) इन दोनों शब्दों को मिलाकर इसका अर्थ होता है "शालेम [देवता] की नींव," इब्रानी/अरामी का *श* अक्कादी *स* का ध्वन्यात्मक समकक्ष माना जाता है।

यूनानी में अर्थ

नए नियम में, यरूशलेम दो यूनानी शब्दों इरूशलेम और हिएरोसोलूमा का अनुवाद करता है। पहला केवल पुराने नियम की अरामी परिवर्तन का सीधा यूनानी लिप्यंतरण है; दूसरा शब्द हिएरोस (पवित्र) को दर्शाता है, जो एक यूनानी शब्दालंकार है, जो नाम के सामी मूल से और शहर की ऐतिहासिक वास्तविकता के साथ मेल नहीं खाता है ।

भौगोलिक स्थिति

यरूशलेम 31º 46' 45" उत्तरी अक्षांश और 35º 13' 25" पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह समुद्र तल से 2,500 फीट (762 मीटर) से थोड़ा अधिक ऊँचाई पर स्थित है। यह नगर मृत सागर के उत्तरी सिरे से लगभग 14 मील (22.5 किलोमीटर) पश्चिम और भूमध्यसागर के तट से लगभग 33 मील (53 किलोमीटर) पूर्व में है।

यरूशलेम में भूमध्यसागरीय जलवायु है। अक्टूबर से मई के बीच यहाँ वर्षा ऋतु होती है, जिसमें वार्षिक औसत वर्षा लगभग 25 इंच (63.5 सेंटीमीटर) होती है। जनवरी और फरवरी के दौरान वर्षा तेज हवाओं के साथ होती है, और तापमान शून्य के करीब चला जाता है (पुष्टि करें एज्रा 10:9); सबसे ठण्डे दिनों में भारी वर्षा होती है। हर तीन साल में दो बार हिमपात होता है। मई से सितम्बर के बीच वर्ष नहीं होती, और उच्च सौर विकिरण के कारण गर्मी अत्यधिक हो जाती है।

जैसे रोम, यरूशलेम भी पहाड़ियों पर स्थित एक शहर है। यह पाँच पहाड़ियों का एक समूह है, जो एक चौकोर भू-भाग के रूप में फैला हुआ है, जिसकी लम्बाई लगभग एक मील (1.6 किलोमीटर) और चौड़ाई आधे मील (0.8 किलोमीटर) है, जो उत्तर को छोड़कर सभी दिशाओं में गहरी घाटियों से घिरा हुआ है। यह फिलिस्तीन के केन्द्रीय पठार की चोटी पर स्थित है हेब्रोन, बैतलहम, शेकेम (नाबलस) और उत्तर की अन्य जगहों से जुड़ी जलवायु मार्ग के साथ-साथ यरदन घाटी और भूमध्य सागर के कई मुख्य मार्ग से जुड़े लम्बे रास्तों के केन्द्र में है, इसलिए यरूशलेम देश के लिए वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यरूशलेम के दक्षिण में मृत सागर और उसकी ऊँची चट्टानों द्वारा मार्ग अवरुद्ध हो गया है, जिससे यहूदी पहाड़ियों से होकर जाने वाला रास्ता दक्षिण से नहीं जा सकता। यरूशलेम व्यापारिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था, और इसी कारण से इसे बसाने का निर्णय लिया गया, हालाँकि पानी की कमी थी।

पानी, जो सभ्यता की जीवनरेखा है, हमेशा यरूशलेम में कम पाया गया। यरूशलेम का एकमात्र प्राकृतिक स्थायी जल स्रोत गीहोन का झरना था, जिसे आजकल कभी-कभी "कुँवारी का सोता" कहा जाता है, जो किद्रोन तराई में स्थित था, जो प्राचीन गढ़ के ठीक पूर्व में था जिसे दाऊद ने जीता था। यरूशलेम पर घेराबन्दी के समय गीहोन तक पहुँचने के लिए सुरंगे खोदी गई थीं। बाद में, शीलोह सुरंग को लगभग 1,800 फीट (548.6 मीटर) चूना पत्थर के भीतर काटा गया, जिससे गिहोन का पानी सिय्योन की पहाड़ी से होते हुए शीलोह के कुण्ड तक पहुँच सका।

किद्रोन और हिन्नोम तराइयों के मिलन स्थल से कुछ दक्षिण में एक और झरना था, जिसे बाइबल में एनरोगेल कहा गया है (आधुनिक बिर एय्यूब)। पानी की सतह में कमी के कारण यह जल स्रोत अब प्रवाहित नहीं होता था और बाद में इसे एक कुएँ में बदल दिया गया।

ये दोनों स्रोत यरूशलेम की बड़ी जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं थे, और किद्रोन में स्थित होने के कारण ये सिंचाई के लिए उपयोगी नहीं थे। इसलिए, प्राचीन समय से ही जल की आपूर्ति के लिए कुण्डों, जलाशयों और जल मार्गों का एक विशाल प्रसार तैयार किया गया।

इतिहास

पूर्व-इस्राएली काल

रपाईम के मैदान में पाए जाने वाले ऐश्यूली प्रकार के पुरापाषाण और मध्य पाषाणकाल पत्थर के औजार यरूशलेम के क्षेत्र में मानव के अस्तित्व का सबसे पहला प्रमाण हैं। चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत के पास, दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर पहली बार एक स्थायी दल ने निवास किया, जिसका प्रमाण तीन कब्रों से प्राप्त कलाकृतियों और चट्टान पर खोजी गई मिट्टी के बर्तनों के प्रकार से मिलता है। 1800 ईसा पूर्व तक, दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी की चोटी पर एक प्राचीन दीवार बनाई गई थी।

बाइबिल से यह पता चलता है कि अब्राहम ने मलिकिसिदक, शालेम के राजा को दशमांश दिया (उत् 14:17–20)। फिर (अध्याय 22) महान कुलपति ने उस क्षेत्र की सुधि ली जिसे बाद में यरूशलेम में शामिल किया गया, मोरिय्याह पर्वत , वह स्थल जहाँ इसहाक की बलि चढ़ाई जानी थी। 2 इतिहास 3:1 मोरिय्याह पर्वत को मन्दिर की पहाड़ी के रूप में पहचानता है। 15वीं शताब्दी ईसा पूर्व या उसके आसपास हुर्रियन्स

(सम्भवतः बाइबिल के होरियों) फिलिस्तीन में प्रवेश कर गए। लगभग उसी समय यरूशलेम में, व्यापक निर्माण गतिविधियाँ शुरू की गईं और ऊँची-ऊँची और दृढ़ शहरपनाहों की विधियाँ प्रस्तुत की गईं। इसलिए, अधिकांश लेखक इन परियोजनाओं को यरूशलेम में हुर्रियन्स घुसपैठ से जोड़ते हैं।

विजय और बसने का काल

यहोशू की सेना द्वारा गिबोन के शान्ति प्रस्ताव के बारे में जानने के बाद (यहो 9), यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के राजाओं के साथ गठबंधन बनाया और गिबोन पर चढ़ाई की। इसके जवाब में, यहोशू ने अपनी सेना को इकट्ठा किया और उस गठबंधन को पराजित किया, मक्केदा में पाँचो राजाओं को मार डाला (यहो 10:16–27)। ऐसा प्रतीत होता है कि यहूदा के गोत्र ने अस्थायी रूप से यरूशलेम से लड़कर उसे ले लिया और बाद में इसे जला दिया (न्या 1:8)। हालाँकि, यबूसियों ने इस स्थान को फिर से कब्जा कर लिया (यहो 15:63; 1 इति 11:4–5)। जाहिर है, दाऊद के समय तक यबूसियों ने लगभग यरूशलेम पर नियंत्रण बनाए रखा।

यह शहर फिर से यहूदा और बिन्यामीन के गोत्र के निज भाग को विभाजित करने वाली सीमा के रूप में दिखाई देता है, जो बाद में बिन्यामीन के देश की दक्षिणी सीमा बन गई। "यबूसी का कन्धा" (यहो 15:8; 18:16) की पहचान सामान्यतः यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिमी पहाड़ी से की जाती है, जो इस समय यबूसियों द्वारा नियंत्रित किया गया था।

दाऊद का यरूशलेम

पलिश्तियों द्वारा गिलबो पहाड़ पर विजय प्राप्त करने के बाद, जहाँ शाऊल और योनातान युद्ध में मारे गए (1 शमू 31), दाऊद ने हेब्रोन से यहूदा के गोत्र पर राज्य किया, जबकि शाऊल का जीवित पुत्र ईशबोशेत, महनैम से उत्तरी गोत्रों पर राज्य करता था। इसके बाद के दो वर्षों तक लड़ाई होती रही, परन्तु दाऊद का घराना प्रबल होता गया, जबकि ईशबोशेत का घराना निर्बल पड़ता गया (2 शमू 3:1)। यह लड़ाई ईशबोशेत की मृत्यु और उसके सिर काटने तथा उसकी सेनाओं के विघटन के साथ समाप्त हुआ। दाऊद इस्राएल के सभी गोत्रों के निर्विवाद राजा बन गए।

लेकिन नए राजा ने यह समझा कि उत्तर और दक्षिण दोनों के लिए स्वीकार्य एक समेकित देश की राजधानी बनानी होगी। यबूसी विदेशी अन्त: क्षेत्र का स्थान होने के कारण यरूशलेम संघर्ष में तटस्थ रहा था। यह एक ऐसे स्थान का भी प्रतिनिधित्व करता था जो सैन्य रूप से वांछनीय था, और नवोदित देश के लिए व्यावसायिक रूप से केन्द्रीय होने के कारण, यह आदर्श रूप से उपयुक्त था।

यरूशलेम में दाऊद के 33 वर्षों के राज्य काल के दौरान, उन्होंने नगर को एक राज्य का केन्द्र बना दिया, जो मिस्र से लेकर फरात नदी तक फैला हुआ था। उन्होंने नगर में काफी निर्माण और विस्तार का काम किया। उन्होंने कनानी दीवारों को मजबूत किया और सम्भवतः सिय्योन के पूर्वी ढलान के साथ नगर का विस्तार किया।

दाऊद ने एक राजभवन भी बनाया, जिसमें तकनीकी ज्ञान और कई सामग्रियाँ उन्हें सोर के राजा हीराम से प्राप्त हुईं (2 शमू 5:11)। नहेम्याह 12:37 यह संकेत देता है कि यह राजभवन दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी की पूर्व दिशा के पास हो सकता है। इसी घर की एक खिड़की से मीकल ने दाऊद को नाचते हुए देखा था, जिसे उसने अपनी दृष्टि से असम्मानजनक समझा (2 शमू 6:16–23)। इसी राजभवन की छत से दाऊद ने बतशेबा को नहाते हुए देखा (11:2–5), और इसी निवास से उन्होंने उसके पति, ऊरिय्याह की हत्या की योजना बनाई (वचन 14–25)।

दाऊद ने वाचा के सन्दूक को यरूशलेम लाकर (2 शमू 6:1–15)—जिससे यह संकेत दिया कि यहोवा वहीं वास करेंगे—दाऊद ने अपने सबसे गहन नेतृत्व का प्रदर्शन किया। इस कार्य के द्वारा उन्होंने पहली बार इस्राएल के इतिहास में उसके राजनीतिक और धार्मिक केन्द्रों को जोड़ा। यरूशलेम को एक पवित्र नगर और राज नगर का अनूठा चरित्र प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप, इस शहर को "दाऊदपुर" (5:7) और "परमेश्वर के नगर" (भज 46:4) के रूप में जाना जाने लगा। वयस्क यहूदी पुरुष वहाँ तीर्थयात्रा पर आकर पर्व और बलिदानों में भाग लेते थे। दाऊद का अन्तिम उद्देश्य यह था कि इस व्यवस्था को स्थायी रूप से स्थापित किया जाए, यरूशलेम में यहोवा के लिए एक मन्दिर बनाकर उसे सदा के लिए वहाँ स्थापित किया जाए। दाऊद ने यह कार्य करने की इच्छा व्यक्त की (2 शमू 7), लेकिन परमेश्वर ने कहा कि यह कार्य राजा के पुत्र द्वारा पूरा किया जाएगा।

प्रथम मन्दिर काल

दाऊद के राज्य के विस्तार और प्रभाव के प्रति बढ़ती राष्ट्रीय समझ का उपयोग सुलैमान ने पूरी कुशलता से किया। सुलैमान, जो स्वयं एक नवाचारी और ऊर्जावान प्रशासक थे, ने यरूशलेम को एक अंतरराष्ट्रीय केन्द्र में बदल दिया। मिस्र से बाबेल तक के बटोहियों की आय के साथ-साथ एलत, लाल समुद्र, और ओपीर के साथ फीनीके के व्यापारी दल उनके महत्वपूर्ण राजधानी से होकर गुजरता था। सुलैमान का अपना नौसैनिक जहाज तर्शीश तक यात्रा करता था, जो सम्भवतः इसपानिया के पश्चिमी तट के पास किसी द्वीप पर स्थित था। इन अभियानों से हर तीन साल में बन्दर, मोर, चाँदी, लोहा, राँगे, हाथी दाँत और सोने जैसे दुर्लभ सामान लाए जाते थे। राजधानी में निवासियों और आगंतुकों की संख्या बढ़ गई, और राज्य प्रसिद्ध इतनी हो गई कि यह कहावतों में बदल गई (1 रा 10)।

सुलैमान यरूशलेम का महान पुरातन नियम (ओल्ड टेस्टामेंट) निर्माणकर्ता था। उनका सबसे महत्वपूर्ण निर्माण

कार्य निःसन्देह पहला यहोवा का भवन था। मन्दिर पहाड़ी के चोटी पर बनाया गया और इसे बनाने में सात साल लगे, अप्रैल/मई 966 (1 रा 6:1) से अक्टूबर/नवम्बर 959 (वचन 38) तक। हीराम ने फिर से तकनीक और देवदार की लकड़ी उपलब्ध कराई।

1 राजा 10:27 में सुलैमान द्वारा यरूशलेम पर की गई आर्थिक समृद्धि का एक संक्षिप्त वर्णन मिलता है: चाँदी पत्थरों जितनी प्रचुर हो गई थी, और देवदार के पेड़ गूलर के पेड़ों जितने सामान्य हो गए थे। अनुमान है कि यरूशलेम में वार्षिक राजस्व लगभग एक अरब चौव्वालिस करोड़ तक पहुँच गया था। विडम्बना यह है कि यही आर्थिक कारण सुलैमान के राज्य का बोझ बन गया। वित्तीय रूप से अति करने के कारण, उनके आर्थिक और राजनीतिक कार्यक्रमों के लिए भारी कर (1 रा 4:7–19) और इस्राएलियों को जबरन बेगार में लगाना (1 रा 5:13–18; पुष्टि करें 9:20–23) आवश्यक हो गया। ये मुख्य कारण थे, जिनकी वजह से सुलैमान की मृत्यु के बाद इस्राएल के राजनीतिक ढाँचे में विभाजन हुआ और 930 ईसा पूर्व में एक विभाजित राज्य की स्थापना हुई।

जब बाबेली सेना ने यरूशलेम पर अन्तिम बार घेरा डाला (588 ईसा पूर्व) और महीनों बाद इसे जीत लिया, तब नगर पूरी तरह से नाश हो गया। यहोवा का भवन और सुलैमान का राजभवन आग से नाश कर दिए गए; शहरपनाह गिरा दी गईं। यहोवा के भवन के खजाने पूरी तरह लूट लिए गए, और बड़ी संख्या में नागरिकों को बँधुआ बना दिया गया।

द्वितीय मन्दिर काल

यिर्मयाह ने यरूशलेम के उजाड़ और 70 वर्षों की बँधुआई का पहले ही उल्लेख किया था (यिर्म 25:11; 29:10; पुष्टि करें 2 इति 36:21; दानि 9:2)। 538 ईसा पूर्व में, बाबेल के पतन के बाद, फारस के राजा कुस्रू ने अपनी प्रसिद्ध प्रचार की चिट्ठियाँ जारी की (2 इति 36:22–23; एज्रा 1:1–4; पुष्टि करें यशा 44:28; 45:1)। इसके पश्चात, यहूदा के प्रधान शेशबस्सर (एज्रा 1:8–11) और जरुब्बाबेल (2:2) के साथ यहूदियों का एक विनम्र समूह यरूशलेम लौटा। 515 ईसा पूर्व में, यहोवा के भवन के दूसरे द्वार औपचारिक रूप से खोले गए, और यरूशलेम से पुनः फसह पर्व मनाया गया (6:15–18)।

एज्रा अर्तक्षत्र के सातवें वर्ष में यरूशलेम आए (एज्रा 7:7)। यदि यह अर्तक्षत्र प्रथम का सन्दर्भ है, तो एज्रा की वापसी की तिथि 458 ईसा पूर्व मानी जाती है। फिर भी, केवल एक थोड़े से बचे हुए लोग ही इस कठिन यात्रा को करने के लिए प्रेरित हुए (पुष्टि करें जोसेफस *एंटीक्विटीज़* 11.1.3)।

नेहम्याह (नहे 1:3–4), को संकट का विवरण मिलने के बाद, अर्तक्षत्र (445 ईसा पूर्व) के 20वें वर्ष में, नेहम्याह राजा के पास से अपनी पिलानेहारे की जिम्मेदारी छोड़कर यरूशलेम जाने में सफल हुए। जहाँ पहले लौटे लोगों का ध्यान मन्दिर पर केन्द्रित था, नेहम्याह का ध्यान शहरपनाह पर था। उन्होंने यरूशलेम की बँधुआई के बाद की शहरपनाह और स्थलाकृति का सबसे व्यापक वर्णन दिया (नहे 2:11–16)। उनके ऊर्जावान उत्साह से प्रेरित होकर लोगों ने शहरपनाह के पुनःनिर्माण का कार्य 52 दिनों (6:15) में पूरा कर लिया।

रोमी काल

40 ईसा पूर्व, पारथी की सहायता से एंटीगोनस ने यरूशलेम पर चढ़ाई की और उसे अपने अधिकार में ले लिया, जिससे हेरोदेस को रातोंरात भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह रोम गया, जहाँ राज्यसभा ने उसे "यहूदियों का राजा" नियुक्त किया (पुष्टि करे मत्ती 2:1)। इस नए अधिकार से सुसज्जित होकर, हेरोदेस ने दो रोमी सैन्य दल को संगठित किया और 37 ईसा पूर्व में उसने पारथी को हमेशा के लिए बाहर निकालने में सफलता पाई। इस प्रकार हेरोदेस का लम्बा और कुख्यात राज्य काल शुरू हुआ, जो 33 वर्षों (37–4 ईसा पूर्व) तक यरूशलेम में चला।

यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि उसके राज्यकाल में यरूशलेम ने समृद्ध और शान्तिपूर्ण वर्ष देखे। हेरोदेस ने यरूशलेम की बाहरी संरचना को पूरी तरह बदल दिया। उसने प्रशासनिक केन्द्र को दक्षिण-पश्चिमी पहाड़ी पर स्थानांतरित कर दिया। यहाँ उसने एक भव्य महल, खेलकूद प्रतियोगिताओं के लिए एक रंगभूमि, एक रंगशाला, और एक विशाल जलप्रणाली का निर्माण किया।

अन्य निर्माण परियोजनाएँ मन्दिर पहाड़ी से सम्बंधित थीं। हेरोदेस ने पुरानी मक्काबी किलेबन्दी को एक बड़े ढाँचे में बदल दिया और इसका नाम मरकुस एंटनी के सम्मान में एंटोनिया रखा। मन्दिर के क्षेत्र में, उसने उत्तर और दक्षिण दोनों ओर विस्तारित कर आँगन को आयताकार आकार दिया। हेरोदेस का मन्दिर पुनर्निर्माण कार्य 20 ईसा पूर्व में शुरू हुआ और इसे लगभग 64 ईस्वी में, तीतुस द्वारा विनाश से केवल छः वर्ष पहले, पूरा किया गया (पुष्टि करें यूह 2:20)।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; नया यरूशलेम ; यहूदी धर्म; सिय्योन; सिय्योन की पुत्री।

यरूशलेम परिषद (सभा)

प्रेरितों के काम 15:6–29 में वर्णित बैठक, लगभग 50 ई. में आयोजित की गई थी। प्रेरितों के काम में दर्ज है कि यह सभा अन्यजातियों के उद्धार के लिए आवश्यक नियमों के प्रश्न को सुलझाने के लिए आयोजित की गई थी, जिसे पहले यहूदियों द्वारा अन्ताकिया में उठाया गया था (14:26–15:1) और बाद में यरूशलेम में (15:3–5)। इस विषय पर प्रेरितों और बुजुर्गों द्वारा लंबा विचार-विमर्श किया गया (पद 6), सभा के दौरान पतरस (पद 7–11), पौलुस और बरनाबास (पद 12, 22–

26), और याकूब ने अपने विचार प्रस्तुत किए (पद 13–21) जो यीशु का भाई था और संभवतः इस सभा का अध्यक्ष भी।

सभा द्वारा सहमत मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे: (1) परमेश्वर विश्वासियों, यहूदी या अन्यजाती के बीच कोई भेद नहीं करते (15:9); (2) उद्धार, अनुग्रह के द्वारा विश्वास से प्राप्त होता है (पद 9–11); (3) परमेश्वर ने चमत्कारों और अद्भुत कार्यों के माध्यम से अन्यजाती में अपनी स्वीकृति की पुष्टि की (पद 8, 12); (4) अन्यजातियों को अपने लोगों में शामिल करना परमेश्वर की योजना का हिस्सा था, जो पुराने नियम में प्रकट हुआ (पद 15–18; उद्धृत आमो 9:11–12)। सभा ने एक सूची (जिसे कभी-कभी "आदेश" कहा जाता है) भी जारी की, जिसमें अन्यजाती मसीहियों को (1) मूर्तिपूजा, (2) व्यभिचार, (3) गला घोंटकर मारे गए पशुओं का मांस खाना और (4) रक्त का सेवन करने से बचने के निर्देश दिए गए। (अंतिम दो बिंदु खाद्य संबंधी नियमों से जुड़े थे, जो यहूदियों और अन्यजाती के बीच बहुत अंतर उत्पन्न करते थे।) इस निर्णय को पत्र द्वारा अन्ताकिया, सीरिया और किलिकिया की कलीसियाओं में प्रसारित किया गया (प्रेरि 15:23; पुष्टि करें 16:4)।

इस वृत्तांत को जब प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक के संदर्भ में देखा जाता है, तो यह प्रारंभिक कलीसिया द्वारा स्वयं को समझने के संघर्ष की पराकाष्ठा बनता है। जिस यहूदी धर्म से मसीहियत का उदय हुआ था, वह एक विधिक धर्म था, जिसमें लोग परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए अनुष्ठानों और विधियों का पालन करने का प्रयास करते थे। यह एक विशेष राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी रखता था जो केवल इस्राएल को "परमेश्वर की प्रजा" मानता था और जो गैर-यहूदियों से अपेक्षा करता था कि वे परमेश्वर के साथ पहचाने जाने के लिए खतना और मूसा की व्यवस्था का पालन करें और निर्धारित बलिदान चढ़ाएं। यरूशलेम के प्रारंभिक मसीही, जिन्होंने यीशु को मसीह के रूप में पहचान लिया था, शायद इन मान्यताओं में से कुछ को मानते रहे।

प्रेरितों के काम, घटनाओं की एक श्रृंखला दर्शाती है कि कैसे यहूदी विधिवादी और विशिष्टतावादी दृष्टिकोणों की भ्रांति उजागर हुई। स्तिफनुस ने उस संकीर्ण धार्मिक दृष्टिकोण पर प्रश्न उठाया जो परमेश्वर की उपस्थिति, कार्य और चिंता को केवल यरूशलेम तक सीमित मानता था (अध्याय 7)। फिलिप ने सामरिया के लोग और एक इथियोपियाई (कुशी) अधिकारी को विश्वास में लाया (अध्याय 8), जो यहूदी धर्म से केवल नाममात्र के पारंपरिक संबंध रखते थे। परमेश्वर की प्रत्यक्ष आज्ञा से, पतरस ने कुरनेलियुस पर यीशु को मसीह और प्रभु के रूप में घोषित किया, जो कि एक अच्छा परमेश्वर-भक्त था लेकिन बिना खतना किए हुए अन्यजाती था (अध्याय 10)। इस घटना के माध्यम से पतरस ने पहचाना कि परमेश्वर लोगों के बीच भेदभाव नहीं करते (10:34–35)। कुरनेलियुस और उसके परिवार पर पवित्र आत्मा का निर्विवाद आगमन (पद 44), अन्यजातियों की परमेश्वर द्वारा स्वीकृति का आश्चर्यजनक प्रमाण प्रदान करता है, जिसे इस घटना के गवाह बने निष्ठावान यहूदी, खतना समर्थक समूह के सदस्यों द्वारा भी संदेह नहीं किया जा सकता था (पद 45–48) या जिन्हें बाद में इसकी सूचना दी गई (11:1–18)। कुरनेलियुस का परिवर्तन पतरस द्वारा परिषद में बाद में उद्धृत किया गया एक उदाहरण बन गया (15:7–11)।

कुरनेलियुस की परमेश्वर द्वारा स्वीकृति को कई कट्टर यहूदी मसीहियों द्वारा एक असाधारण मामला माना जा सकता है। यूनानी लोगों के अंताकिया में परिवर्तन (11:20), उस नगर में एक नस्लीय और सांस्कृतिक रूप से मिश्रित कलीसिया की स्थापना (जैसा कि प्रेरि 13:1 में उल्लेखित अगुवों की विविध पृष्ठभूमियों से संकेत मिलता है), और पौलुस की दक्षिण-मध्य एशिया माइनर में धर्म-प्रचारक यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में अन्यजातियों के परिवर्तन के कारण यह असंभव बना (अध्याय 13–14)।

प्रेरितों के काम में लिखा है कि इस समय यरूशलेम से यहूदी मसीही अन्ताकिया आए और उस संकट को उत्पन्न किया जिसने सभा के आयोजन को आवश्यक बना दिया। उनका यह आग्रह कि अन्यजाति विश्वासियों का खतना किया जाए और मूसा की व्यवस्था का पालन किया जाए, उन्हें राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक रूप से यहूदी बनने की मांग के समान था ताकि वे मसीही बन सकें। प्रारंभिक कलीसिया इस प्रकार यह स्पष्ट करने की आवश्यकता का सामना कर रही थी कि उसका यहूदी धर्म के साथ संबंध क्या है (क्या यह उसका हिस्सा है या उससे अलग है?) और उस उद्धार का स्वभाव क्या है जिसे वह प्रचारित कर रही थी (राष्ट्रीयतावादी और व्यवस्थावादी या अनुग्रह के द्वारा विश्वास से?)।

यरूशलेम की परिषद (सभा) ने इस सत्य को स्थापित किया कि उद्धार एक मुफ्त उपहार है जिसे विश्वास के द्वारा प्राप्त किया जाता है; इसने उद्धार के साधन या योगदानकर्ता के रूप में मानव प्रयासों को अस्वीकार कर दिया। इसके द्वारा इसने मसीही धर्म को किसी विशेष जातीय, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक या सामाजिक समूह तक सीमित करने के किसी भी प्रयास से अलग कर दिया। परिषद ने मसीहियों को अनुष्ठानों या व्यवस्था के पालन से उद्धार प्राप्त करने के कार्यों से मुक्त घोषित किया। साथ ही, इसने ज़िम्मेदार और उपयुक्त आचरण की व्यावहारिक आवश्यकता को भी मान्यता दी, जो परमेश्वर के नैतिक स्वभाव और अन्य मसीहियों की संवेदनशीलताओं और चिंताओं को ध्यान में रखता है।

यह भी देखें प्रेरितों के काम की पुस्तक; गलातियों के नाम पत्री; यहूदीकरण करने वाले; प्रेरित पौलुस।

यरूशा, येरूशाह

सादोक की बेटी, यहूदा के राजा उज्जियाह की पत्नी और राजा योताम की माता (2 रा 15:33; 2 इति 27:1, जिसे वैकल्पिक रूप से "येरूशाह" लिखा गया है)।

यरेमै

यरेमै

हाशूम के पुत्र जिन्होंने एज्रा की इस सलाह का पालन किया कि वे बँधुआई के बाद अपनी विदेशी पत्नी को तलाक दें (एज्रा 10:33)।

यरेमोत

1. बेकेर के नौ पुत्रों में से एक और बिन्यामीन के गोत्र का एक अगुवा (1 इति 7:8)। कुछ संस्करणों में उसका नाम यरीमोत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

2. बिन्यामीन जो बरीआ का पुत्र और यरूशलेम में निवास करने वाले अपने परिवार का मुखिया था (1 इति 8:14)।

3. मरारी के परिवार के लेवियों में से और मूशी के तीन पुत्रों में से एक, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान पंजीकृत थे (1 इति 23:23)। उसका नाम यहाँ और 1 इतिहास 24:30 में वैकल्पिक रूप से यरीमोत लिखा गया है।

4. हेमान का पुत्र और 24 में से 15वें भाग के संगीतकारों का अगुवा, जो प्रभु के घर में सेवा के लिए प्रशिक्षित था (1 इति 25:22)। यहाँ पर और 1 इतिहास 25:4 में भी उसका नाम यरीमोत लिखा गया है।

5. अज्रीएल का पुत्र और दाऊद के शासनकाल के दौरान नप्ताली के गोत्र का प्रधान अधिकारी (1 इति 27:19)। कुछ ग्रंथों में उसका नाम यरीमोत लिखा गया है।

6. एलाम के वंशजों में से एक, जिसे एज्रा द्वारा बँधुआई के बाद के काल में अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:26)।

7. जत्तू के वंशजों में से एक, जिसे एज्रा ने अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया था (एज्रा 10:27)।

8. बानी के वंशजों में से एक, जिसे एज्रा द्वारा अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:29)। उसे केजेवी में "रामोत" भी कहा गया है।

यरोहाम

1. कहात के परिवार का एक लेवी, एल्काना का पिता और भविष्यद्वक्ता शमूएल तथा गायक हेमान का पूर्वज। हेमान दाऊद के शासनकाल के दौरान पवित्रस्थान में एक संगीतकार था (1 शमू 1:1; 1 इति 6:27, 34)।

2. बिन्यामिनी, जिसके पुत्र यरूशलेम में रहते थे और अपनी प्रजा के बीच वे अगुवे थे (1 इति 8:27)। वह संभवतः नीचे #3 के समान है।

3. बिन्यामीन और यिबनायाह का पिता। यिबनायाह, जो अपने परिवार का मुखिया था, वह बाबेल की बँधुआई से यरूशलेम लौट आया था (1 इति 9:8)।

4. पशहूर का वंशज और याजक अदायाह का पिता। अदायाह बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (1 इति 9:12; नहे 11:12)।

5. गदोर का बिन्यामीनी जिसके दो बेटे योएला और जबद्याह सिकलग में दाऊद की मदद के लिए आए थे (1 इति 12:7)।

6. दाऊद के शासनकाल के दौरान दानियों के मुख्य अधिकारी अजरेल का पिता (1 इति 27:22)।

7. अजर्याह का पिता, जो उन सेनापतियों में से एक था जिसने यहूदा के सिंहासन से रानी अतल्याह को हटाकर योआश (यहोआश) को सिंहासन पर बैठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जो कि वास्तविक दावेदार था (2 इति 23:1)।

यर्मूत

यर्मूत

1. शेफेला के उत्तरी भाग में स्थित एक किलेबंद शहर जिसे यहूदा के गोत्र को विरासत के रूप में दिया गया था (यहो 15:35)। यह उन पांच एमोरी शहरों में से एक था जिन्होंने गिबोन पर हमला करने के लिए एकजुट होकर हमला किया था, जब उन्होंने यहोशू और इस्राएल के साथ शांति स्थापित की थी (10:3–5)। बंधुआई के बाद यहूदा के लोगों द्वारा यर्मूत को फिर से आबाद किया गया (नहे 11:29), और संभवतः विस्थापन के दौरान भी इसकी आबादी बनी रही। इसे खिरबेत यरमुक के साथ पहचाना जाता है, जो यरूशलेम से 18 मील (29 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। पुरातात्विक प्रमाण बताते हैं कि कांस्य युग के शहर का क्षेत्रफल छह से आठ एकड़ (2.4 से 3.2 हेक्टेयर) था और इसकी आबादी लगभग 1,500 से 2,000 लोग थी। इसका अमरना पत्रों में लाकीश से सहायता प्राप्त करने के रूप में उल्लेख किया गया है।

2. लेवियों को उनकी विरासत के लिए दिए गए इस्साकार के चार शहरों में से एक (यहो 21:28–29)। यह 1 इतिहास 6:73

में रामोत और यहोशू 19:21 में रेमेत के साथ पहचाना जाता है। फ़िरौन सेती प्रथम की एक शिला बेतशान में मिली थी, जो पूरे क्षेत्र को यर्मूत पहाड़ के रूप में संदर्भित करती है।

यह भी देखें लेवियों के शहर।

यर्हा

यर्हा

शेशान का मिस्री सेवक, यरहमेल वंशी, जिसका विवाह उसके स्वामी की बेटी से कर दिया गया था। शेशान ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं थे (1 इति 2:34–35)।

यशाना

एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में सीमावर्ती शहर जिसे यहूदा के राजा अबिय्याह (913–910 ईसा पूर्व) ने गृह युद्ध के दौरान राजा यारोबाम प्रथम (930–909 ईसा पूर्व) और उत्तरी राज्य से छीन लिया था (2 इति 13:19)। "यशाना" का यूनानी और सीरियाई पाठन उन शहरों में से एक है जिसके बीच शमूएल ने एबेनेज़र पत्थर खड़ा किया था, जिसे 1 शमूएल 7:12 में इब्रानी "शेन" से बेहतर माना जा सकता है। इसका स्थान संभवतः बेतेल से चार मील (6.4 किलोमीटर) उत्तर में बुर्ज एल-इसानेह के पास है।

यशायाह

भविष्यद्वक्ता यशायाह का उल्लेख। *देखें* यशायाह (व्यक्ति)।

यशायाह

1. हनन्याह का पुत्र; रपायाह का पिता और जरूब्बाबेल की वंशावली के माध्यम से दाऊद का वंशज, जो बँधुआई के बाद के फिलिस्तीन में रहता था (1 इति 3:21)।

2. यदूतून का पुत्र और 24 संगीतकारों के आठवें विभाग का अगुवा, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान निवासस्थान में सेवा के लिए प्रशिक्षित था (1 इति 25:3, 15)।

3. रहब्याह का पुत्र और लेवियों में से एक, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान मंदिर के खजाने का प्रभारी था (1 इति 26:25)।

4. अतल्याह का पुत्र जो एलाम के घराने से था और जो एज्रा के साथ बाबेली बंदीगृह के बाद यहूदा लौटे (एज्रा 8:7)।

5. मरारी के परिवार का लेवी, जो एज्रा के साथ बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (एज्रा 8:19)।

6. यह बिन्यामीनी इतीएह का पिता और सल्लू का पूर्वज था। सल्लू बँधुआई के बाद के युग में यरूशलेम में पुनः बस गया (नहे 11:7)।

यशायाह (व्यक्ति)

आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान भविष्यद्वक्ता थे; बाइबल की पुस्तक यशायाह के लेखक। यशायाह आमोस के पुत्र थे (यशा 1:1) और संभवतः राजा अमस्याह के रिश्तेदार थे। यरूशलेम में पले-बढ़े, यशायाह को राजधानी में उपलब्ध सर्वोत्तम शिक्षा मिली। वह लोगों के बारे में भी गहरी जानकारी रखते थे, और वह देश के राजनीतिक और धार्मिक सलाहकार बन गए। राजाओं तक उसकी आसान पहुँच थी और ऐसा लगता है कि वह कई शासनकालों के लिए यहूदा के दरबार में इतिहासकार थे (2 इति 26:22; 32:32)।

यशायाह की पत्नी को एक भविष्यद्वक्तिन (यशा 8:3) के रूप में संदर्भित किया गया है और उनके कम से कम दो पुत्र थे, शार्याशूब (7:3) और महेर्शालाल्हाशबज (8:3)। यशायाह की पारंपरिक पोशाक भविष्यद्वक्ता की पोशाक थी, अर्थात, जूतियाँ और बकरी के बालों या टाट का वस्त्र। अपनी सेवकाई के दौरान एक समय पर, यहोवा ने यशायाह को तीन वर्षों की अवधि के लिए नग्न और नंगे पैर जाने का आदेश दिया, (केवल कमरबन्द पहनकर) (20:2–6)। यह उस मण्डली में अपमानजनक रहा होगा जो सावधानीपूर्वक पोशाक संहिता द्वारा स्थिति को मापता था।

यशायाह ने सामाजिक और राजनीतिक गलतियों को सुधारने के लिए प्रयास किया। यहाँ तक कि मण्डली के सबसे ऊँचे लोग भी उनकी निंदा से बच नहीं पाए। उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं को फटकार लगाई और उन धनी, प्रभावशाली लोगों की निंदा की जिन्होंने अपनी स्थिति की जिम्मेदारियों को अनदेखा करते थे। उन्होंने लोगों को परमेश्वर की वाचा के प्रति उदासीन होने के बजाय आज्ञाकारी बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने राजाओं को उनकी मनमानी और संवेदनशीलता की कमी के लिए फटकार लगाई।

यशायाह की लेखनी परमेश्वर की महिमा और पवित्रता के प्रति गहरी जागरूकता व्यक्त करती है। भविष्यद्वक्ता ने न केवल कनानी मूर्तिपूजा की निंदा की बल्कि अपने ही लोगों की धार्मिक प्रथाओं की भी आलोचना की, जो केवल बाहरी समारोह थे और जिनमें ईमानदारी की कमी थी (1:10–17; 29:13)। उन्होंने मूर्तिपूजक यहूदियों पर आसन्न न्याय का प्रचार किया, यह घोषणा करते हुए कि केवल एक धार्मिक अवशेष ही बचेगा (6:13)।

यशायाह ने मसीह के आगमन की भविष्यद्वाणी की, जो "शान्ति का राजकुमार" और परमेश्वर के राज्य के शासक होंगे (11:1–11; पुष्टि करें 9:6–7)। उन्होंने इस मसीह को एक पीड़ित, आज्ञाकारी सेवक के रूप में भी चित्रित किया (53:3–12)। यशायाह भविष्यद्वक्ताओं में अपनी कल्पना की विविधता और भव्यता के लिए प्रमुख थे। उनकी कल्पना शक्ति से प्रभावशाली एवं शानदार अलंकार उत्पन्न होते थे।

यशायाह ने उत्तरी इस्राएल के राज्य के अंतिम तीन दशकों के दौरान भविष्यद्वाणी की, लेकिन क्योंकि वे यरूशलेम में, यहूदा में रहते थे, उन्होंने इस्राएल का बहुत कम प्रत्यक्ष संदर्भ दिया। हालाँकि, जब वह राज्य गिर गया, तो यहूदा अश्शूर द्वारा विजय के लिए खुला था। यशायाह ने राजा आहाज को विदेशी उलझनों से बचने और अपने लोगों की रक्षा के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहने की सलाह दी। उस सलाह को नजरअंदाज करते हुए, आहाज ने अश्शूर के साथ एक गठबंधन कर लिया।

यह हिजकिय्याह था, आहाज का धर्मपरायण पुत्र, जिसने यहूदा को इस खतरनाक स्थिति से निकालने की कोशिश की। जब सन्हेरीब के नेतृत्व में अश्शूर यरूशलेम के पास पहुँचे, तो यशायाह ने हिजकिय्याह और यहूदियों को शहर की रक्षा के लिए यहोवा पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया, और "यहोवा के दूत" ने सन्हेरीब की सेना को नष्ट कर दिया (37:36–38), जिससे हिजकिय्याह और यहूदियों के लिए थोड़े समय के लिए शान्ति बनी रही।

इब्री भविष्यद्वाणी यशायाह के साथ अपने शिखर पर पहुँची, जिसे पुराने नियम और नए नियम दोनों में बहुत सम्मान दिया गया। इस सम्मान का एक संकेत उनके नाम से जुड़ा अप्रमाणिक साहित्य का संग्रह है।

यह भी देखें यशायाह की पुस्तक; इस्राएल का इतिहास; भविष्यद्वाणियाँ; भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्तिन।

यशीमोन

यशीमोन

1. मृत सागर के अंत में उजाड़ जंगल, पिसगा और पोर से दूर नहीं (गिन 21:20; 23:28)। दोनों संदर्भों में इसे पाठ में "उजाड़ भूमि" के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन किनारे में "यशीमोन" है, जिससे इसे एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। आरएसवी "मरूभूमि" का उपयोग करता है।

2. हकीला की पहाड़ी के उत्तर में और माओन के जंगल में (1 शमू 23:19, 24; 26:1–3); यह स्थान संभवतः हेब्रोन के कुछ मील दक्षिण में स्थित था।

यशीशै

यहूदा के राजा योताम के दिनों में गाद का वंशज (1 इति 5:14)।

यशूरून

यशूरून

यशायाह 44:2 में इस्राएल के लिए एक काव्यात्मक नाम यशूरून का उल्लेख किया गया है, जो राजा याकूब के वंशजों के लिए प्रयोग होता है।

देखें यशूरून।

यशोहायाह

यशोहायाह

हिजकिय्याह के दिनों में 13 शिमोनी राजकुमारों में से एक, जिसने गदोर के तराई पर आक्रमण में भाग लिया था; उन्होंने उस क्षेत्र के निवासियों को मार डाला और उनकी भेड़ों के चरागाह के लिए भूमि ले ली (1 इति 4:36)।

यसरेला

यसरेला

अशरेला या असरेला का एक प्रकार, 1 इतिहास 25:14 में एक लेवी संगीतकार का नाम। *देखें* अशरेला।

यसीएल

यसीएल

1 इतिहास 11:47 में मसोबाई यासीएल का केजेवी रूप। *देखें* यासीएल #1।

यसीमीएल

13 शिमोनी राजकुमारों में से एक, जिसने राजा हिजकिय्याह के समय गदोर की तराई पर आक्रमण में भाग लिया, वहां के निवासियों को मार डाला और अपनी भेड़ों के चरागाह के लिए भूमि ले ली (1 इति 4:36)।

यहजयाह

यहजयाह*

एज्रा 10:15 में यहजयाह, तिकवा के पुत्र का केजेवी अनुवाद। *देखें*यहजयाह।

यहजयाह

यहजयाह

तिकवा के पुत्र और उन व्यक्तियों में से एक जिनका उल्लेख इस्राएलियों और उनकी विदेशी पत्नियों के बीच तलाक की कार्यवाही के सम्बन्ध में किया गया है (एज्रा 10:15)। इस बात पर मतभेद हैं कि वह कार्यवाही के पक्ष में थे या विरोध में। जबकि इब्री पाठ को दोनों तरीकों से न्यायसंगत रूप से पढ़ा जा सकता है, व्याकरण उस व्याख्या का समर्थन करता है कि यहजयाह ने कार्यवाही का विरोध किया (देखें एनएलटी)।

यहजीएल

यहजीएल

1. बिन्यामीन के गोत्र से योद्धा, जो राजा शाऊल के खिलाफ अपने संघर्ष में दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुआ था। यहजीएल, दाऊद के उन योद्धाओं में से एक था जो दोनों हाथों से तीर और गोफन चलाने में निपुण था (1 इति 12:4)।

2. दाऊद ने जिन दो याजकों को नियुक्त किया था उनमें से एक ने संदूक के सामने तुरही बजाई, जब उसे यरूशलेम के तम्बू में लाया गया, जहाँ वह सुलैमान द्वारा मंदिर के निर्माण के पूरा होने तक रहा (1 इति 16:6)।

3. कहाती समूह से संबंधित लेवी जिसे दाऊद ने मंदिर के कार्यों के लिए नियुक्त किया था (1 इति 23:19; 24:23)।

4. आसाप के वंशजों में से एक लेवी जिसने यहोशापात और यहूदा की सेना को प्रोत्साहित किया कि वे मोआबी और अम्मोनी सेनाओं की विशाल संख्या से घबराएं नहीं जो उनके विरुद्ध आ रही थीं, बल्कि चुपचाप खड़े रहकर प्रभु की विजय देखें (2 इति 20:14)। यहोशापात की प्रतिक्रिया ने एक धार्मिक राजा का उदाहरण प्रस्तुत किया जो अपने लोगों को उनके परमेश्वर प्रभु में विश्वास रखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे (पद 18–21)।

5. शकन्याह का पिता। शकन्याह बँधुआई के बाद एज्रा के साथ यरूशलेम लौटा था (एज्रा 8:5)।

यहजेरा

एक याजक के पूर्वज जो बाबेली बँधुआई के बाद यहूदा लौटे (1 इति 9:12)। उन्हें नहेम्याह 11:13 में अहजै कहा गया है। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है, सिवाय इसके कि वह इम्मेर नामक एक याजक का परपोता था, जो बँधुआई से पहले यरूशलेम में रहता था।

*यह भी देखें*अहजै।

यहत

यहत

1. रायाह का पुत्र और अहूमै और लहद का पिता जो यहूदा के गोत्र सोराई में से था (1 इति 4:2)।

2. गेर्शोनी लेवी (1 इति 6:20), जिसके वंशज आसफ को राजा दाऊद ने मंदिर में संगीतकार के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया था (पद 43)।

3. शिमी का एक वंशज, जो गेर्शोन के वंशज और लेवी के गोत्र से संबंधित था (1 इति 23:10–11)।

4. शलोमोत का पुत्र जो कि लेवी के गोत्र से था (1 इति 24:22)।

5. मरारीय वंशी लेवी, जो योशिय्याह के अधीन मंदिर की मरम्मत के पर्यवेक्षकों में से एक था (2 इति 34:12)।

यहदीएल

यहदीएल

मनश्शे के गोत्र के परिवार के प्रमुखों में से एक, जो यरदन के पूर्व में भूमि के आवंटन के बाद निवास कर रहे थे (1 इति 5:24)। उसका अपने गोत्र के पराक्रमी योद्धाओं में से एक के रूप में उल्लेख किया गया था।

यहदो

यहदो

गादी, बूज का पुत्र और कई वीर पुरुषों का पूर्वज, जो इस्राएल के राजा यारोबाम (793–753 ईसा पूर्व) और यहूदा के राजा योताम (750–735 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान पंजीकृत थे (1 इति 5:14)।

यहमै

यहमै

इस्साकार के गोत्र से तोला का पुत्र (1 इति 7:2)।

यहलेल, यहलेलियों

जबूलून के पुत्र (उत् 46:14) और यहलेलियों के कुल के संस्थापक (गिन 26:26)।

यहल्लेलेल

यहल्लेलेल

1. यहूदा के वंशज जिसके चार पुत्र थे (1 इति 4:16)।

2. मरारी के परिवार का लेवी, जिसके पुत्र अजर्याह ने हिजकिय्याह के समय में मंदिर की शुद्धि में भाग लिया था (2 इति 29:12)।

यहस

मृत सागर के पूर्व में स्थित नगर (आधुनिक काल में यरदन) वह स्थान है, जहाँ इस्राएलियों ने सीहोन, एमोरियों के राजा को पराजित किया था, जब उन्होंने इस्राएलियों को अपनी भूमि से गुज़रने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था (गिन 21:23; व्य.वि. 2:32; न्या 11:20)। यहोशू 13:18 के अनुसार, मूसा ने इस नगर को रूबेन के गोत्र को उनके हिस्से के रूप में दिया था। नगर और इसके आसपास के चरागाहों को मरारीवंशी लेवियों को दिया गया था (यहो 21:36; 1 इति 6:78)।

बाद के समयों में, यशायाह (यश 15:4) और यिर्मयाह (यिर्म 48:21) दोनों द्वारा भविष्यवाणी के वचनों में, इसे मोआब की भूमि में एक शहर के रूप में संदर्भित किया गया है। यह संकेत दे सकता है कि इसे मोआब द्वारा इस्राएल से लिया गया था (जो संभवतः सीहोन की विजय से पहले था)। इस शहर का उल्लेख मोआबी पत्थर (जो दीबोन स्टेले के नाम से जाना जाता है और लगभग 845 ई.पू. का है) पर किया गया है, जहाँ मोआब के राजा, मेशा इस्राएल के साथ युद्ध के दौरान रहते थे। मेशा के अनुसार, उन्होंने यहस को इस्राएल से लिया और इसे अपनी भूमि में शामिल कर लिया।

यहस

यहस का वैकल्पिक रूप, यह एक शहर है जो मृत सागर के पूर्व में स्थित है, जिसका उल्लेख 1 इतिहास 6:78 और यिर्मयाह 48:21 में है। *देखें*यहस।

यहस*, यहस*

यहस*, यहस*

*देखें*यहस।

यहसेल

1 इतिहास 7:13 में नप्ताली के पुत्र यहसेल की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यहसेल, यहसेलियों।

यहसेल, यहसेलियों

नप्ताली के पुत्र (उत् 46:24; 1 इति 7:13) और यहसेलियों के कुल के संस्थापक (गिन 26:48)।

यहिजकिय्याह

यहिजकिय्याह

शल्लूम का पुत्र और यहूदा में आहाज के शासनकाल के दौरान एप्रैम का प्रधान। उन्होंने विजयी इस्राएल द्वारा यहूदा के लोगों को गुलाम बनाने का विरोध किया (2 इति 28:12)।

यहिय्याह

एक लेवी जिसे ओबेद-एदोम के साथ उस समय सन्दूक का द्वारपाल नियुक्त किया गया था जब दाऊद उसे यरूशलेम ले आया था (1 इति 15:24)।

यहुदियाह

यह एक समुचित नाम नहीं था; केजेवी में "यहूदी" का गलत अनुवाद किया गया है, जो मेरेद की यहूदी पत्नी को उसकी दूसरी पत्नी से अलग करने वाला वर्णनात्मक शब्द है, जो एक मिस्र की राजकुमारी थी (1 इति 4:18)।

यहुब्बा

यहुब्बा

आशेर के गोत्र से शेमेर के पुत्र के लिए एक वैकल्पिक वर्तनी (1 इति 7:34)।

यहुब्बा

यहुब्बा

आशेर के गोत्र से शेमेर का पुत्र (1 इति 7:34)।

यहूकल

यहूकल

शेलेम्याह का एक पुत्र, जिसे राजा सिदकिय्याह ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह से यहूदा के लिए प्रार्थना करने के लिए भेजा था (यिर्म 37:3; 38:1)। बाद में उसने यिर्मयाह को मारने की कोशिश की। इसका कारण यह था कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी करना जारी रखा कि बाबेलवासी यरूशलेम पर आक्रमण करेंगे। यहूकल को लगा कि यिर्मयाह की भविष्यवाणी लोगों और सेना को हतोत्साहित कर रही थी (38:1–6)।

यहूद

यह विजय के बाद दान के गोत्र को दिए गए नगरों में से एक था (यहो 19:45)। इसे विभिन्न रूप से एल-यहूदीयेह गांव के साथ, जो याफा से लगभग सात मील (11.3 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व में है, और याजूर के साथ, जो याफा से लगभग पांच मील (8 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व में है पहचाना गया है।

यहूदा (व्यक्ति)

1. याकूब के 12 पुत्रों में से चौथे (उत्पत्ति 35:23; 1 इतिहास 2:1) और लिआ और याकूब के चौथे पुत्र। लिआ ने उनका नाम यहूदा रखा, जिसका अर्थ है "स्तुति," क्योंकि वह याकूब को एक और पुत्र देने के लिए उत्साहित थीं (उत्पत्ति 29:35)। यहूदा के पाँच पुत्र थे:
   2. एर
   3. ओनान
   4. शेला, शूआ नामक एक कनानी स्त्री की बेटी से उत्पन्न हुए (उत्पत्ति 38:3–5; 1 इतिहास 2:3)
   5. तामार, उनकी बहू द्वारा जुड़वाँ पेरेस और जेरह (उत्पत्ति 38:29–30; 1 इतिहास 2:4)

उन्होंने अंततः अपने परिवार को मिस्र में अपने पिता और भाइयों के साथ बसाया (निर्ग 1:2)। परमेश्वर ने उनके पहले दो पुत्रों, एर और ओनान, को कनान में उनकी अवज्ञा के कारण मार डाला (उत 46:12)। यहूदा इस्राएल के 12 गोत्रों में से एक के संस्थापक बने (गिन 1:26–27)।

यहूदा तामार के साथ लापरवाह थे (उत 38:6–30)। हालांकि, उन्होंने मिस्र में बिन्यामीन की सुरक्षा के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेकर और यूसुफ के सामने अपने भाइयों की ओर से बोलकर मजबूत निर्णय लेने की क्षमता दिखाई (उत 44:14–18)। याकूब के आशीर्वाद के समय, यहूदा को पहलौठे के विशेषाधिकार दिए गए। यहूदा का परिवार याकूब के परिवार की अगुआई, और अब्राहम की वाचा का प्रतिज्ञा किया गया मसीह यहूदा के वंश से होगा (उत 49:8–12)। बाद में, रूत की बोअज से सगाई के समय यहूदा के परिवार की प्रशंसा की गई (रूत 4:12), और दाऊद का राजवंश (1 इति 2:1–15; 3:1–24) और यीशु मसीह यहूदा के वंश से थे (मत्ती 1:2–3; लूका 3:33)।

*यह भी देखें*यीशु मसीह की वंशावली; यहूदा का गोत्र।

1. लेवियों के एक परिवार के पिता जिन्होंने बाबेल में बँधुआई के बाद के समय में मन्दिर के पुनर्निर्माण में महायाजक येशुअ की सहायता की (एज्रा 3:9)। उन्हें एज्रा 2:40 में होदव्याह और नहेम्याह 7:43 में होदवा भी कहा गया है।
   *देखें*होदव्याह #4।
2. उन लेवियों में से एक जिन्हें एज्रा द्वारा अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:23)।
3. बिन्यामीन वंशी, हस्सनूआ के पुत्र, जो नहेम्याह के दिनों में यरूशलेम नगर के ऊपर दूसरे स्थान पर थे (नहेम्याह 11:9)।
4. उन लेवी अगुओं में से एक जो जरूब्बाबेल और येशुअ के साथ बाबेल की बँधुआई के बाद यहूदा लौटे (नहेम्याह 12:8)।

5. यहूदा के राजकुमारों में से एक जिन्होंने बाबेल में बँधुआई के बाद के समय में यरूशलेम की शहरपनाह को समर्पित करने में सहायता की (नहेम्याह 12:34)।
6. उन पुरोहितों में से एक जिन्होंने नहेम्याह के दिनों में यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण पर एक वाद्ययंत्र बजाया था (नहेम्याह 12:36)। वह संभवतः ऊपर #5 के समान हैं।
7. यूसुफ के पुत्र, शमौन के पिता और यीशु मसीह के पूर्वज (लूका 3:30)। *देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

यहूदा (व्यक्ति)

याकूब के भाई और यहूदा की पत्री के लेखक का नाम। जूड़ यूनानी नाम जूडस (इब्रानी यहूदा) का अंग्रेजी रूप है। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यहूदा यीशु के भाई थे जिन्हें यहूदा कहा जाता था। *देखें*यहूदा #2।

*यह भी देखें*यीशु के भाई; यहूदा की पत्री।

यहूदा इस्करियोती

*देखिए*यहूदा #1।

यहूदा के गोत्र का सिंह

यहूदा के गोत्र का सिंह

मसीह (परमेश्वर के चुने हुए अगुवा) की एक उपाधि जो केवल प्रका 5:5 में प्रकट होता है: "यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है,...जयवन्त हुआ है।" यह उत्प 49:9–10 के वादे, "यहूदा सिंह का बच्चा है। . . . न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा" का सन्दर्भ है।

यह अभिव्यक्ति पुराने नियम की आशा को संक्षेप में प्रस्तुत करती है कि मसीह अपने लोगों के हर प्रकार की आत्मिक, राजनीतिक, और सामाजिक दुष्टता पर जयवन्त होंगे और उन्हें छुड़ाएंगे (तुलना करें 2 एसड्रास 11:37; 12:31)। पुराने नियम में सिंह का अक्सर शक्ति और अपने शत्रुओं को पराजित करने की क्षमता के रूपक के रूप में उपयोग किया जाता है (अय्यू 10:16; भज 10:9; यहेज 1:10; दानि 7:1–4)।

प्रकाशितवाक्य के लेखक कहते हैं कि सभी मसीही विश्वास करते हैं कि मसीह सभी दुष्ट शक्तियों को पराजित करेंगे। हालाँकि, पुराने नियम की आशा के विपरीत, मसीह सैन्य शक्ति वाले विजयी सिंह के रूप में नहीं आएंगे, बल्कि मेम्ने के रूप में आएंगे, जो अपने लोगों के पापों के लिए कष्ट उठाते हैं और बलिदान होते हैं (प्रका 5:6)।

यहूदा बरसब्बास

यहूदा बरसब्बास

*देखें*यहूदा #6।

यहूदा मक्काबियस

*देखिए*यहूदा मक्काबियस।

यहूदा मक्काबी

मत्ताथ्याह का तीसरा पुत्र; 166 ईसा पूर्व में रोम के खिलाफ यहूदी विद्रोह का अगुवा। उनका उपनाम, मक्काबी (शायद एक अरामी शब्द है जिसका अर्थ है "हथौड़ा चलाने वाला"), बाद में पूरे हसमोनी परिवार के लिए प्रयुक्त हुआ।

यहूदा मक्काबी यहूदियों के इतिहास में महान सेनापतियों में से एक था। केवल कुछ हजार अनुयायियों के साथ, उन्होंने लिसियस द्वारा सेनापति टॉलेमी, निकानोर और गोर्गियास के अधीन भेजी गई श्रेष्ठ सीरियाई सेनाओं का सामना किया, जिसे आन्तिओकस चौथा एपिफानेस के सीधे आदेश थे कि "इस्राएल की ताकत और यरूशलेम के बचे हुए लोगों को मिटा दो और नष्ट कर दो; ... उनका स्मरण इस जगह से मिटा दो, उनके पूरे क्षेत्र में विदेशियों को बसाओ, और उनकी ज़मीन को वितरित करो"(1 मक्क 3:35–36)। जब 40,000 से अधिक पैदल और 7,000 घुड़सवारों का सामना होने पर, यहूदी विद्रोहियों ने कहा, "हमारे लिए अपने राष्ट्र और पवित्रस्थान के दुर्भाग्य को देखने की तुलना में युद्ध में मरना बेहतर है। परन्तु स्वर्ग में जैसी उसकी इच्छा होगी, वह वैसा ही करेगा" (पद 59–60)। प्रथम मक्काबी 4:1–25 उनके गोर्गियास पर गूंजती हुई विजय को दर्ज करता है, "उस दिन इस्राएल को एक महान मुक्ति मिली" (पद 25)।

यहूदा ने लूसियास से शान्ति प्राप्त की (165 ईसा पूर्व), और 164 ईसा पूर्व में उनकी सेना ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया, जहाँ मन्दिर को ज्यूस के आराधना की अशुद्धता से शुद्ध किया गया और दैनिक यहूदी बलिदान को पुनर्स्थापित किया गया। इस घटना को यहूदियों के पर्व हनुक्का, या स्थापन पर्व (यूह 10:22) द्वारा स्मरण किया जाता है। यहूदा ने यहूदिया में और उसके आसपास के दुश्मनों का विरोध करके अपने अधिकार को मजबूत किया और अपनी शक्ति

का विस्तार उत्तर में गलील और पूर्व में गिलाद तक किया। 163 ईसा पूर्व में सीरिया ने यहूदियों की धार्मिक स्वतंत्रता को मान्यता दी। जैसा कि मक्काबी प्रथम लूसियास को उद्धृत करता है: "आओ हम इन लोगों के साथ समझौता करें, . . . और सहमत हों कि उन्हें अपने व्यवस्था के अनुसार जीने दें जैसा कि वे पहले करते थे; क्योंकि यह उनके व्यवस्था के कारण था, जिन्हें हमने समाप्त कर दिया था कि वे क्रोधित हो गए और ये सब चीजें कीं" (1 मक्क 6:58–59)।

धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ बलवा, जो यहूदा के पिता मत्ताथ्याह के साथ शुरू हुआ था, राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए एक युद्ध बन गया। इस उद्देश्य के लिए, यहूदा ने रोम के साथ मित्रता का एक समझौता किया (1 मक्क 8:1 से आगे)। लेकिन सीरियाई सिंहासन पर दिमेत्रियुस प्रथम के आरोहण का यहूदिया पर प्रभाव पड़ा। एक विश्वासघाती यहूदी जिसका नाम अल्कीमस था, जो महायाजक के पद पर नजर रखता था, उसने नए राजा के सामने यहूदा के खिलाफ आरोप लगाए। इसलिए, दिमेत्रियुस ने बक्कीदेस और अल्कीमस को एक सेना के साथ यहूदा मक्काबी को दंडित करने के लिए भेजा (7:1 से आगे)। उन्होंने उसे धोखे से हराने की कोशिश की लेकिन केवल 60 निर्दोष हसीदीम को मारने में सफल रहे।

तो नीकानोर, "जो इस्राएल से घृणा और नफरत करता था" (1 मक्क 7:26), को एक और सीरियाई सेना के साथ भेजा गया। वह भी यहूदा के हाथों पराजित हुआ (161 ईसा पूर्व), और "यहूदा की भूमि को कुछ दिनों के लिए विश्राम मिला" (1 मक्क 7:50)। अंततः बक्कीदेस और अल्कीमस लौटे और फिर से यहूदा के साथ युद्ध में शामिल हुए। यहूदियों की संख्या 20 से 1 थी क्योंकि उनकी अधिकांश सेनाएँ भाग गई थीं, और यहूदा अलासा में हुए युद्ध में मारा गया (9:1 से आगे)। इस्राएल ने शोक व्यक्त किया, इस्राएल का उद्धारकर्ता, शक्तिशाली कैसे गिर गया!" (पद 21), और मक्काबी नेतृत्व योनातान और उनके भाई शमौन के पास चला गया।

यहूदा-बाले, यहूदा के बाले

किर्यत्यारीम का अन्य नाम था। यह यरूशलेम से तेल अवीव जाने वाले मार्ग पर स्थित गाँव था (2 शमू 6:2)।

देखें किर्यत्यारीम।

यहूदा, का गोत्र

इस्राएल की 12 गोत्रों में से एक।

भौगोलिक क्षेत्र

यहूदा की सीमाएँ यहोशू 15 में स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं, जो विजय के बाद गोत्र को विरासत मे मिले स्थान का वर्णन करती हैं। 2 राजाओं 23:8 मे यहूदा को गेबा से बेर्शेबा तक विस्तारित मे दी ए स्थान बताते हैं: गेबा यरूशलेम के लगभग 8 मील (13 किलोमीटर) उत्तर में है, और बेर्शेबा लगभग 40 मील (64 किलोमीटर) दक्षिण में है। इस प्रकार यहूदा ने दक्षिणी फिलिस्तीन की केंद्रीय रीढ़ पर पर्वतीय भूमि की एक पट्टी को धारण किया, जो उत्तर से दक्षिण तक लगभग 50 मील (80 किलोमीटर) और पूर्व से पश्चिम तक 20 मील (32 किलोमीटर) थी। इस 1,000 वर्ग मील मे आधा मरूभूमि थी (दक्षिण और पूर्व में); शेष भाग पत्थरीला था और इसमे जल की कमी थी । केंद्रीय रिज, जिस पर यरूशलेम, हेब्रोन और बेर्शेबा स्थित हैं, दक्षिण में रेगिस्तान में सिमटने से पहले कुछ स्थानों पर 3,000 फीट (914 मीटर) से अधिक ऊँचे थे। इस रिज के साथ, इन नगरों को जोड़ने वाला प्रधान मार्ग था। पूर्व की ओर, रिज मृत सागर तक तेजी से गिरता है, जो लगभग 5,000 फीट (1,524 मीटर) नीचे है। पश्चिम की ओर यह कम तीव्रता से "निचले क्षेत्रों" तक गिरता है, जो वास्तव में लगभग 1,000 फीट (305 मीटर) ऊँचा एक पठार है, फिर पलिश्ती मैदान तक उतरता है, जो समुद्र तक फैला हुआ है।

यहूदा का मुख्य भाग (यरूशलेम बाद में जोड़ा गया) अपने पहाड़ों में सुदूर और सुरक्षित था। इसका असली केंद्र और राजधानी हेब्रोन था, जो 3,500 फीट (1,067 मीटर) ऊँचाई पर स्थित था। केवल उत्तर की ओर यह आक्रमणकारियों से असुरक्षित था जो दक्षिण की ओर पहाड़ी सड़क के साथ आक्रमण करते थे। हालांकि, तीन महान घाटियाँ पश्चिमी तराई से पहाड़ों की ओर जाती थीं: अयालोन की तराई, सोरेक की तराई, और एला की तराई। यहोशू के दिनों से लेकर दाऊद के समय तक और उसके बाद भी इन घाटियों में युद्ध होते रहे। पूर्व की ओर जाने वाली कुछ सड़कें (यरूशलेम से यरीहो की सड़क सबसे प्रसिद्ध है) इतनी महत्वपूर्ण नहीं थीं, हालांकि इस "पिछले द्वार" से यहोशू ने पहाड़ी देश पर आक्रमण किया था (यहो 10:9)। इस प्रकार यहूदा भौगोलिक रूप से इस्राएली जीवन की मुख्य धारा से बाहर था, क्योंकि केवल शिमोन का क्षेत्र दक्षिण में स्थित था।

यहूदा द्वारा घिरा हुआ क्षेत्र आसानी से तीन स्वाभाविक क्षेत्रों में विभाजित होता है: केंद्रीय पर्वतीय श्रृंखला, जो काफी घनी आबादी वाला है, विशेष रूप से इसके पश्चिमी हिस्से में, जहाँ वर्षा और ओस सबसे अधिक होती है; पूर्वी ढलान, जो लगभग निर्जन और अधिकांशतः मरूभूमि है; और दक्षिणी चरागाह क्षेत्र बेर्शेबा के चारों ओर, जहाँ पहाड़ सूखे मैदान में बदल जाते हैं, और पूरे क्षेत्र में विरल बस्तियाँ हैं।

आर्थिक जीवन

इस्राएल के लिए, फिलिस्तीन एक भूमि थी जो दूध और शहद से बहती थी (गिन 13:27)। आधा यहूदा मरूभूमि हो सकता है, लेकिन बाकी के पास अच्छी मिट्टी थी, और पश्चिमी ढलानों पर बारिश आमतौर पर पर्याप्त होती थी। गेहूं, जौ, जैतून, अंजीर, और विशेष रूप से अंगूर के बाग़ स्वतंत्र रूप से उगते

थे। भूमि पत्थरीली हो सकती थी, लेकिन पत्थरों को इकट्ठा करके दीवारों और इमारतों के लिए प्रयोग किया जा सकता था। यिज्रेल जैसी उत्तरी घाटियों की तरह समृद्ध नहीं, यहूदा फिर भी अच्छा मिश्रित खेती का देश था, हालांकि इसके लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता थी। भेड़ और बकरियां प्रचुर मात्रा में थे, और इसका मतलब ऊन और दूध था। मवेशी शायद कम थे; यहूदा मवेशी देश नहीं था जैसे बाशान (गिन 32:1)। ऊन का मतलब वस्त्र था, और खाल का मतलब चमड़े। उन दिनों पहाड़ वनाच्छादित थे, जिसकाअर्थ ईंधन और निर्माण सामग्री थी। घरेलू बर्तनों के लिए मिट्टी आसानी से उपलब्ध थी। तांबा दक्षिण में एदोम से आता था, और यिरोन पश्चिम में फिलिस्तिया से; इन्हें कृषि उत्पादों के बदले प्राप्त किया जा सकता था। चाहे उन्हें इसका एहसास हो या न हो, परमेश्वर ने यहूदा के लोगों को पर्याप्त संसाधन देकर उनसे कृपा से व्यवहार किया था। हालकी वहाँ के जलवायु भी उत्साहजनक थे : एक ठंडी, गीली सर्दी, कभी-कभी बर्फ और ओले के साथ, और एक लंबी, बिना बारिश की गर्मी, कम आर्द्रता और ठंडी राते। इससे पूर्वी ढलानों पर भारी ओस आती थी (न्याय 6:38), और कीमती वर्षा जल चट्टान से खोदी गई कुंडों में संरक्षित किया जाता था (यिर्म 2:13)। यहूदा में किसी भी आकार की स्थायी धाराएं नहीं थीं, लेकिन यरूशलेम से बेर्शेबा तक झरने या "कुएं" प्रचुर मात्रा में थे। यहूदा का जीवन तब तक नहीं बदला जब तक वह सुलैमान के व्यापारिक साम्राज्य के आर्थिक जीवन में नहीं फंस गया; तब भी, यहूदा की पहाड़ियों में परिवर्तन अन्यत्र की तुलना में बहुत कम था। यहूदा का अपना कोई बंदरगाह नहीं था और न ही कोई समृद्ध कारवां मार्गों पर नियंत्रण था। इसके पास एदोम के तांबे या लबानोन के देवदार जैसी कोई मूल्यवान कच्ची सामग्री नहीं थी; फीनीके के बैंगनी रंग या ओपीर के सोने जैसी कोई विलासिता की वस्तुएं व्यापार के लिए नहीं थीं; दूसरों के लालच को लुभाने के लिए कोई हरी-भरी भूमि नहीं थी। परमेश्वर की करुणा से यहूदा मे प्रलोभन कम थे। इसका विश्वास भी भ्रष्ट होने की संभावना कम थी: इस क्षेत्र में बहुत कम कनानी बसे थे, जबकि दक्षिणिय विजय उत्तर की तुलना में अधिक थी।

इतिहास और महत्व

यहूदा पर प्रारंभिक आशीर्वाद उत्पत्ति 49:8–12 और व्यवस्थाविवरण 33:7 में दर्ज हैं। निर्गमन के बाद, यहूदा का गोत्र मरूभूमि शिविर व्यवस्था में पहले स्थान पर था (गिन 2:3)। कालेब, जो दो विश्वासयोग्य जासूसों में से एक थे, यहूदा के एक गोत्र का प्रमुख था (गिन 13:6)। यहोशू की फिलिस्तीन पर आक्रमण के दौरान, यहूदा को आवंटित पहाड़ी क्षेत्र कनानियों से सबसे पहले मुक्त किए गए थे, यरीहो और ऐ के आसपास की प्रारंभिक लड़ाई के बाद (यहो 6; 8)। यहोशू की पुस्तक पूरे अभियान का सारांश है।

यहोशू की मृत्यु के बाद, शिमोन और यहूदा ने कनानियों के खिलाफ लड़ाई जारी रखी और कालेब और ओत्नीएल के नेतृत्व में दक्षिण के पहाड़ी देश के खिलाफ एक साथ आक्रमण किया। हालांकि परमेश्वर का यहूदा को उपहार स्वरूप समुद्र तक पश्चिम की पूरी भूमि थी, परंतु यहूदा पहाड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं ले सका। मैदान क्षेत्र लोहे के सुरक्षित रथों और किलेबंद शहरों का नियंत्रण थे। यरूशलेम के राजा को मार दिया गया और यरूशलेम को जला दिया गया (न्यायि 1:8), लेकिन यबूसियों ने दाऊद के समय तक उस क्षेत्र पर कब्जा बनाए रखा (पद्य 21)। यहूदा के लोग, अन्य इस्राएलियों की तरह, कनानी शहरों को जला सकते थे, लेकिन वे आमतौर पर पुराने स्थलों पर खुद कब्जा नहीं करते थे। न्यायियों के तहत, यहूदा का गोत्र अभी भी अलग-थलग था, हालांकि ओत्नीएल यहूदा का था (अध्याय 3)। सीसरा के खिलाफ महान युद्ध में, यहूदा का उल्लेख भी नहीं है (अध्याय 5)। यह गोत्रीय विभाजन जल्द ही खो गया, पहले पश्चिम से पलिश्ती आक्रमणों के माध्यम से, और फिर दाऊद के यरूशलेम पर कब्जा करने और वहां राष्ट्रीय और धार्मिक राजधानी स्थापित करने के माध्यम से। हालांकि न्यायि 15:11 में यहूदा के लोग शिमशोन को पलिश्तियों के हवाले करने के लिए भी तैयार हैं, शमूएल के न्यायाधीश बनने के साथ सब कुछ बदल जाता है। सन्दूक लौट आया (1 शमू 7:1); खोया हुआ क्षेत्र फिर से प्राप्त हुआ (पद्य 14)। वास्तव में, शमूएल के पुत्र बेर्शेबा में न्यायाधीश के रूप में कार्य करते हैं (8:2), हालांकि वे भ्रष्ट हैं।

दाऊद ने अंततः पलिश्तियों की शक्ति को कई विजयों में तोड़ दिया और पहले हेब्रोन में यहूदा के प्रधान नगर में राजा के रूप में शासन किया (2 शमू 2:1–4)। जब उन्हें पूरे इस्राएल का राजा बनाया गया, तब उन्होंने राजधानी को नव-अधिग्रहीत यरूशलेम में स्थानांतरित किया, जो यहूदा के गोत्र की उत्तरी सीमा पर था (5:6–10)। यहाँ पर सन्दूक लाया जाना था (अध्याय 6), और यहाँ सुलैमान को मन्दिर बनाना था (7:13)। सभी परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ अब यरूशलेम, मन्दिर, और दाऊद की वंशावली के चारों ओर केंद्रित थी। सबसे महत्वपूर्ण, मसीह यहूदा से आएंगे (उत 49:10)।

उत्तरी और दक्षिणी गोत्रों के बीच विभाजन दाऊद के जीवनकाल में ही शुरू हो गया था, अबशालोम के विद्रोह के बाद (2 शमू 20:1); सुलैमान की मृत्यु के बाद, यह विभाजन पूरा हो गया (1 रा 12:16)। इसके बाद 200 वर्षों तक, जब तक 722 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य का पतन नहीं हुआ, दो छोटे राज्य एक-दूसरे के बगल में थे: एक बड़ा राज्य उत्तर और पूर्व में, जिसे इस्राएल कहा जाता था (जिसे 1 रा 11:35 के "दस गोत्र" कहा जाता है), और एक छोटा राज्य दक्षिण में, जिसे यहूदा कहा जाता था। इसके साथ, यहूदा की गोत्र के रूप में इतिहास लगभग समाप्त हो जाता है, क्योंकि यद्यपि इसे अभी भी पुराने गोत्र के नाम से पुकारा जाता था, यह छोटा राज्य वास्तव में "महान यहूदा" था। इसमें अब न केवल पुराना यहूदा का गोत्र था बल्कि नवविजित यबूसी जो यरूशलेम क्षेत्र मे थे शामिल थे, कुछ पुराने पलिश्ती देश, और बिन्यामीन और

शिमोन के गोत्र, साथ ही कई लेवी (2 इति 11:14) और अन्य "वफादार" लोग उत्तर से शामिल थे। वास्तव में, अब से, "गोत्र" का पहले की तुलना में बहुत कम अर्थ था; यह अधिक महत्वपूर्ण था कि व्यक्ति कहाँ रहता था बजाय इसके कि वह किस गोत्र का था, यद्यपि परिवार के भीतर, गोत्रीय उत्पत्ति को याद किया जाता रहा। 250 और वर्षों तक यहूदा का छोटा राज्य अकेला बना रहा। यहाँ तक कि बँधुआई के बाद भी यहूदा का छोटा प्रांत नहेम्याह के अधीन उभरा (नहे 1:2–3), और यहूदिया अभी भी एनटी के दिनों में एक जिला बना रहा (लूका 3:1)। वास्तव में, बाद के अधिकांश यहूदी यहूदा के गोत्र के थे, जैसा कि स्वयं नाम "यहूदी" दर्शाता है। लेकिन यहूदा के गोत्र की प्रधान महिमा, अब और हमेशा की तरह, यह थी कि दाऊद का घर इससे उत्पन्न हुआ। जब यीशु मसीह का जन्म हुआ, तो वे दाऊद की वंशावली और यहूदा के गोत्र से होने वाले थे। इसलिए प्रकाशितवाक्य 7:5 में, जब प्रत्येक गोत्र से 12,000 को मुहरबंद किया जाता है, यहूदा को सूची में गर्व का स्थान मिलता है, बहुत पहले,जैसा कि गिनती में था (गिन 2:3)।

*यह भी देखें*यहूदा (व्यक्ति) #1।

यहूदिया

*देखें*यहूदिया, यहूदी।

यहूदिया, यहूदिया वासी

यहूदिया, यहूदिया वासी

"यहूदियों की भूमि," विशेष रूप से बंधुआई के बाद। चूंकि निर्वासन से लौटने वाले अधिकांश इस्राएली यहूदा के गोत्र से थे, उन्हें यहूदी या यहूदिया वासी कहा जाता था और उनकी भूमि को यहूदिया कहा जाता था। पवित्र भूमि का यह हिस्सा बाइबल के छात्रों के लिए हमेशा से बहुत रुचिकर रहा है क्योंकि इस क्षेत्र में यरूशलेम और बैतलहम जैसे स्थान स्थित हैं, जहाँ मसीह के जीवन और सेवकाई की घटनाएँ हुई थीं।

परिभाषा

एज्रा 5:8 में पहली बार प्रयुक्त, यह शब्द फारसी साम्राज्य के एक प्रांत को निर्दिष्ट करता है। यह यूनानियों द्वारा फारसियों से क्षेत्र का नियंत्रण लेने के बाद मकाबियों की अवधि के साहित्य में भी उल्लेखित है (1 मक 5:45; 7:10)। रोमी काल में यहूदिया को सीरिया के रोमी प्रांत में शामिल कर लिया गया था, जब तक कि हेरोदेस महान को लगभग 37 ई. पू. में यहूदिया का राजा घोषित नहीं किया गया। कभी-कभी, यहूदिया शब्द का अर्थ यहूदी राष्ट्र द्वारा कब्जा किए गए सभी क्षेत्र से होता है, अर्थात् पश्चिमी फिलिस्तीन का पूरा क्षेत्र (लूका 23:5; प्रेरि 10:37; 26:20)। नये नियम काल के धर्मनिरपेक्ष लेखकों ने, जिनमें स्ट्राबो, टैसिटस और फिलो शामिल हैं, इस शब्द का व्यापक अर्थ में उपयोग किया, लेकिन अपने सामान्य और सख्त अर्थ में यह फिलिस्तीन के दक्षिणी क्षेत्र को दर्शाता है। अन्य दो जिले या क्षेत्र, गलील उत्तरी क्षेत्र में और सामरिया केंद्रीय क्षेत्र में थे।

भूगोल

हालांकि विभिन्न ऐतिहासिक कालों में यहूदिया की भौगोलिक सीमाएँ हमेशा समान नहीं थीं, यह प्रांत उन क्षेत्रों को शामिल करता था जो कभी यहूदिया, दान, बिन्यामीन, और शिमोन के गोत्रों के अंतर्गत आते थे। उत्तरी सीमा, जो यहूदिया और सामरिया को अलग करती है, अन्य सीमाओं की तुलना में कम निश्चित है क्योंकि कोई प्राकृतिक भौगोलिक अवरोध नहीं है—कोई घाटी नहीं, कोई जलाशय नहीं, कोई भूभाग में अंतर नहीं—जो विभाजन को दर्शाए। हालांकि, ऐसा माना जाता है कि उत्तरी सीमा रेखा भूमध्य सागर पर याफा से लेकर यरदन नदी के एक बिंदु तक चली गई थी, जो मृत सागर के उत्तर में लगभग 10 से 12 मील (16 से 19 किलोमीटर) की दूरी पर है।

दक्षिणी सीमा लगभग सात मील (11 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम गाज़ा के निकट तट से शुरू होकर बेर्शेबा से होते हुए मृत सागर तक विस्तारित थी। न्यायियों 20:1 के अनुसार, बेर्शेबा राष्ट्र की दक्षिणी सीमा थी, और इसलिए इसे यहूदिया की दक्षिणी सीमा के रूप में सही रूप से माना जाता है। पूर्वी सीमा मृत सागर थी, और पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर थी। इसलिए यहूदिया का आकार लगभग 45 मील (72 किलोमीटर) चौड़ा एक वर्गाकार क्षेत्र था।

इतिहास

यहूदिया का इतिहास फारसी काल (539–331 ई.पू.) में शुरू होता है, जब कुस्रू ने यहूदियों को अपने मंदिर और पवित्र नगर यरूशलेम का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी। यूनानी काल (334–167 ई.पू.) में यह क्षेत्र सेल्यूसीड के नियंत्रण में आ गया, जो सिकन्दर के एक सेनापति के वंशज थे और सीरिया में शासन करते थे। उनके यहूदी धर्म को नष्ट करने के प्रयासों ने हास्मोनियन परिवार के नेतृत्व में यहूदी विद्रोह को जन्म दिया और यहूदियों ने लगभग सौ वर्षों तक स्वतंत्रता का आनंद लिया (167–63 ई.पू.)। 63 ई.पू. में पोम्पेई ने रोम के लिए फिलिस्तीन पर विजय प्राप्त की और अंततः हेरोदेस महान को राजा बनाया गया (37–4 ई.पू.), जिनके बाद उनके पुत्र हेरोदेस अरखिलाउस (4 ई.पू.–6 ई.) ने शासन किया। इसके बाद रोमियों ने राजकीय राज्यपाल की एक श्रृंखला नियुक्त की जिन्हें प्रोक्यूरेटर्स कहा जाता था और इन्होंने यहूदिया, सामरिया और इदूमिया (यहूदिया के दक्षिण में) पर 66–70 के यहूदी विद्रोह तक शासन किया, सिवाय 41 से 44

के वर्षों के, जब हेरोदेस महान के पोते, हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम ने पूरे फिलिस्तीन पर शासन किया।

यहूदिया का भाग्य पूरे फिलिस्तीन का भाग्य रहा है और यह नये नियम के समय के अंत के बाद से कई क्रूर विजेताओं को जानता रहा है। यह देश रोम के अधीन था जब तक कि 330 में यह कांस्टेंटिनोपल या बिजेंटियम के अधीन नहीं आया और कई मसीही कलीसियों का निर्माण देखा (330–634)। फारसियों ने फिर से आक्रमण किया (607–629 ईस्वी), मसीही कलीसियों को नष्ट कर दिया और कई लोगों को मार डाला। अरब काल (634–1099 ईस्वी) में यहूदिया पर मुस्लिम नियंत्रण आया, जिसे क्रूसेडर्स (1099–1263) द्वारा बाधित किया गया, जो मुसलमानों से पवित्र भूमि को बचाने के लिए दृढ़ थे। क्रूसेडर्स की अंतिम हार के बाद, मुसलमानों ने आधुनिक काल (1917–वर्तमान) तक नियंत्रण फिर से प्राप्त कर लिया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, यहूदिया फिलिस्तीन पर ब्रिटिश शासन का हिस्सा था। 1948 में इसे इस्राएल और यरदन के बीच विभाजित किया गया और जून 1967 के छः दिवसीय युद्ध में इस्राएल की जीत के परिणामस्वरूप, यहूदिया फिर से एकीकृत हो गया और यहूदियों के नियंत्रण में आ गया।

यह भी देखें यहूदियों का प्रवास; यहूदी धर्म; फिलिस्तीन; बंधुवाई के बाद का समय।

यहूदियों का प्रवास

यहूदियों का इस्राएल से विदेशी भूमि में फैलाव। डायस्पोरा (प्रवास), एक यूनानी संज्ञा जिसका अर्थ है "बोना" या "तितर-बितर," सेप्टुआजेंट में नियमित रूप से "निर्वासन" का अर्थ देने के लिए उपयोग किया जाता है (यिर्म 25:34; पुष्टि करें यशा 11:12; यहेज 20:23; सप 3:10)। यह शब्द नए नियम में दो बार आता है (याकू 1:1; 1 पत 1:1), जो इस्राएल के इतिहास में कई विस्थापनों के परिणामस्वरूप फिलिस्तीन के बाहर रहने वाले मसीही यहूदियों को संदर्भित करता है। डायस्पोरा (प्रवास) कभी-कभी बंधुआई में गए लोगों को संदर्भित करता है, तो कभी बंधुआई के स्थान को।

प्रमुख प्रवासी समुदाय

आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत से, यहूदी इतिहास कई प्रमुख विस्थापनों द्वारा चिह्नित किया गया था।

उत्तरी राज्य का प्रवास

सुलैमान की मृत्यु के बाद, उसका राज्य दो भागों में बंट गया। उत्तरी राज्य इस्राएल मूर्तिपूजा और अनैतिकता में गहराई से डूब गया (2 रा 17:14–18)। विभाजित इस्राएल के पहले राजा यारोबाम ने अविश्वास का एक नमूना स्थापित किया (विश्वास "से गिरना")। उत्तराधिकारियों के लिए शिलालेख नियमित रूप से दर्ज करते थे कि मृत शासक "यारोबाम के पापों के अनुसार करने से वह अलग न हुआ" (10:31; 13:11; 14:24; 15:9, 18, 24, 28)। अश्शूर ने 722 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य को जीत लिया और 27,000 से अधिक इस्राएलियों को बंधुआई में ले लिया, जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी (17:23)। उन्हें फरात नदी की सहायक नदियों के किनारे और मादिया में शहरों में बसाया गया। बदले में, बाबेल के आसपास के शहरों के अश्शूरियों ने इस्राएल में उपनिवेश (कोलोनी) स्थापित किए (पद 6, 24)।

दक्षिणी राज्य का प्रवास

यहूदा के दक्षिणी राज्य को पूर्व में बाबेल में और दक्षिण में मिस्र में बंधुआई का सामना करना पड़ा। बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने 605 ईसा पूर्व से लेकर 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन तक कई अभियानों में यहूदियों को बंदी बना लिया। बाबेल का पहला निर्वासन यरूशलेम के मंदिर और महल के खजाने और "सब हाकिमों और सब धनवानों को जो मिलकर दस हजार थे और सब कारीगरों और लोहारों को बन्दी बनाकर ले गया, यहाँ तक कि साधारण लोगों में से कंगालों को छोड़ और कोई न रह गया।" (2 रा 24:12–14; पुष्टि करें 2 इति 36:10; यिर्म 52:29–30)।

एक साल बाद दूसरा अभियान विद्रोही यहूदी जागीरदार राजा सिदकिय्याह और उसके पुत्रों पर केंद्रित था (2 रा 25:1, 6–7; यिर्म 52:4–11)। नबूकदनेस्सर के शासन के 19वें वर्ष में, बाबेल ने तीसरी बार यहूदा पर हमला किया, मंदिर और राजा के महल को नष्ट कर दिया और नगर की दीवारों को तोड़ दिया। सबसे गरीब लोगों को छोड़कर सभी को बंदी बनाकर ले जाया गया (2 रा 25:8–21; यिर्म 52:12–16)।

मिस्र के राजा शिशक ने यहूदा से बंधुआई में गए लोगों को 10वीं शताब्दी ईसा पूर्व में ही बंधुआई में भेज दिया था। उस समय यहूदा ने लोगों को और मंदिर का सोना भी खो दिया था (1 रा 14:25–26; 2 इति 12:9)। लगभग 400 साल बाद, यहूदा के योहानान ने सोचा कि वह नबूकदनेस्सर से मिस्र भागकर बच सकता है। योहानान ने यिर्मयाह और अन्य यहूदियों के एक समूह को अपने साथ जाने के लिए मजबूर किया; वे मिग्दोल, तहपन्हेस और मेम्फिस में बस गए। फिर भी, बेबीलोनियों ने उनका पीछा किया, मिस्र पर नियंत्रण कर लिया और वहां कई यहूदियों को मार डाला (यिर्म 43:5–44:30)। संपत्ति के स्वामित्व के रिकॉर्ड और एक वेदी की कलाकृतियों से पता चलता है कि कुछ बचे हुए बंधुआई में गए लोगों ने मिस्र में स्थायी उपनिवेश (colonies) स्थापित किए (यशा 19:18–19)।

अन्य प्रवासी समुदाय

मिस्र के राजा टॉलेमी प्रथम (323–285 ईसा पूर्व) ने लगभग 300 ईसा पूर्व में कई यहूदियों को बंदी बना लिया और उन्हें

मिस्र ले गए। उन बंधुआई में गए लोगों ने सिकन्दरिया को आबाद किया, जो बाद में यूनानी और यहूदी विद्वता का केंद्र बन गया। अन्यत्र, सीरिया के एंटिओकस तृतीय (महान) (223–187 ईसा पूर्व) द्वारा कसदियों के देश से फ्रूगिया और लुदिया में बड़ी संख्या में यहूदियों को भेजा गया। रोमियों ने एक बड़ी संख्या में यहूदियों को रोम में बसाया। रोमी प्रमुख पोम्पे ने पहली शताब्दी ईसा पूर्व में कई यहूदियों को वहां गुलाम के रूप में ले लिया।

यहूदी कितने व्यापक रूप से बिखरे हुए थे, इसका संकेत नए नियम की पुस्तक प्रेरितों के काम में मिलता है, जहाँ लूका ने यरूशलेम के आगंतुकों की सूची दी है: पारथी, मेदी, एलाम लोग, मेसोपोटामिया, यहूदिया, कप्पदूकिया, पुन्तुस, आसिया प्रांत, फ्रूगिया, पंफूलिया, मिस्र और लीबिया के क्षेत्र कुरेने की ओर, रोमी प्रवासी (दोनों यहूदी और यहूदी मत में परिवर्तित), क्रेती और अरबी (प्रेरि 2:9–11)। "प्रवास" के वे यहूदी पिन्तेकुस्त के पर्व को मनाने के लिए यरूशलेम में थे।

अन्य यहूदी समुदाय उन मकिदुनिया के शहरों में स्थित थे जिनका दौरा प्रेरित पौलुस ने अपने मिशनरी यात्राओं के दौरान किया था: थिस्सलुनीके, बिरीया और कुरिन्थ (प्रेरि 17:1, 10; 18:2–4)। पहली सदी ईस्वी के मध्य के आसपास, रोमी सम्राट क्लौदियुस ने सभी यहूदियों को रोम छोड़ने का आदेश दिया (18:2)। विद्वानों का अनुमान है कि यीशु के जन्म के समय फिलिस्तीन में यहूदी जनसंख्या लगभग चार से छह मिलियन अर्थात् 40 से 60 लाख के बीच थी। फिलिस्तीन की तुलना में विस्थापित जनसंख्या कई गुना अधिक थी; एशिया उपद्वीप, मेसोपोटामिया और सिकन्दरिया में प्रत्येक में एक मिलियन (10 लाख) से अधिक की आबादी वाले समुदाय फले-फूले। आज, एक राष्ट्रीय मातृभूमि के बावजूद, इस्राएल के बाहर रहने वाले यहूदियों की संख्या अंदर रहने वालों की तुलना में कहीं अधिक है।

अपने तितर-बितर होने के बावजूद, विभिन्न प्रवासों के यहूदी कई प्रथाओं के माध्यम से फिलिस्तीनी यहूदियों के साथ एक बुनियादी एकता बनाए रखे। (1) महान राष्ट्रीय पर्व—फसह का पर्व, अख़मीरी रोटी का पर्व और झोपड़ियों का पर्व (निर्ग 23:12–17; व्य. वि. 16:1–17)—विदेशों में भी मनाए जाते रहे। (2) मंदिर के रखरखाव के लिए उपयोग किए जाने वाले मंदिर कर (निर्ग 30:11–16) को विदेशी यहूदी समुदायों में भी एकत्र किया गया, यहां तक कि मंदिर के नष्ट हो जाने के बाद भी। (3) सभी यहूदी हर जगह महासभा (यहूदी धार्मिक परिषद) के अधिकार को मान्यता देते थे।

सकारात्मक पहलू

बंधुआई में यहूदियों ने मूर्ति पूजा को त्यागने की प्रवृत्ति दिखाई, जिसने उन्हें आंशिक रूप से परमेश्वर से दूर कर दिया था। उनकी बंधुआई ने उन्हें प्रार्थना और शिक्षा के संस्थान के रूप में आराधनालयों की स्थापना करने के लिए प्रेरित किया। सिकन्दरिया के यहूदियों ने पुराने नियम के शास्त्रों का अनुवाद यूनानी में किया, जो उस समय की अंतर्राष्ट्रीय भाषा थी। परिणामस्वरूप, सेप्टुआजेंट नामक संस्करण बना, जिसे अक्सर नए नियम के लेखकों द्वारा उद्धृत किया गया है।

मसीही दृष्टिकोण से, तितर-बितर हुए यहूदी समुदायों का एक विशेष महत्व था। उन्होंने मसीही विश्वास के प्रसार के लिए रणनीतिक आधार प्रदान किए, जो जल्दी उन समुदायों से निकलकर आसपास की गैर-यहूदी दुनिया में फैल गया। इस प्रकार, परमेश्वर ने गैर-यहूदियों तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए इन तितर-बितर हुए लोगों का उपयोग किया (रोम 1:11–15; 1 कुरि 10:11–12)।

अंत में, यहूदी जो पश्चिमी संस्कृति में तितर-बितर हुए हैं, उन्होंने कला, विज्ञान और मानविकी को बहुत समृद्ध किया है। कुछ अन्य लोगों ने उनके यहूदी होने के नाते बहुत भयंकर जातीय कट्टरता का सामना किया है और फिर भी उस अस्वीकृति को इतनी उत्कृष्ट सांस्कृतिक वरदानों और अनुग्रहों से पुरस्कृत किया है। यद्यपि यीशु मसीह की कलीसिया एक "नया इस्राएल" और एक "चुनी हुई जाति" बन गई है (1 पतरस 2:9), इतिहास और पवित्रशास्त्र की गवाही यह दर्शाती है कि परमेश्वर की यहूदियों में अभी भी एक अनोखी रुचि है।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; बंधुआई के बाद की अवधि।

यहूदियों का फैलाव

देखे यहूदी प्रवासी।

यहूदी

नतन्याह के पुत्र और यहूदा के राजा यहोयाकीम के दूत। कुछ हाकिमों ने यहूदी को भविष्यद्वक्ता बारूक को बुलाने के लिए भेजा ताकि वे यिर्मयाह के पुस्तक को निजी तौर पर उन्हें पढ़ सकें। बाद में, यहोयाकीम ने यहूदी को वही पुस्तक सार्वजनिक रूप से उनके सामने और सभी सभा के सामने पढ़ने का आदेश दिया। फिर उन्होंने उस लेखन को जला दिया (यिर्म 36:14–23)।

यहूदी

यहूदी का निवासी या यहूदा से संबंधित कोई व्यक्ति। अंग्रेजी शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच से हुई है।

यहूदी साहित्य, बाइबल के

पुराना नियम

इब्रानी शब्द पहली बार 2 राजाओं 16:6, में प्रकट होता है, जिसका अर्थ है "यहूदा के नागरिक।" यह छठी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में बाबेल में बँधुआई से पहले यिर्मयाह के काल में लोकप्रिय हो गया (यिर्म 32:12)। इससे विदेशी राष्ट्रों के बीच राष्ट्रीय पहचान की बढ़ती भावना का पता चला। यिर्मयाह 34:9 एक कथन में "यहूदी" का उपयोग करता है जो इस बात पर जोर देता है कि नागरिकों को दासता से स्वतंत्रता का अधिकार था। यिर्मयाह 52:28 बँधुआ नागरिकों की गिनती करते समय इसका उपयोग करता है।

एक बार जब लोग बँधुआई में थे, तो इस शब्द ने धार्मिक अर्थ ले लिया। यहूदी आस-पास के लोगों से अलग थे क्योंकि वे एक सच्चे परमेश्वर में विश्वास करते थे। यहूदियों और अन्यजाती (या गैर-यहूदियों) के बीच एक अलगाव विकसित हुआ। दानिय्येल 3:8–12, कुछ यहूदियों पर अनुचित बाबेली धार्मिक प्रथाओं का आरोप लगाया गया है। एस्तर विदेशी भूमि में यहूदी पहचान और अस्तित्व पर चर्चा करती हैं। एस्तेर 8:17 धर्मांतरण के माध्यम से अन्यजाती के यहूदी बनने की बात करता है।

बँधुआई के बाद, "यहूदी" का धार्मिक अर्थ जकर्याह 8:23 में व्यक्त किया गया है, जो कहता है कि गैर-यहूदी यहूदियों की खोज करेंगे क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे। एज्रा 4:12, में "यहूदी" शब्द का उपयोग लौटे हुए बंधुओं के लिए किया गया है। नहेम्याह भी इसे इस प्रकार उपयोग करता है (नहेम्याह 1:2; 4:2)। नहेम्याह 13:24 यहूदियों के लिए सामाजिक अलगाव के महत्व पर ज़ोर देता है। यह सिखाता है कि यहूदियों को अपने विश्वास के कारण अन्यजातियों से विवाह नहीं करनी चाहिए। नहेम्याह ने ऐसे विवाहों के विरुद्ध सख्त असहमति जताई।

नया नियम

नए नियम में, "यहूदी" का समान अर्थ है। नए नियम के दस्तावेजों ने गैर-यहूदियों को कुछ यहूदी रीति-रिवाजों के बारे में बताया (मरकुस 7:3; यूहन्ना 5:1; 19:40)। नया नियम यहूदियों को गैर-यहूदियों (प्रेरितों के काम 11:19), सामरियों (यूहन्ना 4:9, 22), और यहूदी मत धारण करनेवालों (प्रेरितों के काम 2:10) से अलग करता है। जबकि यहूदी मसीही लोगों को "यहूदी" कहा जा सकता है (गलातियों 2:13), यहूदी और मसीही के बीच धार्मिक भिन्नताएँ प्रमुख रूप से उजागर की जाती हैं।

रोमियों 2:17–29 में, पौलुस "यहूदी" शब्द का विश्लेषण करते हैं। वह इस बात पर जोर देते हैं कि इस शब्द का सच्चा अर्थ अनुष्ठानों के बजाय परमेश्वर के प्रति आंतरिक दृष्टिकोण में निहित है। पौलुस शायद मसीही मत अपनाने से पहले यहूदी के रूप में अपनी असफलताओं पर विचार कर रहे थे (तुलना करें फिलेमोन 3:3–6)। रोमियों 2:29 में "प्रशंसा" का उनका उल्लेख इस गद्यांश का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह शब्दों का एक प्रभावशाली इस्तेमाल है: इब्रानी में, यहूदा का अर्थ है "प्रशंसा" (उत्पत्ति 29:35; तुलना करें 49:8)।

पौलुस मसीही मत को पुराने नियम के विश्वास का सच्चा उत्तराधिकारी मानते हैं। प्रकाशितवाक्य 2:9 और 3:9 इस बात से सहमत हैं कि यहूदी होना जन्म और आराधनालय के अनुपालन (यहूदी धार्मिक सेवाओं में भाग लेना) से कहीं अधिक है। ये गद्यांश यीशु को परमेश्वर के चुने हुए मसीहा होने के दावों से संबंधित हैं (तुलना करें रोमियों 9:3–5; 10:1–4)। नया नियम यहूदियों का मसीही संदेश के प्रति विरोध दिखाता है। सुसमाचार यहूदियों के लिए आपत्तिजनक था (1 कुरिन्थियों 1:23)। पौलुस के पास मजबूत यहूदी प्रमाण पत्र थे (प्रेरितों के काम 26:4–7) लेकिन फिर भी उन्हें पीड़ादायक यहूदी हमलों का सामना करना पड़ा (प्रेरितों के काम 21:11; 23:12, 27)। प्रकाशितवाक्य 2:9 और 3:9 यहूदियों के विरोध को शैतानी बताते हैं: वे परमेश्वर के विरोधी, शैतान का काम कर रहे थे।

यूहन्ना का सुसमाचार "यहूदी" शब्द का उपयोग लगभग 70 बार करता है, जबकि अन्य सुसमाचारों में 5–6 बार है। जबकि कुछ उपयोग तटस्थ हैं, यूहन्ना अक्सर "यहूदियों" का उपयोग धार्मिक अधिकारियों के लिए करते हैं, विशेष रूप से यरूशलेम में, जिन्होंने यीशु का विरोध किया (यूहन्ना 5:18; 9:18; 11:8; 18:36)।

यूहन्ना 9:22 में, अंधे व्यक्ति के यहूदी माता-पिता "यहूदियों" से डरते हैं जो उनकी जांच कर रहे हैं। यूहन्ना 18:14, "यहूदी" का उपयोग प्रधान याजक और फरीसियों को संदर्भित करने के लिए किया गया है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि लेखक, जो यहूदी थे, सभी यहूदियों के खिलाफ नफरत व्यक्त नहीं कर रहे थे। उन्होंने उन लोगों की निंदा की जिन्होंने यीशु का विरोध किया, न कि पूरे जाति या लोगों की। वह आनंद से उन यहूदियों का उल्लेख करते है जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया (यूहन्ना 8:31; 11:45: 12:11)। नतनएल को एक मसीही यहूदी के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है, एक सच्चा इस्राएली "इसमें कपट नहीं" (यूहन्ना 1:47; तुलना करें 1:31; देखें उत्पत्ति 27:35; 32:28)।

यह भी देखें यहूदियों का प्रवास; इस्राएल का इतिहास; यहूदी मत; यहूदीकरण; फरीसी; बँधुआई के बाद की अवधि।

यहूदी साहित्य, बाइबल के अतिरिक्त

प्राचीन यहूदी लेखन, जो बाइबल का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन यहूदी इतिहास, विश्वासों और प्रथाओं को समझने में सहायता करते हैं। ये ग्रन्थ लगभग 200 ईसा पूर्व से 500 ईस्वी के बीच लिखे गए थे। इनमें शामिल हैं:

1. मिशना: यह यहूदियों के नियम और परम्पराओं का एक संग्रह है, जो मौखिक रूप से पारित किए गए थे और लगभग ईस्वी 200 में लिखित रूप में संकलित किए गए थे। ये नियम यह स्पष्ट करते हैं कि पुराने नियम में दिए गए आदेशों का पालन कैसे किया जाना चाहिए।
2. तलमूद: यहूदियों की शिक्षाओं और नियमों पर चर्चाओं का एक विशाल संग्रह है। इसमें मिशना के साथ-साथ यहूदी शिक्षकों की विस्तृत टिप्पणियाँ शामिल हैं। इसके दो संस्करण हैं: यरूशलेम तलमूद (लगभग ईस्वी 400 में पूरा हुआ) और बाबेली तलमूद (लगभग ईस्वी 500 में पूरा हुआ)।
3. तार्गुम: इब्री बाइबल का अरामी भाषा में अनुवाद (जो उस समय के कई यहूदियों की आम भाषा थी)। ये अनुवाद अक्सर पाठकों को पाठ समझने में सहायता के लिए अतिरिक्त व्याख्याएँ प्रदान करते हैं।

ये लेखन महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें दिखाते हैं कि प्राचीन समय में यहूदियों ने अपने विश्वास को कैसे समझा और उसका अभ्यास कैसे किया। ये हमें उस संसार को बेहतर समझने में भी सहायता करते हैं जिसमें यीशु रहते थे।

देखें मिशना; तलमूद; तार्गुम।

यहूदीकरणवादी

वे यहूदी मसीही जिन्होंने प्रेरिताई और प्रारंभिक प्रेरिताई काल के दौरान गैर-यहूदी मसीहियों पर यहूदी जीवन शैली थोपने का प्रयास किया था। यूनानी क्रिया, जिसका शाब्दिक अर्थ है "यहूदी बनाना", नए नियम में केवल एक बार पाया जाता है, जहाँ इसका वास्तविक अर्थ "यहूदी रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार जीना" है (गला 2:14)। उस पद में पौलुस ने कई साल पहले पतरस के साथ हुई एक संक्षिप्त बातचीत का हिस्सा उद्धृत किया है: "जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है, और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?"[अर्थात, यहूदी बनाना]?"। पौलुस को जिस मुद्दे की चिंता थी, वह केवल यह नहीं था कि कोई व्यक्ति यहूदी जीवन शैली का पालन करता है या नहीं, बल्कि यह था कि क्या कोई व्यक्ति गलत तरीके से यह सोचता है कि इसके द्वारा उद्धार प्राप्त होता है।

मसीही मत के प्रारंभिक दिनों में, अधिकांश मसीही यहूदी थे जो मसीही मत में परिवर्तित होने से पहले यहूदी थे। कुछ जो मूल रूप से गैर-यहूदी थे, जैसे कि अन्ताकिया वासी नीकुलाउस (प्रेरि 6:5), मसीही मत में आने से पहले यहूदी मत में परिवर्तित हो गए थे। उस समय, यहूदी मत में परिवर्तन तीन अलग-अलग चरणों के माध्यम से पूरा किया गया था: (1) खतना (पुरुषों के लिए); (2) पानी में एक धार्मिक स्नान; और (3) "व्यवस्था का जूआ" अपने ऊपर लेने के लिए सहमति, अर्थात, यहूदी हलाख़ा (रब्बी कानूनी निर्णयों) में व्याख्या और विस्तार किए गए मूसा के व्यवस्था के 613 आदेशों का पालन करना। यहूदी मसीहियों के लिए यहूदी रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करना और यहूदी धार्मिक व्यवस्थाओं का पालन करना सामान्य जीवन का तरीका था, चाहे वे जन्म से यहूदी हों या परिवर्तन के माध्यम से। उनके लिए, यहूदी अपेक्षा के मसीहा के रूप में यीशु में विश्वास बढ़ा, लेकिन उनके यहूदी मत को प्रतिस्थापित नहीं किया। मसीही मत को यहूदी मत से अलग मत नहीं माना जाता था बल्कि यहूदी मत का सबसे सच्चा रूप माना जाता था। इन यहूदी मसीहियों का शिशुओं के रूप में या यहूदी मत में परिवर्तन के समय खतना किया गया था, और उन्होंने मूसा के व्यवस्था और रब्बी परम्परा में निर्धारित कोषेर आहार नियमों और धार्मिक शुद्धता के नियमों का भी पालन किया। इसके अलावा, उन्होंने यरूशलेम के मन्दिर में आराधना करना जारी रखा (प्रेरि 3:1; 21:26) जब तक कि 70 ईस्वी में रोमियों द्वारा इसका विनाश नहीं कर दिया गया, और कुछ यहूदी मसीही आराधनालयों में मिलना जारी रखते थे (देखें याकू 2:2।

हालांकि प्रारंभिक मसीही मत मुख्य रूप से यहूदी आंदोलन के रूप में शुरू हुआ, यह जल्द ही यूनानी रोमी दुनिया में फैल गया। यहूदी मसीहियों को उपद्रव के परिणामस्वरूप यरूशलेम छोड़ने के लिए मजबूर किया गया (प्रेरि 8:1; 11:19–24), और जहाँ भी वे गए, उन्होंने सुसमाचार का प्रचार किया। फिलिप्पुस ने सामरिया में सुसमाचार लाने की जिम्मेदारी निभाई, जहाँ कई सामरी मसीही बन गए (8:4–25)। पिन्तेकुस्त के दिन, रोमी दुनिया भर के विभिन्न स्थानों से आए कई यहूदी मसीही विश्वास में परिवर्तित हो गए (2:5–11)। संभवतः जब यह नव परिवर्तित यहूदी मसीही अपने घर लौटे, तो वे सुसमाचार को अपने साथ ले गए। हालाँकि रोम में मसीही समुदाय की उत्पत्ति अस्पष्ट है, लेकिन संभवतः इसी तरह से सुसमाचार पहली बार रोम में आया था। प्रेरितों के काम के लेखक लूका की मुख्य चिंताओं में से एक यह दिखाना है कि कैसे मसीही मत, जो यरूशलेम में यहूदी मत के छोटे, सताए गए संप्रदाय के रूप में शुरू हुआ, पूरे रोमी दुनिया में फैल गया; ऐसा करने पर, इसे यहूदियों ने अस्वीकार कर दिया और गैर-यहूदियों ने इसे अपना लिया। प्रेरितों के काम में मुख्य मोड़ अध्याय 10 में आता है, जहाँ पतरस वह माध्यम है जिसके द्वारा रोमी सेनापति कुरनेलियुस ने अपने पूरे घराने के साथ सुसमाचार को स्वीकार किया और उन पर पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया। प्रेरि10:45 के अनुसार, "और जितने

खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है"।

मसीही मत में मन-परिवर्तन करने वाले गैर-यहूदियों की बढ़ती संख्या ने यहूदी मसीहियों को बहुत ही कठिन समस्या का सामना करने के लिए मजबूर किया: क्या एक गैर-यहूदी को मसीही बनने के लिए पहले यहूदी बनना होगा? कुछ यहूदी मसीहियों ने इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर दिया, और इन्हें खतना करने वाले दल के रूप में जाना जाने लगा (प्रेरि 11:2; गला 2:12)। अन्य, जैसे पतरस और बरनबास, और विशेष रूप से पौलुस, ने प्रबलता से असहमति व्यक्त की। जबकि ये दो मौलिक रूप से भिन्न दृष्टिकोण प्रारंभिक कलीसिया को दो प्रमुख समूह में विभाजित कर सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। लूका ने यह कहानी बताई कि कैसे, एक सफल पहली मिशनरी यात्रा के बाद (प्रेरि13:1–14:28), पौलुस और बरनबास ने अन्ताकिया की कलीसिया को बताया कि परमेश्वर ने गैर-यहूदियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया था (प्रेरि 14:27)। यद्यपि, खतना दल में यहूदीकरण करने वालों का विरोध जल्द ही महसूस किया गया, क्योंकि उनमें से कुछ यहूदिया से अन्ताकिया आए थे, इस विचार की वकालत करने के लिए कि खतना उद्धार के लिए बिल्कुल ज़रूरी है (15:1)। कई यहूदी मसीही, जैसे पौलुस, पहले फरीसी थे। ये पूर्व फरीसी विशेष रूप से आग्रह कर रहे थे कि नए मन-परिवर्तन करने वाले गैर-यहूदियों का खतना किया जाए और उन्हें मूसा की व्यवस्था का पालन करने का आदेश दिया जाए (पद 5)। वे वास्तव में यह मांग कर रहे थे कि गैर-यहूदियों को मसीही बनने के लिए यहूदी मत में परिवर्तित होना अनिवार्य है।

पौलुस और बरनबास ने खतना करने वाले दल के सदस्यों के साथ यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों की एक सभा के सामने वाद-विवाद किया (प्रेरि 15:4–12)। याकूब 'जो धर्मी कहलाते थे' (यीशु के भाई) के अगुआई में सभा ने दोनों पक्षों की बात सुनी और समझौता करने का फैसला किया। गैर-यहूदी कलीसियाओं को एक पत्र तैयार किया गया था जिसमें यह सिफारिश की गई थी कि मसीही मत में मन-परिवर्तन करने वाले गैर-यहूदी केवल कुछ बिल्कुल आवश्यक दायित्वों का पालन करें: (1) मूर्तियों को बलि किए गए मांस से परहेज, (2) लहू या लहू-संतृप्त मांस खाने से परहेज, और (3) व्यभिचार से परहेज (पद 23–29)। इन तीन दायित्वों को शायद इसलिए चुना गया क्योंकि यहूदी परंपरा के अनुसार इन्हें परमेश्वर और नूह के बीच की वाचा का हिस्सा माना गया था। चूंकि नूह सभी मानवजाति, गैर-यहूदी और यहूदी दोनों के पूर्वज थे, इसलिए ऐसी व्यवस्था सार्वभौमिक रूप से मान्य थी। दूसरी ओर, मूसा की वाचा केवल यहूदियों पर लागू थी, गैर-यहूदियों पर नहीं। इस कारण यरूशलेम की सभा ने यह निर्धारित किया कि मूर्तियों के लिए बलि चढ़ाए गए मांस, लहू-संतृप्त मांस और व्यभिचार से परहेज सभी मसीहियों पर लागू होता है, जबकि खतना की बाध्यता नहीं थी।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के शेष भाग को देखते हुए, यह माना जा सकता है कि यरूशलेम की सभा का निर्णय खतना पक्ष के यहूदीकरण करने वालो के लिए संतोषजनक था। हालाँकि, पौलुस द्वारा अपने कई पत्रियों में दिए गए विवरणों से, हम पाते हैं कि ऐसा नहीं था। पौलुस ने गलातिया के मसीहियों के लिए यरूशलेम की सभा के परिणामों को संक्षेप में प्रस्तुत किया (गला 2:1–10), वह बताते हैं कि कैसे, रूशलेम की सभा के बाद भी, खतना करने वाले पक्ष के यहूदीकरणवादी इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने पतरस और बरनबास को भी अस्थायी रूप से गैर-यहूदी मसीहियों से अलग करने के लिए मजबूर कर दिया। (रब्बी शुद्धता नियमों के अनुसार, यदि कोई गैर-यहूदियों के साथ भोजन करता है, तो वह धार्मिक रूप से अशुद्ध हो जाता है।) पौलुस का गलातियों को पत्र लिखने का मुख्य कारण यहूदीकरण करने वालो से मुकाबला करना था, जिन्होंने उनके जाने के बाद गलातिया में मसीही समुदायों पर आक्रमण किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि ये यहूदीकरण करने वाले कुछ गलातियों के मसीहियों को सफलतापूर्वक यह विश्वास दिलाने में सफल रहे कि उद्धार केवल उन लोगों के लिए उपलब्ध है जो खतना किए हुए हैं और जो मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं (5:12; 6:13)। ऐसा लगता है कि कुरिन्थ की कलीसिया द्वारा अनुभव की गई कुछ समस्याएँ यहूदीकरण करने वालो (2 कुरि 11:12–15, 22) के कारण हुई थीं, और उन्होंने फिलिप्पी में मसीही समुदाय को संक्रमित कर दिया था (फिलि 3:2–3)। ऐसा प्रतीत होता है कि कुलुस्सियों की कलीसिया में भी यहूदीकरण करने वालो ने कुछ प्रगति की है। इसलिए कुलु 2:16–17 के अनुसार, "खाने-पीने या पर्व या नये चाँद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं"।

सभी आरंभिक प्रेरितों और प्राचीनों में से पौलुस ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने लगातार यहूदीकरण करने वालो के इस विचार का विरोध किया कि मसीही बनने के लिए अन्यजातियों को पहले यहूदी बनना होगा। मसीही मत में उनका प्रभावशाली मन-परिवर्तन, जिसका वर्णन प्रेरितों के काम में तीन बार किया गया है (9:1–9; 22:6–16; 26:12–23) और कभी-कभी स्वयं पौलुस द्वारा सन्दर्भित किया गया है (1 कुरि 9:1; 15:8; गला 1:11–17), ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उद्धार केवल मसीह में विश्वास के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि यीशु ही *एकमात्र* मार्ग थे, इसलिए उद्धार प्राप्त करने के लिए अन्य सभी साधन अनिवार्य रूप से अमान्य और अवैध थे। पौलुस पूरी तरह से जानते थे कि यह इस तथ्य के कारण नहीं था कि वह एक धार्मिक यहूदी थे कि वह परमेश्वर के सामने धर्मी बन गए थे (फिलि 3:2–11), बल्कि मसीह में उनके विश्वास के कारण था। मुख्य रूप से यहूदीकरण करने वालो की निरंतर गतिविधि के कारण,

पौलुस को परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के साधन के रूप में व्यवस्था की अमान्यता और विश्वास की वैधता पर बार-बार जोर देना पड़ा। रोमियों और गलातियों को लिखे उनके पत्रियों में यह विषय प्रमुखता से अंकित है।

यहूदी मसीही मत धीरे-धीरे मुरझा गया मत धीरे-धीरे खत्म हो गया और इसके साथ ही यहूदीकरण करने वालो का यह आग्रह भी खत्म हो गया कि गैर-यहूदियों को उद्धार पाने के लिए यहूदी रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार जीना चाहिए। यहूदी मसीही मत का केंद्र पारंपरिक रूप से यरूशलेम रहा था। 66–70 ईस्वी के यहूदी विद्रोह के अन्त में यरूशलेम और मन्दिर के विनाश से ठीक पहले, कई यहूदी मसीही एक ईश्वरीय प्रकाशन के आज्ञाकारिता में पेला में भाग गए। बार-कोखबा के दुर्भाग्यपूर्ण विद्रोह (ईस्वी सन् 132–135) ने इस आंदोलन को और कमजोर कर दिया, जब यहूदी मसीहियों को यहूदी विद्रोहियों के हाथों उपद्रव का सामना करना पड़ा। इसके बाद यहूदी मसीही मत कमजोर होता गया और अंततः गायब हो गया। इसके गायब होने के साथ ही यह दृढ़ धारणा भी समाप्त हो गई कि गैर-यहूदियों को मसीही बनने के लिए पहले यहूदी बनना चाहिए।

यह भी देखें प्रेरितों के काम, पुस्तक; पहला यहूदी विद्रोह; गलातियों को पत्र; यरूशलेम की सभा; यहूदी; प्रेरित पौलुस।

यहूदीत (व्यक्ति)

यहूदीत (व्यक्ति)

1. बेरी की बेटी, हित्ती और एसाव की पत्नियों में से एक (उत 26:34)। उत्पत्ति 36:2 में उन्हें ओहोलीबामा भी कहा गया है। *देखें* ओहोलीबामा।

2. यहूदीत की पुस्तक में नायिका, बेतुलिया की एक सुन्दर यहूदी विधवा स्त्री, जिन्होंने अश्शूरी सेनापति होलोफर्नेस का सिर काटकर अपने लोगों को विनाश से बचाया। *देखें* यहूदीत की पुस्तक।

यहूश

यहूश

1 इतिहास 8:39 में एशेक के पुत्र यूश का केजेवी वर्तनी। *देखें* यूश #3।

यहेजकेल

दाऊद के समय में मंदिर में सेवा के लिए नियुक्त लेवी; 20वें विभाग का अगुवा (1 इति 24:16)।

यहेजकेल (व्यक्ति)

इस्राएल की बाबेल की बँधुआई के दौरान एक याजक और भविष्यद्वक्ता थे। यहेजकेल सादोक के प्रभावशाली याजकीय परिवार के वंशज थे (यहे 1:3)। वह संभवतः यरूशलेम में पले-बढ़े थे और मन्दिर की रीतियों से परिचित थे; लेकिन यह अज्ञात है कि उन्होंने वहाँ याजक के रूप में सेवा की थी या नहीं। उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में जो कुछ भी ज्ञात है, वह पुराने नियम में यहेजकेल की पुस्तक से प्राप्त होता है।

यहेजकेल विवाहित थे (24:16–18) और वह बाबेल में तेल-अबीब में (3:15), अपने स्वयं के घर में रहते थे (3:24; 8:1)। अधिकांश यहूदी बंदी कबार नहर के पास बस गए थे (1:3), जो बाबेल से निप्पुर होते हुए एरेख तक जाती थी। वहाँ इस्राएल के पुरनिये यहेजकेल से परामर्श लेने के लिए आते थे (8:1; 14:1; 20:1)। बँधुआई के पाँचवें वर्ष में, जब यहेजकेल की उम्र 25 से 30 वर्ष के बीच थी, उन्हें परमेश्वर की ओर से भविष्यवाणी का आह्वान प्राप्त हुआ (1:1–3:11)। बँधुआई के दौरान उनकी पत्नी की अचानक मृत्यु हो गई, लेकिन उन्हें सार्वजनिक रूप से उसके लिए शोक करने से मना किया गया था (24:16–18)। उसकी अचानक मृत्यु का उद्देश्य बंदियों की मातृभूमि में होने वाली घटनाओं के बारे में एक चौंकाने वाली और गंभीर चेतावनी देना था (पद 15–27)।

यहेजकेल की सेवकाई का समय कई तरीकों में असामान्य था। यह महान भविष्यवाणी गतिविधि का एक युग था। यिर्मयाह और दानिय्येल भविष्यद्वक्ताओं के साथ, यहेजकेल ने बाबेली दासत्व के समय देश की आवश्यकताओं को संबोधित किया। यह दक्षिणी यहूदा राज्य के लिए उथल-पुथल और उजाड़ का युग था तथा लगातार धर्मत्याग, मूर्तिपूजा और मूसा की व्यवस्था के प्रति सामान्य उल्लंघन का समय था। यह अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष और पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन में परिवर्तन का काल भी था।

यहेजकेल की सेवकाई 592 ई.पू. से कम से कम बँधुआई के 27वें वर्ष तक विस्तारित होती दिखती है (29:17)। यह दो मुख्य अवधियों में विभाजित होती है। पहली अवधि (ई.पू. 592–587) के दौरान, उनके संदेश बार-बार चेतावनी देने वाले थे—गद्य प्रवचन और प्रतीकात्मक कृत्यों में—जो बंधुवा लोगों को पश्चाताप और परमेश्वर में विश्वास की ओर ले जाने के लिए थे। दूसरी अवधि (ई.पू. 586–570) के दौरान, जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम और मन्दिर का विनाश किया, भविष्यद्वक्ता ने बंधुवा लोगों को सांत्वना दी और उन्हें आशापूर्वक भविष्य की ओर देखने के लिए प्रोत्साहित किया (अध्याय 33–48)। 13 वर्ष, अर्थात् 585 ई.पू. (32:1, 17; 33:21) से 572 ई.पू. (40:1) ऐसे भी थे जब कोई भविष्यवाणी नहीं की गई। भविष्यद्वक्ता ने यरूशलेम के पतन के बारे में बाबेल में रहते हुए जाना (33:21–22)।

यहेजकेल के संदेश का मुख्य विषय यह था कि यहूदा न्याय के लिए तैयार था। परमेश्वर का संदेश बोलने की उनकी तैयारी उनकी लिखित भविष्यवाणियों को खा जाने की तस्वीर में प्रस्तुत की गई है (2:8–3:3)। पहले तो संदेशों को स्वीकार नहीं किया गया, लेकिन बाद में उनकी भविष्यवाणियाँ सत्य साबित हुईं और देश से मूर्तिपूजा दूर हो गई। यहेजकेल को "यहूदी धर्म का पिता" कहा गया है क्योंकि बाद में इस्राएल की आराधना पर उनका प्रभाव माना जाता है। बँधुआई के बाद उनके सबसे बड़े योगदानों में यहूदियों की आराधना के लिए आराधनालय की नींव स्थापित करना शामिल था। उन्होंने व्यक्तिगत अमरता, पुनरुत्थान और अनुष्ठानिक व्यवस्था की शिक्षा पर जोर दिया।

यहेजकेल ने अपने संदेशों को जीवंत और नाटकीय प्रतीकात्मक कार्यों के साथ प्रस्तुत किया (जैसे, 4:1–8; 5:1–17)। उनकी शैली को भारी और दोहरावपूर्ण कहा गया है, लेकिन इसे धर्मत्याग और उसके बाद के न्याय के विषयों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था।

उनकी मृत्यु का स्थान और परिस्थितियाँ अज्ञात हैं और पुराने नियम में यहेजकेल का कहीं और उल्लेख नहीं है।

यह भी देखें यहूदियों का प्रवास; यहेजकेल की पुस्तक; भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्तिन।

यहेजकेल की पुस्तक

बाबेल की बंधुआई के समय की पुराने नियम की भविष्यवाणी की पुस्तक।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- तिथि और पृष्ठभूमि
- विषयवस्तु

लेखक

यहेजकेल बूजी का पुत्र था (1:3), जो एक याजकीय परिवार का सदस्य था। यह स्पष्ट नहीं है कि उसने वास्तव में मंदिर में याजक के रूप में सेवा की थी या नहीं, लेकिन उसकी शिक्षा ऐसी ही थी। उसके लेखन से पता चलता है कि उसे बलिदानों के नियम, अनुष्ठान और याजक के प्रति लोगों की अपेक्षाओं का ज्ञान था। बंधुआई में यहेजकेल ने बंधुआई में गए अपने साथी लोगों को मंदिर के भविष्य के बारे में परमेश्वर का वचन सुनाया। कबार की नहर पर तेलाबीब में बसे हजारों निर्वासित लोगों ने कठिन जीवन व्यतीत किया। वे यहूदा में शीघ्र वापसी और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार की आशा करते थे। उनकी आशा झूठे भविष्यद्वक्ताओं के जोशीले प्रचार से प्रज्वलित हो गई थी, जिन्हें खण्डहरों में की लोमड़ियों के समान बताया गया था (13:4)। वे धर्मपूर्वक कहते थे, "यहोवा की यह वाणी है ... ," लेकिन वास्तव में वे स्वयं की ओर से कहते थे (वचन 6)। उन्होंने लोगों को शांति का संदेश देकर धोखा दिया, जबकि परमेश्वर का न्याय उनके लोगों पर उंडेला जाने वाला था (वचन 10)। उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को सच्ची भविष्यवाणी पर इतना अविश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि लोगों में एक कहावत प्रचलित हो गई कि "दिन अधिक हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई?" (12:22)। लोगों को परमेश्वर के न्याय के दर्शन दिए हुए बहुत समय बीत चुका था, और उन दर्शनों की पूर्ति के रूप में कुछ भी व्याख्या नहीं की जा सकती थी। यहेजकेल को प्रतीकात्मक कार्यों, दर्शनों और मौखिक संदेशों के माध्यम से अपने समुदाय की सेवा करने के लिए बुलाया गया था ताकि लोगों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि परमेश्वर का न्याय निकट है (वचन 23)।

तिथि और पृष्ठभूमि

यहेजकेल भविष्यद्वक्ता की सेवकाई को उसके समय की पृष्ठभूमि में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। यदि, जैसा कि कलीसिया के पिता ओरिजन ने माना, अस्पष्ट संदर्भ "तीसवें वर्ष में" (1:1) भविष्यद्वक्ता के पहले दर्शन के समय उसकी आयु को दर्शाता है, तो यहेजकेल का जन्म यहूदा के राजा योशिय्याह के शासनकाल के दौरान हुआ था (लगभग 640–609 ईसा पूर्व)। योशिय्याह राजा मनश्शे का पोता था, जिसके अपवित्र कार्यों के कारण यहूदा के राज्य पर परमेश्वर का न्याय आया था (2 रा 21:10–15)।

हालाँकि यहूदा की राजनीतिक स्थिति खतरनाक थी, योशिय्याह ने मूल सुधार के साथ राष्ट्र की अगुवाई की जो "व्यवस्था की पुस्तक" (2 रा 22) के मिलने के साथ शुरू हुआ, उसी वर्ष जब यहेजकेल का जन्म हुआ (लगभग 621 ईसा पूर्व)। मूर्तिपूजा समाप्त कर दी गई और लोग फिर से परमेश्वर की ओर मुड़े, लेकिन यहूदा पर परमेश्वर का न्याय अपरिवर्तनीय था (23:26–27)। योशिय्याह ने यहूदा को एक ऐसा राज्य बनाने की कोशिश में गलती की जिसके साथ अन्य राज्यों को भी समझौता करना पड़ा। जब मिस्र का फ़िरौन-नको कमजोर अश्शूर के राज्य की सहायता के लिए यहूदा से होकर गुज़रा तो उसे धमकी दी गई। योशिय्याह मिस्र की सेना से मुकाबला करने के लिए अपनी सेना ले गया, लेकिन उसकी सेना मिस्रियों के सामने टिकने में असमर्थ रही और युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई (वचन 29)। मिस्र ने यहूदा पर नियंत्रण कर लिया और फ़िरौन-नको ने यहोयाकीम को यरूशलेम पर सत्ता में रखा। हालाँकि, मिस्र का नियंत्रण अधिक समय तक नहीं चला, क्योंकि 605 ईसा पूर्व में मिस्र और अश्शूर को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने कर्कमीश में हरा दिया था। फिर कसदियों ने दक्षिण की ओर यरूशलेम की ओर प्रस्थान किया और यहूदी अगुवों का पहली बंधुआई (पहला निर्वासन) में जाना हुआ (उनमें भविष्यद्वक्ता दानिय्येल भी था)।

यहोयाकीम को नबूकदनेस्सर के अधीन यहूदा पर शासन करने की अनुमति दी गई थी, लेकिन मिस्र के साथ उसके व्यवहार ने सम्राट का क्रोध उस पर ला दिया। इससे पहले कि बाबेलवासी यहूदी स्थिति को संबोधित कर पाते, यहोयाकीम की मृत्यु हो गई और उनके पुत्र यहोयाकीन का राज्याभिषेक हुआ। जब बाबेल की सेनाएँ यरूशलेम के द्वार पर पहुँचीं, तो यहोयाकीन और हजारों कुलीन वर्ग को बाबेल ले जाया गया (2 रा 24:10–17)। उन बंधुआई में गए लोगों में से एक यहेजकेल था, जो उस समय लगभग 25 वर्ष के का था।

हालाँकि पुस्तक कुछ और कहती है, कई विद्वानों का मानना है कि यहेजकेल ने यरूशलेम की घेराबंदी और पतन (586 ईसा पूर्व) के दौरान यहूदा में रहकर शिक्षा दी। वे यहेजकेल की मंदिर में मूर्तिपूजा से परिचित होने और यरूशलेम के अंतिम दिनों के उसके जीवंत वर्णनों से यह निष्कर्ष निकालते हैं (यहेज 8:11)। अन्य लोग मानते हैं कि यहेजकेल ने बंधुआई में गए लोगों के समुदाय और यहूदा में रहने वाले यहूदियों दोनों के बीच अपनी सेवा दी। कोई भी व्याख्या पुस्तक के दावों के साथ पूर्ण न्याय नहीं करती। यहेजकेल को 597 ईसा पूर्व में बंधुआई में ले जाया गया था। उसे तेलाबीब में बंधुआई में ले जाए गए लोगों को परमेश्वर का वचन देने के लिए बुलाया गया था; उसे मंदिर के आंगन में घोर प्रथाओं का दर्शन दिया गया था; और वह यरूशलेम और यहूदा में रहने के कारण और दूतों के द्वारा बंधुआई में गए लोगों के पास यरूशलेम के विषय में समाचार आने के कारण परिचित था। यहेजकेल के समकालीन यिर्मयाह यरूशलेम में भविष्यवाणी कर रहा था, लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यिर्मयाह और यहेजकेल एक-दूसरे की सेवाओं के बारे में जानते थे। यदि यहेजकेल घेराबंदी के दौरान यरूशलेम में परमेश्वर का वचन दिया होता, तो उसके लेखन में यिर्मयाह का कुछ संदर्भ दिखाई देता। यदि यिर्मयाह को यरूशलेम में यहेजकेल की सेवा का समर्थन प्राप्त होता, तो वह शायद अपनी पुस्तक में अपने सहयोगी के लिए एक सकारात्मक शब्द ज़रूर शामिल करता। यहेजकेल की पुस्तक स्पष्ट रूप से कहती है कि यहेजकेल बंधुआई में रहा और प्रचार किया (देखें 1:1–3; 11:24–25)।

विषयवस्तु

यहेजकेल की भविष्यवाणी को विषय वस्तु और घटनाक्रम के अनुसार आसानी से रेखांकित किया जा सकता है। उस अवधि का घटनाक्रम 586 ईसा पूर्व (यरूशलेम के पतन) से पहले और बाद में विभाजन की अनुमति देता है। अध्याय 1–24 यहेजकेल की 586 ईसा पूर्व से पहले की सेवकाई को शामिल करते हैं, जबकि अध्याय 33–48 उसकी 586 ईसा पूर्व के बाद की सेवकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं। अध्याय 25–32 (विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ भविष्यवाणियाँ) पुस्तक के दो मुख्य विभाजनों के बीच एक परिवर्तनकाल के रूप में कार्य करते हैं।

विषय वस्तु के अनुसार पुस्तक की रूपरेखा चार भागों में विभाजित है: यहेजकेल की बुलाहट (1:1–3:21); इस्राएल के विरुद्ध न्याय की भविष्यवाणियाँ (3:22–24:27); राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ (25:1–32:32); और आशा की घोषणा (33:1–48:35)।

यहेजकेल की बुलाहट (1:1–3:21)

इस भविष्यद्वक्ता की बुलाहट एक अर्थ में यशायाह और यिर्मयाह के समान थी। यशायाह को उसका मिशन मंदिर में परमेश्वर की महिमा के दर्शन में प्राप्त हुआ (यशा 6)। यिर्मयाह को अप्रत्याशित रूप से उसकी युवावस्था में बुलाया गया और उसे चिन्ह मिले जो उसके मिशन की प्रकृति को स्पष्टता से प्रस्तुत करते थे (यिर्म 1:11–15)। यहेजकेल की बुलाहट उन दोनों सिद्धांतों को मिलाकर थी। भविष्यद्वक्ता के मिशन ने परमेश्वर की महिमा के प्रकटीकरण के साथ ही मिशन की प्रकृति को भी प्रकट किया। यहेजकेल की बुलाहट में परमेश्वर की महिमा का पूरा विवरण शामिल था। यशायाह ने संक्षेप में कहा कि उसने प्रभु को मंदिर में सिंहासन पर देखा और उसने परमेश्वर की महिमा का प्रतिनिधित्व और बढ़ाई करने वाले साराप पर ध्यान केंद्रित किया। यहेजकेल ने प्रभु की महिमा के प्रकाशन के साथ-साथ उन सेवक स्वर्गदूतों पर भी विस्तार से बताया जो प्रभु के शाही दल के हिस्से के रूप में उसके आगे चलते थे। परमेश्वर की महिमा का दर्शन, हालांकि समझने में कठिन है, फिर भी यहेजकेल की पुस्तक की कुंजी है।

यहेजकेल, एक याजक के रूप में, मंदिर के भविष्य को लेकर चिंतित था। उस पवित्र स्थान को परमेश्वर ने अपने लोगों के बीच अपने घर के रूप में ठहराया था। परमेश्वर की महिमा, उपस्थिति और पवित्रता मंदिर में परमेश्वर का प्रतीक थीं (देखें 1 रा 8:10–11)। बंधुआई में यहेजकेल अपने लोगों की सेवा याजक के रूप में नहीं कर सकता था, क्योंकि वह यरूशलेम से दूर था, वह नगर जिसे परमेश्वर ने चुना था। सभी अपेक्षाओं के विपरीत प्रभु ने बाबेल की भूमि में यहेजकेल पर अपने आप को प्रकट किया। यहेजकेल को भविष्यवाणी की सेवा में बुलाते हुए, परमेश्वर ने अपने सेवक को आश्वासन दिया कि उसने अपने लोगों को नहीं छोड़ा है, भले ही उन्हें प्रतिज्ञात देश से निकाल दिया गया था।

भविष्यद्वक्ता का दर्शन एक आँधी से शुरू हुआ। जब उत्तर से एक बड़ा बादल आया, तो यहेजकेल ने बादल के चारों ओर एक चमक, चार जीव और चार पहिए देखे। जीवों और पहियों का संयोजन यह सुझाव देता है कि प्रभु एक रथ में प्रकट हुआ। परमेश्वर का रथ उसके न्याय में आने का एक परिचित पुराने नियम का प्रतिनिधित्व है (देखें यशा 66:15–16)। पहियों के भीतर पहिए और चार जीवित प्राणियों की स्थिति यह संकेत दे सकती है कि परमेश्वर का पूरी पृथ्वी पर पूर्ण नियंत्रण है, इसलिए वह अपने "न्याय के रथ" को किसी भी दिशा में ले जा सकता है। यह भी संभव है कि चार चेहरों वाले जीवित प्राणी

और आँखों से भरे पहिए अलग-अलग प्रतीक हों जो यह दिखाते हैं कि परमेश्वर सब कुछ देखते हैं और इस प्रकार बंधुआई में गए लोगों की दुर्दशा को जानते हैं। दर्शन में भविष्यद्वक्ता का ध्यान जीवों के सिरों के ऊपर एक सिंहासन की ओर गया। सिंहासन पर "प्रभु की महिमा की समानता का रूप" था (1:28)। परमेश्वर के न्याय के आगमन के अपने दर्शन में, यहेजकेल को भविष्यवाणी की सेवकाई के लिए बुलाहट मिली: "हे मनुष्य के सन्तान, मैं तुझे इस्राएलियों के पास अर्थात् बलवा करनेवाली जाति के पास भेजता हूँ, जिन्होंने मेरे विरुद्ध बलवा किया है" (2:3)। इस्राएल के इतिहास के एक अंधकारमय समय के दौरान, यहेजकेल को भविष्यवाणी करनी थी, अपने साथी बन्दियों को फटकारना था (3:11), और इस्राएल के घराने पर एक पहरुए के रूप में ज़िम्मेदार होना था (3:17; पुष्टि करें 33:1–9)। उसके मिशन का प्रतीक एक पुस्तक थी जो विलाप और दु:ख से भरी थी (2:9–10), जिसे खाने पर वह शहद की तरह मीठी हो गई (3:1–3)। मिशन जितना कठिन था, परमेश्वर की उपस्थिति और भविष्यवाणियों की निश्चित पूर्ति ने यहेजकेल के कार्य को मीठा बना दिया। ऐसा प्रोत्साहन विद्रोही इस्राएलियों के किसी भी डर को दूर करने के लिए था (2:6–7)। हालांकि, अपने मिशन से उत्साहित होने के बजाय, यहेजकेल निराश हो गया।

एक सप्ताह बाद, प्रभु का वचन यहेजकेल के पास आया ताकि उसे उसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में याद दिलाया जा सके कि वह एक पहरुआ है (3:16–17)। यहेजकेल केवल व्यक्तियों के लिए नहीं, बल्कि एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल के लिए ज़िम्मेदार बन गया। इस्राएल के प्रति उसकी गवाही का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय पश्चाताप था (वचन 18–19)।

यहेजकेल को परमेश्वर द्वारा उसके घर में बंद कर दिया गया था (3:24–25)। घर की सेवा केवल उन इस्राएलियों के साथ की जानी थी जो परमेश्वर की इच्छा को खोजते थे, क्योंकि प्रभु ने उन लोगों को छोड़ दिया था जो अपने धर्मत्याग में बने रहे। भविष्यवाणी का वचन विद्रोहियों की मदद नहीं करेगा (वचन 26)। यहेजकेल की सेवा का सिद्धांत 3:27 में पाया जाता है: “जब जब मैं तुझ से बातें करूँ, तब-तब तेरे मुँह को खोलूँगा और तू उनसे ऐसा कहना, ‘प्रभु यहोवा यह कहता है,’ जो सुनता है वह सुन ले और जो नहीं सुनता वह न सुने, वे तो विद्रोही घराने के हैं ही।” (पुष्टि करें, मत्ती 11:15; 13:43)।

इस्राएल के खिलाफ न्याय की भविष्यवाणियाँ (3:22–24:27)

यहेजकेल की लेखनी में प्रतीकवाद प्रमुखता से दिखाई देता है। उसकी याजकीय पृष्ठभूमि और तैयारी ने संभवतः उसे परमेश्वर का वचन प्रतीकात्मक कार्यों और प्रचारों में प्राप्त करने और संप्रेषित करने के लिए उपयुक्त बनाया। अध्याय 4 और 5 में चार प्रतीकात्मक कार्य शामिल हैं: (1) यरूशलेम की घेराबंदी को एक ईंट पर दर्शाया गया है (यहेज 4:1–3); (2) इस्राएल के पाप को यहेजकेल के अपने करवट पर लेटने से दर्शाया गया है (वचन 4–8); (3) घेराबंदी के अंतिम दिनों में यरूशलेम के शोक और भय को यहेजकेल के भोजन और पेय से दर्शाया गया है (वचन 9–17); (4) यरूशलेम की नियति को भविष्यद्वक्ता के बाल काटने से दर्शाया गया है (5:1–4)।

यहेजकेल के निर्देशों को इस्राएल के धर्मत्याग के बारे में परमेश्वर की व्याख्या (5:6–7) और इस्राएल पर उसके न्याय (वचन 8–12) द्वारा और भी अधिक स्पष्ट किया गया था। न्याय तब तक जारी रहेगा जब तक इस्राएली यह स्वीकार नहीं कर लेते कि उनके प्रभु ने वाचा की निष्ठा के अनुसार उन पर धर्मी न्याय किया है (वचन 13)।

परमेश्वर पहले अपने न्याय को लोगों और यरूशलेम नगर के विरुद्ध निर्देशित करेगा। इसके बाद इस्राएल के पहाड़ (अध्याय 6) और भूमि (अध्याय 7) की बारी थी। परमेश्वर का क्रोध यहूदा के पहाड़ी देश के नगरों और धार्मिक स्थलों को भी शामिल करता था, जिससे लोगों के लिए कोई सुरक्षा नहीं बची (6:3–6)। भूमि में फैली हुई घृणित प्रथाओं के कारण परमेश्वर का न्याय भूमि और लोगों दोनों पर गिरा (7:2–3, 10–11, 23)। क्योंकि परमेश्वर धर्मी हैं, इसलिए उसने लोगों का न्याय उनके जीवन जीने के तरीकों के अनुसार किया, यह इच्छा रखते हुए कि वे फिर से उसे अपने परमेश्वर के रूप में स्वीकार करें (7:27)।

तब भविष्यवक्ता ने यरूशलेम में प्रचलित घृणित कार्यों (अध्याय 8–11), विशेष रूप से मंदिर के आंगनों में मूर्तिपूजा पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके कारण 1–7 में न्याय की घोषणा की गई। भीतरी आंगन में एक मूर्ति स्थापित की गई थी (8:3–5)। आंगन की दीवार के पास, नगर के बुजुर्ग उन मूर्तियों को धुपदान दे रहे थे जो आंगन के चारों ओर थीं (वचन 11–12)। मंदिर के निकट, महिलाएं तम्मूज देवता के लिए रो रही थीं (वचन 14), और पुरूष सूर्य को दण्डवत् कर रहे थे (वचन 16)। भूमि पर अंतिम न्याय की तैयारी में, भविष्यद्वक्ता ने कुछ विश्वासयोग्य इस्राएलियों के माथे पर एक निशान लगाया ताकि वे जीवित रह सकें (9:4–6)। फिर (अध्याय 10), परमेश्वर की महिमा, जो सुलैमान के समय से मंदिर में भरी हुई थी, धीरे-धीरे चली गई: “तब यहोवा की महिमा नगर से ऊपर उठी और पूर्व की ओर पर्वत के ऊपर ठहर गई” (11:23, एनएलटी)। लोग अब बिना ईश्वरीय संरक्षण के कसदीयों को सौंपे जा रहे थे (वचन 9)।

यरूशलेम के लिए विनाश का संदेश चार आशा के तत्वों को समाहित करता है: लोगों की पुनर्स्थापना (11:17), भूमि की पुनर्स्थापना (वचन 17), लोगों का शुद्धिकरण (वचन 18) और परमेश्वर और उनके लोगों के बीच नवीनीकृत संगति (वचन 19–20)। भविष्यद्वक्ता इन चार विषयों को अध्यायों में वर्णित करता है 33–48।

अध्याय 10 और 11 के दर्शनों ने स्पष्ट कर दिया कि जब परमेश्वर ने यरूशलेम से अपनी उपस्थिति हटा ली, तो

बंधुआई निकट थी। जो पहले से ही बाबेल में थे, वे यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि यरूशलेम का इतना व्यापक विनाश होगा या सभी लोग बंधुआई में जाएंगे और भूमि उजाड़ हो जाएगी।

यहेजकेल ने अपना सामान बांधकर और अपने साथी बन्दियों को सामान दिखाकर परमेश्वर के न्याय के वचन की निश्चितता को प्रदर्शित किया। पहले, उसने अपने साधारण घर के बाहर आंगन में सामान रखा। इसके बाद वह दीवार में छेद करके बाहर निकल गया। अंत में भविष्यद्वक्ता अपने सामान को पूरी तरह से दिखाते हुए नगर के चारों ओर चला। संशयी दर्शकों ने यहेजकेल को नहीं समझा और शायद उसे पागल समझा। जिन विश्वासियों ने उसे देखा, वे समझ गए। उसके अजीब कार्यों ने इस बात को नाटकीय रूप से प्रस्तुत किया कि राजा के सहायक यरूशलेम के पतन से ठीक पहले राजा सिदकिय्याह को बचाने के लिए सब कुछ करेंगे। 2 राजाओं 25 बताता है कि कैसे राजा और उसके सैनिक यरूशलेम से जंगल की ओर गए, जहां कसदियों ने उन्हें यरीहो में पकड़ लिया और रिबला में नबूकदनेस्सर के सामने लाए। बंदी के रूप में सिदकिय्याह ने अपने पुत्रों की हत्या देखी; फिर उनकी आंखें निकाल दी गईं और उन्हें अन्य यहूदियों के साथ बंधुआई में भेज दिया गया (पुष्टि करें यहेज 12:13)। भविष्यद्वक्ता की व्याख्या सांत्वना के शब्दों के साथ समाप्त हुई। अब्राहम के साथ अपनी वाचा के कारण, परमेश्वर ने लोगों को पूरी तरह से नष्ट न करने का वादा किया। जो लोग तलवार, अकाल और महामारी से बच गए, वे परमेश्वर के न्याय की कहानी बताने के लिए जीवित रहेंगे (वचन15–16)।

यहेजकेल ने थरथर्राते हुए खाना खाकर राष्ट्र की दुर्दशा को और स्पष्ट किया, यह दर्शाते हुए कि यहूदा के सभी निवासियों को जल्द ही महान आघात का सामना करना पड़ेगा।

दोनों प्रतीकात्मक कार्य, अपना सामान बांधना और खाना, परमेश्वर के वचन की सत्यता को बल देते थे। लोगों को अपने परमेश्वर की प्रकृति का सामना करना था: वह महान है, और जब वह बोलता है, तो उसके शब्द सामर्थशाली होते हैं और पूरे होते हैं। इस प्रकार, भूमि का विनाश और लोगों का बंधुआई में जाना भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से परमेश्वर के वचन की पूर्ति थी। यह न्याय प्रभु की पहचान कराने, पश्चाताप करने और परमेश्वर की ओर लौटने के लिए था। यहूदा में कुछ लोग परमेश्वर की भविष्यवाणियों की प्रभावशीलता पर संदेह करते थे, वे कहते थे, "दिन अधिक हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी नहीं हुई?" (12:22)। अन्य सोचते थे कि परमेश्वर का वचन दूर भविष्य में सच होगा (वचन 27)। परमेश्वर के वचन में अविश्वास का प्रचलित रवैया झूठे भविष्यद्वक्ताओं के लोकप्रिय प्रचार से उत्पन्न हुआ था (अध्याय 13)। वे कभी प्रभु द्वारा नियुक्त नहीं किए गए, उन्होंने परमेश्वर के लोगों को झूठ बोलकर और शांति के संदेशों से गुमराह करके धोखा दिया (वचन 8–10)। ऐसे झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा लोगों में दुष्टता, झूठ और धोखे को प्रोत्साहित किया गया (वचन 22)। उनके पाप की गंभीरता और यहूदा के पतन के लिए उनकी बड़ी ज़िम्मेदारी प्रभु के भारी न्याय से मेल खाएगी। फिर भी परमेश्वर अपने लोगों को ऐसी बुराई से बचाएगा और एक धर्मी राष्ट्र तैयार करेगा जिसके साथ अपनी वाचा बनाए रखेगा (वचन 23)।

न्याय की निश्चितता परमेश्वर के वचन की सत्यता से जुड़ी हुई है। जिद्दी श्रोताओं को यरूशलेम के विनाश की पुष्टि करने का यहेजकेल का कठिन कार्य लोगों की मूर्तिपूजा द्वारा और भी तेज हो गया था। उनकी पूरी जीवनशैली परमेश्वर के अस्तित्व को नकारती थी। वे अपनी उपासना में मूर्तिपूजा करते थे और उन्होंने अपने हृदयों में मूर्तियाँ स्थापित कर ली थीं (14:3)। परमेश्वर के साथ वाचा को पुनःस्थापित करने से पहले, उन्हें अपनी मूर्तिपूजा से शुद्ध होना था। फिर भी, पश्चाताप न्याय से प्रतिरक्षा की गारंटी नहीं देता। तलवार, अकाल, दुष्ट जन्तु और मरी जनसंख्या को तबाह कर देंगी (वचन 21)। अपने न्याय के क्रियान्वयन के बाद, परमेश्वर उन बचे हुए लोगों को वापस लेंगे जिन्होंने उनसे दया की याचना की थी। परमेश्वर निश्चित रूप से अपने लोगों की भलाई के लिए जो कुछ उसने ठाना था, उसे पूरा करेगा (वचन 23)।

अध्यायों 15–17 में यहेजकेल तीन दृष्टांतों का उपयोग करके इस्राएल की धर्मत्याग, वर्तमान निरर्थकता और न्याय को प्रस्तुत करता है। यरूशलेम और यहूदा को जले हुए लकड़ी के टुकड़े, व्यभिचारी स्त्री और दाखलता से तुलना की जाती है।

अध्याय 15 यरूशलेम के मामले की समीक्षा करता है। यरूशलेम की तुलना एक लकड़ी के टुकड़े से की गई है, जिसके दोनों सिरे आग से जल चुके हैं, जिससे लकड़ी का कोई मूल्य नहीं है। जैसे पूरी लकड़ी जल जाती है बजाय इसके कि उसे बचाया जाए, वैसे ही यरूशलेम पूरी तरह से विनाश का सामना करेगा (15:7–8)।

अध्याय 16 यरूशलेम के विरुद्ध परमेश्वर के मामले को, अतीत में यरूशलेम के प्रति उसकी देखभाल पर जोर देते हुए एक अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। उसके इतिहास की शुरुआत की तुलना एक बच्ची के जन्म से की जाती है, जिसे उसकी माँ ने छोड़ दिया था (16:3–5)। परमेश्वर ने उस बच्ची को अपनाया और उसे धोया और कपड़े पहनाए (वचन 6–7)। उसने उसके साथ एक वाचा की (वचन 8), उसे अपनी संपत्ति बना लिया। परमेश्वर ने उसे जीवन की सभी उत्तम चीज़ें उदारता से दीं (वचन 9–13)। उसके विकास के चरम पर, यरूशलेम की प्रसिद्धि राष्ट्रों में फैल गई (वचन 14)। उसकी आत्मनिर्भरता ने उसे एक आत्मिक वेश्या बना दिया क्योंकि उसने राष्ट्रों के धार्मिक अभ्यास और जीवन शैली को अपना लिया (वचन 15–34)। सदोम (उत 19) और सामरिया (2 रा 17:6) नगर जो अपनी अनैतिकता के लिए जाने जाते हैं, यरूशलेम की बहनें कहलाती हैं (यहेज 16:46)। उनका परमेश्वर द्वारा न्याय किया गया था, लेकिन उन नगरों का

भ्रष्टाचार यरूशलेम की अश्लीलता की तुलना में बहुत कम था (वचन 48–51)। इस प्रकार, यरूशलेम भी निश्चित रूप से गिर जाएगी और उजाड़ हो जाएगी। फिर भी यहेजकेल न्याय के अंतिम परिणाम की भविष्यवाणी करते हैं; यरूशलेम अपने पश्चाताप के बाद वाचा की आशीषों में बहाल हो जाएगी (वचन 62–63)।

तीसरा दृष्टांत (अध्याय 17) राजनीतिक घटनाक्रमों पर परमेश्वर की संप्रभुता पर केंद्रित है। अश्शूर अब एक शक्ति नहीं रह गया था। बाबेल और मिस्र दोनों ने प्रभुत्व स्थापित किया, हालांकि शक्ति का संतुलन बाबेल के पक्ष में झुक रहा था। उनकी शक्ति के विस्तार की तुलना एक उकाब से की गई है। नबूकदनेस्सर, जिसे "एक लम्बे पंखवाले, परों से भरे और रंग-बिरंगे" के रूप में चित्रित किया गया है, उसने यहोयाकीन, "देवदार की फुनगी," को पद से हटाकर और उसे यहूदी राज्य के युवा अगुवों के साथ बंधुआई में भेजकर यहूदा के मामलों पर नियंत्रण कर लिया (17:3–4)। यहेजकेल उनमें से एक था। नबूकदनेस्सर ने यहूदियों को सिदकिय्याह के अधीन अपने मामलों को नियंत्रित करने दिया लेकिन उससे अपेक्षा की कि वह बाबेल के अधीन रहें और किसी अन्य शक्ति के अधीन न हों, लेकिन यहूदा ने (जिसकी तुलना एक दाखलता से की गई है) मिस्र के फिरौन होप्रा, "लम्बे पंखवाला और परों से भरा हुआ बड़ा उकाब पक्षी" (वचन 7), के साथ नबूकदनेस्सर के खिलाफ गठबंधन करने की कोशिश की। मिस्र की ओर मुड़ने में सिदकिय्याह की मूर्खता, नबूकदनेस्सर द्वारा दाखलता को जड़ से उखाड़ने और उसे मुरझाने का कारण बनाएगी (वचन 9–10)। दृष्टांत को समझाते हुए, परमेश्वर ने बंधुआई में गए लोगों से कहा कि यहूदा का पतन राजा नबूकदनेस्सर के प्रति उनकी अविश्वसनीयता का परिणाम था, जिसे यहूदा ने वाचा द्वारा निष्ठा का वचन दिया था (वचन 13–18)। इस प्रकार यहूदा की अविश्वसनीयता उसके सभी संबंधों तक विस्तारित हो गई: धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक। बंधुआई के बाद, परमेश्वर ने वादा किया, वह अपने लोगों को एक मसीहा, "एक कोमल कनखा" (वचन 22) के अधीन उनके देश में पुनर्स्थापित करेगा। मसीही शासन को युवा टहनी द्वारा दर्शाया गया है, जिसे जब भूमि में लगाया जाएगा तो वह एक शानदार देवदार बन जाएगा, जो पक्षियों को छाया और सुरक्षा प्रदान करेगा। अध्याय 17 मानव मामलों में परमेश्वर की संप्रभुता की एक प्रेरणादायक पुष्टि है ("सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊँचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊँचा किया, हरे वृक्ष को सूखा दिया, और सूखे वृक्ष को हरा भरा कर दिया"—17:24)।

अध्याय 18–22 यहेजकेल की यहूदा, उसके अगुवों और बंधुआई में गए लोगों के लिए भविष्यवाणियाँ हैं। सबसे पहले, वह परमेश्वर की धार्मिकता के मानक को स्पष्ट करता है: "जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा" (18:4)। लोग परमेश्वर पर अन्याय का आरोप लगा रहे हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि वे अपने पूर्वजों के पापों के कारण परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं (वचन 25–29)। यद्यपि दस आज्ञाएँ कहती हैं कि परमेश्वर "उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया" करता है (निर्ग 20:5), भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की न्यायप्रियता को सही ठहराते हुए लोगों से कहता है कि वे केवल अपने पूर्वजों के पाप के लिए दंडित नहीं किए जा रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सीधे परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए; पापी अपनी दुष्टता में मरेगा और धर्मी अपनी धार्मिकता में जीवित रहेगा। परमेश्वर के नैतिक और नागरिक व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य जीवन को पुरुस्कृत किया जाएगा (यहेज 18:5–9)। भले ही किसी का पिता पापी हो, पिता का पाप हस्तांतरणीय नहीं है (वचन 14–18)। परमेश्वर किसी भी पापी को क्षमा करने के लिए तैयार है जो पश्चाताप करता है (वचन 27)। भविष्यद्वक्ता द्वारा परमेश्वर के न्याय की पुष्टि पश्चाताप की बुलाहट बन जाती है। यहूदा और बंधुआई में गए लोगों में पापियों को उनकी बुराई के परिणामों के बारे में चेतावनी दी गई थी, और उन्हें अपने परमेश्वर और उनके सही और गलत के मानक की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया गया था (वचन 31–32)।

अध्याय 19 में दो दृष्टांत एक विलाप के रूप में हैं। पहला एक सिंहनी और उसके दो बच्चों को दर्शाता है। सिंहनी हमूतल है, राजा योशिय्याह की पत्नी (2 रा 23:31), जिसने दो पुत्रों को जन्म दिया: यहोआहाज और सिदकिय्याह। यहोआहाज का उल्लेख यहेजकेल 19:3–4 में एक जवान सिंह के रूप में किया गया है जो बड़ा हुआ और मिस्र ले जाया गया (फ़िरौन-नको द्वारा 608 ईसा पूर्व में; देखें 2 रा 23:31–34)। सिदकिय्याह दस साल बाद सिंहासन पर बैठा। विलाप में भविष्यद्वक्ता कल्पनाशील रूप से सिदकिय्याह को एक जवान सिंह के रूप में प्रस्तुत करता है जिसे अंततः एक विद्रोही शासक के रूप में बाबेल ले जाया जाता है (यहेज 19:7–9)। दूसरा दृष्टांत एक दाखलता की छवि में बदल जाता है, जो इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है (वचन 10)। अपने प्रारंभिक दिनों में परमेश्वर ने इस्राएल को मजबूत सिंह के बच्चों से आशीष दी, लेकिन अब दाखलता मुरझा रही थी क्योंकि सिदकिय्याह ने यहूदा की उसके अंतिम दिनों में गैर-जिम्मेदाराना तरीके से अगुवाई की। यहेजकेल का विलाप सिंहासन के लिए एक अच्छे उम्मीदवार की कमी और दाखलता में जीवन की कमी पर जोर देता है (वचन 13–14)।

अध्याय 20 में भविष्यद्वक्ता, अपने लोगों के खिलाफ परमेश्वर के तर्क को समाप्त करता है। वह मिस्र में परमेश्वर के आत्म-प्रकाशन से शुरू करके इस्राएल के अतीत के इतिहास की समीक्षा करता है (20:5–6)। उसने अपने लिए एक हठी राष्ट्र को चुना, जो मूर्तिपूजा से जुड़ा हुआ था (वचन 8) और धर्मत्याग की ओर प्रवृत्त था (वचन 13, 21)। इस्राएल एक महान राष्ट्रों में से एक बनना चाहता था (वचन 32) बजाय पवित्र लोग बनने के (वचन 12)। अपनी आत्मिक कठोरता के परिणामस्वरूप, इस्राएल को राष्ट्रों के बीच रहने के लिए बिखेर दिया गया (वचन 35)। फिर भी परमेश्वर की इस्राएल

के साथ एक महान वाचा थी, जो पितृपुरुषों अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ द्वारा बाँधी गई थी। उस वाचा के आधार पर, परमेश्वर उन लोगों के प्रति करुणा दिखाएंगे जो अपने पापपूर्ण मार्गों से पश्चाताप करते हैं (वचन 37–44)। इस्राएल के न्याय और पुनर्स्थापन में दूसरे राष्ट्र परमेश्वर की पवित्रता को देखेंगे, जो इस्राएल में विश्वासघात को सहन नहीं करती (वचन 41)।

यहेजकेल की भविष्यवाणियाँ इस्राएल के पाप पर परमेश्वर के न्याय और इस्राएल की पुनर्स्थापना के बीच बदलती रहती हैं, जो इस्राएल के अतीत और भविष्य के बीच पुल का काम करती हैं। यरूशलेम पर आने वाले न्याय के बारे में लोगों के संदेहों को देखते हुए, वह न्याय की आवश्यकता और पश्चाताप की आवश्यकता पर जोर देता है। फिर भी, भविष्य में एक अवशेष की पुनर्स्थापना को यहाँ-वहाँ उसके न्याय के संदेश के समकक्ष के रूप में छुआ गया है। यरूशलेम के पतन की घोषणा करने के बाद, भविष्यवक्ता न्याय के संदेश से आशा के संदेश की ओर स्थानांतरित हो जाता है।

भविष्यद्वक्ता चार भविष्यवाणियों में न्याय की घोषणा पर लौटता है (20:45–21:32)। वह नेगेव वन क्षेत्र के विरुद्ध बोलता है (20:45–49), यरूशलेम और इस्राएल की भूमि के विरुद्ध बोलता है (21:2–17, 20–27), और अम्मोनियों के विरुद्ध बोलता है (वचन 28–32)। परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर की तलवार को यहूदियों पर अपने न्याय का साधन बनने की अनुमति दी (वचन 19)। वह अम्मोनियों पर न्याय करेगा। यहूदी अपनी पूर्व महिमा को पुनः प्राप्त करेंगे, लेकिन अम्मोनियों की स्मृति नष्ट हो जाएगी (वचन 27, 32)। अम्मोनियों के विरुद्ध भविष्यवाणी इस्राएल के अन्य पड़ोसियों: मोआब, एदोम, पलिश्ती, सोर, सीदोन और मिस्र पर एक बड़े आलेख की प्रतीक्षा करती है (अध्याय 25–29)।

अध्याय 22–24 में यरूशलेम के खिलाफ नए आरोपों की एक श्रृंखला शामिल है। यरूशलेम की धार्मिक और नागरिक अगुवाई (भविष्यवक्ता, याजक और राजकुमार) भ्रष्ट हैं और लोगों ने उनके उदाहरण का अनुसरण किया है (22:25–30)। दो बहनों, ओहोला और ओहोलीबा, का दृष्टांत व्यभिचारी यरूशलेम के दृष्टांत का एक रूपांतर है (अध्याय 23; तुलना करें अध्याय 16)। इसमें अंतर यह है कि ओहोला और ओहोलीबा के दृष्टांत में यरूशलेम, जो जल्द ही बंधुआई में जाने वाला है और सामरिया, जो पहले से ही बंधुआई में है, उनके बीच तुलना अधिक स्पष्ट है। अध्याय 16 में यरूशलेम पर सोदोम और सामरिया से भी बड़े पापों का आरोप लगाया गया था, लेकिन पुनर्स्थापना का वादा किया गया था। केवल दो बहनों की व्यभिचारी प्रकृति और उन पर परमेश्वर का न्याय अध्याय 23 में जोर दिया गया है, जिसमें पुनर्स्थापना का कोई शब्द नहीं है। यह दृष्टांत उबलते हण्डे के दृष्टांत (अध्याय 24) के लिए एक उपयुक्त परिचय है, जिसमें यरूशलेम की तुलना पानी से उबलते जंग लगे हण्डे से की गई है। यरूशलेमवासी, जो उबलते हण्डे में मांस के टुकड़ों के समान हैं, उनको शहर में मरना होगा। यह दृष्टांत नबूकदनेस्सर की यरूशलेम की घेराबंदी के प्रारंभिक दिन पर उच्चारित किया गया था। इस प्रकार, बंधुआई में गए लोगों को मंदिर को नष्ट करने के परमेश्वर के इरादे के बारे में ईश्वरीय रूप से चेतावनी दी गई थी (24:21) और यरूशलेम के पतन की बुरी खबर लाने वाले संदेशवाहकों के लिए तैयार किया गया था।

वे भविष्यवाणियाँ और दृष्टांत पुस्तक के पहले भाग को समाप्त करते हैं। यहेजकेल ने यहूदा के विद्रोही घर के खिलाफ परमेश्वर का मामला कई तरीकों से प्रस्तुत किया है। उसके रूपकों ने यहूदा की तुलना जले हुए लकड़ी के टुकड़े, उखाड़ी गई दाखलता, एक बच्ची जो व्यभिचारिणी बन गई और ओहोलीबा, व्यभिचारी स्त्री से की है। उसने परमेश्वर के वचन की पूर्ति और परमेश्वर की न्यायप्रियता के खिलाफ तर्कों का खंडन किया है। उसने बंधुआई में गए लोगों को आश्वासन दिया है कि परमेश्वर धर्मियों को नहीं छोड़ेगा और इस्राएल का भविष्य एक धर्मी अवशेष से शुरू होगा। यहेजकेल के लेखन का पेंडुलम न्याय से पुनर्स्थापन की ओर झूलता रहा है, जबकि घड़ी यहूदा को उसके पतन के समय के करीब ला रही थी।

राष्ट्रों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ (25:1–32:32)

अम्मोन, मोआब और एदोम इस्राएल के पूर्वी पड़ोसी थे, क्योंकि वे जातीय रूप से इस्राएल से संबंधित थे, उन पर इस्राएलियों द्वारा प्रतिज्ञात देश की ओर जाते समय हमला नहीं किया गया था। अम्मोन और मोआब, अब्राहम के भतीजे लूत के वंशज थे, और एदोमी, याकूब के भाई एसाव के वंशज थे। यद्यपि परमेश्वर ने उनके साथ युद्ध करने से मना किया था, इस्राएल और उसके पूर्वी पड़ोसियों के बीच संबंध हमेशा तनावपूर्ण थे। इस्राएल कुछ समय के लिए अम्मोनियों द्वारा पराजित किया गया था और इस्राएल कभी भी एदोमियों के प्रतिस्पर्धी व्यापार संबंधों को नियंत्रित करने में सफल नहीं हुआ। उन पड़ोसी राष्ट्रों ने यरूशलेम पर बाबेल के हमले में शामिल होकर यरूशलेम के पतन और मंदिर की तबाही पर खुशी मनाई (यहेज 25:3–12)। वे यहूदा के शहरों पर कब्जा करने और लूटने के लिए तैयार थे और यरूशलेम के संकट के समय में परेशानी पैदा करने के लिए तत्पर थे। इसलिए, यहेजकेल कहता है, परमेश्वर का न्याय अम्मोन, मोआब और एदोम तक भी फैलेगा (वचन 4–14)।

पलिश्ती इस्राएल के दक्षिण-पश्चिम में शत्रु थे। न्यायियों और संयुक्त राजशाही के समय में पलिश्तियों ने इस्राएल के अधिकांश क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया था। राजा दाऊद ने पलिश्तियों को उनके अपने क्षेत्र तक सीमित करके पलिश्ती खतरे को सफलतापूर्वक सीमित कर दिया था, लेकिन यहेजकेल के समय में वे अभी भी इस्राएल के "चिरस्थायी" शत्रु माने जाते थे (25:15), संभवतः यहूदा पर बाबेल के आक्रमण के दौरान पलिश्तियों के समर्थन के कारण यह और भी बढ़ गया था।

सोर नगर को यरूशलेम के पतन की जानकारी मिली थी और वह अपने लाभ के लिए इस अवसर का फायदा उठाने के लिए तैयार था (26:2)। सोर की व्यापारिक स्थिति बेजोड़ थी; इसके जहाज कई दूरस्थ देशों के साथ वस्तुओं का आदान-प्रदान करने के लिए समुद्र पार करते थे (यहेज 27)। हालांकि सोर जल्द ही कसदियों द्वारा टूट जाएगा, इसके बेड़े के विनाश और इसके नाविकों की हत्या के साथ इसकी संपत्ति सूख जाएगी (27:26)।

सोर के राजकुमार को अध्याय 28 में अलग से उल्लेख किया गया है, लेकिन वचन 12 में सोर के "राजा" का उल्लेख है। व्याख्याकार इस बात पर असहमत हैं कि वह एक ही व्यक्ति है या दो। जो दोनों के बीच भेद करते हैं, वे सोर के राजकुमार को उस शहर का शासक मानते हैं, लेकिन वे सोर के "राजा" को शैतान का प्रतिनिधित्व करने वाला मानते हैं (28:13–15)। अदन की वाटिका अपनी सारी भव्यता के साथ स्वर्गदूत-शैतान के पतन से पहले उसकी मूल महिमा के लिए एक उपयुक्त स्थान है। लेकिन संदर्भ के भीतर राजकुमार और सोर के राजा के बीच भेद करने का कोई कारण नहीं है। प्रत्येक ने स्वयं को ऊँचा उठाया है और दोनों ने मनुष्यों पर ऐसे अधिकार लिया जैसे वे देवता हों और उन्होंने वह सारी भव्यता और राजसी ठाट-बाट का आनंद लिया जो परमेश्वर का है। दोनों राजकुमार और राजा अपनी उच्च स्थिति से गिरते हैं। यह गद्यांश यहेजकेल की साहित्यिक क्षमता का एक शानदार उदाहरण है। वह अदन की वाटिका की एक शानदार तस्वीर खींचता है, उसी विषय को पुनः प्रस्तुत करते हुए वह सोर के राजा की महिमा और पतन को चित्रित करता है। यहेजकेल उन्हें एक करूब के रूप में प्रस्तुत करता है, स्थानीय विश्वास के अनुसार कि राजा दिव्य था। उसने सबसे उत्तम वस्त्र पहने थे, जिनमें नौ प्रकार के बहुमूल्य पत्थर थे (वचन 13)। हालांकि परमेश्वर ने उसे राजगद्दी पर बिठाया था (वचन 13–14), राजा का हृदय भौतिकवाद और धार्मिक और न्यायिक भ्रष्टाचार की ओर मुड़ गया (वचन 16–18)। एक अर्थ में राजा (राजकुमार) सोर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। वे सभी भ्रष्टाचार, अन्याय और हिंसा के दोषी थे। यदि परमेश्वर ने अपने वाचा के लोगों का उनके न्याय में विकृति और उनके पापों के लिए न्याय किया, तो उसका न्याय निश्चित रूप से सोर नगर पर भी आएगा (वचन 18–19)। जब कसदियों ने सोर पर चढ़ाई की, तो उन्होंने बड़ी मेहनत से मुख्य भूमि से शहर तक एक घाट का निर्माण किया। उसी समय सामान और खज़ाने से लदे सोर के जहाज भूमध्य सागर के पार चले गए, ताकि जब नबूकदनेस्सर की सेना अंततः दीवारों को तोड़ दे, जिससे थोड़ी लूट हो सके (29:18)।

सीदोन नगर ने भी यरूशलेम के विनाश पर खुशियाँ मनाईं। सीदोन फीनीके का एक बंदरगाह नगर था, जो सोर के उत्तर में स्थित था। महामारी और युद्ध के द्वारा, सीदोन के निवासी इस्राएल के परमेश्वर के न्याय को जानेंगे।

छः राष्ट्र (अम्मोन, मोआब, एदोम, पलिश्त, सोर और सीदोन) ने यरूशलेम के पतन पर इस्राएल का अपमान किया, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी पवित्रता को यरूशलेम के मंदिर और अपने लोगों में निवेश किया था, मंदिर का विनाश और लोगों का बंधुआई में जाना इन राष्ट्रों को यह संकेत देता था कि इस्राएल का परमेश्वर असमर्थ था। वे यह नहीं समझते थे कि इस्राएल की दुर्दशा का कारण परमेश्वर की, अपने लोगों के पाप के प्रति असहिष्णुता थी। परमेश्वर की पवित्रता पाप की सजा की मांग करती थी और यह उनके नाम की पुष्टि की भी मांग करती थी (28:22–23)। परमेश्वर अभी भी अपने लोगों के लिए चिंतित थे, ताकि इस्राएल जान सके कि उसने उनके पड़ोसियों के अपमान को हटा दिया है (वचन 24)। इस्राएल की पुनर्स्थापना में प्रभु अपनी पवित्रता को राष्ट्रों के सामने और भी प्रकट करेगा। इस्राएल को भूमि, दाख की बारियाँ और घर वापस मिलेंगे और वे प्रभु की समृद्धि का शांति में आनंद लेंगे (वचन 25–26)।

मिस्र ने इस्राएल और यहूदा के लोगों को यह विश्वास दिलाया था कि उसकी मदद से अश्शूर और बाबेल के लोग पलिश्तियों के देश में टिक नहीं पाएंगे। 722 ईसा पूर्व में अश्शूर की सेना ने उत्तरी राजधानी सामरिया पर कब्जा कर लिया और 586 ईसा पूर्व में कसदियों (बाबेल) ने यरूशलेम पर विजय प्राप्त की, जबकि मिस्र निष्क्रिय बना रहा। मिस्र ने आर्थिक कारणों से पलिश्तियों पर नियंत्रण की इच्छा की थी, लेकिन अपने स्वयं का धन खर्च करके नहीं। मिस्र भी परमेश्वर के न्याय के अधीन अपनी अगुवाई क्षमता खो देगा (29:9–16)। विदेशी शक्तियों पर निर्भरता कम होने से, मिस्र अब इस्राएल के लिए बाधा नहीं बनेगा। पहले, बाबेल को मिस्र की शक्ति तोड़ने की अनुमति दी गई (23:1–32:21); बाद में, फारसियों, यूनानियों और रोमनों ने मिस्र को एक प्रांत के रूप में शामिल कर लिया।। मिस्र का पतन कई बड़े और छोटे राज्यों के पतन के साथ हुआ: अश्शूर (32:22–23), एलाम (वचन 24–25), मेशेक और तूबल (वचन 26–28), एदोम (वचन 29) और सीदोन (वचन 30)।

आशा की घोषणा (33:1–48:35)

आसपास के राष्ट्रों पर परमेश्वर के न्याय के दर्शन के बाद, यहेजकेल इस्राएल की भविष्य की आशा की ओर लौटता है। अपनी पुस्तक के पहले प्रमुख भाग में उसने यहूदा के बंधुआई में जाने और मंदिर के विनाश के कारणों पर चर्चा की, जिसमें अक्सर इस्राएल के भविष्य की ओर इशारा किया गया। भविष्यवक्ता ने अपनी लेखन सामग्री के संगठन में, इस्राएल के न्याय और पुनर्स्थापन की भविष्यवाणियों के बीच, इस्राएल के पड़ोसियों पर परमेश्वर के न्याय के वचनों को शामिल किया जो उसके पतन में प्रोत्साहित और आनंदित हुए। अपने इतिहास के दौरान इस्राएल ने विदेशी राष्ट्रों को अपने विश्वास, संस्कृति और शासन के रूप को प्रभावित करने की अनुमति दी थी। उनकी शक्तियों में कमी का मतलब था कि इस्राएल, प्रतिज्ञा किए गए देश में पुनर्स्थापित होकर, परमेश्वर के प्रति

विश्वासयोग्यता के लिए अधिक स्वतंत्र होगा। पुनर्स्थापन के विषय को उठाने से पहले, यहेजकेल अध्यायों 1–24 के जोर को पुनः देखता है: (1) उसे इस्राएल पर पहरुआ बनने के लिए बुलाया गया था (33:1–9; तुलना करें 1:1–3:21)। (2) इस्राएल ने प्रभु के विरुद्ध पाप किया था और उसे एक धर्मी न्याय प्राप्त करना था (33:10)। (3) यरूशलेम को कसदियों (बाबेल) द्वारा ले लिया जाना था (वचन 21)। (4) पुनर्स्थापन के लिए इस्राएल का पश्चाताप आवश्यक है (वचन 11–16)।

अब तक उसकी सेवकाई सफल नहीं हुई थी। बंधुआई में गए जिन लोगों ने उसके संदेश सुने थे, वे यहेजकेल की आलंकारिकता और साहित्यिक क्षमताओं की बहुत सराहना करते थे (33:32)। उन्होंने यहेजकेल को एक पहरुए के रूप में आसानी से स्वीकार कर लिया था जो यरूशलेम में आने वाली विपत्ति के बारे में लोगों को चेतावनी देता था और वे यह भी मान सकते थे कि उनके पाप ही इस्राएल और यरूशलेम पर परमेश्वर के न्याय का कारण थे। हालांकि वे भविष्यवाणी के वचन को अपने जीवन में लागू करने में धीमे थे। परमेश्वर उनके पापों को क्षमा करने के लिए तैयार था यदि वे पश्चाताप करते, उसे स्वीकार करते और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करके अपने नवजीवन की आत्मा को प्रदर्शित करते (वचन 32)। अब जब यरूशलेम की खबर बंधुआई में गए लोगों तक पहुँच चुकी थी (वचन 21), तो लोगों के लिए ज़िम्मेदारी से कार्य करने की आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी। प्रभु ने यह प्रकट कर दिया था कि यहेजकेल एक सच्चा भविष्यद्वक्ता था (वचन 33)।

यहेजकेल की सेवकाई की सफलता को संख्या में नहीं मापा गया था। उसने वचन, संकेत और दृष्टांत में परमेश्वर के वचन को निष्ठापूर्वक घोषित किया। बंधुआई में गए लोगों ने झूठे "चरवाहों" द्वारा घोषित झूठी आशाओं का अनुसरण किया था जिन्होंने झुंड की कीमत पर खुद को मोटा किया था (34:2–3)। उन्होंने ज़रूरतमंदों की देखभाल नहीं की (वचन 4) और उन्होंने झुंड को बिखरने दिया (वचन 5–6)। परमेश्वर ने अपने लोगों से वादा किया कि वह विश्वासयोग्य चरवाहा होगा, भेड़ों को एकत्रित करेगा, उन्हें खिलाएगा, और उनकी देखभाल करेगा (34:11–15; पुष्टि करें भजन 23)। परमेश्वर भेड़ों और बकरियों के बीच भी अंतर करेगा, यह जानने के लिए कि किसका मन उसके साथ सही है, ताकि सच्ची भेड़ों को परमेश्वर के झुंड में पुनर्स्थापित किया जा सके (यहेज 34:20–22)। परमेश्वर के वादे में भूमि की पुनर्स्थापना और ईश्वरीय रूप से नियुक्त दाऊद के वंश की पुनर्स्थापना शामिल थी (वचन 24)। मसीही वाचा के अंतर्गत प्रभु और इस्राएल के बीच नवीनीकृत संगति को एक नई वाचा, "शांति की वाचा" के साथ सील किया जाएगा। उस वाचा ने लोगों को उनके श्रम पर परमेश्वर की आशीष का आश्वासन दिया, जिससे उन्हें प्रचुर फसलें मिलेंगी (वचन 26–27)। लोगों को अपने प्रयासों में प्रकृति के खिलाफ लड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा (वचन 25–28)। उन्हें अन्य लोगों के खिलाफ संघर्ष नहीं करना पड़ेगा जो बलपूर्वक उनकी आशीषों में हिस्सा लेने की कोशिश कर सकते हैं (वचन 27–29)। भविष्यवाणिय दर्शन ने बंधुआई के बाद इस्राएल की पुनर्स्थापना, यीशु मसीह का आगमन (पुष्टि करें यूहन्ना 10) और पाप-शापित दुनिया की पूर्ण पुनर्स्थापना की घटनाओं को दूरदर्शित किया।

अध्याय 34 पुनर्स्थापना के संदेशों की कुंजी है। इसमें जोर दिया गया है कि बार-बार दोहराए गए वचन "वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा" (11:20; पुष्टि करें 34:30; 36:28) का कार्यान्वयन होगा। पुनर्स्थापना विषय के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में शामिल हैं: (1) परमेश्वर का अपने लोगों को वाचा की आशीषों में अनुग्रहकारी पुनर्स्थापन (36:20–36; 37:23–26; 39:25); (2) परमेश्वर का इस्राएल राष्ट्र का भूमि में पुनर्स्थापन (36:1–15, 24; 37:14–23; 39:27); (3) परमेश्वर की नई वाचा, अपने लोगों को अपना आत्मा देना (36:25–27; 37:14; 39:29), और अपने लोगों पर उसकी आशीषें देना (36:8–12, 29–38; 39:9–10, 26), उन्हें उनके शत्रुओं पर विजय का आश्वासन देना (35:1–15; 36:36; 37:28; 38:1–39:24); (4) परमेश्वर का अपने लोगों पर एक दाऊद के वंश के राजा, मसीहा की नियुक्ति (37:24–25); और (5) परमेश्वर का अपने लोगों के बीच मंदिर का पुनर्स्थापन (37:26–27)।

परमेश्वर के लोग

बंधुआई में गए लोगों का अस्वीकार हमेशा के लिए नहीं था। अब्राहमी वाचा के आधार पर, प्रभु ने विश्वासयोग्य बचे हुओं को आशीष देने और उन्हें नए बनाने का वादा किया। सूखी हड्डियों की घाटी की छवि विशेष रूप से उपयुक्त है। सूखी हड्डियाँ परमेश्वर के लोगों को बिना आशा के दर्शाती हैं (37:11)। यहेजकेल उन्हें यह शुभ समाचार सुनाता है कि परमेश्वर उन्हें नवीनीकृत और पुनर्स्थापित करेगा (वचन 12)। प्रभु का अपने लोगों के लिए उद्देश्य यह है कि सभी राष्ट्र उनके पवित्र नाम का सम्मान उनके लोगों के माध्यम से करें (39:7, 25–27)।

भूमि

वादा उस भूमि तक भी फैला है, जो मूल रूप से अब्राहम और उसके वंशजों को दी गई थी। अब्राहमी वाचा में एक मसीही तत्व शामिल था, क्योंकि वादा किए गए देश में रहने वाले अब्राहम के परिवार के माध्यम से सभी राष्ट्रों को परमेश्वर की आशीष प्राप्त होगी (उत 12:3)। एक दर्शन में यहेजकेल ने सीमाओं को देखा और भूमि के विभाजन का वर्णन किया (यहेज 47–48)। शाही नगर यरूशलेम परमेश्वर की उपस्थिति का केंद्रीय प्रतीक है; इसका नाम होगा "यहोवा शाम्मा" (48:8–35)।

नई वाचा

अब्राहमी वाचा को एक अनुग्रहकारी वाचा से नवीनीकृत किया गया है, जो पुनर्स्थापित संबंध को व्यक्त करती है।

"शांति की वाचा" इसके स्वभाव और लाभों का उपयुक्त वर्णन करती है। परमेश्वर के बेचैन लोगों को उनकी खोज, उनके शत्रुओं और उनके परिश्रम से विश्राम का वादा किया गया है। संबंध में परिवर्तन को और भी अधिक बल दिया गया है जब परमेश्वर अपने आत्मा को भेजता है, जो उसके लोगों की जीवनशैली में एक नया आयाम जोड़ेगा। परमेश्वर की आज्ञा का पालन अब बाधित नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उसके लोगों को उसकी इच्छा पूरी करने में मदद करता है। एक नया हृदय, जो परमेश्वर के आत्मा द्वारा नियंत्रित होता है, प्रभु के लोगों को दिया जाता है (36:26–27)। आत्मा की उपस्थिति भी लोगों के लिए एक नए जीवन का संकेत देती है (37:14; देखें यूह 3:8, 16; प्रेरि 2:38; रोम 8:2–4, 15)।

मसीहा

पुराने नियम के मसीही राजा की आशा यहेजकेल के संदेश में स्पष्ट होती है। उसका शासन सदा के लिए होगा (यहेज 37:25), उन सभी परमेश्वर के लोगों पर जो नया मन रखते हैं (वचन 15–25)।

मंदिर

एक याजक के रूप में, यहेजकेल मंदिर, याजकता, बलिदान के नियमों और त्यौहारों में गहरी रुचि रखता था। भविष्यवाणी के अंतिम विभाजन का एक बड़ा हिस्सा मंदिर की पुनर्जीवित आराधना का वर्णन करता है (40:1–46:24)। उसका परमेश्वर की महिमा का दर्शन, यरूशलेम पर परमेश्वर के न्याय के संदेशों में बहुत महत्वपूर्ण था (अध्याय 1, 10–11), अब बचे हुओं को आश्वासन देता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं छोड़ा (43:2–5)। वह उनके बीच निवास करेगा, क्योंकि मंदिर परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है (37:27)। कुछ व्याख्याकार मानते हैं कि मंदिर, जैसा कि यहेजकेल 40–46 में वर्णित है, मसीही युग में अंतिम न्याय से पहले पुनः स्थापित किया जाएगा। अन्य मानते हैं कि मंदिर के बारे में वादे, यहेजकेल की सबसे बड़ी चिंता का सकारात्मक प्रतीकात्मक उत्तर प्रदान करते हैं: क्या परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहने के लिए लौटेगा (48:35; देखें यूह 2:21; प्रका 21:22)।

अध्यायों 34–48 की विभिन्न व्याख्याएँ हैं। इस्राएल के पहरुए के रूप में, यहेजकेल के पास बंधुआई में गए यहूदी समुदाय के लिए एक संदेश था। इसलिए भविष्यवाणी की पूर्ति कुस्रू प्रथम (538 ईसा पूर्व) के उस आदेश से शुरू हुई होगी जिसमें यहूदियों को अपनी भूमि पर लौटने की अनुमति दी गई थी (एज्रा 1:1–3)। इस्राएल की भूमि पर पुनर्स्थापना से परे भविष्यवाणी की पूर्ति के बारे में दो प्रतिद्वंद्वी व्याख्या स्कूल हैं। जो इस्राएल को केवल राष्ट्र के रूप में व्याख्या करते हैं, वे यहूदियों के आधुनिक समय में इस्राएल की भूमि पर लौटने को परमेश्वर की भविष्यवाणी की प्रतिज्ञा की निरंतरता के रूप में देखते हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर की योजना इस्राएल के लिए पूरी हो रही है, और इसके साथ-साथ और इसके अतिरिक्त, उसकी योजना मसीही कलीसिया के लिए भी है। उन भविष्यवाणियों की पूर्ति मसीही राजा के आगमन से शुरू होगी, जो यहूदी लोगों को सांसारिक शांति देगा। मंदिर की आराधना (यहेज 40–48) मसीही राज्य की अवधि के दौरान किसी न किसी रूप में पुनर्स्थापित की जाएगी। कलीसिया यहूदियों पर केंद्रित सभी घटनाओं में एक छोटा हिस्सा प्राप्त करेगी। यहेजकेल के दर्शन की प्रतिज्ञाएँ इस प्रकार इस्राएल के राष्ट्र तक सीमित हैं और नए आकाश और पृथ्वी के आने से पहले पूरी होनी चाहिए।

अन्य व्याख्याकार मानते हैं कि यहेजकेल ने अब्राहम के आत्मिक वंशजों के लाभ के लिए लिखा, जो अब्राहम की तरह, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास करते हैं (उत 15:6; पुष्टि करें रोम 4:11–13; गला 3:6–9, 29)। वे सभी जो अब्राहम की तरह विश्वास रखते हैं, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति, अब्राहम की संतान माने जाते हैं (गला 3:28–29)। इस प्रकार यहेजकेल का संदेश परमेश्वर के उन सभी अनुग्रहकारी कार्यों को शामिल करेगा जो मसीही अन्यजातियों के बीच हुए हैं, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और लाभों के प्राप्तकर्ता बन गए हैं। यह संभव है, 1 पतरस 1:10–11 के आधार पर, यहेजकेल की भाषा को एक भविष्यवाणी के रूप में व्याख्या करना कि परमेश्वर का अनुग्रह उन सभी के पास कैसे आएगा जो सुसमाचार में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करते हैं।

यह भी देखें यहूदियों का प्रवास; यहेजकेल (व्यक्ति); भविष्यवाणी।

यहोअद्दा

आहाज का पुत्र और योनातन के वंश से राजा शाऊल का वंशज (1 इति 8:36); 1 इतिहास 9:42 में वैकल्पिक रूप से यारा कहा गया है।

यहोअद्दान, यहोअद्दिन

यहूदा के राजा अमस्याह की माता (2 रा 14:2; 2 इति 25:1)।

यहोआहाज

1. इस्राएल का बारहवां राजा, जो अपने पिता, येहू के बाद 814 ईसा पूर्व से 798 ईसा पूर्व तक शासन करता रहा। चूंकि वह एक दुष्ट राजा था, परमेश्वर ने इस्राएल को अरामी राजाओं हजाएल और उसके पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया। इस्राएल की सैन्य शक्ति 50 घुड़सवार, 10 रथ, और 10,000 पैदल सैनिकों तक सीमित हो गई। उत्पीड़न इतना गंभीर हो

गया कि यहोआहाज ने परमेश्वर से प्रार्थना की, जिन्होंने उसकी सुनी और इस्राएल को अरामियों से मुक्त किया, लेकिन यह योआश (यहोआश) के शासनकाल तक नहीं हुआ (2 रा 13:2–7, 25)। यहोआहाज के शासनकाल के दौरान, यहूदा और इस्राएल के बीच संबंध काफी अच्छे लगते थे, क्योंकि यहोआहाज (14:1, "योआहाज") ने अपने पुत्र योआश का नाम अपने समकालीन, यहूदा के राजा योआश के नाम पर रखा (2 रा 13:1, 9; 14:1)।

2. यहूदा का सत्रहवां राजा, जिसने 609 ईसा पूर्व में तीन महीने तक शासन किया। लोगों ने उसे उसके पिता योशियाह के उत्तराधिकारी के रूप में चुना, जो मगिद्दो की लड़ाई में मारा गया था। उसकी माता का नाम हमूतल था। यहोआहाज का राज्याभिषेक 23 वर्ष की आयु में हुआ। उसे शल्लूम (1 इति 3:15) भी कहा जाता है, और यहोआहाज शायद राज्य करते समय का नाम हो सकता है। उसे परमेश्वर के सामने एक दुष्ट राजा के रूप में वर्णित किया गया है। उसका शासन तब समाप्त हुआ जब फ़िरौन नको ने उसे हमात के रिबला में कैद कर लिया। बाद में उसे मिस्र ले जाया गया, जहां उसकी मृत्यु हो गई (2 रा 23:30–34)। यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि यहोआहाज कभी इस्राएल नहीं लौटेगा बल्कि अपनी बँधुआई के देश में ही मरेगा (यिर्म 22:11–12)।

3. अहज्याह का एक अन्य रूप, यहूदा के छठे राजा का नाम, जिसने 841 ईसा पूर्व में शासन किया (2 इति 21:17; पुष्टि करें 22:1)। नाम के दोनों रूपों का समान अर्थ है। अंतर ईश्वरीय नाम की स्थिति में है। यहोआहाज में यह पहले आता है, "यहो-" और अहज्याह में यह अंत में आता है, "-याह" (-यहोवा)। *देखें*अहज्याह #2।

4. अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर तृतीय के एक शिलालेख के अनुसार, यहूदा के 12वें राजा आहाज का पूरा नाम। *देखें* आहाज #1।

*यह भी देखें*इस्राएल का इतिहास।

यहोएली, यहोएलियों

यहोएली, यहोएलियों

1 इतिहास 26:21–22 में यीएल की वैकल्पिक वर्तनी जो एक लेवी और यहोएली परिवार का संस्थापक था। *देखें*यीएल #4।

यहोजाबाद

1. शोमेर का पुत्र, जो राजा योआश का सेवक था और जिसने बाद में, एक अन्य हमलावर के साथ, राजा की मिल्लो में हत्या कर दी (2 रा 12:21)। एक समानांतर संदर्भ में, यहोजाबाद को शिम्रित मोआबिन का पुत्र कहा गया है (2 इति 24:26)।अंततः राजा अमस्याह ने जो योआश का पुत्र था, हत्या के लिए यहोजाबाद को फांसी पर चढ़ाया (25:3)।

2. ओबेदेदोम का दूसरा पुत्र और लेवीय कोरहवंशी परिवार का एक सदस्य, जिन्हें राजा दाऊद द्वारा मंदिर में द्वारपाल नियुक्त किया गया था (1 इति 26:4)।

3. बिन्यामिन का सैन्य कमांडर, जिसने यहूदा के राजा यहोशापात के अधीन सेवा की और अपनी सेना में 1,80,000 पुरुषों की कमान संभाली (2 इति 17:18)।

यहोनातान

यहोनातान

1. 1 इतिहास 27:25 में उज्जियाह के पुत्र योनातान की एक वर्तनी। *देखें*योनातान #7।

2. यहोशापात द्वारा नियुक्त एक लेवी, जो यहूदा में घूमकर लोगों को व्यवस्था सिखाने के लिए उनके राष्ट्रीय धार्मिक सुधार के हिस्से के रूप में नियुक्त किया गया था (2 इति 17:8)।

3. महायाजक योयाकीम के दिनों में बँधुआई के बाद के यरूशलेम में शमायाह के याजकीय घराने का मुखिया (नहे 12:18)।

यहोनादाब

रेकाब के पुत्र यहोनादाब के लिए वैकल्पिक नाम। *देखें* यहोनादाब #2।

यहोयाकीम

यहोयाकीम

यहोयाकीम बहुत कम समय के लिए यहूदा का राजा था, जिसने 598 से 597 ईसा पूर्व तक शासन किया। वे यहोयाकीम और नहुश्ता के पुत्र थे, जो यरूशलेम के एलनातान की पुत्री थीं (संभवतः वही एलनातान जिनका उल्लेख भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह द्वारा किया गया है, यिर्म 26:22; 36:12, 2 देखें)। यहोयाकीम नाम का अर्थ है "यहोवा बनाए रखेगा।" उसे अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे:

- कोन्याह (यिर्म 22:24, 28; 37:1)
- येकोन्याह (1 इति 3:16–17; एस्त 2:6; यिर्म 24:1; 27:20; 28:4; 29:2)
- यकुन्याह (मत्ती 1:11–12).

अपने पिता की मृत्यु के बाद जब यहोयाकीम राजा बना तब उसकी आयु 18 वर्ष थी, लेकिन उसने यरूशलेम में केवल तीन महीने और दस दिन तक शासन किया (2 रा 24:8; तुलना करें 2 इति 36:9)। उस समय, यहूदा बाबेल के नियंत्रण में था, लेकिन उनके खिलाफ विद्रोह कर रहा था। जब बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर हमला किया, तो यहोयाकीम को आत्मसमर्पण करना पड़ा क्योंकि बाधाएं बहुत अधिक थीं। बाबेल के इतिहास के अनुसार, जो बाबेल के राजाओं के आधिकारिक अभिलेखों पर आधारित है, नबूकदनेस्सर ने दिसंबर 598 ईसा पूर्व में इस क्षेत्र में प्रवेश किया और 16 मार्च, 597 ईसा पूर्व में यरूशलेम पर कब्जा कर लिया। बाबेल के लोगों ने महल और मंदिर के खजाने खाली कर दिए। बाबेल के लोग कई कैदियों को बाबेल ले गए:

- यहोयाकीम
- उनका परिवार
- सेना के अगुवा
- राजसी अधिकारी
- कुशल कार्यकर्ता

बाबेल लौटने से पहले, नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम के चाचा, मत्तन्याह, जिसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रखा गया था, को यरूशलेम में सिंहासन पर बिठाया (2 रा 24:12–17; तुलना करें 2 इति 36:10)।

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने देखा कि बाबेल के दर्दनाक आक्रमण और राजनीतिक अराजकता के बावजूद, यहूदा के लोगों ने बहुत अधिक आध्यात्मिक परिवर्तन का अनुभव नहीं किया (यिर्म 37–38)। यिर्मयाह ने यह भी भविष्यवाणी की कि यहोयाकीम को निर्वासित किया जाएगा और उसके वंशजों में से कोई भी राजा के रूप में उसका उत्तराधिकारी नहीं बनेगा (यिर्म 22:24–30)। इसके विपरीत, हनन्याह नामक एक झूठे भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की कि यहोयाकीम को दो साल के भीतर सिंहासन पर बहाल कर दिया जाएगा (यिर्म 28:3–4, 11; तुलना करें 12–17)।

यहोयाकीम यहूदा के वैध राजा बने रहे, जो इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने अपने संदेशों को यहोयाकीम की बँधुआई के वर्षों के अनुसार दिनांकित किया, न कि सिदकिय्याह के शासनकाल के अनुसार (यहे 1:2; 8:1; 20:1)। बाबेल अभिलेख भी यहोयाकीम की शाही स्थिति को स्वीकार करते हैं। ये अभिलेख दिखाते हैं कि उन्होंने राजा के रूप में अपनी उपाधि बरकरार रखी और बाबेलियों से अनुकूल व्यवहार प्राप्त किया। एक कीलाक्षर पट्टिका में "यहुदा देश के राजा याकिन" को उसके पांच बेटों के साथ तेल और जौ का राशन प्राप्त करते हुए भी सूचीबद्ध किया गया है। इससे पता चलता है कि उन्हें कैद नहीं किया गया था, बल्कि वे बाबेल में अपेक्षाकृत सामान्य जीवन जी रहे थे। हालाँकि, एक समय, यहोयाकीन को कैद कर लिया गया था। बाद में उसे 562 ईसा पूर्व के आसपास एविल-मेरोदक के शासनकाल के दौरान रिहा कर दिया गया और उसे बाबेल के राजा के साथ भोजन करने का विशेषाधिकार दिया गया (2 रा 25:27–30; यिर्म 52:31–34)। यह स्पष्ट नहीं है कि उसे भागने के प्रयास के कारण कैद किया गया था या सिदकिय्याह के अधीन बाबेल के खिलाफ यहूदा के विद्रोह के कारण।

मत्ती के सुसमाचार में यहोयाकीम का नाम यीशु मसीह कि वंशावली मे दिखाई देता है (मत्ती 1:11–12)। कुछ लोगों का मानना है कि यह यिर्मयाह की भविष्यवाणी का खंडन करता है कि यहोयाकीन के वंशजों में से कोई भी सिंहासन पर नहीं बैठेगा (यिर्म 22:30)। हालांकि, अन्य लोग सुझाव देते हैं कि भविष्यद्वक्ता हाग्गै द्वारा जरूब्बाबेल (जो यहोयाकीम के वंशज थे) की आशीष (हाग् 2:20–23) ने यिर्मयाह के श्राप को उलट दिया और यहोयाकीम की वंशावली को दाऊद और अंततः मसीहाई वंश में पुनः प्रस्तुत किया (देखें यशा 56:3–5)।

यह भी देखें बाइबिल का कालक्रम (पुराना नियम); यहूदियों का प्रवास; इस्राएल का इतिहास।

यहोयाकीम

जबीदा के द्वारा योशियाह का दूसरा पुत्र (2 रा 23:36; 1 इति 3:15; 2 इति 36:4) जो 609 ईसा पूर्व में यहूदा का राजा बना। उसने अपने छोटे भाई यहोआहाज को राजा के रूप में प्रतिस्थापित किया जब उसे फ़िरौन-नको द्वारा तीन महीने के शासन के बाद पदच्युत और निर्वासित कर दिया गया (2 रा 23:31–35)। यहोयाकीम को 25 वर्ष की आयु में राजा के रूप में स्थापित किया गया, और उसने यरूशलेम में 11 वर्षों तक शासन किया। उसके दिए गए नाम, एलयाकीम, का अर्थ है "परमेश्वर स्थापित करेंगे।" उसे सिंहासन पर बैठाने के बाद, नको ने उसका नाम बदलकर यहोयाकीम कर दिया, जिसका अर्थ है "यहोवा स्थापित करेंगे" (2 रा 23:34) क्यूंकि शायद वह अपने कार्य के लिए यहोवा का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश कर रहा था।

नको ने यहूदा पर भारी कर लगाया, जिसे यहोयाकीम ने पूरी भूमि पर कर लगाकर उठाया (2 रा 23:35; पुष्टि करें यिर्म 22:13–17, जहां यहोयाकीम के खिलाफ धिक्कार भविष्यद्वाणी यह संकेत देती है कि उसने इन धनराशियों में से कुछ का व्यक्तिगत उपयोग किया)। यहोयाकीम मिस्रियों के अधीन तब तक रहा जब तक कि 605 ईसा पूर्व में कर्कमीश

की लड़ाई में नबूकदनेस्सर और नव-बाबेलियों ने नको को पराजित नहीं कर दिया। इसके बाद यहूदा तीन वर्षों के लिए बाबेल के अधीनता का राज्य बन गया (2 रा 24:1–2)। 601 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर की नको को पूरी तरह से पराजित करने में विफलता के बाद, यहोयाकीम ने बाबेली जूऐ को उतार फेंकने का अवसर प्राप्त किया जब बाबेली राजा अपनी सेना को पुनर्गठित करने के लिए घर लौटे। यह अविवेकपूर्ण निर्णय महंगा पड़ा, क्योंकि नबूकदनेस्सर ने 598 ईसा पूर्व में यहूदा पर आक्रमण किया ताकि वह विद्रोही सामंत राजा को दंडित करे (2 रा 24:3–7)। मिस्र से अपेक्षित सहायता कभी नहीं आई, और बाबेलियों ने दबीर और लाकीश जैसे महत्वपूर्ण यहूदी शहरों को नष्ट कर दिया, नेगेव पर नियंत्रण कर लिया, और यहूदा के कई हजार सबसे सक्षम नागरिकों को निर्वासित कर दिया। इसमें कोई शंका नहीं कि इससे अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा और यहूदा लगभग नेतृत्वहीन हो गया। बाबेली घेराबंदी के दौरान यहोयाकीम की मृत्यु हो गई (संभवतः 598 ईसा पूर्व के अंत में)। उनका पुत्र यहोयाकीन सिंहासन पर बैठे।

हालांकि यहोयाकीम की मृत्यु के विवरण का अभिलेख नहीं किया गया है, बाइबल के इतिहासकार उसके शासन को उस के पूर्वजों की बुराइयों को जारी रखने वाला शासन मानते हैं (देखें 2 रा 23:37; 2 इति 36:5, 8; पुष्टि करें यिर्म 22:18–19 और 36:27–32, जिसमें भविष्यद्वाणी की गई थी कि यहोयाकीम का शव यरूशलेम के बाहर जमीन पर बिना उचित दफन के फेंक दिया जाएगा और उसके सिंहासन पर कोई वंशज नहीं होगा)। संभवतः "पूर्वजों" का संदर्भ उसके पूर्ववर्ती मनश्शे, आमोन, और यहोआहाज से है। यिर्मयाह यहोयाकीम के शासन की विशेषताओं वाली बुराइयों को निर्दिष्ट करते हैं, जिसमें मूर्तिपूजा, सामाजिक अन्याय, मजदूरी कमाने वाले की लूट, लालच, हत्या, उत्पीड़न, जबरन वसूली, और प्रभु की वाचा का त्याग शामिल है (यिर्म 22:1–17)। यिर्मयाह की व्यापक गतिविधि के बावजूद उनके शासनकाल के दौरान (अध्याय 25–26, 36), यहोयाकीम अवज्ञाकारी, अप्रायश्चित, आत्मसंतुष्ट, और अपनी अवैध रूप से प्राप्त समृद्धि में आत्मनिर्भर बना रहा (22:18–23)।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); यहूदियों के प्रवासी; इस्राएल का इतिहास।

यहोयादा

1. बनायाह का पिता जो दाऊद और सुलैमान के शासनकाल के दौरान एक उच्च सैन्य अधिकारी था। यहोयादा एक याजक था (1 इति 27:5) जिसने हेब्रोन में दाऊद के साथ मिलकर काम किया और हारून के घराने से पहचाना गया (12:27)। *देखें* बनायाह #1।

2. यरूशलेम में महायाजक जिसने रानी अतल्याह का तख्तापलट किया और बाल पंथ को समाप्त किया, जिसका वह समर्थन करती थीं, और अपने भतीजे योआश (यहोआश) को सिंहासन पर स्थापित किया (2 रा 11:4–21; 2 इति 23:1–15)। जब तक वह जीवित रहा, यहोयादा ने राजा को प्रभु के प्रति सच्चा बनाए रखा (2 रा 12:1–16; 2 इति 23:16–24:14)। उसकी मृत्यु 130 वर्ष की आयु में हुई और उसे दाऊद के शहर में राजाओं के बीच दफनाया गया।

3. बनायाह का पुत्र, जिसने अहीतोपेल के बाद राजा दाऊद के सलाहकार के रूप में कार्यभार संभाला (1 इति 27:33–34); वह संभवतः ऊपर #1 का पोता था, हालांकि कुछ मानते हैं कि यह दोनों एक ही व्यक्ति हैं।

4. नहेम्याह 3:6 की केजेवी वर्तनी योयादा, जो पासेह का पुत्र था। *देखें* योयादा #1।

5. नहेम्याह 13:28 में महायाजक एल्याशीब के पुत्र योयादा के लिए एक वैकल्पिक नाम। *देखें* योयादा #2।

6. यिर्मयाह के समय का याजक जिसे सपन्याह द्वारा मंदिर के अध्यक्ष के रूप में उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया था (यिर्म 29:26)।

यहोयारीब

1. 1 इतिहास 9:10 में यरूशलेम में एक याजकीय परिवार योयारीब का वैकल्पिक रूप। *देखें* योयारीब #1।

2. राजा दाऊद के समय का याजक, जिसे वार्षिक मन्दिर सेवा के लिए 24 याजकीय विभागों में से प्रथम विभाग का प्रधान नियुक्त किया गया (1 इति 24:7)।

यहोयारीब

यहोयारीब

मत्तित्याह का पूर्वज (1 मक्का 2:1; 14:29) और 1 इतिहास 24:7, दाऊद के समय याजकों के 24 विभागों में से पहले विभाग का प्रधान।

यहोराम

1. यहोशापात का पुत्र और यहूदा का पांचवां राजा (853–841 ईसा पूर्व; जिसे योराम भी कहा जाता है)। उत्तरी राज्य इस्राएल में ओम्री वंश के शासन से पहले (885–841 ईसा पूर्व), यहूदा और इस्राएल के बीच संबंध तनावपूर्ण थे। संयुक्त राजशाही का राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक स्थिरता लंबे समय से गायब हो चुकी थी। शीशक के अधीन मिस्र के

आधिपत्य से शक्ति और धन (2 इति 12) गृहयुद्ध के कारण से कम हो गया था: असफल शेकेम सम्मेलन (अध्याय 10); यहूदा के रहबाम बनाम इस्राएल के यारोबाम (12:15); यहूदा के अबिय्याह बनाम इस्राएल के यारोबाम (13:1–22); और यहूदा के आसा बनाम इस्राएल के बाशा (16:1–4)। हालांकि, मध्य-नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में ओम्री वंश ने पारिवारिक प्रतिद्वंद्विता को दरकिनार कर दिया और दोनों राष्ट्रों के बीच एक नया गठबंधन बनाने का प्रयास किया।

यहूदा और इस्राएल के दो राज्य आसपास के लोगों—अम्मोनियों, मोआबियों, एदोमियों, सीरियाई, पलिश्तियों, अरबों, और अश्शुरियों द्वारा बढ़ते खतरे का सामना कर रहे थे। इस खतरे के जवाब में, ओम्री वंश के दूसरे राजा अहाब ने फिनीके (1 रा 16:31) और यहूदा (22:4) के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किए। इस समय के दौरान, इस्राएल और यहूदा द्वारा संयुक्त सैन्य अभियान असामान्य नहीं थे (1 रा 22; 2 रा 3; 8:28), हालांकि यह राजनीतिक गठबंधन अपनी समस्याओं से मुक्त नहीं थे। बाल और अशेरा की आराधना का हस्तक्षेप यहूदा और इस्राएल में धार्मिक पतन का कारण बना (1 रा 16:31–33; 2 रा 3:2; 2 इति 21:11)। इसी राजनीतिक-धार्मिक संदर्भ में यहोराम ने यहूदा पर शासन किया।

हालांकि यह संभव है कि वह 853 ईसा पूर्व से सह-शासक के रूप में सेवा कर रहा हो, यहोराम आठ वर्षों (848–841 ईसा पूर्व) तक एकमात्र शासक था। उसके शासनकाल को अनावश्यक आंतरिक संघर्ष और धार्मिक धर्मत्याग द्वारा चिह्नित किया गया था। उसके पिता ने उदारतापूर्वक उसके छह भाइयों के लिए प्रावधान किया था, एक निर्णय जिसे यहोराम ने सिंहासन सुरक्षित करने के बाद जल्दी से उलट दिया (2 इति 21:2–3)। उसने न केवल अपने भाइयों को बल्कि कई इस्राएली राजकुमारों को भी मार डाला, और इस प्रकार अपने लिए किसी भी राजनीतिक खतरे को हटा दिया (पद 4)। इसके अलावा, उसने अपने पिता द्वारा समाप्त करने की कोशिश की गई मूर्तिपूजक प्रथाओं को बहाल करके निषिद्ध आराधना स्थलों, "उच्च स्थानों" को पुनर्स्थापित किया (पद 11)। यहोराम जाहिर तौर पर अपनी पत्नी, अतल्याह के प्रभाव में आ गया था, जो ईजेबेल की बेटी थी (2 रा 8:18)। जैसा कि उसकी मां ने इस्राएल में किया था, अतल्याह ने यहूदा में बाल आराधना को आयात किया। परिणामस्वरूप, एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने यहोराम और यहूदा के लोगों पर न्याय की घोषणा की—एक श्राप जिसने यहोराम के लोगों, बच्चों, पत्नियों और संपत्तियों पर एक महान मरी लाई, और राजा स्वयं पर एक गंभीर आंतों की बीमारी आई। यहूदा में इस व्यापक दुष्टता के बावजूद भी प्रभु ने दाऊद से अपनी प्रतिज्ञा के कारण दक्षिणी राज्य को नष्ट नहीं किया (2 रा 8:19; पुष्टि करें 2 शमू 7:12–16)।

राजनीतिक रूप से, यहूदा कमजोर था, क्योंकि उसने एदोम पर अपना नियंत्रण खो दिया था (2 इति 21:9) और पलिश्तियों और अरब के लोगों के हमलों का सामना किया था। यहोराम के पास संपत्ति, पत्नियाँ और पुत्र नहीं बचे थे, सिवाय यहोआहाज (अहज्याह) के, जो उसका सबसे छोटा पुत्र था (पद 16–17)। उसकी मृत्यु पर यहोराम को सम्मानित नहीं किया गया और उसे दाऊद के शहर के भीतर राजाओं की कब्र में दफनाने से वंचित कर दिया गया (पद 19–20)।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल का इतिहास।

2. अहाब और ईजेबेल का पुत्र, और इस्राएल का दसवा राजा (852–841 ईसा पूर्व; जिन्हें योराम भी कहा जाता है)। उसने अपने भाई अहज्याह का उत्तराधिकार लिया, जिसकी अकाल मृत्यु ने यहोराम के सामरिया में सिंहासन पर आरोहण का मार्ग प्रशस्त किया (2 रा 1:2, 17)। वह यहूदा के राजाओं यहोशापात, यहोराम, और अहज्याह के समकालीन था।

यहोराम मोआब और सीरिया के पड़ोसी राज्यों के राजनीतिक पुनरुत्थान से चिंतित था। जब मोआब ने इस्राएल को अपनी वार्षिक भेंट देने से इनकार कर दिया, तो उसने यहोशापात और यहूदा के अधीनस्थ राज्य, एदोम से सहायता मांगी। यहोराम और यहोशापात ने एदोम के राजा के साथ मिलकर मोआब पर हमला किया, लेकिन पानी की गंभीर कमी का सामना करने पर उन्हें रुकना पड़ा। अपनी सेना के साथ आगे बढ़ने में संकोच करते हुए, उन्होंने भविष्यद्वक्ता एलीशा को बुलाया और उनसे अभियान के संबंध में प्रभु की इच्छा जानने के लिए कहा। यहोशापात के प्रति एलीशा के उच्च सम्मान के कारण, भविष्यद्वक्ता ने उसकी ओर से प्रभु से संपर्क किया, जिससे उसे प्रभु की आशीष और पानी की प्रचुरता प्राप्त हुई। युद्ध का विवरण मोआबियों के वध के साथ-साथ मोआबी राजा द्वारा एक मनुष्य बलिदान की भयानक घटना को भी दर्ज करता है। युद्ध जीतने के बाद, इस्राएल पीछे हट गया (2 रा 3:4–27)।

यहोराम का सीरिया के साथ संघर्ष कम सफल रहा क्योंकि इस्राएल के राजा को युद्ध में चोट लगी थी। यरदन के पार में रामोत-गिलाद से अपने राजभवन यिज्रेल (2 रा 8:29) लौटते समय, उसे और समस्याओं का सामना करना पड़ा जब उसके एक सेनापति, येहू, ने उसके खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया। प्रभु द्वारा नियुक्त और इस्राएल का राजा घोषित किए गए, येहू ने यहोराम और उसके भतीजे, यहूदा के राजा अहज्याह का सामना किया। यह घटना इस्राएल और यहूदा के दो सत्तारूढ़ राजाओं की मृत्यु पर समाप्त हुई (2 रा 9:14–24, 27)। जबकि अहज्याह को यरूशलेम में राजाओं की कब्र में दफनाया गया (पद 28), यहोराम का शव यिज्रेल शहर के बाहर नाबोत के खेत में फेंक दिया गया। उनका अंत दुष्ट ओम्रिद वंश के अंतिम राजा के खिलाफ उचित न्याय था (पद 25–26)।

3. यहोशापात के शासनकाल के दौरान विद्वानों के एक यात्रा समूह का लेवी सदस्य जो लोगों को व्यवस्था की पुस्तक से शिक्षा देता था (2 इति 17:7–9)।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल का इतिहास।

यहोवा

परमेश्वर के लिए नाम इब्रानी शब्द 'अदोनाइ' के स्वरों को इब्रानी ईश्वरीय नाम के व्यंजनों के साथ जोड़कर बनाया गया, यहोवा। परमेश्वर के प्रति उनके आदर और उनके नाम को अपवित्र करने के भय के कारण, बँधुआई के बाद के यहूदी पवित्रशास्त्र पढ़ते समय ईश्वरीय नाम का उच्चारण करने से बचते थे। इसके बजाय, उन्होंने 'अदोनाइ', एक शब्द जिसका अर्थ है "मेरे प्रभु," का उपयोग किया। छठी शताब्दी ईस्वी से पहले, इब्रानी पाठ में स्वर नहीं थे। ये पवित्रशास्त्र के पढ़ने के दौरान उस व्यक्ति द्वारा प्रदान किए जाते थे जो भाषा से परिचित था। जब पाठ में स्वर बिन्दु जोड़े गए (ईस्वी 660–700), तो यहोवा के व्यंजनों के नीचे 'अदोनाइ' के स्वर रखे गए ताकि यह संकेत मिले कि 'अदोनाइ' पढ़ा जाना चाहिए।

ऐसा माना जाता है कि लगभग ईस्वी 1520 में पेट्रस गैलाटिनस ने दो नामों को मिलाने का विचार किया, जिससे नया रूप एहोवाह बना, जिससे अंग्रेजी शब्द यहोवा आया। हालांकि यह रूप इब्रानी के लिए विदेशी था, इसे व्यापक स्वीकृति मिली और इसे विभिन्न पदों में परमेश्वर के नाम के अनुवाद के रूप में शामिल किया गया केजेवी और एएसवी में। बाइबल विद्वान अब सहमत हैं कि ईश्वरीय नाम का मूल उच्चारण यहोवा या यहवह था।

यह भी देखें परमेश्वर के नाम

यहोवा

चार व्यंजनों का नाम परमेश्वर के प्रमुख इब्री नामों में से एक के लिए है। यह यूनानी मूल *टेट्रा,* "चार," और *ग्राम्मा,* "वर्णमाला का एक अक्षर" से आता है। ये चार अक्षर अंग्रेज़ी य (या ज), ह, व और ह के इब्री समकक्ष हैं। नाम का अर्थ संभवतः "वह जो है, अर्थात् पूर्ण और अपरिवर्तनीय है" का अर्थ रखता है। प्रभु ने मूसा को यह नाम प्रकट किया (निर्ग 3:15; तुलना करें 13–14; यूह 8:56–58)।

दस आज्ञाओं में, यहूदियों को बताया गया था कि वे यहोवा के नाम का व्यर्थ उपयोग न करें (निर्ग 20:2, 7)। इसलिए, यहूदियों ने इस नाम को पवित्र माना और इसका उच्चारण नहीं करते थे। इसके बजाय, वे अदोनाई, "प्रभु" कहते थे। मूल रूप से, पाठ केवल व्यंजनों के साथ लिखा गया था। अंततः, मसोरा नामक विद्वानों ने इब्रानी में स्वर बिंदु जोड़े। जब वे यहोवा लिखते थे, तो उन्होंने प्रभु के स्वर डाले ताकि पवित्र नाम को न पढ़ा जाए। गैर-इब्री बोलने वालों ने प्रभु के स्वरों को **य ह व ह** के व्यंजनों के साथ मिलाकर "यहोवा" बनाया, जो इब्री में अस्तित्व में नहीं है। संभव है कि नाम का सही उच्चारण यहोवा था। अधिकांश अनुवाद प्रभु लिखते हैं, इसे अंग्रेजी शब्द "प्रभु" के अन्य उपयोगों से अलग करने के लिए बड़े अक्षरों का उपयोग करते हैं।

यह भी देखें परमेश्वर के नाम I

यहोवा

पुराने नियम में परमेश्वर के लिए सबसे पवित्र नाम, जिसे आमतौर पर "प्रभु" के रूप में अनुवादित किया जाता है। *देखें* परमेश्वर, नाम (यहोवा)।

यहोवा के संग्राम, पुस्तक

यहोवा के संग्राम, पुस्तक

पुराने नियम में एक बार उल्लेखित दस्तावेज़ (गिन 21:14); यह अर्नोन में मोआब की सीमा के विवरण में पाया जाता है। इस पुस्तक का उपयोग स्रोत के रूप में किया गया था, लेकिन अब यह मौजूद नहीं है। इसमें संभवतः इस्राएल की यरदनपार में विजय का अभिलेख था और यह "धर्मियों की पुस्तक [याशर]" के समान हो सकता है (यहो 10:13; 2 शमू 1:18)। गिनती 21 में यह अंश काव्यात्मक शैली में है और यह इस्राएल की विजय और युद्ध से संबंधित है। हालाँकि, उद्धरण की सीमा विवादास्पद है। कुछ लोग इसे पद 14 तक सीमित रखते हैं, अन्य पद 15 को शामिल करते हैं, और फिर भी अन्य 27–30 पदों को शामिल करते हैं।

यहोवा-त्सिदकेनु

एक विशेष नाम जिसका अर्थ है "प्रभु (यहवह या यहोवा) हमारी धार्मिकता हैं।" यह नाम एक भविष्य के धार्मिक राजा को दिया गया था जिन्हें परमेश्वर ने वादा किया था कि वे राजा दाऊद के कुल से आएँगे (यिर्म 23:5–6)। यही नाम उन लोगों का वर्णन करने के लिए भी उपयोग किया गया जो इस राजा के शासन के अधीन रहेंगे (33:16)। मसीही विश्वास करते हैं कि यह वादा पूरा हुआ जब यीशु मसीह आए। वे विश्वास करते हैं कि यीशु वह प्रभु हैं जो सब कुछ पर शासन करते हैं और अपने अनुयायियों को परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में जीने में मदद करते हैं।

यहोशापात (व्यक्ति)

1. यहूदा का चौथा राजा, जिसने 872 से 848 ई.पू. तक शासन किया। वह राजा आसा का पुत्र और उत्तराधिकारी था, जिसने 910 से 869 ई.पू. तक शासन किया था।
यहोशापात 35 वर्ष की आयु में राजा बना और उसने 25 वर्षों तक शासन किया। अपने शासनकाल के दौरान, उसने राजा दाऊद के शाही परिवार की वंशावली, दाऊद वंश की स्थिरता बनाए रखने के लिए काम किया (1 रा 22:41–42)। यहोशापात इस्राएल के राजा अहाब का समकालीन था, जिसने 874 से 853 ईसा पूर्व तक शासन किया। राजा के रूप में यहोशापात का पहला वर्ष अहाब के शासनकाल का चौथा वर्ष था। वह अहाब के बेटे अहज्याह के शासनकाल के दौरान भी रहा, जिसने 853 से 852 ईसा पूर्व तक शासन किया और अहाब के छोटे बेटे योराम ने 852 से 841 ईसा पूर्व तक शासन किया, जो अहज्याह के निःसंतान मरने के बाद राजा बना (2 रा 1:17)।
इतिहासकार, जिसने इतिहास की पुस्तकें लिखीं, यहोशापात को बहुत सम्मान देता है तथा उसकी तुलना हिजकिय्याह और योशियाह जैसे अन्य अच्छे राजाओं से करता है। एक राजा के रूप में यहोशापात की सफलता काफी हद तक उसकी धार्मिक नीतियों के कारण थी। उसने अपने पिता आसा द्वारा शुरू किए गए धार्मिक सुधारों को जारी रखा। इस वजह से, प्रभु ने उसके शासन में राज्य को मजबूत किया। यहूदा के लोग उसे उपहार लाते थे, और वह बहुत धनी और सम्मानित हो गया (2 इति 17:1–5)।
इतिहासकार ने यहोशापात के साहस की भी प्रशंसा की, क्योंकि उसने यहूदा से ऊंचे स्थानों (मूर्तिपूजक पूजा के स्थल) और अशेरिम (कनानी देवी अशेरा के लकड़ी के प्रतीक) को हटा दिया था (2 इति 17:6)। इसके अतिरिक्त, यहोशापात ने वेश्यावृत्ति के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सभी मंदिरों को बंद कर दिया (1 रा 22:46)।
यहोशापात ने अपने पिता आसा की विदेश नीति बदल दी। आसा ने इस्राएल के राजा बाशा के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, जिसने यारोबाम I (इस्राएल के उत्तरी राज्य का

पहला राजा) के परिवार का सफाया करने के बाद सिंहासन पर नियंत्रण कर लिया था। दो राज्यों, इस्राएल और यहूदा ने अपनी सीमा को लेकर लड़ाई लड़ी थी। लेकिन यहोशापात ने इस संघर्ष को समाप्त कर दिया और इस्राएल के राजा के साथ शांति स्थापित की (1 रा 22:2)। इस शांति को सुरक्षित करने के लिए, उसने अपने बेटे, यहोराम की शादी अहाब की बेटी, अतल्याह से तय करके, इस्राएल के राजा अहाब के साथ गठबंधन किया (2 रा 8:18; 2 इति 18:1–2)। इस गठबंधन के कारण, यहोशापात ने रामोत-गिलाद में अराम के खिलाफ लड़ाई में अहाब का साथ दिया (1 रा 22; 2 इति 18)। उसने मोआब के राजा मेशा के विरुद्ध अभियान में अहाब के छोटे बेटे योराम के साथ भी गठबंधन किया (2 रा 3:4–27)।
यहोशापात ने घरेलू सुधार भी किए। उसने यहूदा के शहरों में शिक्षा देने के लिए बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल, और मीकायाह जैसे अधिकारियों को भेजा (2 इति 17:7–9)। उसने संगठित किया कि कैसे आसपास के देशों से मिलने वाले कर (कर या उपहार) का इस्तेमाल यहूदा को मजबूत करने के लिए किया जाए। इन देशों ने यहोशापात की ताकत और उसके साथ परमेश्वर की उपस्थिति को पहचाना। उन्होंने यहूदा पर हमला नहीं किया बल्कि उसे कर दिया। उसने इन संसाधनों का इस्तेमाल यहूदा के शहरों को मजबूत करने (दृढ़ करने) के लिए किया (2 इति 17:10–13)। यहोशापात ने सेना को भी पुनर्गठित किया और राज्य की रक्षा के लिए योजनाएँ बनाईं। उसकी राजधानी में एक स्थायी सेना थी और उसने गढ़वाले नगरों में सैनिकों को रखा। उसका संगठन यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों पर केंद्रित था (2 इति 17:14–19)।
येहू नामक एक भविष्यद्वक्ता ने अहाब के साथ गठबंधन करने के लिए यहोशापात की आलोचना की (2 इति 19:1–3)। यहोशापात ने इस फटकार को गंभीरता से लिया और उसके बाद बुद्धिमानी से शासन किया। उसने देश से अधिकांश अशेरी लोगों को हटा दिया और खुद को परमेश्वर की खोज में समर्पित

कर दिया। वह नियमित रूप से बेर्शेबा से लेकर एप्रैम पर्वत तक पूरे देश में यात्रा करता था और लोगों को प्रभु का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता था। यहोशापात ने यहूदा के प्रत्येक गढ़वाले शहर में न्यायाधीशों को नियुक्त किया और उन्हें प्रभु के प्रतिनिधियों के रूप में निष्पक्ष रूप से न्याय करने का निर्देश दिया। उसने उपासना से संबंधित मामलों को संभालने और लोगों के बीच विवादों को सुलझाने के लिए लेवियों और याजकों और इस्राएल के पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुरुषों को भी नियुक्त किया (2 इति 19:4–11)।
यहोशापात ने एप्रैम के उन नगरों में सैन्य बल तैनात किया, जिन पर उसके पिता आसा ने कब्ज़ा किया था (2 इति 17:1–2)।
भविष्यवक्ताओं ने फिनीके और इस्राएल के साथ उसके गठबंधन को मंजूरी नहीं दी और वे अंततः खतरनाक निकले। लेकिन वे उसके राज्य में शांति और समृद्धि का दौर लेकर आए। यहोशापात को पड़ोसी पलिश्तियों और अरबों द्वारा सम्मान दिया जाता था (2 इति 17:10–13), और एदोम का देश भी उनके अधीन हो गया। उसने मोआबियों, अम्मोनियों, और मूनियों पर एनगदी में एक महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की (2 इति 20:1–30)। सुलैमान की तरह बनने के प्रयास में, यहोशापात ने एस्योनगेबेर में तर्शीश के साथ व्यापार करने के लिए जहाज बनाए, लेकिन यह प्रयास सफल नहीं रहा (2 इति 20:35–37)।
यहोशापात की मृत्यु लगभग 60 वर्ष की आयु में हुई और उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊदपुर नगर में दफनाया गया। उसके बाद उसका पुत्र योराम राजा बना (2 इति 21:1)।
यहोशापात का नाम मत्ती के सुसमाचार (मत्ती 1:8) में यीशु मसीह की वंशावली सूची में सूचीबद्ध है।
यह भी देखें इस्राएल का इतिहास।

2. अहीलूद का पुत्र जो दाऊद और सुलैमान का "इतिहास का लिखनेवाला" था (एक शब्द जिसका अर्थ आधिकारिक इतिहासकार या राजा का प्रवक्ता हो सकता है) (2 शमू 8:16; 20:24; 1 रा 4:3; 1 इति 18:15).
पारुह का बेटा और सुलैमान के 12 अधिकारियों में से एक जो राजा के घराने के लिए लोगों से भोजन इकट्ठा करता था। उनमें से प्रत्येक ने वर्ष के एक महीने के लिए पर्याप्त भोजन इकट्ठा किया। यहोशापात इस्साकार के गोत्र का अधिकारी था (1 रा 4:7, 17)।
3. पारूह का पुत्र और सुलैमान के 12 अधिकारियों में से एक, जो राजा और उसके घराने के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे। उनमें से प्रत्येक ने वर्ष के एक महीने के लिए पर्याप्त भोजन एकत्र किया। यहोशापात इस्साकार के गोत्र पर अधिकारी थे (1 रा 4:7, 17)।
4. निमशी के पुत्र और येहू के पिता, जिन्होंने ओम्री के वंश को नष्ट कर दिया और 842 से 815 ईसा पूर्व तक सामरिया के राजा बने रहे (2 रा 9:2, 14)।
5. 1 इतिहास 15:24 में यहोशापात की एक अनुवाद में वर्तनी, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान एक पुजारी था। #2 (ऊपर) देखें।

यहोशापात की तराई

यहोशापात की तराई

भविष्यवाणी में उल्लेखित एक तराई को भविष्य के न्याय का स्थान कहा गया है (योए 3:2, 12)। इसे कभी-कभी निबटारे की तराई कहा जाता है (योए 3:14)। इसके सटीक स्थान पर लोगों में असहमति है। कुछ लोग, जैसे जेरोम, इसे किद्रोन तराई के साथ पहचानते हैं, जो यरूशलेम के पूर्व में है। वे प्रारम्भिक मसीही परम्परा की ओर इशारा करते हैं। अन्य लोग यरूशलेम के दक्षिण में हिन्नोम की तराई को प्राथमिकता देते हैं। इस परम्परा को यूसिबियस के माध्यम से 1 हनोक की पुस्तक तक वापस खोजा जा सकता है (1 हनोक 53:1)। फिर भी अन्य लोग कहते हैं कि नाम प्रतीकात्मक है और केवल आने वाले न्याय को सन्दर्भित करता है, किसी विशेष स्थान को नहीं।

यहोशापात की तराई

देखें यहोशापात की तराई।

यहोशावत

2 इतिहास 22:11 में यहूदा के राजा यहोराम की बेटी यहोशेबा का वैकल्पिक नाम। *देखें*यहोशेबा।

यहोशू (व्यक्ति)

1. नून का पुत्र। वह मूसा के सहायक और उत्तराधिकारी थे। वह एक सैन्य अगुवा भी थे। परमेश्वर ने उन्हें इस्राएलियों की कनान पर विजय का नेतृत्व करने के लिए चुना। निर्गमन के प्रारंभ में (जब इस्राएली मिस्र छोड़कर गए), यहोशू को मूसा द्वारा अमालेकियों के खिलाफ युद्ध करने के लिए भेजा गया (निर्ग 17:8–15)। यहोशू ने अमालेक को पराजित किया और मूसा ने इस घटना को लिखकर एक वेदी बनाई, जिसे उन्होंने "यहोवा निस्सी" कहा (निर्ग 17:15)। यहोशू उन 12 पुरुषों में से एक थे जिन्हें मूसा ने कादेशबर्ने से कनान की जासूसी करने के लिए भेजा था। उन्होंने एप्रैम के गोत्र का प्रतिनिधित्व किया (गिन 13:8)। उस समय, यहोशू को होशे कहा जाता था, लेकिन मूसा ने उनका नाम बदलकर यहोशू कर दिया (गिन 13:8, 16)। यहोशू और कालेब ही दो जासूस थे जिन्होंने भूमि पर इस्राएली आक्रमण के संबंध में सकारात्मक जानकारी लेकर आए (यहो 14:6–9)। ये दोनों पुरुष ही एकमात्र वयस्क इस्राएली पुरुष थे जिन्होंने मिस्र छोड़ा और बाद में यरदन के पार प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश किया (गिन 14:30)।
प्रभु ने मूसा से कहा कि उनकी जल्द ही मृत्यु हो जाएगी। मूसा ने फिर पूछा कि उनके बाद कौन नेतृत्व करेगा। प्रभु ने यहोशू को नया अगुवा चुना (गिन 27:12–23)। नबो पर्वत पर मूसा की मृत्यु के बाद, यहोशू के नेतृत्व की पुष्टि हुई (गिन 34:17)। प्रभु ने फिर यहोशू से कहा कि यरदन को पार करें और भूमि को ले लें (यहो 1:1–2)।
यरदन के पार से, यहोशू ने दो आदमियों को नदी पार यरीहो का पता लगाने के लिए भेजा (यहो 2)। राहाब ने उन्हें यरीहो में छिपाया, और बाद में, वे सुरक्षित रूप से यहोशू के पास लौट आए ताकि उन्हें सूचित कर सकें कि भूमि के लोग इस्राएलियों के कारण भयभीत थे (यहो 2:23–24)।
नदी पार करने के बाद, प्रभु ने यहोशू से कहा कि गिलगाल में 12 पत्थरों का एक घेरा स्थापित करें ताकि इस घटना को स्मरण किया जा सके (यहो 4:1–7)। फिर प्रभु ने आदेश दिया कि निर्गमन के दौरान जन्मे सभी

पुरुषों का खतना किया जाए (यहो 5:2–9)। जब गिलगाल में, यरीहो के पास शिविर लगाया गया था, यहोशू ने एक पुरुष को नंगी तलवार के साथ देखा। वह पुरुष प्रभु की सेना के प्रधान थे। जब यहोशू ने उन्हें चुनौती दी, तो उन्होंने कहा कि अपने जूते उतार दो, क्योंकि यह स्थान पवित्र है (यहो 5:13–15)। प्रभु ने यहोशू को यरीहो के विनाश के लिए निर्देश दिए। यहोशू और इस्राएलियों ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया और शहर गिर गया (यहो 6)। आई पर हमला अस्थायी हार में समाप्त हुआ जब तक कि आकान के पाप की बात का पता नहीं चला और उसका न्याय नहीं हुआ (यहो 7:10–26)। फिर आई को लिया गया और नष्ट कर दिया गया।

यहोशू ने एबाल पर्वत पर एक वेदी बनाई (यहो 8:30–32)। आशीर्वाद और श्राप पढ़े गए, जैसा कि परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से आदेश दिया था (यहो 8:33–35; तुलना करें व्य.वि. 27–28)।

क्योंकि इस्राएली प्रभु से दिशा-निर्देश मांगने में असफल रहे, इसलिए यहोशू को गिबोन के हिवियों के साथ शांति की वाचा करने में धोखा दिया गया (यहो 9:14)। इसके बाद यहोशू ने उन्हें इस्राएल में तुच्छ कार्य करने के लिए बाध्य कर दिया (यहो 9:21–27)।

विभिन्न कनानी शहरों के राजाओं ने इस्राएली खतरे के खिलाफ स्वयं को एकजुट किया (यहो 9:1–2)। पाँच एमोरी शहरों का एक संघ (यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश और एग्लोन) ने गिबोन पर आक्रमण किया (यहो 10:1–5)। गिबोनियों ने यहोशू से सहायता मांगी। उन्होंने शीघ्रता से एमोरी सेनाओं को पराजित कर दिया। इसी अवसर पर यहोशू ने सूर्य और चंद्रमा को स्थिर रहने का आदेश दिया ताकि इस्राएल को इन विरोधियों को पराजित करने के लिए अधिक समय मिल सके (यहो 10:12–14)। इस जीत के बाद शत्रु शहरों पर सफल आक्रमणों की एक श्रृंखला हुई (यहो 10:28–43)।

इसके बाद, यहोशू ने उत्तर से आने वाले शत्रुओं के एक दल का सामना किया। इस दल का नेतृत्व हासोर के राजा याबीन कर रहे थे (यहो 11:1–5)। प्रभु ने यहोशू से कहा कि

वे सफल होंगे और हासोर शहर को आग से नष्ट कर दिया गया (यहो 11:6–15)। यहोशू 11:23 भूमि की विजय को संक्षेप में बताता है। अध्याय 12 में उन राजाओं की सूची है जिन्हें पराजित किया गया था।

यहोशू अब वृद्ध हो गए थे और प्रभु ने उनसे कहा कि अभी भी बहुत सी भूमि को अधिकार में करना बाकी है। इन क्षेत्रों की सूची दी गई है, लेकिन प्रभु ने यहोशू से कहा कि वे भूमि को नौ और आधे गोत्रों में बाँट दें (यहो 13:7; तुलना करें यहो 13:8–18:28)। यहोशू को वह शहर दिया गया जो उन्होंने मांगा था, तिम्नत्सेरह, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में था। उन्होंने उस शहर का पुनर्निर्माण किया और वहाँ बस गए (यहो 19:49–50)।

प्रभु ने यहोशू से शरण नगरों को चुनने के लिए कहा। एक व्यक्ति जो हत्या का दोषी (गलती से किसी को मार देना) था, वहाँ भाग सकता था ताकि लहू के प्रतिशोधी से बच सके (यहो 20)। फिर एलीआजर, याजक और यहोशू के पास लेवी आए। उन्होंने अपने शहरों की मांग की, जैसा कि प्रभु ने मूसा के माध्यम से आदेश दिया था (यहो 21:1–42)।

जब यहोशू वृद्ध हो गए, उन्होंने पूरे इस्राएल को बुलाया। उन्होंने उन्हें प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहने का आदेश दिया (यहो 23)। अंत में, उन्होंने पूरे इस्राएल को शेकेम में बुलाया, जहाँ उन्होंने अपना विदाई संदेश दिया। उन्होंने अब्राहम से लेकर अब तक प्रभु के उनके साथ किए गए व्यवहार का सारांश प्रस्तुत किया। फिर, उन्होंने उन्हें प्रभु की सेवा करने की चुनौती दी। उन्होंने उनके सामने प्रसिद्ध विकल्प रखा: "आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे...मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा!" (यहो 24:15)।

110 वर्ष की आयु में यहोशू की मृत्यु हुई और उन्हें उनकी विरासत की भूमि तिम्नत्सेरह में दफनाया गया (यहो 24:29–30; न्या 2:8–9 में एक अन्य विवरण "तिम्नथेरेस" के रूप में उल्लेखित है)। इस्राएलियों ने यहोशू और उन बुजुर्गों के सभी दिनों के दौरान प्रभु की सेवा की, जो उनके बाद जीवित रहे (यहो 24:31; न्या 2:7)।

यह भी देखें भूमि की विजय और बंटवारा; इस्राएल का इतिहास; यहोशू की पुस्तक।

2. बेतशेमेश का एक निवासी। पलिश्तियों ने सन्दूक को ले जाने वाली गाड़ी को उनके अनाज के खेत में भेजा। यह एक बड़े पत्थर के पास रुकी, जिसका उपयोग घटना को चिह्नित करने के लिए किया गया (1 शमू 6:14, 18)।
3. राजा योशियाह के शासनकाल के दौरान यरूशलेम के हाकिम थे (2 राजा 23:8)।
4. बेबीलोन की बँधुआई के बाद, यरूशलेम में जरूब्बाबेल के दिनों में यहोसादाक के पुत्र और महायाजक (हाग्गै 1:1–14; 2:2–4; जक 3:1–9; 6:11; एनएलटी में "येशुआ")। यहोशू को एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक में येशुआ भी कहा जाता है।
   देखें येशुआ (व्यक्ति) #3।
5. एलीएजेर के पुत्र और यीशु मसीह के पूर्वज (लूका 3:29)।
   देखें यीशु मसीह की वंशावली।

यहोशू की पुस्तक

अंग्रेजी बाइबल में ऐतिहासिक पुस्तकों में से पहली और इब्रानी बाइबल में पूर्व भविष्यद्वक्ताओं की पहली पुस्तक (जिसमें न्यायियों, शमूएल की पुस्तकें, और राजाओं की पुस्तकें शामिल हैं)। यह प्रभु के यहोशू को दिए गए आयोग से शुरू होती है (यहो 1:1–9) और यहोशू, एलीआजर, और यूसुफ की हड्डियों के दफन के साथ समाप्त होती है (24:29–33)। इस पुस्तक का उद्देश्य यह दिखाना है कि यहोशू ने मूसा के पदचिह्नों पर कैसे चलना जारी रखा, प्रभु ने इस्राएल को भूमि कैसे दी, और इस्राएल उस भूमि में कैसे समृद्ध हो सकते है।

पूर्वावलोकन

- लेखक और तिथि
- व्याख्या की समस्याएँ
- उद्देश्य
- विषय

लेखक और तिथि

तलमूद के अनुसार, यहोशू ने इस पुस्तक को लिखा। यह प्राचीन परम्परा संभवतः इस संक्षिप्त कथन पर आधारित है कि "यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया" (24:26)। हालांकि, यह केवल वाचा के नवीनीकरण पर लागू होता है (अध्याय 24)। लेखन का मुद्दा पुस्तक की तिथि के साथ जुड़ा हुआ है। चूंकि पुस्तक में तिथि और लेखन के स्पष्ट संकेत नहीं हैं, न तो आलोचक और न ही रूढ़िवादी विद्वान इन मुद्दों पर किसी समझौते पर पहुँच सके हैं। यहोशू के रूढ़िवादी विश्लेषण के अनुसार, यह पुस्तक 1375 ईसा पूर्व से 1045 ईसा पूर्व (पूर्व-राजतन्त्रिय) के बीच लिखी गई थी। यह तर्क दान के प्रवास के सन्दर्भों पर आधारित है (19:47; तुलना करें न्या 18:27–31), यरूशलेम को यबूसी नगर के रूप में (यहो 15:8, 63; 18:16, 28), सीदोन को सोर के बजाय प्रमुख फिनीकी नगर के रूप में (11:8; 13:4–6; 19:28), और साथ ही प्रत्यक्षदर्शी शैली पर आधारित है (5:1, 6)। लेकिन आलोचक विद्वानों ने मुद्दे उठाए हैं जिन्हें वे सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व या यहाँ तक कि बँधुआई काल की तिथि का प्रस्ताव करके सबसे अच्छी तरह से हल किया जा सकता है।

व्याख्या की समस्याएँ

पवित्र युद्ध

विजय की नैतिकता को पवित्र युद्ध की अवधारणा द्वारा समझाया जा सकता है। पवित्र युद्ध का विषय इस्राएल को स्वदेशी जनसंख्या को नष्ट करने के लिए क्यों कहा गया था, यह समझा सकता है (व्य.वी. 7:16; 20:16–18; यहो 6:21; 8:24–26; 10:10, 28–30, 35–42; 11:11)। इसका औचित्य इस अवधारणा में हो सकता है कि इस्राएल परमेश्वर का कनानी राष्ट्रों पर न्याय का साधन था। यह तर्क कनानियों की दुष्टता के उल्लेख से सम्बन्धित है (उत 15:16; व्य.वी. 7:2–5, 25–26; 12:30–31; यहो 23:7; न्या 2:11)। हालांकि, विजय की प्रगति की आधिकारिक कथा कनानियों पर जिम्मेदारी डालती है। उन्होंने इस्राएल के विरुद्ध चढ़ाई की और युद्ध किया (गिन 21:21–35; यहो 7:4–5; 8:5, 16–17; 9:1–2; 10:1–6; 11:1–5; 24:11)। इसलिए, यह तर्क दिया जा सकता है कि युद्ध की प्रक्रिया में शान्ति का एक सच्चा निमंत्रण राजाओं को दिया गया था (तुलना करें गिन 21:21–22; व्य.वी. 20:10–11) लेकिन इसे अस्वीकार कर दिया गया। इसके बजाय, राजाओं ने युद्ध में पहल की। स्वदेशी जनसंख्या के विनाश की जिम्मेदारी इस प्रकार अगुआई पर थी। फिर भी यह सब मनुष्य के मामलों में परमेश्वर के कार्य का प्रमाण था, जिसे बाइबल बस कहती है, "क्योंकि यहोवा की जो मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी दया न करे; वरन् सत्यानाश कर डालें, इस कारण उसने उनके मन ऐसे कठोर कर दिए, कि उन्होंने इस्राएलियों का सामना करके उनसे युद्ध किया।" (यहो 11:20)। जैसे फ़िरौन, जिसका हृदय प्रभु ने कठोर

किया था, मिस्र में विपत्तियों के लिए जिम्मेदार था, वैसे ही कनानी शासक अपनी जनसंख्या के संहार के लिए जिम्मेदार थे। विजय की बाइबल कथा मनुष्य की जिम्मेदारी और ईश्वरीय सम्प्रभुता के रहस्य की पुष्टि करती है बिना इसे समझाए।

विजय का स्वभाव

विजय की प्रकृति के विभिन्न स्पष्टीकरण दिए गए हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण के अनुसार एक तूफ़ानी युद्ध की तरह विजय, जिसके परिणामस्वरूप पूरी भूमि पर पूर्ण कब्ज़ा हो गया (पुष्टि करें यहो 10:40; 11:1–3, 16–19), पुस्तक की पूरी तस्वीर में ठीक नहीं बैठता। पुस्तक उन क्षेत्रों का यथार्थवादी वर्णन प्रस्तुत करती है जिन्हें अभी भी जीतना बाकी था (13:1–7) और स्वदेशी जनसंख्या की सैन्य शक्ति का (पुष्टि करें 13:13; 15:63; 16:10; 17:12–18; 19:47)। इसके अलावा, यहोशू ने वादा किया कि प्रभु इस्राएल की सहायता करते रहेंगे भूमि पर कब्जा करने में, जैसे-जैसे उसकी जनसंख्या और आवश्यकताएँ विकसित होती हैं (23:5)। कनान का कब्जा दो चरणों में था: विजय और क्रमिक कब्जा (तुलना करें निर्ग 23:29–30; व्यव 7:22)।

उद्देश्य

पुस्तक के अन्तिम (कैनोनिकल) रूप की भूमिका यहोशू की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता को प्रस्तुत करना है। विजय और पराजय आज्ञाकारिता और अवज्ञा के उदाहरण हैं। निश्चित रूप से, इसमें एक तनाव है क्योंकि विजय के वर्णन पूर्ण और फिर भी अपूर्ण हैं। यह तनाव एक गतिशील उपकरण है जो दिखाता है कि विजय और भूमि का आनन्द पूरी तरह से आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है। यहोशू की अवधि को आज्ञाकारी इस्राएल के आदर्श के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार, पुस्तक का समग्र पठन भविष्य की पीढ़ियों के लिए वाचा निष्ठा की निवेदन प्रस्तुत करता है।

विषय

भूमि पर विजय, 1:1–12:24

यहोशू को प्रभु की आज्ञा, 1:1–9

मूसा की मृत्यु के साथ (यहो 1:1), प्रभु स्वयं मूसा द्वारा यहोशू के अभिषेक की पुष्टि करते हैं (व्य. वी. 34:9)। वे उन्हें कनान की विजय में अगुआई का भार सौंपते हैं (यहो 1:2–3), भूमि की भौगोलिक सीमाओं को परिभाषित करते हैं (वचन 4), अपनी निरन्तर उपस्थिति से उन्हें प्रोत्साहित करते हैं (वचन 5, 9), और उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे "व्यवस्था" में भक्ति से चलें (अर्थात, व्यवस्थाविवरण में दी गई व्यवस्था; तुलना करें व्य. वी. 31:9, 24–26; यहो 23:6), ताकि वे अपने मिशन में सफल हो सकें (1:7–8)। मूल उद्देश्य, साथ ही मूसा की सेवकाई, यहोशू में अपनी निरन्तरता पाते हैं।

यरदन को पार करना, 1:10–5:12

पहला चरण इस्राएल को तैयारी के लिए बुलाता है। उनके अगुवे के रूप में, यहोशू को लोगों को दिखाना होगा कि वे मूसा के पदचिन्हों पर चलते हैं। वे यह काम इस प्रकार करते हैं कि यरदन पार गोत्रों को मूसा की आज्ञा के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए कनान की विजय में अन्य गोत्रों के साथ जुड़ने को याद दिलाते हैं (1:13–15; तुलना करें गिन 32:20–27)। उन्होंने यहोशू के अधिकार के प्रति उसी प्रकार समर्पण किया जैसे मूसा के प्रति किया था (यहो 1:16–18)। वे अपनी सैन्य अगुआई क्षमता को यरीहो में दो भेदियों को भेजकर प्रदर्शित करते हैं (अध्याय 2)। उनका अधिकार याजकों (3:6; 4:10) और लोगों (3:5–9) द्वारा स्वीकार किया जाता है जब वे यरदन को पार करते हैं। यरदन का पार करना यहोशू की सार्वजनिक मान्यता को मूसा जैसे अगुवे के रूप में चिह्नित करता है (4:14)।

नदी पार करने की घटना निर्गमन/जंगल के युग से विजय के युग में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को चिह्नित करती है। एक ओर, राहाब की कहानी यह दर्शाती है कि कैसे कनानी लोगों ने प्रभु के पराक्रमी कार्यों के बारे में सुना था (2:10–11) और अत्यधिक भय के साथ प्रतिक्रिया की थी (पुष्टि करें निर्ग 15:15; 23:27–28; व्य.वी. 2:25; 7:23; 11:25; 32:30)। राहाब का इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास का प्रदर्शन (2:11) यह भविष्यवाणी करता है कि पितृपुरुषों से वादा किए गए वाचा समाज में गैर-यहूदियों का समावेश होगा (उत 12:3)। विश्वास के द्वारा राहाब को वाचा में शामिल किया गया और उन्हें यीशु की वंशावली में उनके नाम के समावेश द्वारा समृद्ध रूप से पुरस्कृत किया गया (मत्ती 1:5)।

इस्राएलियों ने यरदन को पार किया इस ज्ञान के साथ कि परमेश्वर का भय कनानियों पर आ गया था (यहो 2:24)। हालांकि, उन्हें यह भी निर्देश दिया गया था कि वे प्रभु के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाएँ, खुद और वाचा के सन्दूक के बीच एक सुरक्षित दूरी बनाए रखकर (3:4) और खुद को पवित्र करके (वचन 5)। "जीवित परमेश्वर" उनके बीच थे और अपने लोगों से पवित्रता और श्रद्धा की अपेक्षा करते थे (वचन 10)। बदले में, वे अपनी निष्ठा को यरदन के अद्भुत पारगमन में प्रदर्शित करेंगे (वचन 13) और भूमि के विजय में (3:10)। जब गोत्रों ने नदी को पार कर लिया (4:1), 12 गोत्रों के प्रत्येक अगुओं ने सूखी नदी की तलहटी से एक पत्थर उठाया और गिलगाल में एक स्मरणार्थ स्थापित किया (वचन 1–9, 20)। इस प्रकार, इस्राएल को यह याद रखना था कि वे पत्थर, उस स्थान से लिए गए थे जहाँ सन्दूक को ले जाने वाले याजक खड़े थे, परमेश्वर की महान उपस्थिति के स्मरण थे। भविष्य की पीढ़ियों को जो इस रिपोर्ट को सुनने वाले थे (वचन 21–24), उन्हें इस बात से प्रोत्साहित किया गया क्योंकि परमेश्वर का भय भूमि के सभी लोगों पर पड़ेगा (वचन 24)।

यरीहो की विजय से पहले का अभिषेक खतना के कार्य (5:1–9) और फसह के उत्सव (10–12) द्वारा भी प्रतीकित किया गया है। ये घटनाएँ जरूरी नहीं कि कालक्रम में सम्बन्धित हों, लेकिन इन्हें इस्राएल की यहोशू की सेवकाई के प्रति उत्तरदायित्व के उदाहरण के रूप में चुना गया। मूसा की नई पीढ़ी के प्रति अपील का प्रभाव पड़ा (पुष्टि करें व्य. वी. 4:4–14; 6:1–5)। नई पीढ़ी ने प्रभु की सेवा की जब तक यहोशू और वृद्ध लोग जीवित थे (यहो 24:31)। शारीरिक खतना, जो जंगल यात्रा के दौरान उपेक्षित था (5:5) अविश्वास के कारण, आत्मिक उत्तरदायित्व का चिन्ह था। उत्तरदायी देश ने वाचा के बाहरी चिन्ह को प्राप्त किया इस प्रत्याशा के साथ कि वाचा के प्रभु उन्हें विजय और भूमि का फल देने में आशीष देंगे। उनकी निन्दा दूर हो गई (वचन 9)। वाचा की निरन्तरता फसह उत्सव के संक्षिप्त उल्लेख में भी प्रकट होती है। नवीनता यह है कि वे भूमि का फल खा रहे हैं। कनान के भोजन का स्वाद लेने के साथ, मन्ना बन्द हो गया। मरूभूमि का अनुभव समाप्त हो गया। एक नया युग उनके प्रतिज्ञात भूमि में उपस्थिति के साथ आरम्भ हुआ (वचन 11–12)।

यरीहो पर विजय, 5:13–6:27

विजय प्रभु की है। यही सन्देश है जिसके साथ यरीहो की लड़ाई शुरू होती है। पवित्र परमेश्वर, जो मूसा के सामने जलती झाड़ी में प्रकट हुए थे (निर्ग 3:2–4:17), वही यहोशू के सामने प्रभु की सेना के सेनापति के रूप में प्रकट हुए (यहो 5:14–15) प्रभु का सन्देश लेकर (6:2)। यरीहो का नगर बिना घेराबन्दी और युद्ध के गिर जाएगा। इस्राएल की प्रतिक्रिया यरीहो की युद्ध की तैयारी के लिए अजीब थी (पुष्टि करें 24:11), लेकिन सन्दूक की उपस्थिति और तुरहियों का बजना इस बात का प्रतीक था कि प्रभु इस्राएल के लिए लड़ेंगे, जैसा उन्होंने वादा किया था। हालांकि, इस्राएल कोई भी लूट नहीं ले सकता था। क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के लिए युद्ध किया, सब कुछ उन्हें समर्पित होना था (6:17)। प्रभु ने राहाब से की गई मन्नत का सम्मान किया, जो भेदियों द्वारा की गई थी, ताकि वह और उसका परिवार जीवित रहे (वचन 17, 25), लेकिन उन्हें अस्थायी रूप से शिविर के बाहर रखा गया (वचन 23)। मूल्यवान धातुओं को खजाने में रखा गया (वचन 19, 24), जबकि बाकी सब कुछ आग से जला दिया गया (वचन 24)। व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ भी नहीं लिया जाना था; अन्यथा परमेश्वर का न्याय इस्राएल पर आ जाएगा (वचन 18)। परमेश्वर की यरीहो पर पूर्ण स्वामित्व को जोर देने के लिए, यहोशू ने उस व्यक्ति पर श्राप लगाया जो नगर को फिर से बनाने का प्रयास करेगा (6:26; तुलना करें 1 रा 16:34)। यरीहो के विनाश की अफवाहें फैल गईं, और कनान के लोग जान गए कि प्रभु यहोशू के साथ थे (यहो 6:27; पुष्टि करें 1:5, 9)।

आई में त्रासदी और विजय, 7:1–8:29

विजय अल्पकालिक थी क्योंकि आकान ने परमेश्वर के "प्रतिबन्ध" की अवहेलना की, कुछ वस्तुओं को लिया, उन्हें अपने तम्बू के नीचे जमीन में छिपा दिया (7:21), और इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध लाया (वचन 1)। इस्राएल आई में अपनी हार से स्तब्ध थे (वचन 2–5)। यहोशू और वृद्ध लोगों ने विपत्ति का जवाब उपवास और विलाप करके दिया (वचन 6–9)। भूमि में फैली विजय की रिपोर्ट और परमेश्वर के सेवक की पीड़ित पुकार के बीच कितना अन्तर था, जो भयभीत थे कि कनानी ताकत इकट्ठा करेंगे और इस्राएल को मिटा देंगे (वचन 9)। केवल तब जब लोगों ने स्वयं को पवित्र किया (वचन 13) और आकान को उजागर किया गया और उसकी स्मृति को हटा दिया गया (वचन 25ब-26), वे परमेश्वर की उपस्थिति और विजय के उत्साहजनक वादा के साथ आई पर हमला फिर से कर सके (8:1–2)। आई भी ली गई (वचन 3–19) और जनसंख्या को शापित किया गया (वचन 20–26), लेकिन इस्राएल ने प्रभु की सीधी अनुमति से लूट का आनन्द लिया (वचन 27)। आई के खण्डहर, आई के राजा के शरीर को ढकने वाले पत्थरों का ढेर (वचन 28–29), और आकान के शरीर पर पत्थरों का ढेर इस्राएल को यह याद दिलाने वाले गम्भीर संकेत थे कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता उसके लोगों से पूर्ण निष्ठा की माँग करती है।

वाचा का नवीनीकरण, 8:30–35

यहोशू ने इस्राएल की अगुआई शेकेम में एक औपचारिक वाचा नवीनीकरण में की, जैसा कि मूसा ने निर्देश दिया था (यहो 8:31; तुलना करें व्य.वी. 11:29; 27)। यहोशू ने वेदी की उचित तैयारी में ध्यान दिया (तुलना करें निर्ग 20:25) जिस पर समर्पण और सामुदायिक भेंटें प्रस्तुत की गईं। उन्होंने व्यवस्था की नकल कराई, जो उनके शाही अगुआई और प्रभु के प्रति उनकी भक्ति का प्रतीक था (यहो 8:32; पुष्टि करें व्य.वी. 17:18)। सभी इस्राएल (अधिकारी और लोग, विदेशी और स्वदेशी जन्मे इस्राएली) आशीर्वाद और श्रापों के पाठ के लिए एक साथ प्रस्तुत हुए (यहो 8:33–35)। व्यवस्थाविवरण की पूरी पुस्तक (अर्थात, "व्यवस्था की पुस्तक," तुलना करें व्य.वी. 31:26) उनके सामने पढ़ी गई। आधे गोत्र गिरिज्जीम पर्वत पर खड़े होकर आशीर्वादों के लिए "आमीन" कहते थे, और अन्य छह एबाल पहाड़ पर खड़े होकर श्रापों के लिए "आमीन" कहते थे (पुष्टि करें व्य.वी. 27:9–26)।

गिबोन के निवासियों के साथ वाचा, 9:1–27

परमेश्वर के पराक्रमी कार्यों की अफवाहों ने कनानी राजाओं पर भय ला दिया था (पुष्टि करें यहो 2:8–11, 24; 5:1; 6:27)। आई में पहली हार ने उन्हें आशा की एक किरण दी थी कि इस्राएल को हराया जा सकता है। इस्राएल के सामने आत्मसमर्पण करने और इस्राएल के सेवक के रूप में अपमान सहने के बजाय, वे यहोशू और इस्राएल के खिलाफ एकजुट हो गए (9:1–2)।

गिबोन, कपीरा, बेरोत, और किर्यत्यारीम के हिब्बी लोग (9:7, 17) अपने साथी कनानियों के साथ नहीं जुड़े। इसके बजाय, उन्होंने इस्राएल को धोखा देने और पूर्ण संधि स्थिति के लिए याचिका करने की एक जटिल योजना बनाई। संधि का उद्देश्य मित्रता (अर्थात, "शान्ति") था, जिसमें एक-दूसरे को हमले की स्थिति में पारस्परिक सहायता का वादा किया गया। चिन्ता जीवन की सुरक्षा को लेकर थी (वचन 15, 24)। उनके धोखे में उन्होंने लम्बी दूरी तय करने का बहाना शामिल किया (वचन 11–14) और इस्राएल की यरदन पार में विजय की झूठी रिपोर्ट दी, जिसमें यरदन पार करने का कोई उल्लेख नहीं था (9:9–10; तुलना करें 5:1)। व्यवस्था ने अधीनस्थ नगर को एक प्रकार की अधिपत्य संधि के लिए अपनी जनसंख्या को अधीन करने की अनुमति दी, जिसमें इस्राएल ने शर्तें निर्धारित कीं और अधीनस्थ जनसंख्या से अपने जबरन बेगार करनेवालों के रूप में सेवा करने की अपेक्षा की (व्य.वी. 20:11; तुलना करें न्याय 1:28–35; 1 रा 9:15–21)। हालांकि, संधि ने हिब्बियों को उनके जीवन के तरीके को बनाए रखने की अनुमति दी, इस्राएल की सैन्य सुरक्षा के लाभ के साथ।

दक्षिणी अभियान, 10:1–43

यरूशलेम के राजा, अदोनीसेदेक, ने हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और एग्लोन के नगरों को गिबोन के विरुद्ध एक सैन्य चाल के रूप में इस्राएल के खिलाफ खड़े होने के लिए एक गठबन्धन में अगुआई की (यहो 10:1–5)। गिबोन के निवासियों ने अपने वाचा सम्बन्ध के आधार पर इस्राएल से सहायता की अपील की (वचन 6)। यहोशू ने इस्राएल को गिलगाल से गिबोन तक एक रात में 25-कोस (40-किलोमीटर) की यात्रा में अगुआई की (वचन 7–9)। इस्राएली हमले ने कनानियों को चौंका दिया, जो पहले से ही इस्राएलियों से भयभीत थे। कनानियों का शिविर भ्रम में पड़ गया, और सैनिक बेथोरोन के मार्ग से अजेका और मक्केदा की ओर पहाड़ी देश से भाग गए (वचन 10)। लेकिन भागते समय, वे बड़े ओलों से पीड़ित हुए (वचन 11)। विजय प्रभु की थी। चमत्कारिक रूप से, इस्राएल पहाड़ी देश से कनानियों को और दूर धकेल सके क्योंकि दिन लम्बा था (वचन 12–14)। इस दिन के चमत्कार को याशार की पुस्तक में लम्बे समय तक याद किया गया (तुलना करें 2 शमू 1:18), क्योंकि इस दिन प्रभु ने एक पुरुष, अर्थात् यहोशू की सुनी (यहो 10:14)।

मक्केदा की गुफा में छिपे हुए पाँच राजाओं को खोजा गया, मारा गया, पेड़ों पर लटकाया गया, और गुफा में दफनाया गया (10:16–27)। इस्राएल पर युद्ध करने का उनका मूर्खतापूर्ण प्रयास शीघ्र ही समाप्त हो गया। चूंकि बड़े नगरों के गठबन्धन को समाप्त कर दिया गया था, यहोशू ने इस्राएल की अगुआई अन्य दक्षिणी नगरों के खिलाफ एक तेज अभियान में की (वचन 29–43)। प्रभु की सहायता से यह क्षेत्र एक ही अभियान में ले लिया गया (वचन 42)।

उत्तरी अभियान, 11:1–15

इस्राएलियों को फिर से युद्ध के लिए मजबूर किया गया, इस बार हासोर के राजा याबीन के अगुआई में। याबीन ने उत्तरी नगरों के राजाओं को एकत्रित किया जिन्होंने अपने सैनिकों और घोड़ों को मेरोम नामक ताल के पास इस्राएल के खिलाफ युद्ध के लिए इकट्ठा किया (11:1–5)। दक्षिणी अभियान से समानता एक साहित्यिक तरीका है यह दिखाने के लिए कि दक्षिण और उत्तर के राजाओं ने युद्ध की शुरुआत की और परिणामस्वरूप पराजित हुए। ऐसा ही उत्तरी राजाओं के साथ हुआ, जो सीदोन के क्षेत्र तक पराजित हुए (वचन 8)। उनके घोड़ों को अपंग कर दिया गया और उनके रथ जला दिए गए (वचन 9), जैसा कि प्रभु ने निर्देश दिया था (वचन 6)। इस्राएल को प्रभु पर निर्भर रहना था (तुलना करें भज 20:7)। हासोर, महान और प्राचीन नगर, उत्तर में कनानी शक्ति का केन्द्र, पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया (यहो 11:10–13)। यरीहो, आई, और हासोर का जलाना अपवाद थे, क्योंकि इस्राएल को कनानी घरों, कुओं और नगरों का वादा किया गया था (व्य.वी. 6:10–11; पुष्टि करें यहो 24:13)। अभियान की कथा फिर से यहोशू की प्रभु और मूसा, जो प्रभु के दास थे, उनके प्रति पूर्ण निष्ठा पर जोर देती है (यहो 11:9–15)।

अभियानों का सारांश, 11:16–12:24

यहोशू ने इस्राएल को विजय और विश्राम दिलाया क्योंकि उन्होंने प्रभु के मूसा को दिए गए निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन किया। मूसा ने विस्तार से उस भूमि का वर्णन किया था जिसे जीतना था (व्य.वी. 1:7), और यहोशू ने उन क्षेत्रों को लिया जिनके बारे में मूसा ने बात की थी। हालांकि नगर एक शान्ति समझौते के लिए आवेदन कर सकते थे जिसके तहत वे जबरन बेगार करनेवाले बन जाते (व्य.वी. 20:11), लेकिन किसी भी नगर ने इस्राएल को मान्यता नहीं दी। भय में उन्होंने इस्राएल को नष्ट करने की योजना बनाई और साजिश रची। वे आक्रामक थे। परमेश्वर ने उनके दिलों को कठोर कर दिया था (यहो 11:20)। धर्मशास्त्रीय कारण एक रहस्य है, जैसे कि फ़िरौन के मामले में था। लेकिन अन्तिम परिणाम यह हुआ कि कनान को जीत लिया गया और जनसंख्या का विनाश कर दिया गया, सिवाय गिबोन के हिब्बियों और उनके आसपास के नगरों के (वचन 19–20)। यहाँ तक कि अनाकियों को भी, जिन्होंने लगभग 40 साल पहले इस्राएल पर भय डाला था (गिन 13:33; पुष्टि करें व्य.वी. 2:10, 21), नष्ट कर दिया गया (यहो 11:21)। फिर भी यह पहले से ही स्पष्ट है कि हर वर्ग कोस भूमि नहीं ली गई थी (वचन 22), हालांकि एक अर्थ में पूरी भूमि इस्राएल की थी, क्योंकि कनानी प्रतिरोध के प्रमुख केन्द्र तोड़ दिए गए थे। इन वचनों में पूर्ति और पूर्ण पूर्ति के बीच का तनाव स्पष्ट है।

पराजित राजाओं की सूची (अध्याय 12) में मूसा के अगुआई में सीहोन और ओग पर विजय शामिल है। यहोशू के अधीन जीते गए राजाओं की सूची के साथ उनकी तुलना अगुआई

और उद्देश्य की निरन्तरता को दर्शाती है—दो अगुए, कई अभियान, लेकिन एक ही युद्ध। वादा की भूमि अब एक पूर्ति है। अभियानों के माध्यम से विरासत की भूमि की सीमाएँ अब अधिक स्पष्ट हो गई हैं। यरदन पार में सीमाएँ अर्नोन से लेकर हेर्मोन पर्वत तक हैं (वचन 2–5)। कनान में सीमा सीदोन के दक्षिण क्षेत्र से दक्षिण देश तक फैली हुई है (वचन 7–8)।

भूमि का विभाजन, 13:1–22:34

भूमि को विभाजित करने की आज्ञा, 13:1–7

यहोशू की वृद्धावस्था के कारण, "पूरी" भूमि नहीं ली गई थी। मूसा ने इस्राएल को पहले से चेतावनी दी थी कि विरासत विजय के साथ-साथ इस्राएल की संकीर्ण सीमाओं के क्रमिक विस्तार से प्राप्त होगी। धीरे-धीरे इस्राएल को पूरी भूमि विरासत में मिलनी थी, ताकि वे इसके आकार से अभिभूत न हों और इसे सही ढंग से उपयोग करने में असमर्थ न हों (निर्ग 23:29–30; व्य.वी. 7:22)। जिन क्षेत्रों पर अभी कब्जा किया जाना बाकी था, वे थे: गलील के उत्तर का क्षेत्र, हेर्मोन पर्वत (गलील झील के पूर्व में), फिलिस्तियों द्वारा कब्जा किया गया क्षेत्र, और क्षेत्रीय कनानी परिक्षेत्र (यहो 13:2–7; तुलना करें न्यायि 1)। इस्राएल को भविष्य के कब्जे के अधिकारों की चिंता नहीं करनी थी, क्योंकि प्रभु ने उनकी सहायता का वादा किया था (यहो 13:6)।

यरदन पार का विभाजन, 13:8–33

यहोशू ने मनश्शे, रूबेन, और गाद के गोत्रों को आवंटन के सम्बन्ध में मूसा की व्यवस्था को नहीं बदला (यहो 13:8, 32–33; तुलना करें गिन 32; व्य.वी. 3:12–17)। उनका क्षेत्र उन कुछ क्षेत्रों को भी छोड़कर था जो अब भी कनानियों के कब्जे में थे (यहो 13:13)। रूबेन के गोत्रों ने अर्नोन नदी से उत्तर की ओर हेशबोन तक का क्षेत्र प्राप्त किया था (वचन 15–23)। गाद के गोत्रों ने गिलाद का क्षेत्र, यब्बोक नदी के दक्षिण में हेशबोन तक प्राप्त किया था (वचन 24–28)। मनश्शे के कई गोत्रों ने वादी यरमुक के दक्षिण से यब्बोक तक का क्षेत्र प्राप्त किया था (वचन 29–31)। लेवीय नगरों की यहाँ सूची नहीं दी गई है, लेकिन उनका सन्दर्भ दिया गया है कि उन्हें कोई पैतृक सम्पत्ति नहीं मिली, क्योंकि उन्हें प्रभु को किए गए अर्पणों और बलिदानों से जीवन यापन करना था (यहो 13:14; तुलना करें गिन 18:20–24; 35:1–8)।

कनान में गोत्रीय विभाजन, 14:1–19:51

एलीआजर, महायाजक, और यहोशू ने मिलकर बाकी नौ और आधे गोत्रों के लिए सीमाओं, आकार, और आवंटन को निर्धारित करने के लिए चिट्ठियाँ डालीं। फिर से लेवी के गोत्र के बहिष्कार का उल्लेख किया गया है (यहो 14:4), क्योंकि उनके नगरों का विवरण अध्याय 20–21 में दिया जाएगा। एक अन्य साहित्यिक उपकरण के रूप में कालेब की विरासत का प्रारम्भ में विशेष उल्लेख है (14:6–15) और यहोशू का अन्त में (19:49–50)। ये दोनों ही एकमात्र थे जिन्होंने वयस्क के रूप में मिस्र छोड़ा था, विश्वासयोग्य गुप्तचर रहे थे, और प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश किया था (गिन 14:24, 30; व्य.वी. 1:36–38)।

यहूदा, 15:1–63 (तुलना करें न्यायि 1:10–15, 20)

यहूदा की सीमाएँ खारे ताल से पश्चिम की ओर भूमध्य सागर तक फैली थीं (यहोशू 15:2–12)। यहूदा के नगर इसके चार क्षेत्रों में सूचीबद्ध हैं: दक्षिण देश में 29 नगर (वचन 21–32), शेफेला (या पश्चिमी पहाड़ी ढलान) और तटीय मैदानों में 42 नगर (वचन 33–47), पहाड़ी देश में 38 नगर (15:48–60), और मरूभूमि में 6 नगर (वचन 61–62)। यहूदा यरूशलेम को नहीं ले सका (वचन 63) जब तक दाऊद ने इसे अपनी राजधानी नहीं बनाया (तुलना करें न्यायि 1:21; 2 शमू 5:6–16)।

एप्रैम और मनश्शे, 16:1–17:18

ये दो गोत्र, जो यूसुफ से उत्पन्न हुए थे, समृद्ध रूप से धन्य थे (तुलना करें उत 48; 49:22–26; व्य.वी. 33:13–17) और गोत्रों में प्रमुखता प्राप्त कर चुके थे। उन्हें "यूसुफ के भाग" के रूप में एक भाग प्राप्त हुआ (यहो 16:1)। मनश्शे का एक भाग पहले ही यरदन के पूर्व में एक पैतृक सम्पत्ति प्राप्त कर चुका था (13:29–31)। एप्रैम और मनश्शे के पश्चिमी भाग की सीमाएँ बेतेल से उत्तर में गिलबो पहाड़ और यरदन से भूमध्य सागर तक थीं (16:1–3)। एप्रैम को दक्षिण में छोटा भाग प्राप्त हुआ (वचन 5–9), लेकिन वे गेजेर से कनानियों को बाहर निकालने में असमर्थ रहे। मनश्शे के कुलों का उल्लेख किया गया है, जिसमें सलोफाद भी शामिल हैं (17:3–6; तुलना करें गिन 27:1–11; 36:1–12), ताकि उन्हें यरदन पार में मनश्शे के कुलों से स्पष्ट रूप से अलग किया जा सके। पश्चिमी मनश्शे का क्षेत्र शेकेम से गिलबो पर्वत तक विस्तारित था (यहो 17:7–11); लेकिन मनश्शे भी कनानियों को पूरी तरह से बाहर निकालने में असमर्थ रहे (वचन 12–13)।

हालांकि उन्होंने भूमि का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त किया था (एक तिहाई से अधिक), यूसुफ के गोत्रों ने शिकायत की। वे जानते थे कि प्रभु ने उन्हें धन्य किया था (17:14), और वे अधिक उपजाऊ भूमि की अपेक्षा कर रहे थे। लेकिन यहोशू ने उन्हें उपलब्ध भूमि का उपयोग करने के लिए जंगलों को काटने का आग्रह किया (वचन15–18)। जब उन्होंने कनानी सैन्य शक्ति के बारे में वास्तविक चिंता व्यक्त की, तो यहोशू ने उन्हें भूमि पर कब्जा करने में अपना हिस्सा निभाने के लिए कहा।

सात गोत्र, 18:1–19:51

इस्राएली शीलो में इकट्ठे हुए ताकि तम्बू की स्थापना कर सकें (तुलना करें 1 शमू 1)। उस समय सात गोत्रों को अभी तक उनकी पैतृक भूमि नहीं मिली थी। यहोशू ने प्रत्येक गोत्र से भूमि का सर्वेक्षण करने के लिए तीन पुरुषों को नियुक्त करने के लिए कहा। जब वे लौटे, तो यहोशू ने शीलो में तम्बू के पास

चिट्ठियाँ डालीं और भूमि का विभाजन किया (यहो 18:3–10)। बिन्यामीन का क्षेत्र यहूदा और एप्रैम के बीच था (वचन 11–28)। शिमोन का आवंटन दक्षिणी यहूदा में था (19:1–9), जिसके परिणामस्वरूप यहूदा में उसका विलय हो गया (तुलना करें उत्प 49:7)। जबूलून (यहो 19:10–16), इस्साकार (वचन 17–23), आशेर (वचन 24–31), और नप्ताली (वचन 32–39) को गलील के क्षेत्र में मनश्शे के उत्तर में एक हिस्सा मिला। दान को सातवीं चिट्ठी मिली और बाद में उसे कठिनाई का सामना करना पड़ा, जब वह यहूदा के पूर्व में और पश्चिम में पलिश्तियों के दबाव के कारण आवंटित क्षेत्र को बनाए नहीं रख सका (वचन 40–48)। वे उत्तर की ओर चले गए और यरदन के स्रोतों को एक उपजाऊ क्षेत्र पाया (यहो 19:47; तुलना करें न्यायि 18)।

निष्कर्ष, 19:49–51

समापन की शुरुआत के साथ समरूपता है (यहो 14:1–14) कि यहोशू ने भी एक उपहार प्राप्त किया। फिर से उल्लेख किया गया है कि सभी विभाजन प्रभु की उपस्थिति में थे, जिनका साक्षी और क्रियान्वयन महायाजक एलीआजर और यहोशू द्वारा किया गया था (19:51; तुलना करें 14:1)।

शरण नगर और लेवीय नगर, 20:1–21:45

मूसा के निर्देशों के अनुसार, छह लेवीय नगर अलग किए गए थे, यरदन के प्रत्येक ओर तीन, शरण नगरों के रूप में (गिन 35:9–34; व्य.वी. 4:41–43; 19:1–10)। इसका उद्देश्य उन लोगों के लिए "शरण" (आश्रय) प्रदान करना था जो हत्या के दोषी थे लेकिन जिन्होंने जानबूझकर किसी को नहीं मारा था। यह प्रथा दोषी व्यक्ति के लिए बचने का मार्ग प्रदान करने के लिए नहीं थी, बल्कि कानूनी प्रक्रिया को पूरा करने की अनुमति देने के लिए थी (यहो 20)।

लेवीयों को कुल मिलाकर 48 नगर मिले, जिनमें से छह नगर शरण नगर भी थे (21:1–42)। लेवी लोग मिट्टी की खेती नहीं कर सकते थे क्योंकि वे लोगों के दशमांश पर निर्भर थे (गिन 18:21–24), लेकिन उन्हें चराई के लिए भूमि रखने की अनुमति थी। भूमि के माप गिन 35:4–5 में दिए गए हैं। हारून के वंशजों के लिए विशेष आवंटन किया गया है (यहो 21:9–19), क्योंकि वे याजक के रूप में सेवा करते थे और उनके 13 नगर यहूदा-शिमोन क्षेत्र में थे, जो सुलैमानी युग के यरूशलेम मन्दिर के निकट थे।

लेवीय नगरों के आवंटन के साथ, भूमि का विभाजन समाप्त होता है। भूमि का वादा पूरा होता है (21:43–45)। परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं! यह खण्ड परमेश्वर की पूर्ति, शक्ति, और अनुग्रह पर जोर देता है, जिसके द्वारा इस्राएल अपने विश्राम में प्रवेश करता है। हालांकि, यहोशू की पुस्तक इस्राएलियों के आगे आने वाले संघर्ष और उस परीक्षा की ओर भी संकेत करती है जिसमें अंततः वे असफल होंगे (तुलना करें भज 95:11; इब्रा 3:7–11)।

यरदन पार गोत्रों की वापसी, 22:1–34

यहोशू ने ढाई गोत्रों को अन्य गोत्रों और प्रभु के प्रति उनकी निष्ठा के लिए प्रशंसा के साथ विदा किया (यहो 22:1–4), मूर्तिपूजा में न पड़ने की चेतावनी के साथ, बल्कि व्यवस्थाविवरण की व्यवस्था के अनुसार प्रभु से प्रेम करने की सलाह दी, और एक आशीर्वाद के साथ विदा किया (वचन 5–8)। हालांकि, जब वे लौटे तो उन्होंने यरदन के पश्चिमी किनारे पर एक बड़ी वेदी स्थापित की। अन्य गोत्रों ने इसके बारे में सुना और शीलो में एकत्र हुए (वचन 12)। उन्होंने समझदारी से महायाजक के पुत्र पीनहास और दस गोत्रों के प्रतिनिधियों को इस मामले की जाँच के लिए नियुक्त किया। आयोग ने यरदन पार के गोत्रों पर विश्वासघात का आरोप लगाया (यहो 22:15–20; तुलना करें गिन 25; यहो 7)।

यरदन पार गोत्रों की प्रतिक्रिया ने गोत्रों की एकता और परमेश्वर की आराधना के प्रति उनकी चिन्ता को प्रदर्शित किया। ये गोत्र परमेश्वर के लोगों की संगति से बाहर किए जाने से डरते थे और उन्होंने जानबूझकर एक वेदी का निर्माण किया, जो व्यवस्था में निर्दिष्ट वेदी के समान थी, ताकि उनकी सामान्य विरासत को प्रदर्शित किया जा सके (यहो 22:21–30)। यह वेदी बलिदान या आराधना के लिए नहीं थी, बल्कि परमेश्वर के लोगों की वाचा की एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करती थी।

पीनहास और गोत्रीय प्रतिनिधि उत्तर से प्रसन्न हुए और परमेश्वर की उपस्थिति का आश्वासन लेकर लौटे (22:30–31)। उनकी रिपोर्ट ने सभी गोत्रों के बीच इस मामले पर मेल-मिलाप करवा दिया। कथा का समापन वेदी को दिए गए नाम के उल्लेख के साथ होता है: "यह वेदी हमारे और उनके मध्य में इस बात की साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है" (वचन 34)।

उपसंहार: भूमि एक पवित्र विश्वास है, 23:1–24:33

अन्तिम दो अध्यायों में यहोशू के विदाई भाषण सभी अगुओं और पूरे इस्राएल के लिए शामिल हैं।

अगुओं को सम्बोधन, 23:1–16

यहोशू इस्राएल के लिए प्रभु द्वारा भूमि को गोत्रों को देने के कार्यों की समीक्षा करते हैं। उन्होंने अपनी विश्वासयोग्यता प्रदर्शित की है। और वे अपने लोगों के साथ रहेंगे ताकि कोई शत्रु उनके खिलाफ खड़ा न हो सके। वे हर लम्बित वादा पूरा करेंगे, जैसे उन्होंने पहले से किए गए वादों को पूरा किया है। हालांकि, उन्हें प्रभु के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में दृढ़ रहना होगा। प्रभु के प्रति विश्वासयोग्यता व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्यता से अलग नहीं है। धर्मत्याग को गम्भीरता से दण्डित किया जाएगा, पहले इस्राएल को फंसाने के लिए राष्ट्रों को छोड़कर, और फिर अपने क्रोध में उन्हें नष्ट करके।

इस्राएल को सम्बोधन, 24:1–28

पता शेकेम में वाचा के नवीनीकरण के साथ समाप्त होता है (यहो 24:1, 25–28; तुलना करें 8:30–35)। प्राचीन पश्चिमी एशिया में, वाचा (संधि) करते समय सम्बन्धित पक्षों के सम्बन्ध का एक संक्षिप्त ऐतिहासिक सारांश देना आम बात थी। यहोशू ने इस्राएल के इतिहास की समीक्षा उनके पितृपुरुषों से उनकी पीढ़ी तक की: पितृपुरुष (24:2–4), निर्गमन (वचन 5–7), और विजय (वचन 8–13)।

यहोवा की भलाई, उपस्थिति, और विश्वासयोग्यता उनके लिए स्पष्ट थी। यहोवा ने अपने लोगों से "विश्वासयोग्यता" की अपेक्षा की, जो पूर्ण निष्ठा के रूप में हो, बिना किसी प्रकार की मूर्तिपूजा के (यहो 24:14–15)। अपने परिवार के मुखिया के रूप में, यहोशू ने वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा की (वचन 15)। लोगों ने प्रभु के प्रति वफ़ादार रहने के कारण बताए (वचन 16–18)। लेकिन यहोशू ने उनके विश्वास को चुनौती देकर उन्हें गहरे समर्पण की ओर प्रेरित किया (वचन 19–20), फिर उनकी मन्नत को दर्ज किया और उनके खिलाफ एक साक्षी के रूप में एक पत्थर स्थापित किया (वचन 25–27)।

एक युग का अन्त, 24:29–33

यह पुस्तक मूसा की मृत्यु (1:1–2) के सन्दर्भ से शुरू होती है और यहोशू की मृत्यु और दफन (24:29–30) और महायाजक एलीआजर की मृत्यु (वचन 33) के साथ समाप्त होती है। यह एक युग के अन्त को चिह्नित करता है। यूसुफ की हड्डियों का दफन (यहो 24:32; तुलना करें उत्प 50:25; निर्ग 13:19) याकूब द्वारा खरीदी गई भूमि में (उत्प 33:19) मूसा और यहोशू के युग की आशा को एक साथ लाता है।

यह भी देखें शरण नगर; भूमि पर विजय और वितरण; इस्राएल का इतिहास; यहोशू (व्यक्ति) #1; लेवीय नगर।

यहोशू, यहोशूह

गिनती 13:16 और 1 इतिहास 7:27 में नून के पुत्र यहोशू के लिए वैकल्पिक केजेवी नाम, क्रमशः। *देखें* यहोशू (व्यक्ति) #1।

यहोशेबा

यहूदा के राजा यहोराम (853–841 ईसा पूर्व) और रानी अतल्याह की बेटी, राजा अहज्याह (841 ईसा पूर्व) की बहन, और महायाजक यहोयादा की पत्नी। अहज्याह की मृत्यु के बाद, अतल्याह ने सिंहासन के सभी शेष शाही उत्तराधिकारियों को मारने का प्रयास किया; हालांकि, यहोशेबा ने युवा योआश को जो अहज्याह का पुत्र था, अतल्याह के शासनकाल (841–835 ईसा पूर्व; 2 रा 11:2) के दौरान एक मंदिर की कोठरी में छिपा दिया। यहोशेबा को 2 इतिहास 22:11 में यहोशावत के रूप में भी लिखा गया है।

यहोसादाक

सरायाह के पुत्र "योसादाक" का एक अन्य नाम।

देखें योसादाक।

यहोसादाक

यहोसादाक*

हाग्गै 1:1, 12, 14; 2:2, 4; और जकर्याह 6:11 में योसादाक, यहोशू के पिता की केजेवी वर्तनी। *देखें* यहोसादाक।

यहोहानान

1. कोरहवंशी लेवी, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान पवित्रस्थान का द्वारपाल था (1 इति 26:3)।

2. राजा यहोशापात की सेना में हजारों का सेनापति (2 इति 17:15)।

3. इश्माएल का पिता जो सैनिकों की एक इकाई का सेनापति जिसने यहोयादा याजक की सहायता यहूदा की दुष्ट रानी अतल्याह को उखाड़ फेंकने में करी थी (2 इति 23:1)।

4. एल्याशीब का वंशज, जिसके पास एक कक्ष था, जिसमें एज्रा अपने लोगों के लिए प्रार्थना करने, उपवास करने और शोक मनाने के लिए जाता था (एज्रा 10:6)। वह संभवतः योहानान के समान ही है, जो महायाजक एल्याशीब का पोता था (नहे 12:22–23), और योयादा का पुत्र योनातान (एक पाठ्य रूपांतर या भिन्नता), जो नहेम्याह 12:11 में है।

5. बेबै के चार पुत्रों में से एक, जिसको एज्रा द्वारा अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रेरित किया गया था (एज्रा 10:28)।

6. अम्मोनी अधिकारी तोबियाह का पुत्र और नहेम्याह का समकालीन। उसने एक यहूदी महिला से विवाह किया, जिसके पिता, मशुल्लाम ने यरूशलेम की दीवार की मरम्मत में सहायता की थी (नहे 6:18; "योहानान")।

7. योयाकीम के महायाजक रहने के दौरान बँधुआई-पश्चात यरूशलेम में याजक और परिवार का अगुवा (नहे 12:13)।

8. उन याजकों में से एक जिन्होंने पुनर्निर्मित यरूशलेम की दीवार के समर्पण में गायक के रूप में भाग लिया था (नहे 12:42)।

याईर

1. मनश्शे का एक वंशज (गिन 32:41)। विजय के समय, उन्होंने बाशान और गिलाद के अर्गोब क्षेत्र में कई गाँवों को लिया और उन्हें अपने नाम पर हव्वोत्याईर कहा, जिसका अर्थ है "याईर के नगर" (व्य.वि. 3:14; तुलना करें यहो 13:30; 1 रा 4:13; 1 इति 2:23)। *यह भी देखें*हव्वोथ-याईर, हव्वोत्याईर।
2. इस्राएल के न्यायियों में से एक। उन्होंने इस्राएल का 22 वर्षों तक न्याय किया। उनका गिलादी होना यह दर्शाता है कि वे ऊपर #1 के वंशज हो सकते हैं (न्या 10:3–5)।
3. एल्हानान के पिता, जिन्होंने लहमी को मारा, जो गोलियत का भाई था (1 इति 20:5)। 2 शमूएल 21:19 में उन्हें यारयोरगीम कहा गया है।
4. मोर्दकै के पिता (एस्त 2:5)। 597 ई.पू. से 486 ई.पू. तक समय में एक छलांग है, जब उन्होंने यहूदा के राजा यकोन्याह को बंदी बनाया, जब फारस के राजा क्षयर्ष ने अपना शासन शुरू किया। यह एस्तेर की शुरुआत में है। इसलिए, याईर या तो यकोन्याह के साथ बंदी बनाए गए थे या उनके पिता, शिमी। उस स्थिति में याईर का जन्म बंदीगृह के दौरान हुआ होगा।

याईरी

याईरी

मनश्शे के गोत्र से याईर के वंशज (2 शमू 20:26)। *देखें*याईर #1।

याएल

हेबेर की पत्नी। यद्यपि उसका पति केनी गोत्र से था, जो इस्राएल का लंबे समय से सहयोगी था, उसने कनानी राजा याबीन का पक्ष लेने का निर्णय लिया था। याएल ने इस्राएल के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की, जो याबीन का शत्रु था। उसने याबीन के सेनापति सीसरा को अपने तंबू में बुलाया, उसे जल के स्थान पर दूध दिया, उसे सोने के लिए स्थान दिया, और फिर उसके मस्तक में तम्बू की खूंटी ठोंक दी (न्या 4:17–18, 21–22)। प्रेरित कवयित्री, दबोरा, कनानियों पर परमेश्वर द्वारा दी गई विजय पर विचार करते हुए, याएल के इस कार्य की प्रशंसा करती है (5:6, 24–31)।

याकान

एसाव के वंशज और होरी एसेर के पुत्र (1 इति 1:42); उत्पत्ति 36:27 में इन्हें अकान भी कहा गया है। *देखें*याकानियों के कुओं।

याकान, याखान

यहूदा के राजा योताम के शासनकाल के दौरान बाशान में रहने वाले गाद के गोत्र का सदस्य (1 इति 5:13)।

याकानियों का कुआँ

बेरोत-बेन-याकान (याकानियों का कुआँ)

वह स्थान जहाँ इस्राएलियों ने मिस्र से अपनी जंगल यात्रा के दौरान डेरे डाले थे। यह मोसेरा या मोसेरोत (व्य.वि. 10:6) के पास था। इसे गिन 33:31–32 में बेन-याकान भी कहा जाता है। बेरोत-बेन-याकान का अर्थ है "याकान के पुत्रों का कुआँ।"

*देखिए*जंगल में भटकना।

याकीन

1. शिमोन के पुत्र और याकूब के पोते, जो मिस्र में याकूब के साथ परदेशी हुए, याकीनियों के प्रधान (उत 46:10; निर्ग 6:15; गिन 26:12)। उन्हें 1 इतिहास 4:24 में यारीब कहा गया है।

2. याजक जो बँधुआई के बाद यरूशलेम में रहते थे (1 इति 9:10; नहे 11:10)। नाम याकीन सम्भवतः याजकों के एक परिवार को दर्शाता है, जिसके प्रधान याकीन थे।

3. हारून के वंशज और दाऊद के शासनकाल में मन्दिर की सेवा के लिए नियुक्त इक्कीसवीं याजकों के समूह के प्रधान (1 इति 24:17)।

याकीन

याकीन

याकीन के लिए एक और वर्तनी।

*देखें*याकीन।

याकीन और बोअज

दो स्तंभों के नाम जो सुलैमान ने मंदिर के प्रवेशद्वार के सामने स्थापित किए। उसने दक्षिण खम्भे का नाम याकीन और उत्तर खम्भे का नाम बोअज रखा (1 रा 7:21; 2 इति 3:17)। यह खोखले खम्भे कांस्य के बने थे और इनकी ऊँचाई लगभग 27 फीट (8.2 मीटर) और परिधि लगभग 18 फीट (5.5 मीटर) थी (लगभग 6 फीट, या 1.8 मीटर, व्यास में)। इन्हें एक टोपी (सजावटी टोपी या शीर्ष) से सजाया गया था, जो लगभग 7½ फीट (2.3 मीटर) ऊँची थी और इसमें ढले हुए सोसन का काम, जंजीरें, और प्रत्येक में 200 अनार शामिल थे (1 रा 7:15–20; 2 इति 3:15–16; 4:13)।

याकीनियों

याकीनियों

याकीनियों के लिए एक और वर्तनी।

देखें याकीनियों।

याकीम

1. बिन्यामीन के गोत्र से शिमी का वंशज (1 इति 8:19)।

2. हारून के वंशजों के 12वें दल के परिवार के अगुवा को दाऊद के समय में मंदिर की सेवा के लिए नियुक्त किया गया (1 इति 24:12)।

याकूब

1. इसहाक और रिबका के जुड़वाँ पुत्रों में छोटे पुत्र (उत 25:24–26)। इसहाक ने अपनी बाँझ पत्नी, रिबका के लिए प्रार्थना की, और उन्होंने जुड़वाँ बच्चों को गर्भ धारण किया, जो गर्भ में एक-दूसरे से टकराते थे। जब उन्होंने प्रभु से इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने रिबका को बताया कि वह दो राष्ट्रों को गर्भ में लिए हुए हैं और बड़ा पुत्र छोटे की सेवा करेगा (वचन 23)। एसाव बालों वाला और लाल था (बाद में उसे एदोम, "लाल," कहा गया, 25:30; 36:1), लेकिन याकूब अपने भाई की एड़ी पकड़े हुए पैदा हुआ, इसलिए उसका नाम याकूब रखा गया, "वह एड़ी पकड़ता है" (तुलना करें होशे 12:3), जिसका व्युत्पन्न अर्थ है "विस्थापित करना, धोखा देना, पीछे से हमला करना।"

व्यक्तिगत इतिहास

एसाव और याकूब एक-दूसरे से बहुत अलग थे। एसाव एक बाहरी व्यक्ति थे, उनके पिता के प्रिय थे, जबकि याकूब तम्बूओं के पास रहते थे और अपनी माता के प्रिय थे।

एक दिन जब याकूब लाल दाल बना रहे थे, एसाव भूखे-प्यासे आए और याकूब से कुछ खाने के लिए माँगा। याकूब ने एसाव को उनके पहलौठे के अधिकार के बदले कुछ दाल बेचने की पेशकश की, और एसाव ने सहमति जताई, इस प्रकार उन्होंने अपने पहलौठे के अधिकार को त्याग दिया (पुष्टि करें इब्रा 12:16)। लाल दाल की इस घटना का महत्व एसाव के दूसरे नाम, एदोम ("लाल") के साथ इसके सम्बन्ध से प्रदर्शित होता है (उत 25:30)।

इसहाक बूढ़े और अन्धे हो गए थे। एक दिन उन्होंने एसाव से कहा कि वे अपने हथियार लें और कुछ जंगली शिकार लाएँ, जिसे इसहाक बहुत पसन्द करते थे (उत 27:6–7; तुलना करें 25:28), ताकि वे खा सकें और फिर एसाव को अपनी आशीष दे सकें। रिबका ने यह सुन लिया, इसलिए उन्होंने याकूब को बुलाया और कहा कि वे भेड़-बकरियों के पास जाएँ और दो अच्छे बच्चे चुनें। वे एक व्यंजन तैयार करेंगी जो शिकार की तरह लग सके जबकि एसाव शिकार करने के लिए बाहर गए थे। याकूब को डर था कि इसहाक धोखे को पकड़ लेंगे, क्योंकि एसाव बहुत बालों वाले थे, लेकिन रिबका ने सब योजना बना रखी थी। उन्होंने याकूब के हाथों और गर्दन पर बकरियों के बच्चों की खालें रख दीं ताकि बालों का आभास हो सके (27:16) और उन्हें एसाव के सबसे अच्छे वस्त्र पहनाए, जिनमें बाहर की गन्ध थी। हालांकि इसहाक ने याकूब की आवाज़ को पहचाना, उनके अन्य इंद्रियाँ उन्हें धोखा दे गईं, और वे खालों के स्पर्श और वस्त्रों की गन्ध से धोखा खा गए। उन्होंने याकूब को आशीष देने की प्रक्रिया पूरी की (वचन 27–29)।

जैसे ही याकूब गए, वैसे ही एसाव अपने पकाए हुए शिकार के साथ पहुँचे। याकूब की चाल का पता चल गया, लेकिन दी हुई आशीष वापस नहीं ली जा सकती थी (उत 27:33), क्योंकि, जैसा कि नुज़ी की तख्तियाँ दिखाती हैं, मौखिक आशीष की कानूनी वैधता होती थी और उसे रद्द नहीं किया जा सकता था। एसाव का दिल टूट गया (तुलना करें इब्रा 12:17)। इसहाक ने उन्हें याकूब को दी गई आशीष से कमतर आशीष दी (उत 27:39–40)।

भाइयों के बीच शत्रुता और गहरी हो गई, और एसाव ने अपने पिता की मृत्यु के बाद याकूब को मारने की योजना बनाई। रिबका को यह पता चला, इसलिए उन्होंने याकूब को हारान में अपने भाई लाबान के पास भागने का निर्देश दिया (उत 27:42–45)। इस बीच, एसाव की हित्ती पत्नियाँ रिबका के लिए जीवन को दुखद बना रही थीं; उन्होंने इसहाक से शिकायत की, जिन्होंने याकूब को बुलाया और उसे लाबान के पास भेजा ताकि वह अपने मामा की बेटियों में से एक से विवाह कर सके (27:46–28:4)।

याकूब हारान के लिए निकले। एक पत्थर को तकिया बनाकर, उन्होंने एक रात सपना देखा कि एक सीढ़ी स्वर्ग तक पहुँच रही है, जिस पर परमेश्वर के स्वर्गदूत चढ़ और उतर रहे हैं। परमेश्वर ने याकूब से बात की और उन्हें वह वादा दिया जो उन्होंने अब्राहम और इसहाक को भूमि और वंशजों के बारे में दिया था। अगले दिन सुबह याकूब ने अपने पत्थर के तकिये को खम्बे के रूप में खड़ा किया और उसे तेल से अभिषेक किया। उन्होंने उस स्थान का नाम बेतेल ("परमेश्वर का घर") रखा और एक मन्नत मानी कि यदि प्रभु उनके साथ रहेंगे और उनकी देखभाल करेंगे, तो वे प्रभु को दशमांश देंगे (उत् 28:10–22)।

जब याकूब हारान के क्षेत्र में पहुँचे, तो उन्होंने चरवाहों से मुलाकात की जो लाबान को जानते थे। राहेल, लाबान की छोटी बेटी, अपने पिता की भेड़-बकरियों के साथ आईं, और याकूब ने कुएँ के मुँह से बड़ा पत्थर हटाया और उनके लिए भेड़ों को पानी पिलाया (उत् 29:1–10)। जब राहेल को पता चला कि याकूब उनके अपने परिवार से हैं, तो वह अपने पिता को बताने के लिए दौड़ीं, जिन्होंने याकूब का गर्मजोशी से स्वागत किया। उनके साथ एक महीने रहने के बाद, याकूब को लाबान की भेड़ों की देखभाल के लिए काम पर रखा गया। जब मज़दूरी की बात हुई, तो याकूब ने राहेल को अपनी पत्नी के रूप में पाने के लिए सात साल काम करने का प्रस्ताव रखा (वचन 15–20)।

सात वर्षों के अन्त में याकूब अपनी मज़दूरी लेने के लिए तैयार थे, लेकिन शादी की दावत की रात को, लाबान ने अपनी बड़ी बेटी, लिआ, को याकूब को दे दिया; याकूब को सुबह तक इस बदलाव का पता नहीं चला। उन्होंने धोखा महसूस किया और लाबान से विरोध किया, लेकिन लाबान ने जोर देकर कहा कि रिवाज के अनुसार बड़ी बेटी की शादी पहले होनी चाहिए और प्रस्ताव दिया कि याकूब राहेल के लिए और सात वर्षों तक काम करें। याकूब ने इसे स्वीकार किया और अपना समय पूरा किया (उत् 29:21–30)।

उत्पत्ति 29 और 30 याकूब के अधिकांश बच्चों के जन्म का वर्णन करते हैं। लिआ ने याकूब के लिए चार पुत्रों को जन्म दिया: रूबेन, शिमोन, लेवी, और यहूदा (उत् 29:31–35)। उन्होंने अपने पहले पुत्र का नाम रूबेन रखा ("देखो, एक पुत्र") क्योंकि उन्हें लगा कि उनके पति उन्हें प्रेम करेंगे क्योंकि उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। शिमोन "सुनना" के मूल शब्द से लिया गया है, क्योंकि लिआ ने सोचा कि परमेश्वर ने उन्हें यह पुत्र इसलिए दिया क्योंकि उन्होंने सुना कि वह अप्रिय थीं। लेवी क्रिया "जुड़ना" से सम्बन्धित है, क्योंकि लिआ ने सोचा कि उनके पति इस तीसरे पुत्र के कारण उनसे जुड़ जाएँगे। यहूदा का अर्थ "स्तुति" है, क्योंकि उन्होंने अपने चौथे पुत्र के जन्म पर प्रभु की स्तुति की।

राहेल ने कोई संतान उत्पन्न नहीं की थी, इसलिए उन्होंने अपनी दासी बिल्हा को याकूब को दे दिया। उसने उनके लिए दान और नप्ताली को जन्म दिया (उत् 30:1–8)। राहेल ने पहले पुत्र का नाम दान रखा ("उसने न्याय किया") क्योंकि परमेश्वर ने उनका न्याय किया था, अर्थात् उन्हें न्यायसंगत ठहराया था। नप्ताली का अर्थ है "मेरा संघर्ष, मेरा मल्लयुद्ध," क्योंकि राहेल ने कहा कि उन्होंने अपनी बहन के साथ मल्लयुद्ध किया और विजय प्राप्त की।

तब लिआ ने अपनी दासी जिल्पा को याकूब को पत्नी के रूप में दिया; उसने गाद और आशेर को जन्म दिया (उत् 30:11)। गाद का अर्थ है "सौभाग्य"; लिआ ने कहा, "अहो भाग्य," जब वह पैदा हुआ। आशेर ("धन्य") का नाम ऐसा इसलिए रखा गया क्योंकि लिआ ने कहा, "अब महिलाएँ मुझे धन्य कहेंगी।"

रूबेन ने खेत में कुछ दूदाफल पाए, और लिआ ने उन्हें राहेल को याकूब की सेवाओं के लिए सौंप दिया। लिआ ने फिर पाँचवे और छठे पुत्र, इस्साकार और जबूलून को जन्म दिया, और उसके बाद एक बेटी को, जिसका नाम उन्होंने दीना रखा (उत् 30:14–21)। इस्साकार का अर्थ शायद "मजदूरी" है, क्योंकि लिआ ने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें अपनी दासी को अपने पति को देने के लिए मजदूरी दी थी। जबूलून का अर्थ संभवतः "आदर" है; लिआ ने सोचा कि अब उनके पति उन्हें आदर देंगे।

अन्त में राहेल ने स्वयं गर्भ धारण किया और अपने पहले बालक को जन्म दिया, एक पुत्र जिसका नाम उन्होंने यूसुफ रखा। "यूसुफ" का अर्थ है "और भी देंगे" या "वे जोड़ेंगे," क्योंकि राहेल चाहती थीं कि परमेश्वर उन्हें एक और पुत्र दें।

याकूब वापस कनान जाने की इच्छा रखते थे, लेकिन लाबान उन्हें रोकना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने अनुभव से जान लिया है कि प्रभु ने याकूब के कारण उन्हें आशीष दी है (उत् 30:27)। उन्होंने मज़दूरी के विषय में चर्चा की, और याकूब ने प्रस्ताव दिया कि हर चित्तीदार और धब्बेदार भेड़ और बकरी और हर काला मेम्ना उनका हो जाए (वचन 32–33)। लाबान इस पर सहमत हो गए, लेकिन उन्होंने तुरन्त उस तरह से चिह्नित सभी पशुओं को हटा दिया और उन्हें बाकी झुण्डों से लगभग तीन दिन की दूरी पर अपने पुत्रों की देखभाल में रख दिया (वचन 35–36)।

याकूब ने भी लाभ प्राप्त करने की योजना बनाई; उन्होंने सबसे अच्छे पशुओं के प्रजनन के समय पानी के कुण्डों के पास चित्तीदार और धारीदार लकड़ी की छड़ें रखकर पशुओं की आनुवंशिकी को प्रभावित करने का प्रयास किया। प्रभु ने याकूब को आशीष दिया और वे झुण्डों और पशुओं में समृद्ध हो गए (उत् 30:37–43)।

लाबान के पुत्र याकूब के प्रति बहुत कटु हो गए, और लाबान का रवैया भी उसके प्रति बदल गया। याकूब ने इसे देखा, और अब प्रभु ने याकूब से बात की और उसे कनान लौटने के लिए कहा (उत् 31:3–16)। याकूब ने अपनी दो पत्नियों के साथ एक पारिवारिक बैठक की और उन्हें बताया कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे धन्य किया है, भले ही उनके पिता ने उन्हें धोखा

दिया और उनकी मज़दूरी दस बार बदल दी। याकूब ने अपना काफिला संगठित किया जबकि लाबान भेड़ की ऊन कतरने के लिए बाहर थे। राहेल ने अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा लिया, क्योंकि उनके कब्जे से धारक लाबान की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बन सकता था (देखें नुज़ी तख्तियाँ)। दल ने प्रस्थान किया, फरात को पार किया, और गिलाद की ओर बढ़ा। लाबान और उनके रिश्तेदारों ने उनका पीछा किया, लेकिन परमेश्वर ने लाबान से एक स्वप्न में बात की, उन्हें चेतावनी दी कि वे याकूब से कुछ न कहें।

जब लाबान याकूब के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसे चुपके से भागने के लिए डाँटा और उसके गृहदेवताओं के बारे में पूछा। याकूब को नहीं पता था कि राहेल ने क्या किया था, इसलिए उन्होंने कहा कि जिसके पास देवता मिलेंगे, उसे मृत्यु को प्राप्त होना चाहिए (उत् 31:32)। राहेल ने उन्हें ऊँट की काठी में छिपा दिया था और जब उनके पिता ने तम्बू की तलाशी ली, तो वह काठी पर बैठी थीं। लाबान को मूर्तियाँ नहीं मिलीं। इसके बाद, याकूब क्रोधित हो गए और शिकायत की कि उन्होंने लाबान की सेवा 20 वर्षों तक की और लाबान ने उनकी मज़दूरी दस बार घटाई।

लाबान ने शान्ति की वाचा का सुझाव दिया, इसलिए दोनों पुरुषों ने पत्थर इकट्ठा किए और एक स्मारक बनाया और उसे "साक्षी का ढेर" कहा। अगले दिन सुबह लाबान ने विदाई दी और घर लौट गए।

जैसे याकूब और उनका घराना यात्रा कर रहे थे, उन्हें परमेश्वर के स्वर्गदूत मिले ("परमेश्वर का दल है," उत् 32:2), इसलिए उन्होंने उस स्थान का नाम महनैम रखा, "दो दल" याकूब ने एसाव को अपनी वापसी की सूचना देने के लिए दूत भेजे। वे यह समाचार लेकर लौटे कि एसाव 400 पुरुषों के साथ आ रहे हैं। याकूब डर गए और प्रभु की सुरक्षा माँगी। एसाव का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए, याकूब ने पशुओं के भेंट आगे भेजे, और उस रात उन्होंने अपने परिवार और सम्पत्ति को यब्बोक नदी के घाट के पार भेज दिया। याकूब अकेले रह गए, और "एक पुरुष" ने पूरी रात उनके साथ कुश्ती की। भोर के समय पुरुष ने याकूब की जाँघ को छुआ, और उनकी कमर की हड्डी खिसक गई, लेकिन याकूब तब तक नहीं माने जब तक कि "पुरुष" ने उन्हें आशीर्वाद नहीं दिया। यहाँ प्रभु ने याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखा ("वह परमेश्वर के साथ संघर्ष करता है"), और याकूब ने उस स्थान का नाम पनीएल रखा ("परमेश्वर का चेहरा") क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को आमने-सामने देखा और जीवित रहे (उत् 32:30)।

एसाव पास आ रहे थे, इसलिए याकूब ने अपने परिवार को व्यवस्थित किया और आगे बढ़कर अपने भाई के सामने झुककर प्रणाम किया। लेकिन एसाव अनुग्रहकारी और क्षमाशील थे और मुलाकात सुखद रही (उत् 33:4)। एसाव याकूब के बड़े परिवार और सम्पत्ति को देखकर आश्चर्यचकित हुए और मित्रता के हर संकेत दिए। एसाव सेईर लौट गए, और याकूब शेकेम की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने शेकेम के पिता हमोर से एक भूमि का टुकड़ा खरीदा। याकूब ने वहाँ एक वेदी बनाई और उसका नाम रखा एल-एलोहे-इस्राएल, "परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर" (वचन 20)।

प्रभु के निर्देशों का पालन करते हुए, याकूब बेतेल चले गए और अपने घराने से विदेशी देवताओं को हटा दिया। लूज (बेतेल) में प्रभु ने फिर से उनसे मुलाकात की और उनके नए नाम की पुष्टि की, भूमि और वंशजों को दिए प्रतिज्ञा का पुन: स्मरण किया (उत् 35:9–15)। जब वे दक्षिण की ओर यात्रा कर रहे थे, राहेल की मृत्यु उनके दूसरे पुत्र को जन्म देते समय हो गई (वचन 16–20)। उन्होंने उसका नाम बेनोनी ("मेरे दुख का पुत्र") रखा, लेकिन याकूब ने उसका नाम बदलकर बिन्यामीन ("दाहिने हाथ का पुत्र") कर दिया। याकूब हेब्रोन गए और पाया कि इसहाक अभी भी जीवित थे। इसहाक की मृत्यु 180 वर्ष की आयु में हुई और उन्हें एसाव और याकूब ने दफनाया।

हालांकि याकूब की कहानी उत्पत्ति की पुस्तक में जारी रहती है, अध्याय 37–50 का केन्द्रीय पात्र यूसुफ है, जो याकूब का प्रिय पुत्र और राहेल का पहलौठा था। याकूब ने इस पक्षपात को इतनी खुलकर दिखाया कि अन्य पुत्र यूसुफ से ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने यूसुफ को मारने की साजिश रची, लेकिन इसके बजाय उसे व्यापारियों के एक काफिले को बेच दिया जो मिस्र जा रहे थे (उत् 37:9–28)। उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया, उसे बकरी के लहू में डुबोया, और अपने पिता के पास ले गए, उन्हें बताया कि उन्होंने यह अंगरखा पाया है। याकूब ने उस अंगरखे को पहचाना जो उन्होंने अपने पुत्र को दी थी और निष्कर्ष निकाला कि वह मर चुका है। याकूब का दिल टूट गया और उन्हें सांत्वना नहीं मिली।

जब कनान में अकाल पड़ा, याकूब ने अपने पुत्रों को मिस्र अनाज खरीदने के लिए भेजा (उत् 42:1–5), और बिन्यामीन को घर पर रखा। जब भाई कनान लौटे, उन्होंने याकूब को बताया कि अधिकारी (जो वास्तव में यूसुफ थे) ने शिमोन को बन्धक बना लिया है और उनसे माँग की है कि वे जब फिर से अनाज लेने आएँ तो बिन्यामीन को साथ लाएँ। अकाल जारी रहा, और याकूब ने फिर से अपने पुत्रों को मिस्र अनाज के लिए भेजा। बहुत अनिच्छा से, उन्होंने बिन्यामीन को उनके साथ जाने की अनुमति दी, और मिस्री अधिकारी के लिए एक भेंट भी भेजी (43:11–14)।

अगली खबर जो याकूब को मिली, वह यह थी कि यूसुफ मिस्र में जीवित हैं और वे अपने पिता और पूरे परिवार को अपने पास बुलाना चाहते हैं (उत् 45:21–28)। याकूब पहले बेर्शेबा गए और प्रभु को भेंट चढ़ाई। प्रभु ने याकूब से बात की, उन्हें मिस्र जाने के लिए कहा और पहले किए प्रतिज्ञायों की फिर से पुष्टि की। याकूब और उनके वंशज जो मिस्र में थे, उनकी संख्या 70 थी, जिसमें यूसुफ के दो पुत्र भी शामिल थे।

जब याकूब गोशेन पहुँचे, यूसुफ उनसे मिलने आए, और वहाँ एक आनन्दमय पुनर्मिलन हुआ (उत् 46:28–30)। यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों के आगमन की सूचना फ़िरौन को दी (47:1) और अपने पिता और पाँच भाइयों को शासक से मिलवाया। इस्राएल गोशेन के क्षेत्र में बस गए और वहाँ समृद्ध हुए। याकूब ने मिस्र में 17 वर्ष बिताए और 147 वर्ष की आयु प्राप्त की।

जब याकूब ने महसूस किया कि उनकी मृत्यु निकट है, उन्होंने यूसुफ को बुलाया और उनसे शपथ ली कि वे उन्हें उनके पूर्वजों के साथ कनान में दफनाएंगे। यूसुफ अपने दो पुत्रों, मनश्शे और एप्रैम, को अपने पिता के पास पितृसत्तात्मक आशीर्वाद के लिए ले गए। उन्होंने लड़कों को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि मनश्शे, जो पहलौठा था, याकूब के दाहिने और एप्रैम बाएँ हों। याकूब ने हालांकि अपने हाथों को तिरछा किया और छोटे पुत्र को बड़ा आशीर्वाद दिया (48:13–20)। याकूब ने भविष्यवाणी की कि उनकी प्रजा कनान लौटेगी, और उन्होंने यूसुफ को भूमि का दोहरा हिस्सा दिया। फिर याकूब ने अपने सभी पुत्रों को बुलाया और प्रत्येक को आशीर्वाद दिया (49:1–28)। यहूदा को प्रमुखता का स्थान मिला, और वही यीशु की वंशावली में प्रकट होता है (वचन 8–12)। यूसुफ का आशीर्वाद विशेष अनुग्रह का संकेत दिखाता है (वचन 22–26)। याकूब ने अपने पुत्रों को यह भी आदेश दिया कि वे उन्हें हेब्रोन के पास मकपेला की गुफा में दफनाएँ, फिर उन्होंने अपने पैर बिछोने पर खींच लिए और उनका निधन हो गया।

यूसुफ ने चिकित्सकों को अपने पिता का मिस्री रीति से शव-संरक्षण करने के लिए बुलाया; शव-संरक्षण के लिए 40 दिन और शोक की अवधि के लिए 70 दिन थे (उत् 50:1–3)। यूसुफ ने जैसा वादा किया था, याकूब को दफनाने के लिए कनान जाने की व्यवस्था की गई, और एक बड़ा अन्तिम संस्कार जुलूस, जिसमें कई मिस्री अधिकारी और याकूब का परिवार शामिल था, मिस्र से गया। दल ने आताद के खलिहान में सात दिन तक शोक मनाया; फिर याकूब के पुत्रों ने उन्हें मकपेला की गुफा में दफनाया जैसा उन्होंने अनुरोध किया था। पूरा दल मिस्र लौट आया, और यूसुफ ने अपने भाइयों को आश्वस्त किया कि उनका उन पर प्रतिशोध लेने का कोई इरादा नहीं था। परमेश्वर ने इस पूरे प्रकरण को भलाई के लिए ठहराया था (वचन 15–21)।

याकूब इस्राएल राष्ट्र के रूप में

परमेश्वर ने भूमि और देश के बारे में वही प्रतिज्ञा अब्राहम, इसहाक, और याकूब से किए, लेकिन यह याकूब के परमेश्वर-द्वारा दिए गए नाम, इस्राएल, के द्वारा है कि देश जाना जाता है।

याकूब नाम का उपयोग देश के लिए लगभग 100 बार किया गया है (उदाहरण के लिए, गिन 24:5, 19; व्य.वि. 32:9; भज 59:13)। यह अक्सर इस्राएल के समानांतर पाया जाता है (उदाहरण के लिए, गिन 23:7; व्य.वि. 33:10; यशा 14:1)। "याकूब" का उपयोग विशेष रूप से इस्राएल के उत्तरी राज्य के लिए भी किया जाता है (आमो 7:2, 5)। यशा 41:21 में "याकूब के राजा" परमेश्वर स्वयं को सन्दर्भित करता है।

यह भी देखें उत्पत्ति की पुस्तक; इस्राएल का इतिहास; पितृपुरुष काल।

2. मत्ती की वंशावली के अनुसार यूसुफ के पिता, जो मरियम के पति और यीशु के सांसारिक पिता थे (मत्ती 1:16)। लूका, हालांकि, हेली को यूसुफ का पिता बताते हैं (लूका 3:24)। *देखें* यीशु मसीह की वंशावली (दोनों अभिलेखों के बीच सम्बन्ध)।

याकूब का कुआँ

यह स्थान केवल यूहन्ना के सुसमाचार में उल्लेखित है (यूह 4:5–29)। यहीं पर यीशु ने सामरिया की बेनाम महिला से बैठकर बात की, जिन्होंने सहजता से यीशु के वचनों को स्वीकार किया। यह कुआँ कुलपति याकूब द्वारा मोल ली गई भूमि के उस भाग पर स्थित है, जो यूसुफ की पारम्परिक कब्र से लगभग 300 गज (274 मीटर) दक्षिण-पूर्व में है (उत् 33:19; यहो 24:32; यूह 4:5–6)। यह स्थल आधुनिक नब्लस से लगभग दो मील (3.2 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व, प्राचीन शेकेम (आधुनिक बालाटा) से 600 गज (549 मीटर) दक्षिण-पूर्व, और सूखार (आधुनिक अस्कर) से 1,000 गज (914 मीटर) दक्षिण में है। इस स्थल के उत्तर-पश्चिम में एबाल पर्वत (जिसके तल पर अस्कर स्थित है) और दक्षिण-पश्चिम में गिरिज्जीम पर्वत, श्राप और आशीर्वाद के पर्वत स्थित हैं (व्य.वि. 27:12–13; यहो 8:30–33)। यहाँ पास ही अब्राहम ने अपनी पहली वेदी बनाई थी, और याकूब ने अपनी दूसरी वेदी बनाई थी (उत् 12:6–7; 33:18–20)। इस प्रकार, यह स्थल पवित्र देश के सबसे प्राचीन और पवित्र स्थानों में से एक है।

यह कुआँ लगभग 100 फीट (30.5 मीटर) गहरा और एक गज (.9 मीटर) व्यास में है, जो चूना पत्थर को काटकर बनाया गया है। इस कुएँ की आपूर्ति पास के पर्वतीय ढलानों से निकलने वाली भूमिगत नदियों द्वारा किया जाता है, जिससे यहाँ पानी शुद्ध और बहुतायत में पाया जाता है, जो ग्रामीणों का गर्व है। इस स्थल पर कम से कम ईस्वी 380 से एक कलीसिया मौजूद है। यूनानी ऑर्थोडॉक्स कलीसिया ने 1885 में इस स्थल को मोल लिया और यहाँ एक संरचना बनाई। कुएँ तक पहुँचने के लिए कलीसिया के वेदी से नीचे कुएँ के किनारे तक जाने के लिए दोनों ओर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

याकूब की सीढ़ी

जब याकूब अपने पिता इसहाक को धोखे से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद घर छोड़कर गए, जो इसहाक ने एसाव के लिए रखा था (उत् 27:6–40), तो वह केवल अपनी माता के भाई की पुत्रियों में से एक पत्नी पाने की इच्छा नहीं रखते थे, बल्कि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग रहे थे, क्योंकि एसाव ने उन्हें घात करने का निश्चय कर लिया था (वचन 41)। जब उन्होंने किसी स्थान में पहुँचकर रात के लिए विश्राम किया, तब यहोवा ने उन्हें एक स्वप्न में दर्शन दिया और उन्हें आशीष दी (28:10–22)। दर्शन में याकूब ने एक सीढ़ी देखी जो पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँच रही थी और उस पर परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते-उतरते दिखाई दिए। सीढ़ी के ऊपर स्वयं यहोवा खड़े थे, जिन्होंने याकूब से पहले अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा (12:2–3, 7), और इसहाक से दोहराई गई प्रतिज्ञा (26:3–5) को सुनिश्चित किया। इस सन्दर्भ में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि चढ़ते-उतरते परमेश्वर के दूत वाली सीढ़ी यह दर्शाती है कि परमेश्वर याकूब तक पहुँच रहे थे और याकूब के लिए उनके साथ सम्बंध स्थापित करने का मार्ग बना रहे थे। परमेश्वर और याकूब के बीच जो सहभागिता होनी थी, वह सीढ़ी और स्वर्गदूतों की गति के द्वारा प्रतीकात्मक है। यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का संवाद वही स्थान प्रतीत होता है जो यूह 1:50 में किया गया है जब यीशु नतनएल और अपने अन्य शिष्यों से कहते हैं, "तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे"। याकूब परमेश्वर की इस तरह से अपनी उपस्थिति को देखकर इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने उस स्थान का नाम बेतेल रखा—परमेश्वर का भवन।

याके

आगूर के पिता। आगूर ने नीतिवचन की एक श्रृंखला लिखी जो ईतीएल और उक्काल को संबोधित है (नीति 30:1)।

याकोबा

शिमोन के गोत्र में एक अगुवा (1 इति 4:36)।

यागूर

यागूर

यह स्थान इस्राएल के सुदूर दक्षिणी भाग में, एदोम के पास है, जिसे विजय के तुरंत बाद यहूदा के गोत्र ने विरासत में प्राप्त किया था (यहो 15:21)।

याजक और लेवी

प्राचीन इस्राएल में परमेश्वर के दासों के तीन प्रमुख वर्ग थे: भविष्यद्वक्ता, बुद्धिमान व्यक्ति, और याजक और लेवी। प्राचीन भविष्यद्वक्ता एक बुलाहट को पूरा करते थे लेकिन वे पेशेवर नहीं थे; उन्हें उनके कार्य के लिए कोई भुगतान नहीं मिलता था, और वे केवल परमेश्वर के विशेष बुलाहट के अनुसार कार्य करते थे। बुद्धिमान व्यक्ति शासन और शिक्षा में संलग्न थे; उनके कुछ कार्य धर्मनिरपेक्ष थे, फिर भी वे नैतिक शिक्षा में भी शामिल होते थे। याजक और लेवी मुख्य रूप से धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करते थे और आधुनिक समय के पादरियों के समान होते थे। वे पेशेवर लोग थे और अपने पूर्णकालिक धार्मिक कार्य के लिए उन्हें समर्थन दिया जाता था।

याजकों की भूमिका को सबसे स्पष्ट रूप से इस्राएली मत के संदर्भ में देखा जा सकता है। इस्राएली मत के केंद्र में परमेश्वर के साथ एक संबंध था; इस्राएली या यहूदी होने का अर्थ था जीवित परमेश्वर के साथ एक निरंतर संबंध को जानना और बनाए रखना। इस संबंध की बाहरी अभिव्यक्ति विभिन्न संदर्भों में पाई जाती थी: वाचा, मन्दिर, आराधना, और दैनिक जीवन के हर पहलू में। इस प्रकार इस्राएली मत, जिसे एक संबंध के रूप में समझा जाता था, उसके दो दृष्टिकोण थे: परमेश्वर के साथ संबंध और साथी मनुष्यों के साथ संबंध। इसका एक व्यक्तिगत और एक सामुदायिक आयाम था। याजक इस संबंधमय जीवन के रक्षक और दास थे, जो पुराने नियम के विश्वास के केंद्र में था; उनके सभी कार्यों को परमेश्वर और इस्राएल के बीच संबंध के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। भविष्यद्वक्ता भी वाचा संबंध के दास थे। जबकि याजक यहूदी मत के सामान्य दास के रूप में कार्य करते थे, भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका संकट के समय में पापी लोगों को परमेश्वर के साथ संबंध में वापस आने की बुलाहट की अधिक थी।

पुराने नियम में, याजकों और लेवियों दोनों का बार-बार उल्लेख होता है; हालांकि, कई बाइबल लेखों में, यह अंतर स्पष्ट नहीं है (देखें, उदाहरण के लिए, व्य.वि. 18:1–8)। विद्वानों के दृष्टिकोण से, याजकों और लेवियों के बीच सटीक संबंध एक निरंतर समस्या है जिसका अभी तक पूरी तरह से समाधान नहीं हुआ है। सामान्य रूप से, केवल हारून के पुत्रों को याजक की भूमिका निभानी थी; अन्य सभी लेवीय धार्मिक कार्य करेंगे, हालांकि तकनीकी रूप से वे याजक नहीं होंगे। जबकि यह अंतर अधिकांश बाइबल लेखों में स्पष्ट है, अन्य में निश्चितता और स्पष्टता की कमी है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि याजकों (हारून के वंशज लेवियों) और लेवियों (हारून के वंशजों के अलावा) सभी को पेशेवर धार्मिक कर्तव्य निभाने थे। इस्राएल के इतिहास में समय-समय पर उन कर्तव्यों की सटीक प्रकृति बदलती रही।

पूर्वावलोकन

याजक और लेवी

- याजकों की उत्पत्ति
- महायाजक
- याजक
- लेवी
- इस संस्था का इतिहास
- नए नियम के समय में याजकीय पद

याजकों की उत्पत्ति

इस्राएल में याजकीय पद मूसा और हारून के समय में शुरू हुए। मिस्र से निर्गमन केवल इब्रानी दासों की मुक्ति ही नहीं थी, बल्कि इस्राएल देश का जन्म भी था। निर्गमन में जन्मे देश को सीनै की वाचा में उसका संविधान दिया गया था। इस वाचा के व्यवस्था ने इस्राएली याजकीय पद की नींव और उत्पत्ति को स्थापित किया। यह तीन मुख्य वर्गों की जानकारी प्रदान करता है: महायाजक, याजक, और लेवी।

महायाजक

किसी भी बड़ी और जटिल संस्था को एक प्रमुख या अगुवे की आवश्यकता होती है, और यह बात इब्रानी याजकों के लिए भी सही थी (हालाँकि अपने आरंभिक दिनों में यह एक छोटा संगठन था)। वाचा को मूसा के द्वारा स्थापित किया गया, जो एक भविष्यद्वक्ता थे, जिनके द्वारा परमेश्वर ने वाचा संबंध की पेशकश और सार दिया; वाचा के भीतर धार्मिक जीवन की मुख्य ज़िम्मेदारी हारून की थी, जो पहले और प्रधान याजक थे।

इस्राएल के याजकों के प्रारंभिक दिनों में, यह संभव है कि महायाजक का पद अपेक्षाकृत अनौपचारिक था; वे अपने साथी याजकों में प्रमुख या अगुवे थे। फिर भी, यह पद महत्वपूर्ण था और इसमें एक विशेष अभिषेक विधि, विशेष वस्त्र और कुछ विशेष जिम्मेदारियाँ शामिल थीं। जबकि महायाजक की जिम्मेदारियाँ सिद्धांत रूप में अन्य याजकों के समान थीं, फिर भी उनकी कुछ विशेष ज़िम्मेदारियाँ थीं। कुछ हद तक, उनकी ज़िम्मेदारियाँ प्रशासनिक थीं, जो उन सभी याजकों से संबंधित थीं जिनकी देखरेख वह करते थें। लेकिन उनकी स्थिति एक मात्र प्रशासक से अधिक गंभीर थी; जैसे सभी याजक वाचा संबंध के दास और रक्षक थे, उसी प्रकार महायाजक प्रधान सेवक और प्रधान रक्षक थें। उनकी ज़िम्मेदारी में सम्पूर्ण परमेश्वर की प्रजा की आत्मिक देखरेख थी, और इसी में उनके पद का सच्चा सम्मान और गंभीरता निहित थी।

महायाजक की यह आत्मिक वरिष्ठता इस्राएल की आराधना के जीवन में किए गए कुछ कार्यों में सबसे स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण वार्षिक प्रायश्चित्त के दिन (योम किप्पुर) की प्राचीन प्रथा में देखा जा सकता है। केवल उसी दिन महायाजक पवित्र स्थान में प्रवेश करते थें और "करुणा के आसन" के सामने खड़े होकर पूरे इस्राएल देश के लिए परमेश्वर की क्षमा और दया मांगते थें (लैव्य 16:1–19)। इसी विधि में इस्राएल के वाचा के प्रति विश्वास सबसे स्पष्ट रूप से प्रकट होते है। इस्राएल का विश्वास एक पवित्र परमेश्वर के साथ संबंध का था, और मानव बुराई उस संबंध को बाधित करती थी। जबकि पूरे वर्ष की आराधना और बलिदान उस संबंध की निरंतरता से जुड़े थे, प्रायश्चित्त का दिन वर्ष का सबसे गंभीर दिन था, जिस पर सभी लोगों का ध्यान उनके अस्तित्व के अर्थ पर केंद्रित होता था। जीवन का अर्थ तभी था जब परमेश्वर के साथ संबंध बनाए रखा जा सके; महायाजक को पूरे इस्राएल के लिए परमेश्वर की दया मांगने का महान सम्मान और भारी बोझ दिया गया था।

महायाजक द्वारा पहने जाने वाले विशेष वस्त्र उनके पद की प्रकृति और महत्व का प्रतीक थे; हालांकि सभी प्रतीकों को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता, कुछ बातें बाइबल के वचन में स्पष्ट रूप से बताई गई हैं। प्रतीकात्मकता के तीन मुख्य विषय हैं। पहला है सौंदर्य। सभी वस्त्रों की गुणवत्ता और बनावट, साथ ही रंग और कीमती पत्थरों के उपयोग से सौंदर्य की भावना उभरती है। लेकिन सौंदर्य का प्रमुख स्थान छाती के पट्टे में है; इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद लगभग "छाती का पट्टा" के रूप में किया गया है, जिसका मूल अर्थ "सौंदर्य" या "उत्कृष्टता" है। वस्त्र सौंदर्य का प्रतीक हैं, और सौंदर्य पद का वर्णन करता है; प्रतीकात्मकता से जुड़े दो अन्य विषय इस पद की उत्कृष्टता को प्रकट करते हैं।

दूसरा विषय है इस्राएल के प्रतिनिधि के रूप में याजक की भूमिका, जो परमेश्वर के सामने प्रस्तुत होते थे। महायाजक के पद का यह महत्वपूर्ण पहलू इस्राएल के गोत्रों के नामों से स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, जो एपोद पर जड़े दो सुलैमानी पत्थरों और छाती के पट्टे पर लगे 12 मूल्यवान पत्थरों में अंकित थे। महायाजक परमेश्वर के न्याय से छुटकारा पाने के लिए (छाती का पट्टा न्याय से संबंधित है; निर्ग 28:15) अपनी प्रजा के लिए परमेश्वर के सामने प्रवेश करते थें, और प्रजा को निरंतर परमेश्वर की स्मृति में बनाए रखने के लिए (वचन 12), जैसा कि दो सुलैमानी पत्थरों द्वारा प्रतीकित किया गया है। तीसरा विषय है महायाजक की भूमिका परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में इस्राएल के लिए। इस भूमिका को ऊरीम और तुम्मीम में देखा जा सकता है, जिन्हें छाती के पट्टे में रखा जाता था, जिनके द्वारा परमेश्वर इस्राएल के लिए अपनी इच्छा प्रकट करते थे। महायाजक हारून, पूर्ण वस्त्र धारण किए हुए, एक अद्भुत आकृति थे, और उनके वस्त्रों की भव्यता उस पद की महिमा को प्रकट करती थी, जिसे उन्हें सौंपा गया था।

महायाजक का पद परिवार के भीतर ही सौंपा जाना था (क्योंकि महायाजक से अपेक्षा की जाती थी कि वह विवाहित पुरुष हों), हालांकि बाद के इतिहास में इस प्रथा का हमेशा पालन नहीं किया गया। हारून की मृत्यु पर, यह पद उनके चार पुत्रों में से एक, एलीआजर को सौंपा गया।

याजक और लेवी

याजक

याजक किसी विशेष बुलाहट के परिणामस्वरूप नहीं, बल्कि याजक वंश के कारण पद पर आते थे। इस प्रकार, पहले याजक हारून के चार बेटे थे: नादाब, अबीहू, एलीआजर, और ईतामार। इन चारों को उसी समय अभिषिक्त किया गया जब हारून को महायाजक के रूप में अभिषेक किया गया (निर्ग 28:1)। उनके पास भी विशेष वस्त्र थे, जो मूल रूप से समान थे, हालाँकि उनमें महायाजक के विशिष्ट वस्त्र (विशेष एपोद, छाती का पट्टा, और मुकुट) नहीं थे। याजक का पद उनके पुत्रों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता था।

याजक पद की पवित्रता ऐसी थी कि इसे विशिष्ट विधियों के द्वारा भ्रष्ट होने से बचाया गया था। एक व्यक्ति को याजक बनने के लिए हारून का वंशज होना आवश्यक था, लेकिन उसे अन्य कई योग्यताओं को भी पूरा करना पड़ता था। वह न तो त्यागी हुई स्त्री से विवाह कर सकता था, न ही पूर्व वेश्या से (लैव्य 21:7)। यदि वह कुछ प्रकार की बीमारियों या जन्मजात दोषों से पीड़ित होता, तो उसे याजक पद से वंचित कर दिया जाता था (उदाहरण के लिए, अंधापन, लंगड़ापन, नकचपटा, कूबड़ापन, या बौनेपन; वचन 16–23)। इसका सिद्धांत उन पशुओं पर लागू होने वाले सिद्धांत के समान था जो बलिदान के लिए उपयोग किए जाते थे—केवल वे ही जो दोष या कमी से मुक्त होते थे, वे ईश्वरीय सेवा के लिए उपयुक्त माने जाते थे।

याजकों के प्रारंभिक दिनों में बाइबल के वचन में याजकों के विशिष्ट कर्तव्यों के बारे में कुछ जानकारी दी गई है। एलीआजर के पास तम्बू और उसकी भेंटों की समग्र जिम्मेदारी थी (गिन 4:16); उन्होंने मूसा की कई कार्यों में सहायता की, जैसे लोगों की गिनती करना और भूमि का विभाजन करना (26:1–2; 32:2); और बाद में यहोशू के सलाहकार के रूप में सेवा की। ईतामार तम्बू के निर्माण के लिए जिम्मेदार थे (निर्ग 38:21) और गेर्शोनियों और मरारियों के परिवारों की देखरेख की (गिन 4:28–33)। नादाब और अबीहू, हालांकि, अपने अभिषेक के तुरंत बाद अपनी याजक सेवाओं में किए गए एक पापपूर्ण कार्य के कारण मर गए (लैव्य 10:1–7), जो आंशिक रूप से मतवालेपन से संबंधित हो सकता है (वचन 8–9)।

सामान्य रूप से, याजक कर्तव्यों को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया था (व्य.वि. 33:8–10)। सबसे पहले, महायाजक के साथ मिलकर याजक यहोवा की इच्छा लोगों को घोषित करने के ज़िम्मेदार थे। दूसरे, उनका धार्मिक शिक्षा में योगदान था; उन्हें इस्राएल को परमेश्वर की विधियों और व्यवस्था को सिखाना था (वचन 10)। तीसरा, उन्हें तम्बू के सेवक बनना था, इस्राएल के बलिदानों और आराधना में भाग लेना था। अन्य कई कर्तव्यों का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिन्हें वे सामान्य रूप से लेवियों के साथ साझा करते थे।

याजक, अन्य सभी लेवियों के साथ, किसी भी भूमि के मालिक नहीं थे, जैसे अन्य इस्राएली गोत्रों के लोग। उनका कार्य पूरी तरह से परमेश्वर की सेवा में लगा रहना था। हालांकि, भूमि का अभाव इसका अर्थ था कि वे अन्य पुरुषों और स्त्रियों की तरह अपना भरण-पोषण नहीं कर सकते थे। इसलिए, व्यवस्था ने यह निर्दिष्ट किया कि उन्हें अपनी सेवाओं के लिए सम्पूर्ण लोगों द्वारा सहायता प्रदान की जा सकती है। उन्हें आराधकों से तम्बू में लाए गए पशुओं के हिस्से, साथ ही अनाज, दाखरस, तेल, और ऊन प्राप्त करना था।

लेवी

इस शब्द में व्यापक अर्थ में याजक भी शामिल हैं, क्योंकि हारून के पुत्र लेवी के गोत्र से थे। हालांकि, व्यवहारिक दृष्टिकोण से, लेवी वे थे जो इस गोत्र के अन्य सदस्य थे, जो याजक नहीं थे। लेवियों ने भी तम्बू की सेवा में कार्य किया, हालांकि उनका पद अधीनस्थ था। वे भी पेशेवर लोग थे और उनकी सेवाओं के लिए उन्हें धन और वस्त्रों में भुगतान किया जाता था। हालांकि उन्हें अपनी जाति के लिए कोई भूमि उत्तराधिकार में नहीं मिली, फिर भी उनके उपयोग के लिए कई नगर निर्धारित किए गए थे (गिन 35:1–8), और उन नगरों के बाहर उनके पशुओं के लिए चरागाह भूमि भी निर्धारित की गई थी।

लेवियों को तीन मुख्य परिवारों में विभाजित किया गया था—कहातियों, गेर्शोनियों, और मरारियों के वंशज (गिन 4)। इन प्रत्येक परिवारों की तम्बू की देखभाल और उनके परिवहन से संबंधित विशिष्ट ज़िम्मेदारियाँ थीं। कोहात के पुत्र तम्बू के सामान को ढोते थे (जब इसे याजकों द्वारा ढक दिया जाता था), गेर्शोन के पुत्र तम्बू के आवरणों और पर्दों की देखभाल करते थे, और मरारी के पुत्र तम्बू के ढांचे को ढोते और स्थापित करते थे। याजकों पर वाचा के सन्दूक के परिवहन की ज़िम्मेदारी थी। प्रत्येक लेवी की तम्बू के सेवक के रूप में भूमिका सीमित थी; उन्होंने 25 से 50 वर्ष की आयु के बीच अपने पेशेवर कर्तव्यों का पालन किया (8:24–26)।

लेवियों के कई कार्य साधारण थे, फिर भी उनकी एक बहुत महत्वपूर्ण धार्मिक भूमिका थी। व्यवस्था के अनुसार सभी पहिलौठों, जिसमें पहिलौठे पुत्र भी शामिल थे, उनको परमेश्वर को अर्पित किया जाना था, जो मिस्र से निर्गमन के समय पहिलौठों के वध की याद दिलाता था। लेवियों की धार्मिक भूमिका यह थी कि वे इस्राएल के पहिलौठे पुत्रों के स्थान पर परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए गए थे (गिन 3:11–13); उनके पशु भी इस्राएलियों के पहिलौठे पशुओं के स्थान पर स्वीकार किए गए थे। मूसा के समय की गणना में, इस्राएलियों के पहिलौठों की संख्या लेवियों से अधिक थी, और अतिरिक्त लोगों के लिए पाँच शेकेल की छुटकारे की राशि याजकीय कोश में दी जानी थी (वचन 40–51)। लेवियों का प्रतिनिधित्व और प्रतिस्थापनात्मक प्रकृति इस्राएली मत में देखी जा सकती

है। याजकों की तरह, उन्होंने परमेश्वर और इस्राएल के बीच मध्यस्थता की व्यापक गतिविधि में भाग लिया।

व्यवस्थाविवरण की व्यवस्था कुछ कर्तव्यों को निर्दिष्ट करती है जो याजकों और लेवियों दोनों पर आ सकते थे (हालाँकि वचन अनेकार्थक हैं)। इन कर्तव्यों में न्यायालय की गतिविधियों में न्यायाधीश के रूप में भाग लेना शामिल था, विशेष रूप से धार्मिक अपराधों से संबंधित मामलों में (व्य.वि. 17:8–9), व्यवस्था की पुस्तक की देखभाल करना (वचन 18), कोढ़ियों के जीवन और स्वास्थ्य को नियंत्रित करना (24:8), और वाचा की नवीकरण समारोहों में सीधे भाग लेना (27:9)।

इस संस्था का इतिहास

सिद्धांत रूप में, मूसा के वाचा की व्यवस्था ने इस्राएल के भविष्य के इतिहास में याजकों और लेवियों के पदों की प्रकृति और दिशा निर्धारित की थी। हालांकि, व्यवहार में, बदलते ऐतिहासिक हालात और इस्राएल के मत और संस्कृति के स्वरूप में बदलाव के कारण समय-समय पर याजकों और लेवियों की भूमिका में भी परिवर्तन होते रहे। और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह था कि इन पदों पर आसीन व्यक्तियों ने अपनी निष्ठा या अविश्वास के माध्यम से इन पदों के स्वरूप और उनकी प्रभावशीलता को आकार दिया।

राजतंत्र से पूर्व याजकीय पद

यहोशू के समय में, याजक अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभाते रहे, जो वाचा के सन्दूक को उठाने की थी। लेवी लोग इस्राएली गोत्रों के बीच नव-अर्जित भूमि के विभाजन और बटवारे में सहायता करते थे। यहोशू 21 में, याजकों और लेवियों को नगरों के बटवारे की एक विस्तृत सूची दी गई है, जो पहले की व्यवस्था की पूर्ति थी। विजय के बाद बसने के दिनों में, कुछ प्रमाण मिलते हैं कि लेवियों ने वाचा के सन्दूक को ले जाने का याजकीय कार्य अपने हाथ में ले लिया (1 शमूएल 6:15; 2 शमूएल 15:24)।

न्यायियों की पुस्तक के लेखक ने दो कहानियाँ दर्ज की हैं जो विशेष लेवियों के जीवन को उजागर करती हैं। पहली कहानी, मीका की कहानी (न्याय 17–18), एक स्थानीय मन्दिर की स्थापना का वर्णन करती है जिसमें मीका के पुत्र को एक याजक के रूप में नियुक्त किया गया था (हालांकि वह लेवी या हारूनी वंश का नहीं था)। बाद में, मीका ने एक भ्रमणकारी लेवी को अपने मन्दिर में याजक के रूप में कार्य करने के लिए नियुक्त किया, हालाँकि बाद में उस लेवी को दान के गोत्र के लिए याजक के रूप में सेवा करने के लिए मना लिया गया। इस कहानी के विवरण को याजकों और लेवियों के सैद्धांतिक प्रतिरूप में प्रस्तुत करना कठिन है, हालांकि यह कहानी उस समय इस्राएल के मत की अस्त-व्यस्त स्थिति को दर्शा सकती है। विशेष रूप से महत्वपूर्ण यह है कि लेवी-याजक की भूमिका मुख्य रूप से भविष्यवाणी करने वाली थी (18:5–6)।

न्यायियों में दूसरी कहानी एक लेवी और उसकी रखैल की भयानक कहानी है (अध्याय 19) । यह कहानी उस समय इस्राएल में नैतिक पतन और नियम एवं व्यवस्था की कमी को दर्शाती है, लेकिन यह लेवियों की भूमिका पर अधिक प्रकाश नहीं डालती है।

11वीं शताब्दी ईसा पूर्व, जब राजतन्त्र की स्थापना होने वाली थी, उस समय के याजकों के बारे में अधिक जानकारी दी गई है। उस समय तम्बू (जो अब शायद अर्ध-स्थायी संरचना बन चुका था) और वाचा का सन्दूक शीलो में स्थित थे। शीलोह के पवित्रस्थान के प्रभारी याजक एली थे, जो संभवतः हारून के पुत्र ईतामार के वंशज थे। उनके दो पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी याजक के रूप में सेवा करते थे, जो यह दर्शाता है कि याजक पद के संदर्भ में पारिवारिक वंश का सिद्धांत अभी भी प्रचलित था। हालांकि एली एक विश्वासयोग्य याजक थें, उनके दोनों पुत्रों ने याजकीय पद का दुरुपयोग किया।

इस अवधि में शमूएल की सटीक भूमिका स्पष्ट नहीं है। वह मुख्य रूप से एक न्यायी और भविष्यद्वक्ता थे, लेकिन यह निर्धारित करना कठिन है कि वह याजक भी थे या नहीं। ऐतिहासिक विवरण में उन्हें याजक नहीं कहा गया है, हालाँकि भजन संहिता 99:6 को उनके याजकीय पद के संकेत के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। हालांकि, कई ऐसे गद्यांश हैं जो संकेत देते हैं कि वे याजक की तरह कार्य करते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने बलिदान चढ़ाए (1 शमू 7:9–10); एक युवा के रूप में उन्होंने शीलो के पवित्र स्थान में सेवा की और एक एपोद पहना (अध्याय 2)। इसके अलावा, बाइबल की एक वंशावली में याजकीय वंश का संकेत मिलता है (1 इति 6:23–30)। फिर भी, सामान्य रूप से उन्हें याजक के रूप में पहचाना नहीं जाता, और उनकी कहानी की शुरुआत में उन्हें उनके पिता के वंश के आधार पर एप्रैमी कहा गया है (1 शमू 1:1), यदि याजक को पवित्रस्थान का स्थायी सेवक माना जाए, जैसा कि एली थें, तो यह स्पष्ट है कि शमूएल याजक नहीं थें। लेकिन शमूएल की याजकीय भूमिका शायद इस तथ्य से जुड़ी हो सकती है कि उनकी माँ ने उन्हें बचपन में ही परमेश्वर को "दे दिया" था (वचन 28)।

दाऊद और सुलैमान के समय में याजकीय पद

दाऊद और सुलैमान के शासनकाल के दौरान कई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। ये मुख्य रूप से यरूशलेम में एक स्थायी मन्दिर की स्थापना और वहां वाचा के सन्दूक की स्थापना के परिणामस्वरूप थे। इस्राएल के पहले राजा शाऊल के समय में, सामाजिक संरचना मूल रूप से वैसी ही थी जैसी न्यायियों के समय में थी। शाऊल, राजा के रूप में, एक सैन्य अगुवे थे, लेकिन यहूदी विश्वास और याजक पद के प्रति उनकी भूमिका स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं थी।

दाऊद ने कई महत्वपूर्ण पहलुओं में स्थिति को बदल दिया। यरूशलेम के नगर पर अधिकार करने के बाद, उन्होंने उस स्थान को अपने देश की राजनीतिक और धार्मिक राजधानी

बना दिया। यरूशलेम की धार्मिक केंद्रीयता को वहाँ वाचा के सन्दूक और तम्बू को स्थानांतरित करके सुनिश्चित किया गया। यरूशलेम अब वाचा के सन्दूक का स्थायी स्थान बन गया, और इस प्रकार यह यहूदी विश्वास का स्थायी केंद्र बन गया; साथ ही, प्रजापति काल में विकसित विभिन्न क्षेत्रीय मन्दिरों को धीरे-धीरे समाप्त किया गया।

इन परिवर्तनों के याजक और लेवियों पर कई परिणाम हुए। दाऊद के शासनकाल के दौरान, दो मुख्य याजक थे—एब्यातार और सादोक। एब्यातार, नोब के पूर्व याजक थें, जो की दाऊद सत्ता में आने से पहले उनके साथ जुड़े थें; ऐसा प्रतीत होता है कि वह एली के वंशज थें, और उनके माध्यम से हारून के पुत्र ईतामार के वंशज थें। सादोक की पृष्ठभूमि कम स्पष्ट है, लेकिन उनकी वंशावली हारून के दूसरे पुत्र एलीआजर से जुड़ती है। इन दोनों याजकों का उल्लेख दाऊद के शासनकाल का वर्णन करने वाले वचनों में हमेशा एक साथ होता है, और सादोक का नाम हमेशा एब्यातार से पहले आता है। हालाँकि प्राचीन वचनों में किसी को स्पष्ट रूप से महायाजक के रूप में पहचाना नहीं गया है, कुछ प्रमाण यह सुझाव देते हैं कि एब्यातार महायाजक के रूप में कार्य करते थें (1 रा 2:35); नए नियम के समय में, उन्हें इस रूप में पहचाना गया है (मर 2:26)। दाऊद के शासनकाल के दौरान सादोक वाचा के सन्दूक की देखभाल के लिए विशेष रूप से जिम्मेदार हो सकते हैं (2 शमू 15:24–25)। इन दोनों याजकों का दाऊद के शाही प्रतिष्ठान में महत्वपूर्ण स्थान था; वे संभवतः यरूशलेम मन्दिर के चारों ओर केंद्रित याजकों की कुल जिम्मेदारी भी साझा करते थे।

दाऊद का अधिकांश समय परमेश्वर के लिए एक स्थायी मन्दिर बनाने की तैयारियों पर केंद्रित था। मन्दिर की तैयारी में, और राजा सुलैमान के शासनकाल के दौरान इसके पूर्ण होने पर, लेवियों की नई गतिविधियाँ देखी जा सकती हैं। (एक स्थायी मन्दिर का निर्माण स्वचालित रूप से तम्बू की देखभाल और परिवहन से संबंधित उनकी पूर्व जिम्मेदारियों को हटा देता है।) बड़ी संख्या में लेवियों को मन्दिर के वास्तविक निर्माण में श्रमिकों के रूप में नियुक्त किया गया था। अन्य लोगों ने दाऊद के शासनकाल के दौरान तम्बू में और इसके पूर्ण होने पर मन्दिर में परमेश्वर की आराधना में नए कार्य पाए। लेवियों को, और विशेष रूप से हेमान, आसाप और एतान को, आराधना के संगीत की प्राथमिक ज़िम्मेदारी दी गई थी; इसमें न केवल गायन शामिल था बल्कि मन्दिर के वादक समूह या वादक मंडली में विभिन्न वाद्ययंत्रों का बजाना भी शामिल था। लेवियों के पास अन्य विभिन्न कार्य भी थे; वे पवित्रस्थान में द्वारपाल के रूप में काम करते थे, याजकों की बलिदान की तैयारी में सहायता करते थे, पवित्रस्थान को स्वच्छ रखते थे, और सामान्य प्रशासनिक और न्याय अधिकारी के रूप में कार्य करते थे (1 इति 23:1–32)। अन्य लेवी साहूकार के रूप में कार्य करते थे, जिनकी मुख्य ज़िम्मेदारी मन्दिर के खजानों की देखभाल थी (26:20–28)।

दाऊद की मृत्यु के बाद, राजगद्दी के उत्तराधिकार को लेकर विवाद हुआ, जिसमें सुलैमान नए राजा के रूप में उभरे। उनके शासनकाल के दौरान, मंदिर का निर्माण पूरा हुआ और देश की नियमित आराधना वहीं की जाने लगी। उत्तराधिकार के मामले में, हालांकि, अबीयातर ने एक हारने वाले उम्मीदवार का समर्थन किया था, और जब सुलैमान राजा बने, तो उन्होंने शाही दरबार में अपना महत्वपूर्ण पद खो दिया। सुलैमान के शासनकाल के दौरान, याजक वर्ग का नियंत्रण सदोक के हाथों में आ गया।

विभाजित राजतन्त्र के दौरान याजकीय पद

महान साम्राज्य, जिसे दाऊद ने बनाया था और सुलैमान ने बनाए रखा था, सुलैमान की मृत्यु के बाद ढह गया। इन खंडहरों से, दो नए और अपेक्षाकृत महत्वहीन राज्य उभरे। दक्षिणी राज्य, यहूदा, ने यरूशलेम को अपनी राजधानी और मन्दिर को अपनी उपासना का केंद्र बनाए रखा। उत्तरी राज्य, इस्राएल, ने अपनी पहली राजधानी शेकेम में स्थित की, जहां से बाद में इसे तिर्सा में स्थानांतरित किया गया।

यहूदा के दक्षिणी राज्य में, याजक और लेवी सामान्य रूप से यरूशलेम मन्दिर में कार्य करते रहे। महायाजक का पद सोलोमन के शासनकाल में पद धारण करने वाले सादोक के परिवार में वंशानुगत रूप से चलता रहा। इस परिवार में पद की निरंतरता दूसरे मन्दिर के समय तक बनी रही, जब लगभग 171 ईसा पूर्व सादोक वंश की उत्तराधिकारिता बाधित हो गई। फिर भी, यरूशलेम में यहूदी विश्वास की निरंतरता के बावजूद, यहूदा में यहूदी विश्वास की स्थिति अच्छी नहीं थी, न तो इसके पहले राजा रहूबियाम के शासनकाल में और न ही उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में। रहबाम के शासनकाल के दौरान, यहूदी विश्वास और याजकता में गिरावट आई, जब विदेशी प्रभाव के परिणामस्वरूप लोकप्रिय यहूदी विश्वास के रूपों को पेश किया गया (1 रा 14:22–24)। दक्षिणी राज्य का इतिहास धार्मिक पतन के दौरों से भरा हुआ था, जिसके बाद अकसर भविष्यद्वक्ताओं की गतिविधियों के परिणामस्वरूप सुधार होते थे। याजक वर्ग की भूमिका आत्मिक नेतृत्व की अपेक्षाकृत कम ही रही, और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा याजकों की अकसर आलोचना की जाती थी (उदाहरण के लिए, यिर्म 2:8, 26)।

उत्तरी राज्य, जिसके पहले राजा यारोबाम प्रथम थें, को अनिवार्य रूप से यहूदी विश्वास में कुछ बुनियादी बदलाव करने पड़े। यारोबाम यरूशलेम के मन्दिर को मान्यता नहीं दे सकते थें, आंशिक रूप से क्योंकि यह उनके राज्य के बाहर थें और आंशिक रूप से क्योंकि यह दाऊद के शाही वंश से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुए थें। यारोबाम ने अपने राज्य में दो प्रमुख मन्दिर स्थापित किए, जिनमें से दोनों को उत्तरी राज्य के अपेक्षाकृत छोटे जीवनकाल (200 वर्ष) के दौरान महत्व बनाए रखना था। पहला बेतेल में था, उनके राज्य के दक्षिणी

भाग में यहूदा की सीमा के पास (यह यरूशलेम से केवल लगभग 12 मील, या 19.3 किलोमीटर उत्तर में था)। दूसरा मन्दिर, या पवित्र स्थान, दान में था, जो उनकेराज्य के उत्तरतम भाग में स्थित थें।

इन दोनों पवित्र स्थलों का प्राचीन इब्रानी परंपराओं से संबंध था। बेतेल का उल्लेख अब्राम के समय से ही किया गया है (उत 12:8), और दान का पवित्र स्थल न्यायियों के इतिहास से जाना जाता है (न्या 18)। इन दोनों स्थानों में अभी भी याजक और लेवी हो सकते थे, जो पवित्र स्थलों के पूर्व सेवकों के वंशज थे। लेकिन यारोबाम ने इन पवित्र स्थलों और विभिन्न छोटे मन्दिरों या "उच्च स्थानों" में सेवा करने के लिए एक गैर-लेवी याजक वर्ग की स्थापना की, जिससे उत्तरी राज्य की धार्मिक परंपरा को यहूदा से और भी अधिक कट्टरता से अलग कर दिया। बेतेल का शाही पवित्र स्थल, जो यरूशलेम मन्दिर के बहुत करीब था, शायद जानबूझकर यहूदी मन्दिर के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए स्थापित किया गया था।

उत्तरी राज्य में याजक वर्ग का इतिहास यहूदा के इतिहास से अधिक प्रभावशाली नहीं था। कई भविष्यद्वक्ताओं, जिनमें आमोस, होशे और यिर्मयाह शामिल थे, ने उत्तरी पूजा स्थलों और उनके याजकों की निंदा की। होशे ने अपनी निंदा में बहुत तीखे शब्दों का प्रयोग किया: "जैसे डाकू किसी व्यक्ति की ताक में रहते हैं, वैसे ही याजकों के दल शिकेम के मार्ग पर हत्या करते हैं; वे लज्जाजनक अपराध करते हैं" (होश 6:9)। जिनके हाथों में चुने हुए लोगों के आत्मिक जीवन की देखभाल सौंपी गई थी, वे शायद ही कभी अपनी ज़िम्मेदारियों पर खरे उतरे।

बंधुआई के दौरान और बाद में याजक और लेवी

उत्तरी राज्य का अंत 722 ईसा पूर्व में अश्शूर की सेनाओं द्वारा पराजित होने के साथ हुआ, लेकिन यहूदा में धार्मिक जीवन थोड़ी देर और चलता रहा। अंततः, दक्षिणी राज्य का अंत लगभग 586 ईसा पूर्व में हुआ; बाबेलीयों द्वारा राज्य की पराजय के साथ यरूशलेम और उसके मन्दिर का विनाश हुआ (विला 2:20)। बाबेली सेनापति ने सरायाह, महायाजक, और सपन्याह, उनके सहायक, को रिबला ले गये, जहाँ अन्य अधिकारियों के साथ, उन्हें मृत्युदंड दिया गया (2 रा 25:18–21)। फिर बाबेलीयों द्वारा बंधुआई की नीति स्थापित की गई; यहूदा के सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली लोगों को बाबेल बंधुआई में भेज दिया गया, जबकि कम महत्वपूर्ण लोगों को रहने दिया गया, क्योंकि वे संभवतः परेशानी नहीं पैदा करेंगे। बंधुआई में गए लोगों में से कई संभवतः याजक थे (यिर्म 29:1), क्योंकि वे प्रभावशाली लोग थे। इसके विपरीत, ऐसा लगता है कि बंधुआई में गए लोगों में लेवियों की संख्या बहुत कम थी, जो शायद उनके निम्न सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।

बंधुआई के वर्षों के दौरान यरूशलेम शहर में सामान्य धार्मिक जीवन बहुत कम था; मन्दिर नष्ट हो गए थें और बंधुआई के बाद ही पुनःस्थापित हुए थें। निस्संदेह कुछ प्रकार की गतिविधियाँ जारी रहीं, लेकिन यह धर्म का एक दरिद्र रूप था। अधिकांश याजक बाबेल में बंधुआई में थे, लेकिन वे कार्य नहीं कर सकते थे, क्योंकि कोई मन्दिर या पवित्र स्थान नहीं था। यहेजकेल संकेत करते हैं कि परमेश्वर स्वयं बंधुआई में गए लोगों के लिए एकमात्र "पवित्र स्थान" थे (यहेज 11:16)। बंधुआई से वापसी और यरूशलेम और उनके मन्दिर की पुनःस्थापना के बाद ही याजकों और लेवियों के सामान्य कार्य फिर से शुरू हो सकते थे।

जब बाबेल के साम्राज्य को पराजित किया गया, तो नए फारसी विजेताओं ने एक नीति लागू की जिसके तहत इब्रानी बंधुआई में गए लोग अपने देश लौट सकते थे। लौटने वालों में से 4,289 को याजक और याजक परिवारों के सदस्य के रूप में नामित किया गया, जबकि केवल 341 लेवी थे (एज्रा 2:36–42); यह असंतुलन संभवतः प्रारंभ में बंधुआई में गए लोगों की संख्या में असंतुलन को दर्शाता है। यहोशू (येशुआ), याजक, और जरुब्बाबेल के तहत, पुनर्स्थापना का कार्य शुरू हुआ। लौटने के पहले वर्ष में याजकों ने यरूशलेम में मन्दिर की पुनर्स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ताकि परमेश्वर के लिए बलिदान और आराधना फिर से शुरू हो सके। जब मन्दिर पुनर्स्थापित हो गया, तो लौटने के दूसरे वर्ष में मन्दिर पर काम शुरू हुआ। इस कार्य में, याजक और लेवी दोनों शामिल थे, और मंदिर की नई नींव रखी गई। जब नींव रखी गई, तो याजक, अपने वस्त्रों में, और लेवी, गायक और संगीतकार के रूप में, समर्पण समारोह में भाग लिया (3:8–13)। जब मंदिर फिर से बना, तो याजकों और लेवियों दोनों ने समर्पण समारोह में भाग लिया (6:16–18)। पुनर्स्थापन केवल भवनों तक सीमित नहीं था; इसमें नैतिक और धार्मिक सुधार भी शामिल था। याजक और लेवी इस कार्य में सहायता कर रहे थे, लेकिन वे स्वयं भी इससे प्रभावित हुए। उदाहरण के लिए, कई याजकों और लेवियों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था (9:1), और उन्हें एज्रा के सुधार व्यवस्था का पालन करना पड़ा।

किसी हद तक, याजक और लेवी अपने सामान्य कर्तव्यों पर वापस लौट आए, जो बंधुआई के बाद के काल में उपासना के दौरान निभाए जाते थे। याजक मंदिर की उपासना को संचालित करने में लगे हुए थे, जबकि लेवी मंदिर के सेवक (नहे 11:3) खजांची, दशमांश के संग्रहकर्ता (10:37–39) के रूप में, और परमेश्वर की व्यवस्था के शास्त्री या व्यवस्थापक (8:7–9) के रूप में सहायता करते थे। फिर भी, बंधुआई के बाद की याजकता का इतिहास पूरी तरह निर्दोष नहीं था। याजकीय पद के दुरुपयोग की निंदा भविष्यद्वक्ता मलाकी (मला 1:6–2:9) द्वारा की गई थी। मलाकी याजकों की बुराइयों की एक सूची प्रस्तुत करते हैं, जो राजतन्त्र के समय के बुरे याजकों की याद दिलाती है।

बंधुआई के बाद महायाजक का पद सादोक के वंशजों के बीच जारी रहा, जिसे पहले यहोशू ने संभाला (हाग 1:1)

हालाँकि, विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों ने महायाजक पद के स्वरूप को बदल दिया। जहाँ राजशाही के दिनों में महायाजक राजा के अधीन होते थें, बंधुआई के बाद सही मायनों में कोई राजा नहीं था। राजनीतिक दृष्टिकोण से यहूदी एक प्रांत या उपनिवेश के सदस्य थे; व्यावहारिक रूप से, वे एक समुदाय थे जो एक सामान्य धर्म पर आधारित थे। महायाजक अब यहूदी राजा के धर्मनिरपेक्ष अधिकार के अधीन नहीं थे, लेकिन उनका धार्मिक अधिकार काफी महत्वपूर्ण था, और कुछ मायनों में उनके कार्य प्राचीनकाल के समय के राजा के समान थे।

मक्काबियों के युग में याजकीय पद

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में याजक पद में कुछ परिवर्तन हुए, विशेष रूप से महायाजक के पद के संबंध में, जिसने पुराने नियम युग का अंत किया और नए नियम काल की पृष्ठभूमि तैयार की। दूसरी शताब्दी में यहूदिया पर सिलूकिया राजाओं का शासन था, जिन्होंने सिकन्दर महान द्वारा स्थापित विशाल यूनानी साम्राज्य का एक हिस्सा प्राप्त किया था। यहूदिय प्रांत का आंतरिक रूप से नियंत्रण महायाजक के अधीन था, जिसकी सत्ता सिलूकिया राजाओं से प्राप्त होती थी।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के पहले तीन दशकों तक महायाजक पद सादोक के वंश के साथ बना रहा। महायाजक सादोक वंश की ओनियाद परिवार के सदस्य थे: पहले ओनियास तृतीय (198–174 ईसा पूर्व); फिर ओनियास तृतीय का भाई यासोन (198–171 ईसा पूर्व)। यासोन के काल में ऐसी घटनाओं की एक श्रृंखला शुरू हुई, जिसने सादोक परंपरा का अंत कर दिया।

ओनियास तृतीय ने एंटिओकस चतुर्थ (एपिफेनेस) की यूनानीकरण नीति का विरोध किया था, जो यहूदी विश्वास को कमजोर करने की धमकी दे रही थी। एंटिओकस ने ओनियास को हटाकर यासोन को महायाजक नियुक्त किया, जिसने मूलतः सिलूकिया राजा से महायाजक पद खरीदा था। इस प्रकार, यासोन ने महायाजक पद खरीदकर एक खतरनाक मिसाल कायम की; हालांकि वह सादोक वंश का था, लेकिन उनके इस कार्य का तात्पर्य था कि पद खरीदा जा सकता है और वंश महत्वपूर्ण नहीं था। यासोन के विरोधियों, तोबियादों, ने उन्हें पद से हटाकर अपने उम्मीदवार मेनेलाउस (जो सादोक वंश के नहीं थें) को उनकी जगह नियुक्त करवा दिया। इस कार्य के परिणामस्वरूप उन लोगों के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया जो यासोन का समर्थन कर रहे थे और जो मेनेलाउस का समर्थन कर रहे थे, और यह युद्ध अंततः एंटिओकस एपिफेनेस द्वारा कठोर दमनकारी उपायों में परिणत हुआ; यरूशलेम में नरसंहार हुए और मंदिर का अपमान किया गया (167 ईसा पूर्व)। मंदिर के इस अपमान ने मक्काबियों विद्रोह को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप यहूदियों ने थोड़े समय के लिए अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त की। मेनेलाउस ने 161 ईसा पूर्व तक महायाजक का पद बनाए रखा और उनके बाद अल्किमस (161–159 ईसा पूर्व) ने उनका स्थान लिया।

इसके बाद एक ऐसा समय आया जब सात वर्षों तक कोई महायाजक नहीं था। हालांकि, राजनीतिक स्थिति ऐसी हो गई थी कि यह संभावना कम हो गई थी कि सादोक वंश फिर से कभी महायाजक पद प्राप्त करेगा, जो राजा सुलैमान के समय में स्थापित हुआ था। मक्काबी योनातान ने यरूशलेम पर नियंत्रण प्राप्त किया, और 152 ईसा पूर्व में, सेलुसि राजा की स्वीकृति से, औपचारिक रूप से महायाजक के वस्त्र पहनाए गए। उनके बाद उनके भाई शमौन ने 143 ईसा पूर्व में महायाजक और शासक के रूप में उनका स्थान लिया, जिसने भी सेलुसि (दिमेत्रियुस द्वितीय) की स्वीकृति के साथ यह पद ग्रहण किया। लेकिन उनके शासन के तीसरे वर्ष (140 ईसा पूर्व) में, शमौन के महायाजक पद को एक महान धार्मिक सभा में सार्वजनिक स्वीकृति प्राप्त हुई, और शमौन के परिवार को "सदैव के लिए महायाजक" घोषित किया गया (1 मक्का 14:41–47)। यह घटना सादोक वंश की परंपरा के वास्तविक अंत और हस्मोनी वंश की नींव का प्रतीक थी।

सादोक वंश के बाहर महायाजक पद की स्थापना को चुनौती भी मिली। ऐसा माना जाता है कि यहूदी विश्वास के भीतर एक संप्रदाय, जिसे आज एस्सीन कहा जाता है, की उत्पत्ति सिमोन के महायाजक पद के विरोध में हुई थी। एस्सीन (जो मृत सागर दस्तावेज़ों के लिए अधिक प्रसिद्ध हैं) की स्थापना संभवतः एक सादोकी महायाजक ने की थी, जिसने शमौन की वैधता और अधिकार को अस्वीकार कर दिया था। इस प्रकार, एक सीमित अर्थ में, सादोक वंश के महायाजक बने रहे।

नए नियम के समय में याजकीय पद

नए नियम के प्रारंभिक काल में, याजक और लेवी यहूदी विश्वास के भीतर कार्य करते रहे। जकर्याह, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता थे, अबिय्याह की पंक्ति के याजक थे (लूका 1:5), और उनकी पत्नी भी याजक वंश की थीं। जब जकर्याह को एक स्वर्गदूत ने दर्शन दिया, तब वे यरूशलेम मन्दिर में याजक कर्तव्यों में लगे हुए थे—विभिन्न याजकों के पंक्तियाँ मन्दिर सेवाओं की जिम्मेदारी एक समय के लिए लेते थे और फिर अपने घर लौटते थे (वचन 23), जब एक अन्य पंक्ति कार्यभार संभालती थी। नए नियम में याजकों और लेवियों के बीच का भेद भी बनाए रखा गया है (यूह 1:19) और यह यीशु के भले सामरी के दृष्टांत में भी प्रकट होता है (लूका 10:31–32)। दोनों याजक और लेवी प्रारंभिक मसीहत में परिवर्तित होने वालों में से थे; बरनबास साइप्रस के लेवी थे (प्रेरितों के काम 4:36), और कई याजक सुसमाचार की घोषणा का उत्तर देते थे (6:7)।

महायाजक का पद नए नियम में अक्सर उल्लेखित होता है। कई महायाजकों के नाम दिए गए हैं, वर्तमान और पूर्व पदधारकों की बहुलता इस पद की प्रकृति को दर्शाती है जो मूल रूप से एक राजनीतिक नियुक्ति है (जो कि इसके सबसे

पुराने परिभाषा से भिन्न है, जिसमें यह पद पिता के मृत्यु पर पुत्र को सौंपा जाता था)। नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण महायाजक वे हैं जिन्होंने यीशु के जीवनकाल के दौरान पद संभाला। हन्ना लगभग 6 से 15 ईस्वी तक महायाजक थे, लेकिन औपचारिक रूप से पद छोड़ने के बाद भी, उन्होंने अपने दामाद, महायाजक कैफा (लगभग 18–36 ईस्वी) के माध्यम से काफी प्रभाव डाला। दोनों यीशु के मुकदमे में महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। बाद की तारीख में, नेदबायस के पुत्र हनन्याह महायाजक थे (लगभग 47–58 ईस्वी) और उस समय के दौरान महासभा के अध्यक्ष थे जब पौलुस को मुकद्दमे में लाया गया था।

नए नियम के समय में याजकों के पास काफी अधिकार था। यहूदी प्रांत के अधिकांश आंतरिक और धार्मिक मामलों का अधिकार महासभा के पास था, जो एक प्रकार की प्रांतीय अधिपति के रूप में कार्य करता था, हालांकि कुछ मामलों में इनके अधिकार रोम द्वारा सीमित थे। इनके सदस्यों में शासक और पूर्व महायाजक और बड़ी संख्या में सदूकी शामिल थे, जिनमें से कई प्रभावशाली याजक परिवारों से संबंधित थे। महासभा में इस याजक प्रभाव से पहली शताब्दी ईस्वी में यहूदी जीवन में मन्दिर की महत्वपूर्ण भूमिका का संकेत मिलता है।

70 ईस्वी में, यरूशलेम में मन्दिर के विनाश के बाद, यहूदी विश्वास में याजकों के महत्व में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। मंदिर के अंत ने वास्तव में याजकों के अस्तित्व के उद्देश्य को समाप्त कर दिया। हालांकि याजक का पद कुछ हद तक 135 ईस्वी में बार-कोचबा विद्रोह तक जारी रही, लेकिन 70 ईस्वी के बाद उनके दिन गिने-चुने रह गए। पहली शताब्दी ईस्वी के अंत के बाद से, यहूदी विश्वास बिना याजकों के विकसित हुआ है, और वर्तमान शताब्दी तक इसका मार्ग रब्बियों, फरीसियों के आत्मिक वंशजों द्वारा निर्धारित किया गया है।

यह भी देखें याजकीय पद।

याजकपद

याजक का पद या कार्य। आधुनिक शब्द “याजक” (फ्रेंच में *प्रेट्रे* और जर्मन में *प्रीस्टर*) का उपयोग धर्माध्यक्षीय कलीसियाओं (रोमन, ऑर्थोडॉक्स, और एंग्लिकन) में याजक के लिए किया जाता है। इसका उपयोग पूरी कलीसिया के वर्णन में “राज-पदधारी, याजकों का समाज” (1 पत 2:9) के रूप में भी किया जाता है। यह जानने के लिए कि यह प्रयोग कैसे शुरू हुआ और याजकपद का क्या अर्थ है, बाइबल और धर्मशास्त्रीय विकासों पर संक्षेप में नजर डालना आवश्यक है।

पुराने नियम में

परमेश्वर और इस्राएल के बीच की गई वाचा में, सभी लोगों को "याजकों का राज्य" और इस प्रकार पवित्र जाति के रूप में माना गया था (निर्ग 19:6)। इस सन्दर्भ में, विशिष्ट याजकीय गतिविधियाँ तीन आदेशों से सम्बन्धित थीं—महायाजक, याजक, और लेवी। "याजक" हारून के पुरुष वंशज थे, जो लेवी थे (गिन 3:10), और "लेवी" लेवी गोत्र के अन्य पुरुष सदस्य थे। याजक कर्म के मुख्य कार्य मन्दिर में हुआ करते थे। याजक धार्मिक पात्रों की देखभाल करते थे और बलिदान किया करते थे। वह अपने कर्तव्यों का पालन करते समय विशेष, प्रतीकात्मक वस्त्र पहनते थे। वह शिक्षक भी थे, राष्ट्र की पवित्र परम्पराओं के साथ-साथ चिकित्सा सम्बन्धी जानकारी भी देते थे (लैव्य 13–15)। महायाजक इस्राएल के आत्मिक प्रमुख थे और उनके विशेष कार्य होते थे, जैसे कि प्रायश्चित के दिन परम पवित्र स्थान में प्रवेश करना (अध्याय 16)। लेवी याजकों की सहायता करते थे और मन्दिर में मण्डली की सेवा करते थे। वे भजन गाते थे, मन्दिर के आंगनों को साफ रखते थे, कुछ बलिदानों और अर्पणों की तैयारी में मदद करते थे, और शिक्षण कार्य भी करते थे। इस तीन गुना आदेश के माध्यम से, राष्ट्र का याजकत्व प्रकट होता था। इसके द्वारा लोग परमेश्वर की आराधना करते थे, मध्यस्थता और याचिकाएँ करते थे, और परमेश्वर की इच्छा को समझते थे। इस प्रकार जो कुछ भी हर धार्मिक घर में जो होता था, जैसे कि घर का मुखिया अपने परिवार को आराधना करने में मार्गदर्शन करता था, वही मन्दिर में बड़े और अधिक धार्मिक तरीके से होता था।

नए नियम में

यह उल्लेखनीय है कि कलीसिया में किसी सेवक या प्रणाली के लिए नये नियम में "याजक" शब्द का उपयोग कभी नहीं किया गया है। निश्चित रूप से यहूदी मत और मूर्तिपूजा के सन्दर्भ में इसका उपयोग जारी रहता है (प्रेरि 4:1, 6; 14:13), परन्तु इसे कभी भी कलीसिया में पेश नहीं किया गया। इब्रानियों के नाम पत्री में पुराने नियम के याजकपद को यीशु मसीह में पूर्ण होते हुए प्रस्तुत किया गया है। सबसे पहले, उन्हें स्वयं परमेश्वर के द्वारा महायाजक नियुक्त किया गया है (इब्रा 5:4–6)। फिर भी उनका याजकपद हारून के याजकपद से श्रेष्ठ है (अध्याय 7)। दूसरा, पापी लोगों की आवश्यकताओं के प्रति पूरी तरह से सहानुभूति रखने और उनके समान सभी बातों में परीक्षा में पड़ने के बावजूद, वह पाप रहित है (4:15; 7:26)। तीसरा, पाप को दूर करने के लिए पशु बलिदान चढ़ाने के बजाय, वे स्वयं को, निष्पाप मेम्ने के रूप में, पाप को दूर करने के लिए अर्पित करते हैं। यह उत्तम प्रायश्चित है (7:27; 9:24–28; 10:10–19)।

न केवल पुराने नियम की बलिदान प्रणाली पूरी हुई; बल्कि मसीह के अद्वितीय, अप्रतिम, और असीमित बलिदान के द्वारा यह समाप्त भी हो गई। मृतकों में से जी उठने के बाद, वह

युगानुयुग याजक हैं (इब्रा 7:17) और यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है (13:8)। उनके महायाजकपद का हिस्सा उनके लोगों के लिए मध्यस्थता की पेशकश करना है (7:25)। वह नए और बेहतर वाचा के मध्यस्थ हैं (7:22; 8:6; 9:15)। केवल उन्हीं के माध्यम से पापी मनुष्य परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं और परमेश्वर के सन्तान के रूप में स्वीकार किए जा सकते हैं (यूह 14:6; 2 कुरि 5:18–20; 1 तीमु 2:5)। इसलिए, मसीहियों के पास जो भी याजकपद है, वह केवल मसीह, उनके महायाजक और मध्यस्थ के माध्यम से ही है।

नए नियम में (आरएसवी अनुवाद से उद्धृत) विश्वासियों का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो।" (1 पत 2:5); "अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया" (प्रका 1:6); "उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया;" (5:10); "वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे" (20:6)।

तो फिर, नए नियम में सभी विश्वासियों के याजकपद का क्या अर्थ है? मसीह के महायाजकपद को उनके परमेश्वर, उनके पिता के प्रति पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता, और उनके साथी मनुष्यों के प्रति असीम करुणा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। केन्द्र में उनकी क्रूस पर बलिदानात्मक मृत्यु है। इस आधार पर और उनके साथ एकता में, मसीहियों का याजकपद परमेश्वर के प्रति उनकी बलिदानात्मक आज्ञाकारिता है; इसमें आत्मिक आराधना और परमेश्वर के प्रति प्रेम और उनके साथी मनुष्यों के प्रति करुणामय गतिविधि और प्रार्थना शामिल है। पौलुस ने लिखा, "मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोम 12:1)। प्रत्येक मसीही अपनी पूरी देह को मसीह को अर्पित करता है और प्रत्येक स्थानीय कलीसिया स्वयं को पूरी तरह से मसीह को अर्पित करती है, और मसीह अपनी पूरी देह (कलीसिया) को परमेश्वर पिता को अर्पित करते हैं। इस प्रकार, मसीह में और मसीह द्वारा, विश्वासियों के याजकपद का प्रयोग किया जाता है और प्रभावी बनाया जाता है। विश्वासियों के हृदयों में आत्मा वास करता है, और यह उनकी सामर्थ्य में है कि स्वीकार्य सेवा और आराधना अर्पित की जाती है। मसीह याजकपद का आदर्श हैं और साथ ही महायाजक भी हैं।

भेंट और बलिदान; याजक और लेवी; मिलाप का तम्बू; मन्दिर; आराधना *भी देखें*

याजन्याह

याजन्याह

1. होशायाह का पुत्र, जो एक माकाई था और बँधुआई की शुरुआत में यहूदा की सेनाओं में एक अगुवा था। इन सैनिकों को बाबेलवासियों के प्रति विश्वासयोग्यता के बदले सुरक्षा का आश्वासन मिला (2 रा 25:23)। याजन्याह को यिर्मयाह 40:8 और यिर्मयाह 42:1 में याजन्याह और यिर्मयाह 43:2 में अजर्याह कहा गया है।

2. यिर्मयाह का पुत्र (भविष्यद्वक्ता नहीं), जिसे यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता द्वारा प्रभु के घर ले जाया गया, जहाँ उसने अपने पूर्वज योनादाब जो रेकाबी था उसकी आज्ञा के कारण दाखरस पीने से इनकार कर दिया (यिर्म 35:3–11)।

3. शापान का पुत्र, जिसने मंदिर में मूर्तियों की पूजा करने वाले पुरनियों के एक दल का नेतृत्व किया (यहेज 8:11)।

4. अज्जूर का पुत्र और यहेजकेल द्वारा दर्शन में देखे गए 25 पुरुषों के समूह में से एक, जिसने बँधुआई के समय के आसपास यरूशलेम में बुरी सलाह दी और बुरी साजिश रची (यहेज 11:1)।

याजन्याह

याजन्याह

याजन्याह का वैकल्पिक रूप, यरूशलेम में बँधुआई के दौरान यहूदा के एक कप्तान (यिर्म 40:8; 42:1) *देखें* याजन्याह #1।

याजिय्याह

दाऊद के शासनकाल में मंदिर में काम करने के लिए नियुक्त लेवियों के बीच परिवार के अगुवों की सूची में मरारी के वंशज (1 इति 24:26–27)।

याजीएल

आठ व्यक्तियों में से एक जिन्हें वीणा या सारंगी बजाने के लिए नियुक्त किया गया था जब दाऊद द्वारा सन्दूक को यरूशलेम लाया गया (1 इति 15:18–20; और संभवतः 16:5अ, "यीएल," जो कि एक प्रतिलिपिकार की त्रुटि हो सकती है)। उसे 20 पद में अजीएल कहा गया है।

याजीज

याजीज

दाऊद के राजकीय सेवकों में से एक जो भेड़-बकरियों की देखभाल करता था (1 इति 27:30–31)।

याजेर

याजेर का केजेवी वैकल्पिक रूप, गिलाद में एक एमोरी शहर, गिनती 21:32 और 32:35 में उल्लेखित है। *देखें*याजेर।

याजेर

दक्षिणी गिलाद में यरदन नदी के पूर्व का नगर, जिसे मूसा के अधीन इस्राएलियों ने उसके आसपास के गाँवों के साथ लिया था (गिन 21:32)। गाद और रूबेन के गोत्रों ने याजेर और गिलाद की भूमि माँगी। उनके पास बड़ी संख्या में झुंड और पशु थे और उन्होंने देखा कि यरदन का पूर्वी भाग उपजाऊ और पशुधन चराने के लिए अत्यंत उपयुक्त था (32:1–5)। उन्होंने अपनी महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षा बनाने का वादा किया, फिर कनान में लड़ाई के लिए अन्य गोत्रों के साथ जाने का वादा किया (पद 6–27)। याजेर गाद की विरासत को चिह्नित करने वाला एक सीमा बिंदु बन गया (यहो 13:25) और लेवियों को दिया गया (यहो 21:39; 1 इति 6:81)। जब योआब को लोगों की गिनती के लिए भेजा गया, तो वह गाद में याजेर के शहर तक पहुँचा (2 शमू 24:5)। इस नगर को बाद में राजा दाऊद के अधीन "सक्षम पुरुषों" की खोज के दौरान पहचाना गया (1 इति 26:31)। लगभग 200 वर्षों के बाद, यह मोआब द्वारा कब्जा कर लिया गया था (यशा 16:6–9; यिर्म 48:32)।

यातरै

यातरै

जेरह का पुत्र, एक गेर्शोनी लेवी (1 इति 6:21), जिसे 1 इतिहास 6:41 में एत्नी कहा गया है।

यात्रा

बाइबिल के समय में यात्रियों को सड़कें खराब और अक्सर दुर्गम मिलती थीं। समुद्री यात्राएँ तुलनात्मक रूप से छोटे जहाजों में की जाती थीं, आमतौर पर सैन्य और वाणिज्यिक कर्मियों द्वारा, और शायद ही कभी साधारण पर्यटक यातायात के लिए। बहुत कम कारण होने के कारण साधारण लोग अपने स्थानों में ही रहते थे और दूर-दूर तक नहीं जाते थे। समय-समय पर, समूह प्रवासन होते थे, और कभी-कभी लोग धार्मिक पर्व के लिए यात्रा करते थे या युद्ध या अकाल से बचने के लिए भाग जाते थे।

पुराने नियम के समय में यात्रा

कई विवरण इस्राएल के लोगों को अपने जानवरों के झुण्ड को चराने के लिए प्रतिबंधित क्षेत्रों में जाते हुए दिखाया गया है। यूसुफ के भाइयों ने अपनी भेड़ों को देश के दक्षिण से शेकेम और फिर दोतान (उत 37:12–17) तक ले गए, लेकिन यह केवल 60 मील (96.5 किलोमीटर) था। दाऊद ने फिलिस्तीन का चक्कर लगाया और मोआब तक भी गया (1 शमू 22:3) दानियों ने यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में अपने घर से लबानोन पर्वत के ठीक दक्षिण में उत्तर की ओर प्रस्थान किया (न्या 18)।

चरागाह, प्रवासन, और सुरक्षा के लिए यात्रा के उदाहरणों को बढ़ाया जा सकता है। ऐसे यात्री सामान्यतः पैदल चलते थे, हालांकि गधे का उपयोग सवारी और बोझा ढोने वाले जानवर दोनों के रूप में किया जाता था। बैल का उपयोग भारी भार और कभी-कभी लोगों को ले जाने के लिए किया जाता था (उत 46:5)। बाद में ऊँट का सामान्य उपयोग होने लगा (1 रा 10:2; 2 रा 8:9)। पुराने नियम के समय में यात्रियों के लिए विश्राम स्थलों के बारे में बहुत कम जानकारी है। पुराने नियम की कथाओं में 'ठहरने का स्थान' (मालोन) का केवल कुछ ही बार उल्लेख होता है (उत 42:27; 43:21; निर्ग 4:24)।

नए नियम के समय में यात्रा

रोमी संसार में यात्रा का बहुत महत्व था: पर्व के समय धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए, व्यापार के लिए, अधिपतियों के प्रबन्ध लिए, सैन्य उद्देश्यों के लिए। पहली सदी के यात्रियों में प्रारम्भिक मसीही धर्म-प्रचारक कम महत्वपूर्ण नहीं थे।

रोमी शांति और अधिकार के आगमन और अच्छी तरह से निर्मित पत्थर की सड़कों के निर्माण ने यात्रा को अपेक्षाकृत सुरक्षित और त्वरित बना दिया। पुराने नियम के समय में ज्ञात यात्रा के तरीकों में सुधार हुआ। रोमी साम्राज्य के भीतर लम्बी दूरी की यात्रा अच्छी सड़कों और तुलनात्मक सुरक्षा के साथ की जाती थी। हालाँकि, कुछ खतरे थे, विशेष रूप से समुद्री यात्रा में, हवा, तूफान और समुद्री डाकुओं से (प्रेरि 15:39; 18:18–22; रोम 15:24–25; 2 कुरि 11:25–26)। उदाहरण के लिए, पौलुस की रोम की समुद्री यात्रा खतरनाक थी (प्रेरि 27:1–28:14)।

नए नियम में पैदल यात्रा के कई उदाहरण दिए गए हैं। मरियम गलील से यहूदिया तक एलीशिबा से मिलने गई थी (लूका 1:39–40, 56)। नाम लिखे जाने के दौरान बैतलहम में शिशु यीशु का जन्म हुआ (2:1–7); यहूदी शुद्धिकरण व्यवस्था का पालन करने के लिए यीशु को यरूशलेम लाया गया (वचन

22)। इस प्रकार, यीशु के गर्भाधान के समय से लेकर मरियम की शुद्धि तक, नासरत से यरूशलेम तक लगभग 70 मील (112.6 किलोमीटर) की तीन यात्राएँ की गईं। वार्षिक फसह यात्रा यूसुफ और मरियम द्वारा की गई थी (वचन 41–51)। अन्य यात्राओं का उल्लेख किया गया है (यूह 2:13; 5:1; 7:1–10; 12:1)। यीशु स्वयं गलील से यरीहो तक चले (मर 1:1–11) और साथ ही सोर और सीदोन के क्षेत्र में भी भी गए (7:24)। वह सामरिया में एक से अधिक बार थे (लूका 17:11; यूह 4:4)। उनकी अन्तिम यात्रा यरूशलेम के लिए यरीहो के माध्यम से और पहाड़ियों के ऊपर से यरूशलेम तक थी (मर 10:10:1, 46; 11:1)। उनके पुनरुत्थान के बाद उनकी अन्तिम यात्रा इम्माऊस की थी (लूका 24:13–35)।

पौलुस ने अपनी प्रत्येक मिशनरी यात्रा समुद्र के रास्ते की (प्रेरि 13:1–14; 15:41–18:22; 18:23–21:17), आमतौर पर मित्रों के साथ। उन्होंने फिलिस्तीन, एशिया का उपद्वीप और यूनानी प्रायद्वीप में पैदल भी कई यात्राएँ कीं। लेकिन नए नियम के समय में सभी यात्राएँ पैदल नहीं होती थीं। भार ढोने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला गधा अक्सर लोगों को ले जाता था। यीशु एक बार बैतफगे से यरूशलेम तक की यात्रा पर निकले, जो एक छोटी लेकिन अत्यधिक प्रतीकात्मक यात्रा थी (मत्ती 21:2–7; मर 11:1–11; यूह 12:12–15)। जब यूसुफ अपनी गर्भवती पत्नी, मरियम के साथ यीशु के जन्म के समय अपना नाम लिखवाने के लिए बेथलहम गए, तो मरियम शायद गधे पर सवार थी। कूश देश का खोजा यरूशलेम में आराधना करने के बाद रथ में सवारी करके जा रहा था और फिलिप्पुस उसके साथ जुड़ गया जो पैदल यात्रा कर रहा था (प्रेरि 8:26–38)। रोमी सिपाही पैदल चलते थे और घोड़ों का व्यापक उपयोग करते थे। जब पौलुस को यरूशलेम से कैसरिया लाया गया, तो उनके लिए घोड़े तैयार किए गए थे (23:23–24)।

सड़कें और समुद्री मार्ग

बाइबिल के समय की सड़कें फिलिस्तीन के भूगोल, स्थलाकृति और इतिहास में प्रमुखता से अन्कित थीं - एक ऐसी भूमि जो मिस्र और मध्य पूर्वी इलाकों में सभ्यता और व्यापार के केंद्रों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करती थी। कई सड़कें व्यवसायिक और सैन्य दोनों दृष्टि से रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थीं। कुछ सड़कों ने यरूशलेम जैसे धार्मिक केंद्रों की यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए तीर्थयात्रा मार्गों के रूप में महत्व प्राप्त किया। बाइबिल के समय में सड़कें तीन मुख्य प्रकार की हुआ करती थीं: जैसे कि लम्बी दूरी की अन्तराष्ट्रीय सड़कें, मध्यम दूरी की अन्तर-क्षेत्रीय सड़कें और प्रत्येक क्षेत्र या राज्य के अन्दर कई तरह की सड़कें।

विशाल अन्तराष्ट्रीय सड़कें

यह सड़के भूमध्यसागरीय तट को उत्तरी हिद्देकेल घाटी और दक्षिणी मेसोपोटामिया से जोड़ते थे। कुछ ने मेसोपोटामिया को एशिया के उपद्वीप से जोड़ा, जबकि अन्य दक्षिण में मिस्र तक, या तो यरदन नदी और मृत सागर के तट के साथ या पूर्व में और सीनै प्रायद्वीप के पार ले गए। दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में अनातोलिया और अश्शूर के बीच व्यापार मार्ग थे। स्पष्ट रूप से उत्पत्ति 14 में उल्लिखित सैन्य अभियान का उद्देश्य उत्तरी मेसोपोटामिया से मिस्र तक के विशाल व्यापार मार्ग, राजा के राजमार्ग को सुरक्षित करना था। सैन्य आक्रमणकारी और यात्री बेबिलोनिया, अश्शूर, और फारस से सीरिया के आन्तरिक क्षेत्रों को पार करते हुए तट की ओर बढ़ते थे, फिर दक्षिण की ओर फिलिस्तीन और मिस्र में प्रवेश करते थे। यूरोपीय शक्तियों, यूनान और रोम के मध्य पूर्व में आने से पूर्व के लोगों के लिए एक और बड़ा अन्तराष्ट्रीय मार्गों का जाल खुल गया। रोमी काल तक, ये सड़कें पत्थरों से नहीं बनी थीं, बल्कि साफ-सुथरी पगडंडियाँ थीं। वे बहुत ऊबड़-खाबड़, ढलान रहित और गीले मौसम में कई जगहों पर चलने लायक नहीं थीं। लेकिन वे स्पष्ट रूप से "मार्गचिह्नों" और "मार्गदर्शकों" द्वारा अच्छी तरह से परिभाषित थीं (यिर्म 31:21)। रोमियों के आने के साथ ही, गहरी नींव और सतह पर सपाट पत्थरों के बड़े खंड के साथ महत्वपूर्ण सड़कें बनाई गईं। इन सड़कों के अवशेष आज भी मध्य पूर्व और यूरोप में कई जगहों पर देखे जा सकते हैं। सड़कों के किनारे नियमित रूप से दूरी के निशान या मील के पत्थर लगाए जाते थे।

फिलिस्तीन में अन्तराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण सड़कें

जो सड़कें उत्तर के देशों को मिस्र से जोड़ती थीं, वे फिलिस्तीन से होकर गुजरती थीं, जो एक प्राकृतिक भूमि पुल था। तीन प्रमुख सड़कें थीं। तटीय सड़क दमिश्क से शुरू हुई और हासोर के रास्ते एस्द्रेइलोन के मैदान से होकर, मगिद्दो पास से गुजरते हुए, तट के नीचे गाज़ा से होते हुए मिस्र में प्रवेश करती थी। यह शायद "समुद्र का मार्ग" (यश 9:1) था। सीनै सड़क मिस्र से दक्षिणी नेगेव और फिर कादेशबर्ने, बेर्शेबा, हेब्रोन, यरूशलेम, शेकेम, अक्को, सोर, और सीदोन तक जाती थी। लाल समुद्र मार्ग अकाबा की खाड़ी से फिलिस्तीन क्षेत्र में प्रवेश करता था, जहाँ एलत का प्राचीन बन्दरगाह और सुलैमान का एस्योनगेबेर बन्दरगाह स्थित था (गिन 33:35; 2 इति 8:17)। वहाँ से यह यरदन के पर्वतीय क्षेत्रों से होकर गुजरता था, गहरे वादियों को पार करता हुआ, और फिर उत्तर में हौरान क्षेत्र से होकर दमिश्क तक पहुँचता था। यह वही मार्ग था जिसका उपयोग दक्षिणी अरब से दमिश्क तक जाने वाले कारवां करते थे, जिसे प्राचीन राजा का राजमार्ग कहा जाता था। (गिन 20:17; 21:22)।

उत्तर-दक्षिण की ओर जाने वाली अन्य सड़कें भी कम महत्वपूर्ण थीं। एक तटीय सड़क याफा से कैसरिया और डोर होते हुए अक्को तक जाती थी, जहाँ यह सीनै सड़क से जुड़ती थी। जाहिर है कि रोमी काल तक यह बहुत महत्वपूर्ण नहीं थी, जब कैसरिया का बन्दरगाह बनाया गया था। शारोन के मैदान में दलदल कई समस्याएँ पैदा करते थे। एस्ड्रेइलोन का मैदान भी दलदली था और खराब मौसम में उत्तर की ओर जाने वाली

सड़कों को बाधित करता था। दलदली भागों में एक ऊँची सड़क का निर्माण अंततः किया गया। एक और सड़क हासोर से उत्तर की ओर जाती थी, जो दमिश्क की मुख्य सड़क से अलग हो जाती थी। यरदन घाटी की सड़क गलील के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से को घेरती थी और यरदन घाटी से नीचे यरीहो तक जाती थी।

पूर्व-पश्चिम सड़कें

कई महत्वपूर्ण सड़कें पूर्व-पश्चिम दिशा में चलती थीं, जो उत्तर की ओर जाने वाली बड़ी सड़कों को काटती थीं। ऐसी ही एक सड़क गाज़ा से बेर्शेबा और फिर अराबा तक जाती थी, जिसमें पेट्रा के लिए एक शाखा थी। एक और अश्कलोन से, गाथ के माध्यम से, हेब्रोन और मृत सागर पर एनगदी तक। एक और सड़क याफा से अय्यालोन की घाटी (यहो 10:6–14) के पूर्व में बेथेल और फिर यरीहो तक जाती थी। एक प्रसिद्ध मार्ग याफा से शेखेम तक जाता था, जो यरदन नदी को आदाम के पास (3:16) पार करके परे यरदन में गिलाद की ओर जाता था । अन्य सड़कें अक्को से पूर्व की ओर गलील और तट के साथ-साथ सोर और सीदोन तक जाती थीं। वास्तव में, कई पूर्व-पश्चिम सड़कें थीं जो फिलिस्तीन के विभिन्न हिस्सों के बीच सम्पर्क प्रदान करती थीं। रोमी काल में, जब सेनाओं की तेज़ी से आवाजाही आवश्यक थी, तो कुछ पुरानी सड़कों को बहुत सुधारा गया और नई सड़कों का निर्माण किया गया।

समुद्री मार्ग

फिनीकी के विपरीत, इस्राएल के लोग शायद ही कभी समुद्री मार्गों का उपयोग करते थे। जब सुलैमान ने लाल समुद्र के नीचे ओपीर को जहाज भेजने की योजना बनाई (1 राजा 9:26–28), तो उसने फिनीकी नाविकों का उपयोग किया। यहोशापात ने एक समान अभियान की योजना बनाई, लेकिन उसके जहाज नष्ट हो गए (22:48–49)। पुराने नियम के समय में तटीय यातायात पलिश्तियों और फिनीकी के हाथों में था। भूमध्य सागर के तट पर कई बन्दरगाह थे, जैसे गाज़ा, याफा, दोर और अक्को, लेकिन कोई भी बहुत अच्छा नहीं था। भूमध्य सागर के तट को मिस्र और दूर के तर्शीश (शायद इसपानिया) से जोड़ने वाली समुद्री गलियाँ भी थीं। दूसरा तटीय जल अक़ाबा की खाड़ी थी, जिसके दो बन्दरगाह थे—पार यरदन के लिए एस्योनगेबेर और यरदन के पश्चिम के लिए एलत। सुलैमान का बेड़ा एस्योनगेबेर को अपना मुख्य बन्दरगाह के रूप में इस्तेमाल किया।

नए नियम के समय में चीज़ें काफ़ी बदल गईं। मध्य पूर्व में दूर-दराज़ के लोगों, ख़ास तौर पर रोमियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं का उत्पादन होता था। मिस्र में सिकन्दरिया और सीरिया में अन्ताकिया ने माल और यात्रियों दोनों को सम्भाला। फिलिस्तीन और एशिया के उपद्वीप के तट के आसपास के कई अन्य छोटे बन्दरगाहों ने जहाजों के लिए एक आश्रय प्रदान किया। यूनानी प्रायद्वीप के चारों ओर 200 मील (321.8 किलोमीटर) की यात्रा से बचने के लिए एक सरल योजना थी कि छोटी नावों को कुरिन्थुस में पाँच मील (8 किलोमीटर) चौड़े संयोग भूमि के पार खींचा जाए। नए नियम के समय में सबसे बड़ा जहाज़ भी समुद्र में हवा और तूफ़ान के कारन ख़तरे में था (प्रेरि 27), इसलिए समुद्री यात्रा को प्राथमिकता तब दी जाती थी जब तूफ़ान का जोखिम कम से कम होता था, मोटे तौर पर नवम्बर से मार्च तक। उचित मौसमों में भूमध्य सागर में बहुत ज़्यादा समुद्री यातायात होता था, मुख्यतः व्यापार के लिए। अनाज के जहाज़ नियमित रूप से रोम से मिस्र और पूर्व की ओर जाते थे।

जहाजों को पाल की शक्ति से चलाया जाता था, जिसे आवश्यकतानुसार गुलामों द्वारा संचालित पतवारों द्वारा पूरक बनाया जाता था। जहाजों के आकार के कुछ संकेत प्राचीन मलबे की खोज और लातीनी और यूनानी साहित्य से मिलते हैं। एथेंस के पास पाया गया एक पुराना सूखा गोदी 130 फीट (39.6 मीटर) लम्बा था, जिसका इस्तेमाल कभी यूनानी युद्ध जहाजों के लिए किया जाता था, जो मालवाहक जहाजों से छोटे थे। रोमी लेखक लुसियान ने 180 फीट (54.9 मीटर) लम्बे एक सिकन्दरिया अनाज जहाज का उल्लेख किया है, जो लगभग 1,200 टन (1,088.6 मेट्रिक टन) की क्षमता का सुझाव देता है। पौलुस के जहाज में 276 लोग सवार थे (प्रेरि 27:37)। आधुनिक जलमग्न पुरातत्व विज्ञान इन प्राचीन जहाजों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान कर रहा है।

यात्रा के कारण

नए नियम के समय में यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण कारण व्यापार और वाणिज्य था, जिसमें केवल वस्तुओं का परिवहन ही शामिल नहीं था। जहाज में लदी वस्तु के अधिग्रहण और सुरक्षित प्रदान में प्रतिनिधि, पर्यवेक्षक, जहाज के बीमाकर्ता, महाजन और कई प्रकार के लोग शामिल थे।

सैन्य यात्राएँ बहुत ज़्यादा थीं। टोही, रसद की खरीद, सैनिकों के लिए अग्रिम मोर्चे पर व्यवस्था और सैनिकों और उपकरणों के परिवहन जैसे कई तरह के काम करने पड़ते थे।

कुछ यात्री व्यापारी थे जो अपना व्यापार स्थान बदल रहे थे, जैसे अक्विला और प्रिस्किल्ला (प्रेरि 18:2–3)। अक्विला काले सागर के पुन्तुस से रोम गए थे और फिर, उत्पीड़न के समय, अपनी पत्नी के साथ कुरिन्थुस भाग गए थे। कई अन्य लोग समान कारणों से यात्रा करते थे।

धार्मिक तीर्थयात्रा पर जाने वाले लोग ज़मीन या समुद्र के रास्ते यात्रा करते थे। कई देशों से यहूदी लोग वार्षिक फसह पर्व के लिए यरूशलेम की यात्रा करते थे (पुष्टि करें प्रेरि 2:5–11)। गैर-यहूदी इफिसुस, एथेंस, और एलूसिस के धार्मिक केंद्रों में जाते थे, जहाँ उनके महत्वपूर्ण मन्दिर पाए जाते थे। कई छोटे मन्दिरों ने भी तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया। नए मन्दिरों और विभिन्न सरकारी प्रशासनिक भवनों के निर्माण ने दूर-दूर से कारीगरों को आकर्षित किया। अक्सर निर्माण में उपयोग

की जाने वाली सामग्री को निर्माण-स्थान पर ले जाना पड़ता था। कुछ लोग स्वास्थ्य कारणों से चमत्कारी चंगाई के लिए प्रसिद्ध मन्दिरों की यात्रा करते थे या कफरनहूम या तिबिरियास जैसे गर्म पानी के झरनों के लाभों का आनन्द लेने के लिए जाते थे। खिलाड़ी महत्वपूर्ण प्रतियोगिताओं, जैसे ओलंपिक खेलों, के लिए केंद्रों तक यात्रा करते थे, और लोगों की भीड़ इस दृश्य को देखने के लिए उमड़ती थी।कुछ यात्री छात्र या शिक्षक होते थे जो उस समय के महान शिक्षण केंद्रों—विश्वविद्यालयों में जाते थे। कुछ लोग सरकारी दूत बनकर महत्वपूर्ण सरकारी और व्यापारिक दस्तावेज लेकर यात्रा करते थे। इसके बावजूद, बहुत सारे साधारण नागरिक अपने घर से कुछ मील से अधिक कभी यात्रा नहीं करते थे।

यात्रा का गीत

यात्रा का गीत

भजन संहिता 120–134 का शीर्षक।

*देखें*यात्रा का गीत, श्रेणीबद्ध गीत।

याथान

शमायाह के पुत्रों में से एक, जो तोबित के साथ यरूशलेम में आराधना के लिए गए थे (तोब 5:14)।

यादा

यहूदा के गोत्र से ओनाम के पुत्र (1 इति 2:28, 32)।

यादा

यादा

यहूदा के गोत्र से ओनाम के पुत्र (1 इति 2:28, 32)।

यादाह

यहोअद्दा (1 इति 8:36) और यारा (1 इति 9:42) का रूपांतर। *देखें*यहोअदा, यहोअद्दा।

यादोन

यादोन

बँधुआई से लौटने के बाद यरूशलेम की शहरपनाह पर काम करने वाले मजदूर। यादोन ने नगर के पुराने फाटक के पास गिबोन और मिस्पा के लोगों के साथ काम किया। वह एक मेरोनोती थे (नहे 3:7)।

यानीम

यानीम

यहूदा के गोत्र को विरासत में दिए गए क्षेत्र के पहाड़ी देश में एक शहर (यहो 15:53)। इसका स्थान संभवतः हेब्रोन के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

यानुम

यानुम

यहोशू 15:53 में यहूदा के क्षेत्र में एक शहर यानुम की केजेवी वर्तनी। *देखें*यानीम।

यानै

यानै

गादियों का प्रमुख जिसने अपने परिवार के साथ बाशान की भूमि में निवास किया (1 इति 5:12)।

यानोह

यानोह

1. एप्रैम की सीमा का पूर्वी किनारा निर्धारित करने वाला शहर, शकेम के दक्षिण-पूर्व और शीलो के उत्तर-पूर्व में स्थित है (यहो 16:6–7)। इसे आधुनिक खिरबेत यानुन के साथ पहचाना जाता है।

2. नप्ताली के गोत्र का नगर (आधुनिक यानुह), जिसे अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर ने 732 ईसा पूर्व में इस्राएल के राजा पेकह के शासनकाल के दौरान कब्जा कर लिया था (2 रा 15:29)।

यानोहाह

यानोहाह

यहोशू 16:6–7 में एप्रैम के क्षेत्र में एक शहर यानोह की केजेवी वर्तनी। *देखें*यानोह #1।

यापी (व्यक्ति)

1. लाकीश के राजा, जिसने यहूदियों के साथ गिबोन की संधि के लिए उन्हें दंडित करने के उद्देश्य से चार अन्य एमोरी राजाओं के साथ एक गठबंधन किया। यहोशू ने बेथोरोन की लड़ाई में एमोरियों को पूरी तरह से पराजित किया (ओलों और सूर्य के स्थिर रहने की सहायता से)। यापी और चार राजा मक्केदा की एक गुफा में छिप गए, लेकिन यहोशू द्वारा खोजे गए और फांसी पर लटका दिए गए (यहो 10:3–27)।

2. यरूशलेम में दाऊद के राजा रहते हुए, दाऊद से जन्मा पुत्र (2 शमू 5:15; 1 इति 3:7; 14:6)।

यापी (स्थान)

यापी (स्थान)

यह नगर जबूलून की सीमा के दक्षिणी भाग के रूप में वर्णित है (यहो 19:12)। इसे आधुनिक याफा के रूप में पहचाना गया है, जो नासरत के दक्षिण-पश्चिम में लगभग दो मील (3.2 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है।

याफा

यह नगर यरूशलेम से लगभग 35 मील (56.3 किलोमीटर) उत्तर-पश्चिम में स्थित था और यरूशलेम का मुख्य बंदरगाह था। याफा एक ऊँची, चट्टानी पहाड़ी पर बना था, जिसकी ऊँचाई लगभग 116 फीट (35.4 मीटर) थी, और इसका एक प्रायद्वीप समुद्र तट से आगे बढ़कर समुद्र में फैला हुआ था। यह मिस्र और पुराने नियम के नगर अक्को के बीच भूमध्यसागर के तट पर एकमात्र प्राकृतिक बंदरगाह था। बंदरगाह के लगभग 300 से 400 फीट (91.4 से 121.9 मीटर) दूर चट्टानों की एक श्रृंखला से तरंगरोधी का निर्माण होता था, जिससे बंदरगाह में प्रवेश उत्तर से संभव था। ऐसा माना जाता है कि बाइबल के समय में यह बंदरगाह आज की तुलना में बड़ा और अधिक संरक्षित था। बाइबलीय नगर अच्छी जल आपूर्ति से संपन्न था और इसके चारों ओर की भूमि अत्यंत उपजाऊ थी।

याफा पहली बार प्राचीन अभिलेखों में मिस्र के थुतमोस तृतीय (1490–1432 ई.पू.) द्वारा अधिकृत गए फिलिस्तीनी नगरों की सूची में दिखाई देता है। अमरना काल के दौरान, यह यरूशलेम के साथ गठबंधन में एक स्थानीय राजकुमार द्वारा शासित था। इस अवधि के एक स्रोत में इसके सुंदर बगीचों और इसके श्रमिकों की धातु, चमड़ा और लकड़ी में कुशलता का वर्णन है। जब फिलिस्तीन को 12 गोत्रों में विभाजित किया गया, तो याफा को दान गौत्र को सौंपा गया (यहो 19:46)। इसे जल्द ही पलिश्तियों ने ले लिया, जिन्होंने इसे अपने बंदरगाहों में से एक बना दिया। दाऊद की पलिश्तियों पर विजय ने याफा को इस्राएल को लौटा दिया और सुलैमान के शासनकाल के दौरान, यह यरूशलेम की सेवा करने वाला एक प्रमुख बंदरगाह बन गया। देवदार की लकड़ियाँ लबानोन से याफा तक तैराई गईं और फिर मंदिर के निर्माण में उपयोग के लिए यरूशलेम ले जाई गईं (2 इति 2:16)।

याफा वह बंदरगाह था जहाँ योना नीनवे में प्रचार करने से बचने के प्रयास में भाग गया था (योना 1:3); वहाँ अपनी ज़िम्मेदारी से बचने की आशा में उसने तर्शीश के लिए जा रहे एक जहाज पर सवार हो गया। जब तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने 743 ई.पू. में पलिश्तियों पर आक्रमण किया, तो याफा शायद उन पलिश्ती नगरों में से एक था जो उनके अधीन हो गया। सन्हेरीब ने 701 ई.पू. के अपने अभियान में याफा को उन नगरों में सूचीबद्ध किया जिन्हें उन्होंने कब्जा कर लिया था। इसके बाद, इसके बारे में बहुत कम जानकारी है जब तक कि एज्रा के समय में, जब फिर से लबानोन से देवदार की लकड़ियाँ याफा तक तैराई गईं और मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए यरूशलेम ले जाई गईं (एज्रा 3:7)। चौथी शताब्दी ई.पू. के दौरान, सिडोन के एशमुनाज़र ने नगर पर नियंत्रित किया। जब सीदोन ने फारस के विरुद्ध विद्रोह किया और अर्तक्षत्र तृतीय द्वारा नष्ट कर दिया गया, तो याफा जाहिर तौर पर एक स्वतंत्र नगर बन गया। सिकन्दर महान ने इसका नाम याफो (इसका पुराने नियम का नाम) से बदलकर याफा कर दिया और वहाँ एक टकसाल स्थापित किया, जिससे यह यूनानी साम्राज्य में कुछ महत्व का नगर बन गया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद, उसके उत्तराधिकारियों ने कई बार इस नगर पर कब्जे के लिए लड़ाई की। यह 301 ई.पू. से 197 ई.पू. तक मिस्र के अधीन रहा, जब अन्तिओकस तृतीय ने इसे सेल्यूसीड साम्राज्य का हिस्सा बना दिया।

मक्काबियों काल के दौरान, याफा ने विभिन्न अनुभवों का सामना किया। जब अन्तिओकस चतुर्थ इपिफेनज़ ने 168 ई.पू. में यरूशलेम की ओर बढ़कर अपने युनानीवाद कार्यक्रम को लागू करने का प्रयास किया, तो उसने अपनी सेना को याफा में उतारा। 164 ई.पू. में, यहूदा मक्काबी की सेल्यूसीड्स के विरुद्ध सफलता के कारण, गैर-यहूदी नागरिकों ने लगभग 200 यहूदियों को डुबो दिया। यहूदा ने बंदरगाह की संरचनाओं और वहां लंगर डाले हुई नौकाओं को जलाकर प्रतिशोध लिया, लेकिन वे स्वयं नगर को जीतने में असमर्थ रहे (2 मक्काबियों 12:3–9)। 147 ई.पू. में, योनातान और शमौन ने सीरियाई सेनापति अपोलोनियस टाओस को

हराया और याफा पर कब्जा कर लिया, जो सीरियाई सिंहासन के दावेदार सिकन्दर प्रथम इपिफेनज़ के लिए था (1 मक्काबियों 10:74–86)। अगले कुछ वर्षों में राजनीतिक चालों की एक श्रृंखला के माध्यम से, शमौन नगर को मजबूत करने, यूनानी निवासियों को निष्कासित करने और याफा को एक यहूदी नगर के रूप में दृढ़ता से स्थापित करने में सक्षम हुआ। पोम्पेई के रोम पर कब्जे के दौरान, याफा को एक स्वतंत्र नगर घोषित किया गया; इसे यूलियुस कैसर द्वारा यहूदियों को लौटाया गया (47 ई.पू.); और इसे हेरोदेस महान द्वारा 37 ई.पू. में कब्जा कर लिया गया। याफा के निवासियों द्वारा नफरत किए जाने के कारण, हेरोदेस ने याफा से लगभग 40 मील (64.4 किलोमीटर) उत्तर में कैसरिया में एक नया बंदरगाह बनाया। यीशु के जन्म के समय तक, याफा सीरिया प्रांत में कैसरिया के शासन के अधीन था (जोसीफस की *एंटीक्विटीज़* 17.13.2–4)।

याफा में एक मसीही मण्डली बहुत पहले ही प्रकट हुई थी। वहां रहने वाले शिष्यों में से एक थी दोरकास, जिसे पतरस ने मृतकों में से जीवित किया था (प्रेरि 9:36–41), और शमौन चर्मकार (पद 43)। याफा से, पतरस को कैसरिया बुलाया गया था ताकि वे रोमी सूबेदार कुरनेलियुस को सुसमाचार प्रस्तुत कर सकें (10:1–48)।

याफा, रोमियों के विरुद्ध विद्रोह का एक प्रमुख केंद्र था। इसे ई. 68 में वेस्पासियन द्वारा नष्ट कर दिया गया और इसके स्थान पर एक रोमी सेना शिविर स्थापित किया गया। बाद में इसे फिर से बनाया गया और आज यह तेल अवीव के उपनगर के रूप में जाना जाता है।

याफो

यहोशू 19:46 में याफा का केजेवी रूप। *देखें* याफा।

याबाल

कैन के वंशज और लेमेक तथा आदा के पहले पुत्र। वे उन लोगों के पिता थे जो तम्बुओं में रहते थे (उत 4:20)।

याबीन

1. मेरोम में यहोशू के विरुद्ध एक गठबंधन का नेतृत्व करने वाले हासोर के राजा। राजा याबीन और उनके सहयोगियों को युद्ध में नष्ट कर दिया और हासोर को जला दिया गया (यहो 11:1–14)।

2. न्यायियों के समय में हासोर के राजा (न्या 4)। परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों की दुष्टता के कारण इस्राएल पर 20 वर्षों तक अत्याचार करने की अनुमति दी। उसकी सेना में लोहे के 900 रथ शामिल थे। अंततः, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्तिन दबोरा और उनके सेनापति बाराक के माध्यम से इस्राएल को छुड़ाया, जिन्होंने याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को हराया। युद्ध से भागने के बाद आराम करते समय, सीसरा को एक स्त्री द्वारा मार दिया गया। सीसरा की मृत्यु के बाद याबीन अब कोई खतरा नहीं था और जल्द ही मारा गया (न्या 4:24; भज 83:9)।

याबेश (व्यक्ति)

शल्लूम का पिता। शल्लूम ने इस्राएल के राजा जकर्याह की हत्या की (2 रा 15:10–14)।

याबेश, गिलादी याबेश (स्थान)

न्यायियों की पुस्तक के अंतिम अध्यायों में दिखाई देने वाला नगर (अध्याय 19–21)। यह देश के विभाजन और पतन का एक दुःखद वर्णन है, जो गिबा के पुरुषों द्वारा एक लेवी की उपपत्नी के विरुद्ध किए गए घोर अत्याचार, उसके परिणामस्वरूप बिन्यामीन के विरुद्ध हुए रक्तरंजित युद्ध, और गिलादी याबेश के विरुद्ध किए गए क्रूर प्रतिशोध को दर्शाता है, क्योंकि उनकी सभा ने युद्ध में कोई सेना नहीं भेजी थी। ऐसा ही कुछ इस शहर का पहला उल्लेख है। नगर को पड़ोसी गिलादियों द्वारा पुनः बसाया गया और यह 1 शमूएल 11 में फिर से दिखाई देता है। यरदन के पूर्व में, याबेश अम्मोनी हमले के लिए खुला था, और अम्मोन के नाहाश ने गिलादी याबेश को आत्मसमर्पण की शर्तें खोजने के लिए मजबूर किया। बर्बर नाहाश द्वारा लगाई गई शर्त थी कि सभी निवासियों की दाहिनी आंख काट दी जाएगी, यह विकृति इस्राएल को अपमानित करने और सीमावर्ती किले की सैन्य क्षमता को नष्ट करने के उद्देश्य से की गई थी। इसके बाद शाऊल ने जबरदस्ती चढ़ाई की, जो सैन्य कौशल का एक बेहतरीन नमूना था, और नए राजा की प्रतिष्ठा के लिए एक जबरदस्त बढ़ावा था। शाऊल ने एक ही झटके में यरदन के पार की जनजातियों का समर्थन हासिल कर लिया और सीमा पर खतरे को कम कर दिया, जो निस्संदेह सैन्य रूप से शक्तिशाली अम्मोन द्वारा पेश किया जा सकता था। गिलादी याबेश के पुरुषों ने शाऊल के प्रति अपने गहरे ऋण को चुकाया जब राजा, जो अब अस्थिर और ठुकराया हुआ था, अपने पुत्र योनातान के साथ गिलबो पर्वत पर मारा गया, पलिश्तियों की उत्तर की ओर बढ़त को रोकने के अपने अंतिम प्रयास में। शाऊल और योनातान के शव, बेतशान की दीवारों पर सिर के बिना लटके हुए थे, उन्हें काटकर गिलादी याबेश के वीर योद्धाओं द्वारा उतारा गया, जिन्होंने अपने एक समय के परोपकारी के सम्मान में दोनों ओर नौ मील (14.5 किलोमीटर) की मजबूरी भरी यात्रा की (1 शमू 31:8–13; 1

इति 10:8–12)। जब दाऊद राजा बने, तो उन्होंने गिलादी याबेश के पुरुषों को कृतज्ञता के साथ सम्मानित किया।

याबेश नाम वादी एल-याबिस में संरक्षित है जो यरदन में गलील सागर के दक्षिणी छोर के ठीक दक्षिण में बहती है। यूसेबियस की आम तौर पर विश्वसनीय स्थलाकृति के अनुसार, यह शहर, गेरासा की सड़क पर पेल्ला से लगभग छह मील (9.7 किलोमीटर) दक्षिण में था। वादी एल-याबिस पर तेल एल-मकेरेह और तेल अबू खराज के जुड़वाँ विवरण यूसेबियस के स्थान से बहुत बेहतर तरीके से मेल खाते हैं, जो दूसरे सुझाए गए स्थान: तेल एल-मक़लूब से बेहतर है। तेल एल-मकेरेह और तेल अबू खराज यरदन घाटी के पूर्वी किनारे पर हैं और ऐतिहासिक अभिलेख के विवरण से मेल खाते हैं—शाऊल का बेजेक से जबरन यात्रा, और गिलादी याबेश के हमलावर दल का बेतशान तक का मार्ग।

याबेस (व्यक्ति)

यहूदा के गोत्र का एक सदस्य, जो अपनी भक्ति के लिए प्रसिद्ध था। उसने परमेश्वर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की, और उसे उसकी प्रार्थना का उत्तर मिला (1 इति 4:9–10)।

याबेस (स्थान)

याबेस (स्थान)

यहूदा में स्थित एक शहर था, जिसे शास्त्रियों ने बसाया था (1 इति 2:55)।

यामनिया

यब्ने के लिए वैकल्पिक नाम यहूदीत 2:28 में है। *देखें*यब्ने।

यामीन

1. शिमोन के पुत्र (उत् 46:10; निर्ग 6:15; 1 इति 4:24) और यामीनियों के कुल के संस्थापक (गिन 26:12)।

2. यहूदा के गोत्र से राम के पुत्र (1 इति 2:27)।

3. उन पुरुषों में से एक (सम्भवतः एक लेवी) जिन्होंने एज्रा के सार्वजनिक रूप से पढ़ने के बाद लोगों को व्यवस्था सिखाई और समझाई (नहे 8:7)।

यामीनी

यामीन के वंशज, शिमोन के पुत्र (गिन 26:12)। *देखें*यामीन #1।

यामीनी

शिमोन के गोत्र से यामीन के वंशज (गिन 26:12)। *देखें* यामीन #1।

यारयोरगीम

यारयोरगीम

2 शमूएल 21:19 में याईर की पाठीय त्रुटि। *देखें*याईर #3।

यारा

राजा शाऊल का वंशज (1 इति 9:42)।

यारीब

1. 1 इतिहास 4:24 में शिमोन के पुत्र याकीन का एक वैकल्पिक नाम। *देखें*याकीन #1।

2. वह व्यक्ति जिसने बँधुआई में पलिस्तिन लौटने से पहले मंदिर के सेवकों को सुरक्षित करने में एज्रा की सहायता की थी (एज्रा 8:16)।

3. येशुअ के परिवार से, एक याजक जिसने बँधुआई के बाद अपनी अन्यजाति पत्नी को तलाक देने के एज्रा के उपदेश का पालन किया (एज्रा 10:18)।

यारीम पहाड़

यारीम पहाड़

यहूदा के क्षेत्र की उत्तर-पश्चिम सीमा पर स्थित पहाड़ जो बेतशेमेश और किर्यत्यारीम के बीच है। कसालोन इसकी उत्तरी ढलान पर स्थित था (यहो 15:10)। यह सेईर पहाड़ और एप्रोन पहाड़ से जुड़ा हुआ है।

यह भी देखें कसालोन।

यारेब

यारेब*

होशे द्वारा एक अश्शूरी राजा को नामित करने के लिए इस नाम का उपयोग किया गया (होश 5:13)। क्योंकि अश्शूरी राजा की सूचियों में ऐसा कोई नाम नहीं मिलता, कुछ ने अनुमान लगाया है कि यह सर्गोन को दर्शाता है, लेकिन यह केवल अटकलें हैं। सभी सम्भावनाओं में, होशे ने इस नाम को चुना (जो इब्री में "विवादास्पद" का अर्थ है) यह वर्णन करने के लिए कि एप्रैम और यहूदा को अश्शूर में एक विवादास्पद राजा से किस प्रकार का विरोध मिलेगा, क्योंकि इस्राएल के पाप के कारण (10:6)।

यारेश्याह

यारेश्याह

1 इतिहास 8:27 में यरोहाम के पुत्र योरेश्याह का केजेवि अनुवाद। *देखें*योरेश्याह।

यारोबाम

दो राजाओं का नाम जिन्होंने इस्राएल के उत्तरी राज्य पर राज्य किया: यारोबाम प्रथम (930–909 ईसा पूर्व), जो इस्राएल के 10 गोत्रों का प्रवर्तक और पहला राजा था, और यारोबाम द्वितीय (793–753 ईसा पूर्व), जो उत्तरी राज्य का 14वें राजा थे।

1. यारोबाम नबात के पुत्र थे और एप्रैम के गोत्र से थे। उन्होंने राजा सुलैमान की सेवा भी की थी (1 रा 11:26), और उनके प्रयासों के फलस्वरूप उनको एप्रैमी के श्रमिक बल के मुखिया के रूप में नियुक्त किया गया। इस प्रकार, यारोबाम ने यरूशलेम की रक्षा की एक महत्वपूर्ण हिस्से का पुनर्निर्माण करने में सहायता की थी (वचन 27–28)। यह कुशल और ऊर्जावान युवक सुलैमान की सेवा में अधिक समय तक नहीं रहा। यारोबाम की पृष्ठभूमि, उनके गोत्र का गर्व, और सुलैमान के यातनाओं ने, इस युवा बलवा करनेवाले को जन्मा। भविष्यद्वक्ता शीलोवासी अहिय्याह एक दिन यारोबाम से यरूशलेम के बाहर मिले और एक चौंकाने वाला काम किया—उन्होंने जो नई चद्दर पहनी थी, उसे फाड़कर 12 टुकड़े कर दिए और यारोबाम को उसके 10 टुकड़े दे दिए (1 रा 11:29–30)। अहिय्याह ने प्रतीकात्मक रूप से यारोबाम को यह दिखाया कि परमेश्वर उन्हें 10 गोत्र देंगे और दाऊद के वंश को सुरक्षित रखेंगे (वचन 31–39)। सुलैमान की मूर्तिपूजा ने दाऊद के वंश पर यह न्याय लाया था (वचन 33)। बलवा का सटीक विवरण नहीं दिया गया है (वचन 7), लेकिन यारोबाम अपने जीवन को बचाने के लिए मिस्र की ओर भाग गए (वचन 40)।

सुलैमान की मृत्यु के बाद, यारोबाम फिलिस्तीन लौट आए और रहबाम, सुलैमान के पुत्र, के पास गए और एक विनती की कि उनके ऊपर अन्धेर बन्द किया जाए (1 रा 12:1–4)। रहबाम ने उत्तर देने से पहले अपने मंत्रियों से सम्मति करने के लिए तीन दिन माँगे (वचन 5–11)। बूढ़ों की सम्मति की सलाह राज-दया की ओर थी, लेकिन उग्र जवानों की सम्मति का कहना था कि कर और मजदूरी बढ़ाई जाए (वचन 12–14)।

इस्राएलियों ने रहबाम को अस्वीकार करके प्रतिक्रिया दी। यारोबाम को उत्तरी गोत्रों का राजा जल्दी से नियुक्त किया (1 रा 12:20), और दोनों राज्यों के विभाजन के समय (930 ईसा पूर्व) उनके बीच अस्थायी रूप से एक असहज युद्धविराम ने रिश्तों को स्थिर कर दिया।

महत्वाकांक्षी और कुशल यारोबाम ने दो राजधानियाँ बनाईं, एक शेकेम में (पुष्टि करे उत् 12:6–8; यहो 8:30–35), जो यरदन के पश्चिमी में स्थित देश था, और दूसरी पनूएल में (पुष्टि करे उत् 32:30; न्या 8:17), जो यर्दन के पूर्व में था (1 रा 12:25)। उन्होंने सोने के बछड़ों की पूजा को पुनः स्थापित किया, जिसमें प्राचीन मत को यहोवा की आराधना के स्थान पर रखा। उसने आराधना के केन्द्र, आराधना के वस्तु, याजकवर्ग, और आराधना के समय को बदल दिया। नई आराधना के केन्द्र बेतेल और दान बने (वचन 29); बेतेल एक कुलपति के आराधना का स्थल था (उत् 28:10–22; 31:13; 35:1–7), और दान एक विश्वासघात लेवियों की आराधना का स्थल था जो न्यायी के दिनों में दान के गोत्र के लिए स्थापित की गई थी (न्या 18)।

आराधना की वस्तु मूर्ति बछड़ा बन गया (1 रा 12:28)। पूजा इस्राएल में इस मूर्तिपूजा की पहली घटना में हारून की भागीदारी पर आधारित थी। हारून ने सीनै पर्वत पर सोने का एक बछड़ा को अदृश्य यहोवा का, जिसने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला था, एक दृश्य प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया था (निर्ग 32:4–5)। यह समझौता करने वाला धर्म यहोवा की आराधना करने वालों को आकर्षित कर सकता था। हारून द्वारा इस आराधना की पूर्व स्थापना ने उन लोगों के लिए इसे और आकर्षक बना दिया जो लेवियों की विधियों से अलग होने में अनिच्छुक थे। दान के लेवी भी बछड़े की आराधना को प्रामाणिकता प्रदान करने में योगदान देते है।

निःसन्देह, यारोबाम के मिस्र में अस्थाई निवास ने इन घटनाओं में योगदान दिया। मिस्रवासियों की सूर्य देवता आमोन-रे की पूजा में उसे बैल के रूप में प्रदर्शित किया जाता था। मिस्र की पूजा में बैल का उद्देश्य अदृश्य देवता का दृश्य प्रतीक बनाना था। यह अवधारणा इस्राएलियों द्वारा आसानी से उनकी अदृश्य यहोवा की आराधना में स्थानांतरित की जा सकती थी।

यारोबाम की मूर्तिपूजा के कारण अन्ततः उसके वंश का विनाश हुआ (1 रा 13:33–34)। इसका तत्काल परिणाम उसके पुत्र अबिय्याह की मृत्यु थी (14:1–18)। भविष्यद्वक्ता अहिय्याह को धोखा देने की यारोबाम की योजना असफल रही और यही योजना उसके घराने और उत्तरी राज्य पर न्याय की घोषणा का माध्यम बन गई (वचन 7–16)। इस्राएल के धीरे-धीरे पतन का एक संकेत यह था कि यारोबाम यहूदा के अबिय्याह के हाथों पराजित हुआ (2 इति 13:1–20)।

यारोबाम प्रथम की इस्राएल पर 22 वर्ष तक राज्य करने के बाद मृत्यु हो गई (1 रा 14:19–20)। उनका शेष पुत्र नादाब केवल दो वर्ष तक राज्य कर सका, क्योंकि इस्साकार के गोत्र से बाशा ने उसकी हत्या कर दी (1 रा 14:20; 15:25–31)। फिर बाशा ने यारोबाम के पूरे घराने का नाश कर दिया, जिससे यारोबाम के वंश के अन्त के विषय में अहिय्याह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई। फिर भी, बाशा ने यारोबाम के अधर्म के मार्गों पर ही चलना जारी रखा (1 रा 15:34)।

2. यारोबाम द्वितीय, जो योआश (या यहोआश, 798–782 ई.पू.) का पुत्र था, इस्राएल पर किसी भी अन्य उत्तरी राजा से अधिक समय तक राज्य किया, यद्यपि उसने अपने पूर्वज यारोबाम प्रथम (2 रा 14:23–24) के बुरे उदाहरण का अनुसरण किया। उनके 41 वर्षों के राज्य में उनके पिता के साथ 11 वर्षों का सह-राज्य भी शामिल था। स्पष्टतः, यहोआश ने यहूदा के अमस्याह के साथ युद्ध (2 रा 14:8–14; 2 इति 25:5–24) से पहले अपने राज्य की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए थे।

यारोबाम द्वितीय ने सामरिया के नगर में राज्य किया (2 रा 14:23)। सामरिया में पुरातात्त्विक प्रमाण बताते हैं कि योआश और यारोबाम द्वितीय के समृद्ध राज्य काल के दौरान राज महल में पुनर्निर्माण कार्य हुआ था। 1910 में खुदाई करने वालों को 60 से अधिक अंकित मृदभांड मिले, जो राजा की सेवा में उपयोग के लिए राज भण्डार में भेजे गए तेल और दाखरस के चालान या परचे थे। मृदभांडों पर उल्लिखित स्थान-नामों (27) की सीमित संख्या इंगित करती है कि इन वस्तुओं की आपूर्ति राष्ट्रव्यापी कर के रूप में नहीं थी, बल्कि सम्भवतः राज घराने की सम्पतियों से ही थी। ये यारोबाम द्वितीय के राज्य काल के दौरान इस्राएल में राज घराने की विस्तृत सम्पत्ति और वैभव को दर्शाते हैं।

सामरिया के खण्डहरों में बड़ी संख्या में हाथी दाँत से बनी नक्काशीदार सजावटी पट्टिकाएँ और तख़्ते भी पाए गए, जो उत्तरी राज्य की अन्तिम दिनों की समृद्धि का स्मरण कराते हैं। इन हाथी दाँतों पर विभिन्न देवी-देवताओं की आकृतियाँ बनी हुई थीं, जो अराम, अश्शूर, और मिस्र की मूर्तिपूजक सभ्यताओं के प्रभाव को दर्शाती हैं।

भविष्यद्वक्ता योना, अमित्तै के पुत्र, ने यारोबाम द्वितीय के द्वारा सामर्थ के प्राप्त होने की भविष्यद्वाणी की थी (2 रा 14:25)। यद्यपि यारोबाम का राज्य काल उत्तरी राज्य के इतिहास के अन्त के निकट था, फिर भी परमेश्वर ने अपने धीरज और वाचा को पूरा करनेवाले प्रेम को प्रदर्शित करना चाहा, और इस्राएल को पश्चाताप का अवसर प्रदान किया (वचन 26–28)।

यारोबाम के राज्य काल में परमेश्वर की कृपादृष्टि के कारण उत्तरी राज्य की सीमा सुलैमान के समय के बाद सबसे अधिक विस्तृत हुई। इसकी सीमाएँ उत्तर में ओरोंटिस नदी पर हमात से लेकर दक्षिण में अकाबा की खाड़ी तक फैली थीं, जिसमें एलत और एस्योनगेबेर जैसे नगर शामिल थे। हालाँकि, समृद्धि इस्राएल को आन्तरिक और बाहरी समस्याओं से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं थी। सरकार में व्यापक भ्रष्टाचार और लोगों की आत्मिक स्थिति के पतन ने इस्राएल को उन अशान्त दिनों में धकेल दिया, जो अन्ततः उत्तरी राज्य के पूर्ण विनाश पर समाप्त हुए। यारोबाम का अपना जीवन भी षड्यंत्रकारियों से खतरे में रहा होगा। बेतेल के एक याजक, अमस्याह ने यहाँ तक कि भविष्यद्वक्ता आमोस पर यारोबाम की हत्या की साजिश रचने का आरोप लगाया (आमो 7:8–17)। वास्तव में, आमोस ने इस्राएल की बँधुआई और यारोबाम के वंश के पतन की भविष्यद्वाणी की थी। परमेश्वर का वचन यारोबाम के लिए एक खतरा बन गया था क्योंकि इस्राएल के सभी लोगों, यहाँ तक कि राजा के भी, हृदय कठोर हो गए थे।

आर्थिक मन्दी, नैतिक पतन, राजनीतिक कमजोरी और सरकारी भ्रष्टाचार ने इस्राएल के पतन को तेज कर दिया। धनी गृहस्थो, जिनमें यारोबाम द्वितीय भी शामिल था, ने कम समृद्ध देश के निवासी पर अन्धेर किया और छोटे गृहस्थो को उनके खेतों से नगरों की ओर भागने के लिए मजबूर कर दिया।

यारोबाम द्वितीय की मृत्यु के छः महीने के भीतर, येहू के वंश के अन्त के बारे में दी गई भविष्यद्वाणी पूरी हुई (यारोबाम उस वंशावली का चौथा राजा था) (2 रा 14:29; 15:8–12; पुष्टि करें 10:12–31)। जैसे यारोबाम प्रथम के पुत्र नादाब की हत्या हुई थी, वैसे ही यारोबाम द्वितीय के पुत्र जकर्याह की भी हत्या हुई। यारोबाम द्वितीय की मृत्यु के इकतीस वर्ष बाद, इस्राएल की बँधुआई के बारे में दी गई भविष्यद्वाणियाँ पूरी हुईं (722 ईसा पूर्व; 2 रा 17:5–41)।

यह भी देखें बाइबल की कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल, इतिहास।

याला

याला

राजा सुलैमान के सेवक और उस परिवार के मुखिया जो जरूब्बाबेल के साथ बाबेल की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (एज्रा 2:56; नहे 7:58)।

यालाम

यालाम, एसाव के पुत्र, जिसका उल्लेख उत्पत्ति 36:5, 14, 18 और 1 इतिहास 1:35 में किया गया है, केजेवी में इसी रूप में पाया जाता है। *देखें*यालाम।

यालाम

एसाव के पुत्र और एदोमी कुल के अधिपति (उत् 36:5, 14, 18; 1 इति 1:35)।

यालोन

यहूदा के गोत्र से एज्रा का पुत्र (1 इति 4:17)।

यावान (व्यक्ति)

येपेत के पुत्र जिनके समुद्री कार्य वंशज कनान के उत्तर और पश्चिम की ओर प्रवास कर गए (उत् 10:2–4; 1 इति 1:5–7)।

यावान (स्थान)

स्थान जिसे सामान्यतः यूनान से पहचान की जाती है। यह नाम भाषाई दृष्टिकोण से आयोनिया से सम्बंधित है, जो एशिया का उपद्वीप (अनातोलिया प्रायद्वीप) के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित था और जिसे यूनानी लोगों ने उपनिवेशित किया था। इस प्रकार, यावान के नाम यूनान पर भी लागू किया गया। बाइबल के यूनानी अनुवाद में अधिकांश घटनाओं में, यावान "यूनानी भाषा बोलनेवाले," यूनान के रूप में प्रकट होता है।

इसके स्थान के कुछ संकेत "जातियों की सूची" में सबसे पहले दिए गए हैं, जहाँ यावान येपेत का चौथा पुत्र बताया गया है (उत् 10:2; पुष्टि करें 1 इति 1:5); गोमेर से पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, यूरोप में स्थित है। यह भी कहा गया है कि येपेत एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी लोग (या रोदानी लोग) के पिता हैं (उत् 10:4; 1 इति 1:7)। इन क्षेत्रों या लोगों के संबंध प्रचलित हैं।

आयोनिया (यूनान) का अधिकांश उल्लेख भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में मिलता है। यशा 66:19 यावान का नाम तर्शीशियों, पूलियों, लूदियों, और तुबलियों के साथ उन स्थानों के रूप में लिया गया है जहाँ यहोवा की महिमा की घोषणा की जाएगी। इन स्थानों को दूर के देशों के प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है।

सोर के विरुद्ध एक लम्बी भविष्यद्वाणी में, यहेजकेल यावान, तूबल, और मेशेक का उल्लेख करते हैं, जो सोर के व्यापार के लिए दासों और पीतल के पात्रों का व्यापार करते थे (यहेज 27:13), जबकि योए 3:6 में सोर को यहूदियों और यरूशलेमियों को यूनानियों के हाथ बेचने के लिए निन्दा की गई है। यहेजकेल 27:19 में इब्रानी पाठ में लिखा है "ऊजाल से दान और यावान।" इसे एनएलटी में "ऊजाल से यूनानी" के रूप में अनुवादित किया गया है (देखें हाशिया टिप्पणी भी) एनएएसबी कहता है, "दान और यावान ने तेरे माल के बदले में सूत दिया"; केजेवी में लिखा है "दान भी और यावान।"(देखें हाशिया टिप्पणी भी) यूनानी अनुवाद का अनुसरण करता है: "ऊजाल से दाखरस।"

दानिय्येल की पुस्तक में यावान का उल्लेख स्पष्ट रूप से यूनान का प्रतीक है। रोंआर बकरा को यूनान के राजा का प्रतीक बताया गया है (दानि 8:21) वह सिकन्दर महान है, जिसका साम्राज्य उसकी मृत्यु के बाद उसके चार सेनापतियों में बाँट दिया गया। दानिय्येल 10:20 में यूनान का प्रधान फारस के प्रधान दानिय्येल 10:13, 20 में समानान्तर है। यह सुझाव दिया गया है कि "प्रधान" का अर्थ रक्षक स्वर्गदूत है, लेकिन फारस के प्रधान का प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल का विरोध करना यह स्पष्ट करता है कि "प्रधान" एक उच्च श्रेणी का दुष्ट आत्मा है (पुष्टि करें इफि 6:12)। फारस और यूनान के बीच संघर्ष की भविष्यद्वाणी दानिय्येल 11:2 में की गई है, जबकि अगले वचन में सिकन्दर महान की सफलता और उनके साम्राज्य के विभाजन का वर्णन है।

*यह भी देखें*यूनान, यूनानी।

याशार की पुस्तक

प्राचीन इस्राएली पुस्तक जो अब उपलब्ध नहीं है।

यह संभवतः गीत पुस्तक थी जो इस्राएली नायकों की विजयों का उत्सव मनाने के लिए लिखी गई थी। इसका उल्लेख पुराने नियम में कई बार किया गया है:

- जब यहोशू ने पाँच राजाओं के साथ युद्ध के दौरान सूर्य और चंद्रमा को रुकने का आदेश दिया (यहो 10:13)
- जब दाऊद ने शाऊल और योनातन के लिए विलाप किया (2 शमू 1:17–27)

यह संभव है कि सुलैमान के मन्दिर को समर्पण करने की प्रार्थना (1 रा 8:12–13) शामिल की गई थी। सेप्टुआजिंट (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) के अनुसार, 1 राजाओं 8:12–13 के लेखक उसी भाषा का उपयोग करते हैं जैसी कि यहोशू 10:12–13 में है। लेखक अलंकारिक प्रश्न का उपयोग यह पूछने के लिए करते हैं कि क्या सुलैमान का कथन "गीत

की पुस्तक" में लिखा गया था। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह प्रश्न इब्री संस्करण से हटा दिया गया हो सकता है क्योंकि यह उद्धरण 1 राजाओं 8:14–53 में सुलैमान की प्रार्थना के बाद आता है। यह भी संभव है कि इब्री अक्षरों के क्रम में गड़बड़ी हुई हो जिससे सेप्टुआजिंट में "गीत" पढ़ा गया हो बजाय "याशार" के। यदि हम इन विचारों को स्वीकार करते हैं, तो 1 राजाओं 8:12–13 याशार की पुस्तक का हिस्सा था।

यह भी संभव है कि "गीत की पुस्तक" सही शीर्षक हो:

- सभी उद्धरण कविता हैं।
- "याशार" शब्द का पूरा अर्थ समझा नहीं गया है।
- "याशार" इब्री क्रिया "गाने" के समान है।

इसलिए, कुछ विद्वान मानते हैं कि इस ग्रंथ को "गीत की पुस्तक" कहा जाता था।

हम इस पुस्तक के स्वभाव के बारे में निश्चित नहीं हो सकते, सिवाय इसके कि इसमें कई गीत शामिल थे। यह ऊपर दिए गए तीन अंशों की सामग्री के प्रकार से स्पष्ट है:

- कोई गीत अधिक दिन के उजाले की प्रार्थना करता है ताकि इस्राएल युद्ध जीत सकें।
- कोई दाऊद की साहित्यिक क्षमता और योनातान के साथ उसकी मित्रता के महत्व को दर्शाता है।
- कोई परमेश्वर की सर्वोच्चता की प्रशंसा करता है।

याशार की पुस्तक की उत्पत्ति इसकी सामग्री से अधिक अनिश्चित है। कुछ लोग मानते हैं कि यह राजशाही से पहले के गीतों का संग्रह था। कुछ सोचते हैं कि यह सुलैमान के समय की मौखिक परम्परा थी। अन्य सुझाव देते हैं कि यह इस्राएल के इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं को संरक्षित करने का साधन था। इसने इस सुझाव को जन्म दिया है कि मिर्याम का गीत (निर्ग 15:21) और दबोरा का गीत (न्यायियों 5) इस संग्रह का हिस्सा हो सकते थे।

कई लोग इस पुस्तक में रुचि रखते हैं, जिससे इसके कई नकली संस्करण भी बन गए हैं।

याशूब

1. इस्साकार के तीसरे पुत्र (1 इति 7:1; जिन्हें उत् 46:13 में योब भी कहा गया है), और याशूबियों के कुल के संस्थापक (गिन 26:24)।

2. बानी के वंशज, जिन्होंने बँधुआई से बाहर आने के बाद एज्रा के उपदेश का पालन करते हुए अपनी अन्यजाति पत्नी से तलाक लिया (एज्रा 10:29)।

याशूब लेहेम

1 इतिहास 4:22 में मोआब के साथ उल्लेख किया गया है।

याशूबी

याशूब का वंशज, इस्साकार का तीसरा पुत्र (गिन 26:24)। *देखें* याशूब #1।

याशेन

याशेन

दाऊद के 30 पराक्रमी पुरुषों में से एक (2 शमू 23:32)। इब्रानी पाठ में लिखा है "याशेन के पुत्र," और 1 इतिहास 11:34 में लिखा है "हाशेम का पुत्र गीजोई।" विद्वानों का सामान्यतः मानना है कि वाक्यांश "के पुत्र" द्वितीयलेखन है और पिछले शब्द के अंतिम तीन अक्षरों को दोहराता है। मूल पाठ में संभवतः "याशेन गीजोई" या "हाशेम गीजोई" लिखा था, जिससे उसका पुत्र नहीं किन्तु वह, दाऊद की सेना का पराक्रमी पुरुष बना।

याशोबाम

याशोबाम

1. जब्दीएल का पुत्र, जिसे दाऊद के "तीनों" पराक्रमी पुरुषों का प्रधान बनाया गया (1 इति 11:11) और जिसे वर्ष के पहले महीने में सेवा करने वाली 24,000 सैनिकों की टुकड़ी का प्रधान नियुक्त किया गया (1 इति 27:2)। यह वही व्यक्ति तहकमोनी योशेब्यश्शेबेत है (2 शमू 23:8)। 1 इतिहास 11:11 के अनुसार, याशोबाम ने 300 पुरुषों को, या 2 शमूएल 23:8 के अनुसार 800 पुरुषों को मारकर प्रसिद्धि प्राप्त करी।

2. उन कुशल योद्धाओं में से एक जो दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुए थे (1 इति 12:6)।

यासीएल

यासीएल

1. दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में योद्धा। उसे “मसोबाई” कहा जाता है (1 इति 11:47)।

2. अब्नेर के पुत्र और दाऊद के शासनकाल के दौरान बिन्यामीन गोत्र का अगुवा (1 इति 27:21)।

यासू

एज्रा 10:37 में यासू, बानी के पुत्र की केजेवी वर्तनी। *देखें* यासू।

यासू

यासू

बानी के पुत्र, जिन्होंने एज्रा के उस उपदेश का पालन किया कि बँधुआई के बाद अपनी अन्यजाति पत्नी को तलाक दें (एज्रा 10:37)।

यासोन

1. यहूदी महायाजक (174–171 ई.पू.) जिसने यरूशलेम का यूनानीकरण करके और उसके निवासियों को “अन्ताकिया के नागरिक” बनाकर याजकीय पद के पतन का कारण बना (2 मक्काबियों 4:9 के आगे)। उसे उसके चचेरे भाई ओनियास मेनेलाउस द्वारा पदच्युत कर दिया गया, लेकिन जब एन्तिओकस इपिफेनज़ की मृत्यु की एक झूठी खबर आई, तो यासोन ने अपने ही लोगों के लिए बिना दया के यरूशलेम पर आक्रमण किया। मिस्र पर किए गए आक्रमण को छोड़कर लौटते समय एन्तिओकस ने यरूशलेम को फिर से जीत लिया और यासोन को ट्रांसजॉर्डन और फिर नगर से नगर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। दूसरा मक्काबी बताता है कि उसकी मृत्यु पर, “[यासोन] जिसने कई लोगों को बिना दफनाए बाहर निकाल दिया था, उसके लिए कोई शोक मनाने वाला नहीं था; उसका किसी भी प्रकार का अंतिम संस्कार नहीं किया गया और न ही उसके पूर्वजों की कब्र में कोई स्थान था” (5:10)।

2. थिस्सलुनीके में यहूदी मसीही जिसने पौलुस और सीलास की मेज़बानी की (प्रेरि 17:1, 5–9)। उसे और अन्य लोगों को विद्रोहियों को शरण देने के आरोप में नगर अधिकारियों के सामने बुलाया गया। जमानत देने पर उसे रिहा किया गया।

3. कुरिन्थ का मसीही, जिसने पौलुस के साथ रोम की कलीसिया को अभिवादन भेजा (रोम 16:21)।

याह

परमेश्वर के वाचा नाम का संक्षेप, यहोवा या यहोवा ("यहोवा" अधिकांश आधुनिक अनुवाद)। यह गद्यांश अक्सर शब्दों और नामों में उपयोग होता है (जैसे, हाल्लेलु*याह, यह*जीएल)। *देखें*परमेश्वर के नाम।

याहदै

याहदै

यहूदा के गोत्र से कालेब के वंशज (1 इति 2:47)।

यिगाल

1. यूसुफ का पुत्र, जो इस्साकार के गोत्र से था और मूसा द्वारा कनान का भेद लेने के लिए भेजे गए 12 भेदियों में से एक (गिन 13:7)।

2. नातान का पुत्र और दाऊद के वीर पुरुषों में से एक (2 शमू 23:36)। 1 इतिहास 11:38 में उन्हें योएल, नातान के भाई के रूप में सन्दर्भित किया गया है (इब्रानी में, यिगाल से केवल एक अक्षर भिन्न)।

3. शमायाह के पुत्र और राजा यहोयाकीन के माध्यम से राजा दाऊद के वंशज (1 इति 3:22)।

यिग्दल्याह

यिग्दल्याह

हानान के पिता। हानान के पुत्रों के पास यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान मन्दिर के पास एक कक्ष था (यिर्म 35:4)।

यिजलीआ

यिजलीआ

बिन्यामीन के गोत्र से एल्पाल का पुत्र (1 इति 8:18)।

यिजलीआ

1 इतिहास 8:18 में एल्पाल के पुत्र इजलिया का केजेवी रूप। *देखें* इजलिया।

यिज्जियाह

यिज्जियाह

परोश का पुत्र, जिसे एज्रा द्वारा उस विदेशी महिला को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, जिससे उन्होंने बँधुआई के बाद के काल में विवाह किया था (एज्रा 10:25)।

यिज्जियाह

यिज्जियाह*

एज्रा 10:25 में यिज्जियाह का केजेवी रूप, परोश के वंशज। *देखें*यिज्जियाह।

यिज्रह्याह

उज्जी के पुत्र और इस्साकार के गोत्र के एक प्रमुख सदस्य (1 इति 7:3)।

यिज्रह्याह

यिज्रह्याह

पुनर्निर्मित यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण में भाग लेने वाले मन्दिर गायकों के अगुआ (नहे 12:42)।

यिज्राही

यिज्राही

शम्हूत को दिया गया पदनाम, जो दाऊद के 12 मासिक सेनापतियों में से एक था, जिसका अर्थ है यिज्रा नामक परिवार या शहर का व्यक्ति (1 इति 27:8)। शब्द "यिज्राही" शायद "जेरह के वंश" का एक विकृत रूप है, जो यहूदा के जेरह का वंशज है (1 इति 27:11)।

यिज्रेल (व्यक्ति)

1. यहूदा के गोत्र से एताम का वंशज (1 इति 4:3)। एक अन्य संभावित व्याख्या यह सुझाव देती है कि एताम नगर के संस्थापक पिताओं में से एक यिज्रेल था। इब्रानी पाठ में कई लिपिकीय परिवर्तनों के कारण, लेखक की मूल मंशा को पहचानना कठिन है।

2. भविष्यद्वक्ता होशे और उसकी पत्नी गोमेर का पहलौठा पुत्र। यिज्रेल का नाम, जिसका अर्थ है "परमेश्वर बोते हैं," येहू के अधीन इस्राएल के अवज्ञाकारी राज्य पर परमेश्वर के क्रोध के उंडेले जाने (होश 1:4–5) और अंतिम पुनर्स्थापना (2:21–22) को दर्शाता है।

यिज्रेल (स्थान)

1. यह शहर मूल रूप से इस्साकार के गोत्र द्वारा शूनेम के दक्षिण में स्थापित किया गया था, एक स्थल जिसे पहले के निवासियों ने एल-अमरना काल में छोड़ दिया था (यहो 19:18)। यह शहर इस्राएल के इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ा हुआ था।

संभवतः लौह युग के दौरान प्राचीन शहर बेतशान के पतन से इसे कुछ महत्व प्राप्त हुआ। शाऊल के राज्य में यिज्रेल एक महत्वपूर्ण जिले का केंद्र बन गया (2 शमू 2:9), और पास का एक झरना शाऊल की सेना के लिए एकत्र होने के बिंदु के रूप में कार्य करता था, इससे पहले कि वे गिलबो पर्वत की लड़ाई में पलिश्तियों से भिड़ें (1 शमू 29:1)। शाऊल की मृत्यु के बाद, यह नगर थोड़े समय के लिए ईशबोशेत के राज्य का हिस्सा था (2 शमू 2:8–11)। सुलैमान के दिनों में इसे इस्साकार के दसवें जिले में शामिल किया गया था और इसे मुख्य यिज्रेल घाटी से बाहर रखा गया था। इसका प्रशासन पारुह के बेटे यहोशापात ने किया था (1 रा 4:17)।

ओम्री (885–874 ईसा पूर्व) के दिनों में इसे राजा की शीतकालीन राजधानी के रूप में चुना गया था, और योराम (852–841 ईसा पूर्व) तक उसके वंश के सभी चार राजाओं ने यहीं निवास किया था। यह वही स्थान था जहाँ योराम युद्ध में प्राप्त घावों से उबरने के लिए सेवानिवृत्त हुए थे (2 रा 8:29)। यिज्रेल एक गुम्मट वाला शहर था जिसमें एक फाटक और एक मीनार थी, जिससे ग्रामीण क्षेत्र का सर्वेक्षण किया जा सकता था (9:17), और इसे प्राचीनों की महासभा और कुलीनों द्वारा प्रशासित किया जाता था (10:1)। शाही राजभवन यिज्रेली नाबोत के स्वामित्व वाले दाख के बारी के निकट था, जिसे राजा अहाब ने अवैध रूप से जब्त कर लिया था (1 रा 21)। इस नृशंस कृत्य के लिए अहाब के वंश को कठोर दंड मिला। येहू के राजसिंहासन पर कब्जा करने के समय अहाब की फिनीकी पत्नी ईजेबेल को ऊपरी खिड़की से कुत्तों के सामने फेंक दिया गया था। युद्ध में घायल हुए राजा योराम को येहू ने अपने दरबारियों के साथ मार डाला और

उसके शव को नाबोत के खेत में फेंक दिया (2 रा 9:24–26)। उसी समय अहाब के घराने के बचे हुए लोग भी मारे गए (10:1–11)।

ओम्री के राजवंश के पतन के बाद, नगर का महत्व कम हो गया, हालाँकि मसीही युग में कई लेखकों ने इसका उल्लेख एक गाँव के रूप में किया है। उदाहरण के लिए, यूसेबियस (260–340 ई.) ने इसे स्काथोपोलिस (बेतशान) और लेगियो (*ओनोमैस्टिकॉन* 108:13ff.) के बीच एक गाँव के रूप में संदर्भित किया है। ईसाई धर्मयोद्धाओं ने इसे "ले ग्रैंड गेरिम" से अलग करने के लिए इसे "ले पेटिट गेरिम" कहा।

आज यिज्रेल की पहचान ज़ेरि'न से की जाती है, जो यरुशलेम से लगभग 55 मील (88.5 किलोमीटर) उत्तर में एक इस्राएली किबुत्ज़ का स्थल है। इस क्षेत्र में पाए गए पुरातात्विक अवशेष लौह युग और रोमी काल में एक व्यवसाय की ओर इशारा करते हैं।

2. यहूदा के पहाड़ों में एक नगर (यहो 15:56)। यह अहीनोअम का गृहनगर था, जो दाऊद की पत्नियों में से एक थी (1 शमू 25:43), लेकिन आज इस स्थल के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

यिज्रेल की तराई

यिज्रेल की तराई

इस्राएल की भूमि में सबसे बड़ी और सबसे समृद्ध तराई। इसका नाम यिज्रेल के नाम पर रखा गया था और यह स्पष्ट रूप से मैदान पर एकमात्र नगर था जहाँ इस्राएलियों ने अपनी विजय के प्रारंभिक चरणों में पैर जमाया था (पुष्टि करें न्या 1:27–30)। बाद के यूनानी स्रोतों में नाम का रूप एस्ड्रेलोन है (जूडिथ 1:8); कुछ विद्वानों ने गलत तरीके से बाद वाले शब्द का उपयोग महान पश्चिमी मैदान के लिए किया है और पूर्ववर्ती नाम का उपयोग पूर्व की ओर बेतशान की ओर जाने वाली संकीर्ण तराई के लिए किया है। यहोशू 17:16 की तुलना न्यायियों 1:27–28 और यहोशू 17:11 से करने पर पता चलता है कि बेतशान क्षेत्र को यिज्रेल की तराई से अलग इकाई के रूप में माना जाता था, जिसमें तानाक और मगिद्दो जैसे शहर शामिल थे (पुष्टि करें होश 1:5)।

मिद्यानियों ने मोरे की पहाड़ी और ताबोर पर्वत के बीच वहाँ डेरा डाला (न्या 6:33; 7:1)। बाराक ने सीसरा और याबीन की सेना को वहाँ, एनदोर के पास हराया (भज 83:9–10)। बाद में पलिश्ती वहाँ शाऊल का विरोध करने के लिए इकट्ठा हुए (1 शमू 29:1, 11; 2 शमू 4:4)। राजशाही के अधीन, तराई एक प्रशासनिक नगर था (2 शमू 2:9; 1 रा 4:12)। एक अन्य नाम, शायद केवल तराई के दक्षिणी हिस्से के लिए लागू, मगिद्दो का मैदान है (2 इति 35:22; जक 12:11)।

थुतमोस III और अमेनहोटेप II के युद्धों में तराई का उल्लेख मिलता है और वहाँ के नगर, विशेष रूप से मगिद्दो, कांस्य युग के अंत में मिस्री नियंत्रण में थे। दक्षिण-पश्चिमी भाग एक प्रसिद्ध सैन्य सभा स्थल था, जिसे संभवतः हरोशेत-हग्गोयिम कहा जाता था (न्या 4:2, 13–16)।

यह भी देखें पलिश्तीन।

यिज्रेल की तराई

देखें यिज्रेल की तराई।

यिज्रेली

यिज्रेल नामक दो शहरों में से एक का निवासी। दो ऐसे व्यक्तियों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है:

1. नाबोत, जो इस्साकार के क्षेत्र में यिज्रेल में रहता था (1 रा 21:1–16; 2 रा 9:21, 25)। *देखें* यिज्रेल (स्थान) #1।

2. दाऊद की पत्नी अहीनोअम, जो यहूदा के क्षेत्र में यिज्रेल की निवासी थी (1 इति 3:1)। *देखें* यिज्रेल (स्थान) #2।

यितला

यितला

यहोशू द्वारा फिलिस्तीन की प्रारंभिक विजय के बाद, दान के गोत्र को विरासत के रूप में जो शहर दिया गया था (यहो 19:42)।

यित्नान

यित्नान

दक्षिणी यहूदा में एक नगर (यहो 15:23)।

यित्मा

यित्मा

मोआबी मूल के योद्धा और दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक (1 इति 11:46)।

यित्रान

यित्रान

1. दीशोन का पुत्र, जो एक होरी प्रधान थे (उत 36:26; 1 इति 1:41)।

2. सोपह के पुत्रों में से एक (1 इति 7:37)। वे संभवतः वही हैं जिन्हें 1 इति 7:38 में येतेर कहा गया है।

यित्राम

यित्राम

दाऊद का छठा पुत्र, जो उनकी पत्नी एग्ला ने हेब्रोन में जन्म दिया (2 शमू 3:5; 1 इति 3:3)।

यित्रो

यित्रो

अमासा के पिता अबीगैल के माध्यम से, सरूयाह की बहन (2 शमू 17:25)। उन्हें 1 राजा 2:5, 32 और 1 इतिहास 2:17 में येतेर कहा गया है।

यित्रो

मूसा का ससुर। सिप्पोरा, जो यित्रो की बेटी थी, मूसा की पत्नी बनी जब वह जंगल में शरणार्थी थे (निर्ग 2:21)। जब मूसा मिस्र के लिए लौटे, तो उसने सिप्पोरा और अपने बेटों को साथ लिया (4:20), लेकिन बाद में उन्हें वापस भेज दिया होगा। यित्रो ने उन्हें इस्राएलियों के सीनै पहुँचने के बाद मूसा के पास लाया (18:1–7)। मूसा के साथ इस पारिवारिक सम्बंध के माध्यम से, यित्रो इस्राएल से जुड़ गए।

यित्रो का इस्राएल के साथ सम्बंध विभिन्न तरीकों से समझा गया है। यित्रो मिद्यान का याजक था (निर्ग 2:16; 3:1)। मिद्यानियों का धर्म क्या था, यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है, लेकिन कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि केनी लोग, जो मिद्यानियों का एक गोत्र था (न्या 1:16), उनका एक गोत्र देवता था जिसका नाम यहोवा था और यित्रो उस देवता के याजक थे। जिन विद्वानों ने यह सुझाव दिया कि मूसा के द्वारा यित्रो के गोत्र देवता यहोवा को इस्राएल में लाया गया, वे इस दृष्टिकोण को प्रमाणित करने में असफल रहे हैं। बाइबल इसका समर्थन नहीं करती है। यह स्पष्ट है कि यित्रो एक परमेश्वर से डरनेवाले और सेवा करने वाले व्यक्ति थे। बाइबल की घटनाओं से यह समझा जा सकता है कि यित्रो इस्राएल के परमेश्वर को जानते थे क्योंकि वह अब्राहम के वंशज थे (उत् 25:2)। यहोवा द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाए जाने की बात सुनकर, यित्रो ने यहोवा को सभी देवताओं से बड़े परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने होमबलि और बलिदान चढ़ाकर यहोवा की उपासना की और इस्राएल के साथ अपनी पहचान प्रगट की (निर्ग 18:11)। इस कार्य को कुछ लोगों ने इस्राएल के साथ यित्रो द्वारा वाचा स्वीकार करने के रूप में देखा है, लेकिन यह व्याख्या यित्रो के वास्तविक कार्य और बलिदान तथा सहभागिता का भोज के अर्थ की गलत समझ पर आधारित है। यित्रो की सलाह के अनुसार, लोगों के बीच मुकद्दमा के न्याय प्रक्रियाओं पर अमल करते हुए मूसा ने गुणी पुरुषों को प्रधान नियुक्त किया (वचन 13–27)। इसके बाद यित्रो अपने देश लौट गए और इस्राएल के साथ उनका कोई अन्य सम्पर्क नहीं हुआ। हालाँकि, उनके पुत्र (गिन 10:29–33) और अन्य वंशज बाद में इस्राएल का हिस्सा बने (न्या 1:16; 4:11)।

यित्रो को बाइबिल और बाद की परम्पराओं में अन्य नामों से भी सन्दर्भित किया गया है। तलमूद के अनुसार, उनका मूल नाम येतेर था, जो उनके परिवर्तन के बाद यित्रो हो गया; हालाँकि, इस दावे को प्रमाणित करने के लिए कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। उन्हें रूएल भी कहा गया है, जो उन सात बेटियों के पिता हैं जिनसे मूसा ने कुएँ पर भेंट की थी (निर्ग 2:16–18; गिन 10:29)। उन्हें होबाब नाम से भी सन्दर्भित किया गया है (न्या 4:11); और कहा जाता है कि वह रूएल के पुत्र हैं (गिन 10:29)। बाइबिल विभिन्न नामों के उपयोग की व्याख्या नहीं करते हैं। सुझावों में शामिल हैं: (1) प्रत्येक मिद्यानी गोत्र जिन्हें यित्रो ने याजक के रूप में सेवा दी, उसे अलग नाम से जानता था; (2) रूएल एक गोत्र का नाम था, व्यक्तिगत नाम नहीं; (3) होबाब, जो उनके पुत्र का नाम था, पिता के लिए भी उपयोग हुआ; (4) निर्ग 2:18 और न्या 4:11 पाठ के भीतर एक टिप्पणी जोड़ी गई हो सकती है। हालाँकि, यह स्पष्ट रूप से स्थापित किया जा सकता है कि यित्रो का एक पुत्र था जिसका नाम होबाब था।

यह भी देखें मिद्यान, मिद्यानी; मूसा।

यिदला

यिदला

जबूलून के गोत्र को विरासत के तौर पर दिया गया नगर (यहो 19:15)। आम तौर पर इसे नासरत के उत्तर-पश्चिम में खिरबेत अल-हवाराह के साथ पहचाना जाता है।

यिद्लाप

यिद्लाप

नाहोर और मिल्का के सातवें पुत्र (उत्प 22:22)।

यिद्वाश

यिद्वाश

यहूदा के गोत्र से एताम के वंशजों में से एक (1 इति 4:3)।

यिपदयाह

यिपदयाह

बिन्यामीन के गोत्र से शाशक के पुत्र (1 इति 8:25)।

यिप्तह

गिलाद का अवैध पुत्र (न्या 11:1) और न्यायियों के समय में एक अगुवा। एक वेश्या का पुत्र, यिप्तह को उसके पिता के अन्य पुत्रों द्वारा बेदखल कर दिया गया था और उसके पिता के घर में हिस्सा देने से इनकार कर दिया गया था। वह तोब की भूमि में चला गया, जो यरदन के पूर्व में एक छोटा अरामी राज्य था (न्या 11:3–5), और असंतुष्टों और साहसी लोगों के एक समूह का अगुवा बन गया जो उसके साथ लूटपाट करने जाते थे।

जब इस्राएलियों और अम्मोनियों के बीच युद्ध छिड़ गया, तो गिलाद के अगुवों ने यिप्तह से वापस लौटने और उनकी सेना का नेतृत्व करने का आग्रह किया। पहले तो उसने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के कारण इंकार कर दिया। जब उसने उसे गिलाद का शासक बनाने का वादा किया, तो उसने स्वीकार कर लिया और सेना का प्रधान और शासक बन गया (न्या 11:4–10)। यह समझौता गिलाद के मिस्पा (पद 11) में लोगों की एक आम सभा में प्रभु के समक्ष अनुमोदित किया गया था, जो संभवतः यब्बोक नदी के दक्षिण में था।

अम्मोन के राजा के साथ कूटनीतिक वार्ता विफल होने के बाद, यिप्तह ने अम्मोनियों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। लड़ाई शुरू होने से पहले, उसने प्रभु से शपथ खाई कि यदि वह विजयी होता है, तो घर लौटने पर जो भी उसके घर के दरवाजे पर उससे मिलेगा, वह परमेश्वर को उसे बलि चढ़ा देगा। फिर उसने अम्मोनियों के खिलाफ अपनी सेना का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, उन्हें भयंकर नरसंहार के साथ नष्ट कर दिया (न्या 11:29–33)।

जब यिप्तह घर लौटा, तो वह यह देखकर चौंक गया कि उससे मिलने वाला पहला व्यक्ति उसकी एकलौती संतान, उसकी बेटी थी, जो आनंद में डफली बजा रही थी और नाच रही थी। जब उसने उसे देखा, तो उसने अपने कपड़े फाड़ दिए और कहा, “हाय, मेरी बेटी! तूने कमर तोड़ दी, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में हो गई है; क्योंकि मैंने यहोवा को वचन दिया है, और उसे टाल नहीं सकता” (न्या 11:35)। उसने अपने भाग्य को स्वीकार कर लिया लेकिन यह अनुरोध किया कि इसे दो महीने के लिए स्थगित कर दिया जाए ताकि वह और उसकी सहेलियाँ पहाड़ों पर फिरती हुई अपने कुँवारेपन पर रोती रहे (पद 34–38)। प्राचीन इस्राएल में एक महिला के लिए अविवाहित और निःसंतान मरने से बड़ा कोई अपमान नहीं हो सकता था। जब वह लौटी, तो उसके पिता ने अपनी मन्नत पूरी की (पद 38–39)।

यिप्तह ने गिलाद का नेतृत्व एप्रैमियों के खिलाफ किया, जो इस बात से नाराज थे कि उन्हें अम्मोन के खिलाफ लड़ाई में शामिल नहीं किया गया था। उन्हें गिलाद के साथ गठबंधन करने का पहले मौका दिया गया था, लेकिन उन्होंने मना कर दिया था। यिप्तह ने एप्रैमियों के पीछे यरदन के घाटों पर कब्जा कर लिया और एक चतुर रणनीति से उनकी भागने की कोशिश को रोक दिया। गिलादी पहरुओं ने भगोड़ों को एक परीक्षा में डाला, उनसे "शिब्बोलेत" कहने की मांग की। यदि वे “श” का उच्चारण नहीं कर पाते, तो उन्हें एप्रैमियों के रूप में प्रकट किया जाता था और मार दिया जाता था। विवरण के अनुसार, उस समय 42,000 एप्रैमियों की मृत्यु हुई (न्या 12:1–6)।

यिप्तह ने छह वर्षों तक गिलाद पर न्यायी के रूप में सेवा की (न्या 12:7), और जब उसका निधन हुआ, तो उसे गिलाद के एक नगर में दफनाया गया। इब्रानियों को पत्र में यिप्तह का नाम गिदोन, बाराक और अन्य लोगों के साथ विश्वास के नायक के रूप में लिया गया है (इब्रा 11:32)।

यह भी देखें न्यायियों की पुस्तक।

यिप्तहेल

यिप्तहेल

आशेर और जबूलून की सीमा पर तराई (यहो 19:14, 27), संभवतः आधुनिक साहल-अल-बत्तोफ़।

यिबनायाह

यिबनायाह

बिन्यामीन के गोत्र से यरोहाम के पुत्र थे (1 इति 9:8)।

यिबनायाह

यिबनायाह

बिन्यामीन के गोत्र से मशुल्लाम के पूर्वज (1 इति 9:8)।

यिबलाम

यिबलाम

मनश्शे के क्षेत्र में एक शहर (यहो 17:11; न्या 1:27; 2 रा 9:27), जिसे संभवतः बिलाम के साथ पहचाना जा सकता है। यह यरदन के पश्चिम में सामरिया और यिज्रेल के बीच स्थित एक लेवीय शहर है (1 इति 6:70)। *देखें*लेवीय शहर।

यिबसाम

यिबसाम

इस्साकार के गोत्र से तोला के पुत्र (1 इति 7:2)।

यिभार

यिभार

यरूशलेम में अपने शासनकाल के दौरान दाऊद को पैदा हुआ बेटा (2 शमू 5:15; 1 इति 3:6; 14:5)।

यिम्रा

यिम्रा

1. आशेर के पुत्र (उत 46:17; 1 इति 7:30) और यिम्नियों के कुल के संस्थापक (गिन 26:44)।

2. लेवीय और कोरे के पिता। कोरे राजा हिजकिय्याह के शासनकाल में मन्दिर के द्वारपाल थे (2 इति 31:14)।

यिम्ना

यिम्ना

आशेर के गोत्र से हेलेम के पुत्र (1 इति 7:35)।

यिम्ना, यिम्नाह, यिम्नियों

यिम्ना*, यिम्नाह*, यिम्नियों*

यिम्ना और यिम्नियों के के.जे.वी. अनुवाद रूप, आशेर के पुत्र और उनके परिवार के, उत्पत्ति 46:17 और गिनती 26:44 में। *देखें*यिम्ना #1।

यिम्नि

आशेर के गोत्र से यिम्ना के वंशज (गिन 26:44)। *देखें*यिम्ना #1।

यिम्ला

यिम्ला

मीकायाह के पिता, जो राजा अहाब के शासनकाल के दौरान एक भविष्यद्वक्ता थे, जिन्हें राजा ने सच बोलने के कारण तुच्छ समझा था (1 रा 22:8–9; 2 इति 18:7–8)।

यिरिय्याह

यिरिय्याह

बिन्यामीन के गोत्र से एक पहरुए ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को गिरफ्तार किया जब वह यरूशलेम छोड़कर उस सम्पत्ति का निरीक्षण करने जा रहे थे जिसे खरीदने का उनका अधिकार था (यिर्म 32:6–7)। यिरिय्याह ने यिर्मयाह पर बाबेली सेना में शामिल होने की कोशिश करने का आरोप लगाया। इस झूठे आरोप के कारण, अधिकारियों ने यिर्मयाह को पीटा और बन्दीगृह में डाल दिया (37:13–14)।

यिरोन

यिरोन

नप्ताली के गोत्र के एक सुदृढ़ नगरों में से एक (यहो 19:38)। कुछ विद्वानों ने यिरोन की पहचान वर्तमान गाँव जरून के रूप में की है, जो बिन्त जेबील के दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

यिर्पेल

यिर्पेल

बिन्यामीन के गोत्र को दिया गया विरासत का शहर (यहो 18:27)। यह संभवतः पहाड़ी देश में स्थित था, जो यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में कई मील दूर गिबोन के पास है।

यिर्मयाह

यिर्मयाह

मत्ती 2:17 और 27:9 में यिर्मयाह का उल्लेख किंग जेम्स संस्करण वर्तनी।

देखिए यिर्मयाह (व्यक्ति) #1.

यिर्मयाह (व्यक्ति)

1. 586 ईसा पूर्व में यहूदा के पतन से पहले यहूदा के भविष्यद्वक्ता थे।

यिर्मयाह का जन्म यरूशलेम से लगभग तीन मील (4.8 किलोमीटर) उत्तर-पूर्व में अनातोत गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम हिल्किय्याह था और वे बिन्यामीन के गोत्र से थे। उनकी बुलाहट राजा योशियाह के 13वें वर्ष (640–609 ईसा पूर्व) में हुई। अपने बुलाए जाने पर वह खुद को "एक बालक" के रूप में संदर्भित करते हैं (यिर्म 1:6), लेकिन यह इब्रानी शब्द यिर्मयाह 30:6 और 31:8 में इस्तेमाल किए गए शब्द के समान नहीं है और इसी कारण इसे किशोरावस्था से पहले तक सीमित नहीं किया जा सकता है। वह शायद अपनी उम्र के बजाय अपने अनुभवहीनता की बात कर रहे थे। यिर्मयाह का जन्म लगभग 657 ईसा पूर्व दुष्ट राजा मनश्शे के शासनकाल के दौरान हुआ था, जबकि महान अश्शूरबानिपाल, जिसने 663 ईसा पूर्व में प्राचीन मिस्र के शहर थेब्स को लूटकर दुनिया को हिला दिया था, अश्शूर से एक विश्व साम्राज्य पर शासन किया।

परमेश्वर ने यिर्मयाह को सूचित किया कि उसने जन्म से पहले ही उसे पवित्र और नियुक्त किया था (यिर्म 1:4–5)। यिर्मयाह पहले तो अपर्याप्तता और भय की भावना से संकोच कर रहे थे: ""हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना भी नहीं जानता, क्योंकि मैं कम उम्र का हूँ।" (पद 6)। परमेश्वर ने यिर्मयाह को खुद के लिए बहाना बनाने की अनुमति नहीं दी। उसे आश्वासन दिया गया था कि उसे बोलने के लिए शब्द दिए जाएंगे, और रास्ते के लिए मार्गदर्शन दिया जाएगा (पद 7)। विरोध के बावजूद उसे सुरक्षा (पद 18) और छुटकारे (पद 8) की प्रतिज्ञा दी गयी थी (पद 19)। परमेश्वर ने उनके मुंह को छुआ, जो उसके शब्दों की ईश्वरीय प्रेरणा को दर्शाता था, और एक बादाम के पेड़ से एक शाखा का संकेत दिया, यह समझाते हुए कि प्रभु देख रहा है। तीसरा संकेत उत्तर दिशा की ओर मुंह करके उबलता हुआ बर्तन (पद 13) था, जो आसन्न विपत्ति के स्रोत और प्रकोप को दर्शाता है।

इस प्रकार यिर्मयाह की जीवन सेवकाई का स्वर निर्धारित हुआ: न्याय, विपत्ति, खतरा, पराजय, और देश के लिए निकट आती मृत्यु।

प्रारंभिक सेवा

यिर्मयाह द्वारा अपने सेवकाई के पहले पाँच वर्षों के दौरान दिए गए संदेश 622 ईसा पूर्व के महान पुनरुत्थान में सहायक हो सकते हैं। सुधार में राजा योशियाह के साथ सहयोग करने वालों और यिर्मयाह के साथ मित्रता रखने वालों में अहीकाम और उसके पिता शापान (यिर्म 26:24) शामिल थे; अहीकाम का बेटा गदल्याह (39:14), जो बाद में राज्यपाल बना; मीकायाह का बेटा अकबोर, जिसे अब्दोन भी कहा जाता है, जिसका पुत्र एलनातान विपक्ष में शामिल हुआ (26:22) लेकिन बाद में पश्चाताप किया (36:25); और असायाह (2 इति 34:20)। नहूम और सपन्याह नबी ने भी सुधार आंदोलन को प्रभावित किया, जो हबक्कूक और यिर्मयाह के उपदेशों, हिल्किय्याह की याजकीय सेवकाई और भविष्यवक्ता हुल्दा की भविष्यवाणियों के तहत चरम पर रहा होगा। राजा योशियाह के शासनकाल के दौरान, यिर्मयाह ने सताव के डर के बिना बात की, सताव ने उसके बाद के सेवकाई को कष्टपूर्ण बना दिया। हालाँकि यिर्मयाह की पुस्तक की विषयवस्तु कभी-कभी खंडित प्रतीत होती है, अध्याय 1–19 के अधिकांश भाग योशियाह के समय के हैं।

मंदिर के मलबे में खोई हुई वाचा की पुस्तक का पाया जाना यिर्मयाह 15:16 में लिखे शब्दों का कारण हो सकता है: "तेरे वचन ही मुझे सम्भालते हैं। वे मुझे बहुत आनन्द देते हैं और मेरे हृदय को प्रसन्न करते हैं"। "हे प्रभु, ऐसा ही हो" (यिर्म 11:5) शब्द तोराह में मूसा के शब्दों को याद दिलाते हुए यिर्मयाह की प्रतिक्रिया हो सकती है, जब उसने राजा योशियाह को नई मिली पुस्तक पढ़ते हुए सुना।

छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में, जिसमें उसका गृहनगर भी शामिल है, यिर्मयाह द्वारा ऊँचे स्थानों और मूर्तिपूजा की निंदा सुनी गई। वे युवा भविष्यवक्ता को मारना चाहते थे, या कम से कम उसे डराना चाहते थे (11:21)। चुप रहने के बजाय, यिर्मयाह ने जोर देकर कहा कि उसकी प्रेरणा उनके भले के लिए थी और सत्य के प्रति उनके प्रतिरोध को उनके सबसे बड़े खतरे के रूप में निंदा की।

यिर्मयाह के अपनी सेवकाई शुरू करने के थोड़े समय बाद ही कई विश्व-परिवर्तनकारी घटनाएँ घटीं। अश्शूरबनिपाल की मृत्यु हो गई और अश्शूरी साम्राज्य तेजी से पतन की ओर बढ़ गया। नबोपोलासर ने बाबुल में 21 वर्षों का शासन शुरू किया, जो उसके पुत्र नबूकदनेस्सर के ज्ञात संसार पर अधिपत्य के साथ समाप्त हुआ। जैसे-जैसे विश्व की खबरें आईं,

यिर्मयाह यरूशलेम की ओर अधिक ध्यान देने लगे। उनके पहले मंदिर भाषण (अध्याय 7–10) संभवतः इस समय दिए गए थे।

नबोपोलासर को लगा कि उसकी ताकत 616 ईसा पूर्व में अश्शूरी क्षेत्र के खिलाफ हमला करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन वह सावधानी से आगे बढ़ा क्योंकि मिस्र के पसमेटिक प्रथम (पसमेटिकस) अश्शूर की सहायता के लिए तैयार दिखाई दिए। जब बाबुल हिचकिचा रहा था, तब मादियों के स्यक्सारेस ने अश्शूर पर आक्रमण किया और 614 ईसा पूर्व में इसके सबसे पवित्र शहर, अश्शूर पर कब्जा कर लिया। बाबुल ने स्काइथिया के साथ मिलकर मीडिया से हाथ मिलाया और निनवे के खिलाफ हमला किया, जो 612 ईसा पूर्व की गर्मियों के अंत में गिर गया। अश्शूरी साम्राज्य दो छोटे क्षेत्रों, हारान और कर्कमीश तक सीमित हो गया था।

नबोपोलास्सर ने 610 में हारान पर कब्ज़ा कर लिया और अशुरुबलित ने भागकर कर्कमीश में मिस्र से मदद की विनती की। नेको, जो एक साल के भीतर फिरौन बन गया था, ने तुरंत जवाब दिया। उसने योशियाह को पहले से सूचित किए बिना यहूदा से होकर जुलूस निकाला और यहूदियों से कहा कि वे उत्तर की ओर जाने की उसकी जल्दबाजी को देखते हुए उसे परेशान न करें (2 इति 35:21)। अनुरोध को अनदेखा करते हुए, योशियाह ने उनका पीछा मगिद्दो तक किया और आगामी युद्ध में घायल हो गया; यरूशलेम में उसकी मृत्यु हो गई।

यहोयाकीम के शासनकाल के समय की सेवकाई

योशियाह के चौथे पुत्र यहोआहाज की जगह, जिसने सिर्फ़ तीन महीने शासन किया, फिरौन नेको ने यहोयाकीम (एलियाकीम) को गद्दी पर बिठाया। नेको ने यहूदा से भारी हर्जाना मांगा और भुगतान सुनिश्चित करने के लिए यहोआहाज को बंदी बनाकर बंधक के रूप में कैद कर लिया (2 रा 23:31–33)।

यहोयाकीम के शासनकाल के आरंभ में, यिर्मयाह ने परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर, यहूदियों के वार्षिक उत्सवों में से एक के अवसर पर अपना तीसरा मंदिर भाषण (यिर्म 26) दिया। उसने लोगों से पश्चाताप करने और व्यवस्था की पुस्तक से बार-बार सुने गए प्रकाशन के आधार पर कार्य करने का आह्वान किया। उपदेश की तीखी चेतावनी इस प्रकार थी: "इसलिए तू उनसे कह, 'यहोवा यह कहता है: यदि तुम मेरी सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो मैंने तुम को सुनवा दी है न चलो, और न मेरे दास भविष्यद्वक्ताओं के वचनों पर कान लगाओ, (जिन्हें मैं तुम्हारे पास बड़ा यत्न करके भेजता आया हूँ, परन्तु तुम ने उनकी नहीं सुनी), तो मैं इस भवन को शीलो के समान उजाड़ दूँगा, और इस नगर का ऐसा सत्यानाश कर दूँगा कि पृथ्वी की सारी जातियों के लोग उसकी उपमा दे देकर श्राप दिया करेंगे।" (26:4–6)। शीलो यहोशू से लेकर शमूएल तक यहूदी उपासना का केंद्र रहा था, लेकिन पलिश्तियों द्वारा नष्ट किए जाने के बाद, यह कभी पुनर्जीवित नहीं हुआ। यह एली के दिनों में परमेश्वर के न्याय के बाद सम्पूर्ण विनाश का एक उदाहरण था।

भीड़ तेजी से इकट्ठा हुई और यिर्मयाह के खिलाफ गुस्से में प्रतिक्रिया दी। पुरोहित और राजकुमार नए फाटक की ओर दौड़े, जहां एक कचहरी स्थापित की गई थी ताकि निर्देश लाया जा सके और हिंसा को नियंत्रित किया जा सके। यहोयाकीम यिर्मयाह की कोई मदद नहीं कर सकता था, क्योंकि उसने परमेश्वर के संदेशों को सुनने से इनकार कर दिया था (यिर्म 22:21)। पुरोहितों और झूठे भविष्यवक्ताओं ने यिर्मयाह के खिलाफ बोला, उन्हें देशद्रोही कहा। फिर कुछ बुज़ुर्गों ने लोगों को उरीयाह के बारे में बताया, जिसने भी यही संदेश दिया था। खतरे से बचने के लिए अहीकाम ने अदालत को यिर्मयाह को छोड़ देने के लिए मना लिया।

अश्शूरी साम्राज्य के पतन के बाद मिस्र ने फिलिस्तीन और सीरिया पर नियंत्रण कर लिया। 606 ईसा पूर्व में मिस्र ने कारकेमिश के दक्षिण में बाबुल के सैनिकों के एक शहर को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की और फिर बाबुल से वापसी के हमले का इंतजार करने के लिए कारकेमिश पर फिर से कब्ज़ा कर लिया। मिस्र की इस जीत का मतलब यिर्मयाह के लिए उत्पीड़न था, जिस पर अक्सर झूठी भविष्यवाणी करने का आरोप लगाया जाता था (यिर्म 20 से तुलना करें)।

यिर्मयाह को मिस्र पर कभी भरोसा नहीं था। हर बार जब कोई यहूदी अगुवा मिस्र के साथ नए गठबंधन का आह्वान करता, तो यिर्मयाह उसके खिलाफ़ परमेश्वर के संदेश को दोहराता। जब भी कोई यहूदी समूह सुरक्षा के लिए मिस्र भागता, तो यिर्मयाह उस झूठे शरणस्थल की भूमि में बदतर हालात की चेतावनी देता (देखें यिर्म 44:26–27)। जब नबोपोलासर ने अपने बेटे नबूकदनेस्सर को उन्हें नष्ट करने के लिए भेजा (605 ईसा पूर्व) तो अध्याय 46 में यिर्मयाह का स्तुतिगान और भविष्यवाणी में काव्यात्मक रूप से कारकेमिश में मिस्र की हार का वर्णन किया गया है। कारकेमिश में मिस्र की सेना को कुचलने के बाद, नबूकदनेस्सर ने यहूदा के माध्यम से शत्रु का पीछा किया। अतिशयोक्तिपूर्ण बाबुल अभिलेख में लिखा है, "एक भी व्यक्ति अपने देश नहीं भाग पाया"। हालाँकि, उसके पिता की मृत्यु ने उसे मिस्र पर आक्रमण करने से रोक दिया, और वह सिंहासन संभालने के लिए बाबुल लौट आया। अगले वर्ष, नबूकदनेस्सर, जो अब बाबुल का राजा था, यहूदा, सीरिया और फीनिशिया के शासकों की श्रद्धांजलि स्वीकार करने के लिए वापस लौटा। इस अवसर पर परमेश्वर ने यिर्मयाह को अपनी महान 70-वर्षीय भविष्यवाणी दी (यिर्म 25:11–12), जो दानि 9:2, 24–27 का आधार बन गई।

कर्कमीश में निर्णायक युद्ध के एक साल बाद, बारूक, यिर्मयाह के शास्त्री, ने यिर्मयाह के सभी बोले गए शब्दों का अभिलेख करना पूरा किया और इस कुण्डलपत्र को मन्दिर में पढ़ रहे थे। यह बात राजा तक पहुंची, जिसने यहूदी नामक

एक सेवक को पुस्तक लाने और उसे पढ़ने के लिए भेजा। जब यह हो गया, तो यहोयाकीम ने अपने सलाहकारों के मना करने के बावजूद पुस्तक को जला दिया (यिर्म 36:23–25)। परमेश्वर के संदेश को जल्द ही फिर से लिखा गया और यहोयाकीम पर भयानक न्याय का वचन बोला गया (पद 27–31)।

महत्वाकांक्षी युवा नबूकदनेस्सर ने मिस्र को अपने राज्य में शामिल करने का निश्चय किया। 601 ईसा पूर्व में उसने अपनी सेना को फिर से यहूदा से होते हुए आगे बढ़ाया, लेकिन नेको को पहले से ही चेतावनी मिल गई थी और वह हमले के लिए तैयार था। शूर के रेगिस्तान में, नबूकदनेस्सर को हार का सामना करना पड़ा। मिस्र की रक्षात्मक शक्ति के इस प्रदर्शन से उत्साहित होकर, यहूदा में मिस्र के समर्थक दलों ने खुद को मजबूत किया और यहोयाकीम को मिस्र के साथ गठबंधन करके उन्हें बाबुल से आज़ादी दिलाने के लिए राजी किया (2 रा 24:1) लेकिन मिस्र से मदद नहीं मिली (पद 7)।

599 ईसा पूर्व में, नबूकदनेस्सर ने विद्रोही यहूदियों के राज्य को परेशान करने के लिए आसपास के लोगों को हथियारबंद किया, और उन्होंने इसे खुशी-खुशी किया (2 रा 24:2)। ऐसा प्रतीत होता है कि यहोयाकीम ने इन हमलो में से एक में अपनी जान गवां दी। चूँकि लोगों ने उसका तिरस्कार किया था, इसलिए उसके शरीर को सम्मानपूर्वक दफनाए बिना बाहर फेंक दिया गया, जैसा कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी। (यिर्म 22:19)।

सिदकिय्याह के शासनकाल के समय की सेवकाई

598 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी केवल कुछ समय तक चली क्योंकि नया राजा, यहोयाकीन, जिसने 18 वर्ष की आयु में ताज पहना था, यह जानता था कि प्रतिरोध व्यर्थ था। उसने 597 ईसा पूर्व के मार्च में, लगभग तीन महीने राजा के रूप में सेवा करने के बाद, अपने परिवार और दरबार के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। बाबुल के इतिहास में लिखा है: "उसने [नबूकदनेस्सर] शहर पर कब्जा कर लिया और राजा को पकड़ लिया।"

यहोयाकीन को 8,000 (2 रा 24:16; तुलना करें पद 14) अधिकारियों, कारीगरों और कार्यकारियों (उनमें यहेजकेल भी शामिल था) और बहुत सारी लूट के साथ बाबुल ले जाया गया। उसकी जगह पर नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीन के चाचा सिदकिय्याह को शासन करने के लिए नियुक्त किया। सिदकिय्याह ने निर्वासन के बाद बचे कम योग्य और अनुभवहीन लोगों की मदद से अपने राज्य को संगठित करना शुरू किया।

यिर्मयाह ने अपनी अकृतज्ञ सेवकाई को स्वीकार किया, यहूदियों से परमेश्वर पर विश्वास करने, बाबुल के नियमों का पालन करने और मिस्र की झूठी आशाओं को अस्वीकार करने का आह्वान किया। सिदकिय्याह ने इन बातो पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि अपने सलाहकारों की मूर्खतापूर्ण सलाह पर ध्यान दिया (यिर्म 37:1–2)। सिदकिय्याह के शासन के पहले वर्ष के दौरान, यिर्मयाह को अंजीरों की दो टोकरियों का दर्शन प्राप्त हुआ। बाबुल ले जाए गए यहूदी अच्छे अंजीरों की तरह थे, जबकि सिदकिय्याह और जो मिस्र पर भरोसा करते थे वे सड़े हुए अंजीरों की तरह थे (24:1–8)। इस आलोचनात्मक विवरण का कारण यह था कि यहूदियों ने सिदकिय्याह के शासन की शुरुआत से ही एदोम, मोआब, अम्मोन, सोर, और सीदोन के साथ मिलकर बाबुल के खिलाफ विद्रोह की साजिश रचना शुरू कर दी थी (27:1–3), इस प्रकार नबूकदनेस्सर के प्रति अपनी वफादारी की शपथ तोड़ दी और यिर्मयाह के माध्यम से परमेश्वर के संदेश को अस्वीकार कर दिया।

मिस्र में फिरौन ने बाबुल साम्राज्य के भीतर विद्रोह करने के लिए विद्रोहियों को संगठित करने की योजना को फिर से शुरू किया। उसने अपनी दक्षिणी सीमा की रक्षा करने में सहायता के लिए यहूदी सैनिकों को काम पर रखा। यहूदी सैनिक नील द्वीप पर बस गए जिसे एलीफैंटाइन या येब (593–410 ईसा पूर्व) कहा जाता है। यिर्मयाह ने इन यहूदियों को एक भविष्यवाणी से संबोधित किया (अध्याय 44)। मिस्र में यहूदियों की मदद के लिए की गई संधि में यह भी माना गया था कि मिस्र के लोग इजरायल की मदद करेंगे। जब 589 में बाबुल ने यरूशलेम की घेराबंदी की, तो फिरौन होफ्रा सिदकिय्याह की मदद के लिए आया। रिबला से शासन कर रहे नबूकदनेस्सर ने आदेश दिया कि यरूशलेम के खिलाफ घेराबंदी हटा दी जाए ताकि होफ्रा पर अचानक हमला किया जा सके (37:5)।

इस रिहाई ने यिर्मयाह को अनातोत की यात्रा करने का अवसर दिया ताकि कुछ पारिवारिक सम्पत्ति को सुरक्षित किया जा सके (पद 12)। हालाँकि, सेना के सेनापति इरिय्याह ने दुश्मन के पक्ष में जाने के लिए बिन्यामीन के फाटक में यिर्मयाह को गिरफ्तार कर लिया, और उन्हें पीटा और एक कालकोठरी में फेंक दिया। राजा सिदकिय्याह ने भविष्यवाणी सुनाने के लिए उसे कई दिनों के बाद उन्हें बाहर निकाला। विशिष्ट साहस के साथ यिर्मयाह ने राजा से कहा कि वह जल्द ही बंदी बना लिया जायेगा। उसी समय, यिर्मयाह ने अपने लिए अन्याय से राहत मांगी। उसने अपने अनुरोध का कुछ हिस्सा प्राप्त किया लेकिन सैनिको के दरबार में कैदी के रूप में बने रहे।

बाबुल की सेना ने फिरौन होफ्रा को मिस्र वापस खदेड़ दिया और बिना किसी और दया के यरूशलेम को कुचलने के लिए वापस लौटी। घेराबंदी, जो 589 ईसा पूर्व में शुरू हुई थी, 588 के जनवरी में, सिदकिय्याह के नौवें वर्ष (39:1) में कठोरता के साथ बहाल की गई थी। इस दौरान, प्रभु ने यिर्मयाह को एक चचेरे भाई के आने का पूर्वज्ञान दिया जो अनातोत के पास एक खेत बेचना चाहता था (32:7–9; तुलना करें 37:12)। यिर्मयाह ने 70 साल की कैद के बाद निर्गमन के संदेश को सत्यापित करने के लिए एक वस्तु पाठ के रूप में खेत खरीदा (29:10)।

बाबुल की सेनाओं ने यरूशलेम की सभी आपूर्तियों को बंद कर दिया और लाकीश और अजेका के यहूदियों के अंतिम दो बाहरी किलों को नष्ट करने में सक्षम हो गए (34:7)। भोजन दुर्लभ हो गया। बीमारियाँ फैल गईं। बेकार पड़े मल-मूत्र और गंदे पानी के कारण महामारी फैल गई। बढ़ते संकट के साथ यिर्मयाह ने शहर से आत्मसमर्पण करने की अपील की।

जुलाई 586 ईसा पूर्व में बाबुल के सैनिको द्वारा शहर की दीवार तोड़ने तक यिर्मयाह जेल के प्रांगण में रहे। राजा रात में भाग गया और यरीहो के मैदानों तक पहुँचने में सफल रहा, लेकिन वहाँ उसे पकड़ लिया गया और रिबला ले जाया गया। सिदकिय्याह के परिवार और सलाहकारों को मार दिया गया; उसे खुद अंधा कर दिया गया और जंजीरों में जकड़ कर बाबुल ले जाया गया, जहाँ कुछ ही समय बाद उसकी मृत्यु हो गई (39:6–7)।

उधर यरूशलेम में बाबुल के सेनापति नबूजरदान ने अधिकांश यहूदियों को बंदी बना लिया। हालाँकि, यिर्मयाह को विशेष सम्मान दिया गया; जेल से रिहा होने के बाद, उसे अहीकाम के बेटे गदल्याह की देखरेख में रखा गया।

यरूशलेम के पतन के पश्चात

यरूशलेम के पतन के एक महीने बाद, शहर को जला दिया गया और दीवारें तोड़ दी गईं। गदल्याह को शेष कृषि समाज का राज्यपाल नियुक्त किया गया, जिसका मुख्यालय मिस्पा में था। यिर्मयाह यरूशलेम लौट आए, जहां परम्परा के अनुसार, उन्होंने गॉर्डन के कैलवरी के पास एक गुफा में अपना निवास स्थान बनाया। वहां उन्होंने विलापगीत की पुस्तक लिखी।

अम्मोनी राजा बालीस ने बाबुल के खिलाफ विद्रोह की साजिश रचते हुए गेदल्याह की हत्या को उकसाया (40:13)। इसके बाद हुई प्रतिक्रिया में, बचे हुए लोग नेता योहानान बेन करेह के पीछे बैतलहम के पास एक शिविर में चले गए, जो मिस्र जाने का इरादा रखता था। उन्होंने यरूशलेम में यिर्मयाह से प्रभु का मार्गदर्शन मांगा, आज्ञाकारिता का वादा किया। यिर्मयाह के संदेश में यह आवश्यक था कि वे इस्राएल में रहें और मिस्र न जाएँ। अवज्ञा पूर्ण और तत्काल थी। बाबुल के डर से, वे यिर्मयाह को अपने साथ लेकर यहूदा से चले गए, और मिस्र में प्रवेश किया (41:16–43:7)।

यिर्मयाह ने मिस्र में अपनी सेवकाई बंद नहीं की। तहपन्हेस (43:8–12) में उनके संदेश ने नबूकदनेस्सर द्वारा भूमि पर पराक्रमी जय का आश्वासन दिया, जो 568–567 ईसा पूर्व में हुआ।

मिस्र के सभी हिस्सों से यहूदी निर्वासितों के रूप में अपने भविष्य पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए। यिर्मयाह ने उनकी मूर्तिपूजा की निंदा करने का अवसर लिया। यहूदी महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों ने भी तर्क दिया कि मूर्तियों की सेवा करते समय उन्होंने समृद्धि का आनंद लिया था, लेकिन बंद करने के बाद से उन्हें कष्ट उठाना पड़ा। यिर्मयाह ने वास्तविकता के प्रति उनकी हठी अंधेपन की निंदा की और परमेश्वर का अभियोग लगाया। एक पुष्टिकरण संकेत के लिए, यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि मिस्र के फिरौन होफ्रा की हत्या कर दी जाएगी (44:30), जो 466 ईसा पूर्व में हुआ था। बाइबल में यिर्मयाह के कार्यो का कोई बाद का अभिलेख मौजूद नहीं है। परंपरा कहती है कि यिर्मयाह को तहपन्हेस में यहूदियों की बँधुआई बस्ती के लोगों ने पत्थर मारकर मार डाला था।

हालांकि यिर्मयाह ने अपने जीवन के दौरान लगातार अस्वीकृति का सामना किया, लेकिन उसके इतिहास में कई अप्रमाणिक और पारंपरिक अलंकरणों द्वारा उसे सम्मानित किया गया है।

उन्हें उनके इतिहास में कई अप्रमाणिक और पारंपरिक अलंकरणों द्वारा सम्मानित किया गया है। यीशु ने संभवतः यिर्मयाह को ध्यान में रखते हुए ये बात उनसे कही थी, "हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो।और कहते हो, 'यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके सहभागी न होते।' इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के हत्यारों की सन्तान हो।" (मत्ती 23:29–31)। *देखें* इस्राएल का इतिहास; यिर्मयाह की पुस्तक; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिन।

2. मनश्शे के यरदनपार भाग में परिवार के मुखिया जिन्हें तिग्लत्पिलेसेर ने बंदी बना लिया (1 इति 5:23–26; तुलना करें 2 रा 15:29)।

3. राजा योशियाह की पत्नी हमुतल के पिता (2 रा 23:31; 24:18)।

4. दोनों हाथों से समान रूप से काम करने वाले बिन्यामिनी धनुर्धर और गोफन चलाने वाले, जो दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुए (1 इति 12:4).

5, 6. दो गादी सैनिक जो दाऊद की सेना में शामिल हो गये (1 इति 12:10, 13).

7. निर्वासन के बाद के याजकों ने, जिन्होंने नहेम्याह के साथ अपनी मुहर वाचा पर लगाई थी, की लोगों को परमेश्वर के कानूनों का पालन करने के वादे को नवीनीकृत करेगे (नहे 10:2)। उनका पुनः उल्लेख नए यरूशलेम की दीवार के समर्पण के जुलूस के हिस्से के रूप में किया गया है (12:34)।

8. वे याजक जो जरूब्बाबेल के साथ बँधुआई से लौटे (नहे 12:1) और याजकों के एक परिवार के मुखिया बने (पद 12)।

9. याजन्याह के पिता, जो एक रेकाबी थे जिन्होंने दाखरस पीने से मना कर दिया (यिर्म 35:3)।

यिर्मयाह का पत्र

यिर्मयाह का पत्र एक पुस्तक है जिसे कुछ कलीसिया बाइबल का हिस्सा मानते हैं, लेकिन प्रोटेस्टेंट कलीसिया इसे नहीं मानते। इसे एक अज्ञात यहूदी लेखक द्वारा इब्रानी या अरामी में लिखा गया था। मूल संस्करण अब उपलब्ध नहीं है। आज हमारे पास सेप्टुआजेंट में यिर्मयाह के पत्र का यूनानी अनुवाद है (इब्रानी बाइबल का यूनानी अनुवाद)। विद्वानों का मानना है कि इसे 300 और 100 ईसा पूर्व के बीच लिखा गया था।

यिर्मयाह का पत्र मूर्तियों (झूठे देवताओं की प्रतिमाओं) की पूजा के खिलाफ तर्क प्रस्तुत करता है। यह दावा करता है कि इसे यिर्मयाह द्वारा बाबेल में यहूदियों के बँधुआई में गए लोगों के लिए लिखा गया है, लेकिन यह सम्भावना नहीं है। इसके बजाय, यह सम्भवतः एक समर्पित यहूदी द्वारा अन्य यहूदियों के लिए लिखा गया था जो इस्राएल के बाहर रहते थे और मूर्तियों की उपासना करने के लिए प्रलोभित थे। लेखक कहते हैं, "इसलिए ध्यान रखें कि किसी भी तरह से विदेशियों के समान न बनें। . . . लेकिन अपने हृदय में कहें, 'हे प्रभु, यह आप ही हैं, जिनकी हमें आराधना करनी चाहिए' " (पद 5–6)।

पत्र कारीगरों द्वारा बनाई गई मूर्तियों का उपहास करता है। यह कहता है कि मूर्तियाँ:

- फीकी या क्षतिग्रस्त हो जाती हैं
- आग में जलाया जा सकता है।
- धूल जमा करती हैं
- मन्दिरों में धुएँ से काले हो जाती हैं
- पशुओं के लिए विश्राम स्थल बन जाती हैं
- बोल नहीं सकते हैं या अपनी रक्षा नहीं कर सकते हैं
- मन्दिरों में दीपक नहीं देख सकते हैं
- बलिदान स्वीकार नहीं कर सकते या अपने अनुयायियों की सहायता नहीं कर सकते

चूंकि मूर्तियाँ नकली हैं, वे लोगों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकतीं और राजाओं को अधिकार नहीं दे सकतीं। यिर्मयाह का पत्र एक मूर्ति की सुरक्षा की तुलना निम्न के साथ करते हुए समाप्त होता है:

- ककड़ी के खेत में एक मचान,
- एक बगीचे में कांटेदार झाड़ी, या
- अंधेरे में फेंका गया एक शव (श्लोक 70–71)।

लातीनी वल्गेट में, यिर्मयाह का पत्र बारूक की पुस्तक के अध्याय 6 के रूप में मुद्रित किया गया था। *यह भी देखें* बारूक की पुस्तक।

यिर्मयाह की पुस्तक

पुराने नियम की भविष्यद्वानी की पुस्तक, जो भविष्यद्वक्ताओं के विहित क्रम में दूसरे स्थान पर है।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- प्रामाणिकता
- यिर्मयाह की पुस्तक और सेप्टुआजिंट
- पृष्ठभूमि
- तिथि
- उत्पत्ति और गंतव्य
- उद्देश्य
- शिक्षा
- रूपरेखा और विषय-वस्तु

लेखक

कुछ शंका है कि अनातोत के भविष्यद्वक्ता ने यिर्मयाह की पुस्तक लिखी, फिर भी कुछ भागों, विशेष रूप से अध्याय 52, के बारे में प्रश्न बने रहते हैं। तीसरे व्यक्ति के उपयोग को यिर्मयाह की लेखकत्व को नकारने के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि यिर्मयाह ने एक ही संदर्भ में पहले और तीसरे व्यक्ति, और यहां तक कि दूसरे व्यक्ति का भी उपयोग किया। उदाहरण के लिए, 32:6–7 में लिखा है: "यिर्मयाह ने कहा [तीसरा व्यक्ति], 'यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा: [पहला व्यक्ति] . . . तेरा चचेरा भाई है, वह तेरे पास यह कहने को आने पर है [दूसरा व्यक्ति]' "।

समय बीतने की समस्या, अध्याय 52 के यिर्मयाह लेखकत्व के विरुद्ध सबसे मजबूत तर्क प्रस्तुत करती है। यिर्मयाह का जन्म लगभग 657 ईसा पूर्व हुआ था। एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को लगभग 95 साल बाद रिहा किया (52:31)। यिर्मयाह 52:33 इस समय के बाद की घटनाओं की निरंतरता को संक्षेप में प्रस्तुत करता है। स्थान की समस्या भी यिर्मयाह के लेखन के खिलाफ तर्क देती है, क्योंकि यिर्मयाह ने मिस्र में

निवास किया (43:6–7) जबकि यहोयाकीन बेबीलोन में रहते थे। यह भी ध्यान दें कि यिर्मयाह ने अपने लेखन को अध्याय 51 के साथ समाप्त किया, जिससे अध्याय 52 एक सच्चा संपादकीय परिशिष्ट बन जाता है। चूंकि अध्याय 52, 2 राजा 24:18–25:30 के समानांतर है, यह हो सकता है कि यिर्मयाह के अन्य भाग जो 2 राजा के खंडों के समानांतर हैं, उन्हें यिर्मयाह के अलावा किसी और ने लिखा हो।

निम्न तालिका ऐसे अंशों को दिखाती है और इसमें 2 इतिहास के सामंजस्यपूर्ण अंश शामिल हैं। पहला कॉलम ऐतिहासिक (कालानुक्रमिक) अनुक्रम दिखाता है। अंतिम कॉलम सामग्री का संक्षिप्त सारांश प्रदान करता है।

बारूक ने यिर्मयाह के लिए मुंशी के रूप में सेवा की। दोनों के बीच संबंध संभवतः कई वर्षों तक चला; भविष्यद्वक्ता ने अपने सहायक को प्रोत्साहन के कुछ शब्द दिए (45:5)। लोगों की प्रथा के अनुसार, यह शास्त्री के लिए उचित होता कि वह भविष्यद्वक्ता के कुछ संदेशों को अपने शब्दों में लिखवाता। इससे प्रेरणा का इनकार नहीं होता।

प्रामाणिकता

यह कि यिर्मयाह जीवित था और वास्तव में अपनी पुस्तक के प्रमुख भाग को लिखा था, उसके नाम के साथ यह कई बाइबल और गैर-बाइबल स्रोतों में संदर्भों द्वारा प्रमाणित है (जैसे, दानि 9; एक्क्लुस 49; जोसेफस की *पुरावशेष* 10; तलमूद : *बाबा बत्रा*)। यिर्मयाह के ऐतिहासिक खंडों की सत्यता समकालीन बाइबल की पुस्तकों और बाबेल, मिस्र, और फारस में संरक्षित धर्मनिरपेक्ष इतिहासों में प्रचुर मात्रा में पुष्टि पाती है।

उच्च आलोचकों ने यिर्मयाह के उन अंशों को बदनाम करने की कोशिश की जिन्हें सेप्टुआजिंट द्वारा छोड़ दिया गया था, या शैलीगत अंतरों (उदाहरण के लिए, अध्याय 30–33) या वर्तनी अंतरों (जैसा कि अध्याय 27–29 में पाया जाता है) या भाषाई समस्याओं (जैसे 10:11 में, जो अरामी भाषा में लिखा गया है, लेकिन यह एक व्याख्या हो सकती है) के कारण बाद के लेखक को श्रेय देने की कोशिश की। यिर्मयाह की लेखनी को बदनाम करने का एक और कारण यह है कि आलोचकों ने कुछ भविष्यद्वाणियों की तिथि संदर्भ में दी गई अवधि से बाद की मानी। यह इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि वह भविष्यद्वाणी लेखन को उसके पूर्ति के उल्लेख के बाद मानते हैं। इनमें से कोई भी कारण प्रामाणिकता पर संदेह करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इब्री पाठ को सेप्टुआजिंट पर प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इस अवधि के दौरान यहूदियों के साथ अरामी संपर्क सामान्य हो गया (पुष्टि करें एज्रा 4–7; दानि 2–7) और इसलिए अरामी की उपस्थिति की व्याख्या करता है। अलग-अलग परिस्थितियों और अलग-अलग उद्देश्यों के कारण एक ही लेखक से विभिन्न शैलियों की अपेक्षा की जा सकती है। बारूक को इस पुस्तक के कुछ हिस्सों को लिखाने और/या यिर्मयाह ने जो लिखा उसे संपादित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। भविष्यद्वाणी का पूर्ति से पहले होना विश्वासियों के लिए कोई समस्या प्रस्तुत नहीं करता।

यिर्मयाह की पुस्तक और सेप्टुआजिंट

यिर्मयाह के सेप्टुआजिंट अनुवाद की विशेष समस्याएँ ध्यान देने की मांग करती हैं। सेप्टुआजिंट अनुवादकों ने स्पष्ट रूप से गलत अनुवाद किया है। लगभग 2,300 इब्रानी शब्द सेप्टुआजिंट से गायब हैं। अध्याय 23 के बाद, गलत अनुवाद, चूक, और मिश्रित कालानुक्रमिक निर्देश भ्रम का संकेत देते हैं। हालांकि, मृत सागर कुण्डलपत्रों में इब्रानी और सेप्टुआजिंट निर्देशों के साथ पाठ प्रदर्शित होते हैं, जो दोनों संस्करणों की प्राचीनता को दर्शाते हैं। दोनों को ही लेखकों के हाथों भ्रष्टाचार और युगों के उत्पात का सामना करना पड़ा है। सेप्टुआजिंट स्पष्टतः मूल से बहुत दूर है, फिर भी इसमें कुछ पाठ्य-संबंधी समस्याओं के उत्तर सुझाने में मदद करने के लिए अमूल्य सुराग हैं। सेप्टुआजिंट में सबसे स्पष्ट प्रमुख बदलाव इब्रानी निर्देश के अध्याय 46–51 को हटाने और उन्हें उस स्थान पर रखने में है जहाँ से 25:13ब-14 को हटाया गया था। इन अध्यायों को 26–31 के रूप में पुनः क्रमांकित किया गया है लेकिन इब्रानी मसोरैटिक मूलपाठ के निर्देश से काफी हद तक मिश्रित और परिवर्तित किया गया है।

पृष्ठभूमि

यह पूरी तरह से पिछली प्रविष्टि में चर्चा की गई है। *देखें* यिर्मयाह (व्यक्ति) #1।

तिथि

यिर्मयाह के संदेशों का कालानुक्रमिक क्रम एक बड़ी समस्या है जिसे पूरी तरह से हल नहीं किया जा सकता। फिर भी, यह पुस्तक यिर्मयाह की सेवकाई (लगभग 627–586 ईसा पूर्व) के दौरान लिखी गई थी।

उत्पत्ति और गंतव्य

अनातोत में अपनी सेवकाई शुरू करने के बाद, यिर्मयाह यरूशलेम चला गया, जहां वह तब तक रहा जब तक उसे 584 ईसा पूर्व के आसपास मिस्र में पहुंचा अवज्ञाकारी शरणार्थियों के साथ शामिल होने के लिए मजबूर नहीं किया गया। यहोयाकीन के निर्वासन (597 ईसा पूर्व) तक, यिर्मयाह ने अपने संदेश राजा और यहूदा में निवास कर रहे लोगों को संबोधित किए। बाद के संदेशों में उसी समूह के साथ-साथ बेबीलोन में बंदियों को भी संबोधित किया गया (जैसे, अध्याय 29)। मिस्र जाने के बाद, उसने उस देश में यहूदियों को संबोधित किया।

उद्देश्य

परमेश्वर द्वारा यिर्मयाह को दी गई नियुक्ति का एक हिस्सा यिर्मयाह की सेवकाई के उद्देश्य को स्पष्ट करता है: "सुन, मैंने

आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिये, नाश करने और काट डालने के लिये, उन्हें बनाने और रोपने के लिये" (1:10)। इस नियुक्ति के पहले चार हिस्सों ने यह मांग की कि यिर्मयाह, जिसे राष्ट्रों के "प्रधान राज्यपाल" के रूप में नियुक्त किया गया था, अपने नैतिक और आत्मिक पापों के खिलाफ प्रचार करके मौजूदा धार्मिक और सामाजिक संरचनाओं को नष्ट करें। निस्संदेह, मिस्रियों, अश्शूरियों और बाबेलियों द्वारा किया गया भौतिक विनाश, भविष्यद्वक्ता द्वारा कहे गए सत्य का परिणाम था। यिर्मयाह नैतिक और धार्मिक दुष्टता पर प्रहार करने, बेबीलोन के माध्यम से परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले दण्ड को स्वीकार करने का आह्वान करने, तथा यह आश्वासन देने में सुसंगत है कि ऐसा समर्पण आशीष की ओर ले जाएगा। जब सिदकिय्याह सलाह मांगता है (38:14), तो हमें पता है कि यिर्मयाह क्या कहेगा। जब शरणार्थियों का प्रधान पूछता है कि क्या उन्हें मिस्र जाना चाहिए, तो हमें पहले से ही उत्तर पता है (42:3)। हम पूछताछ करने वाले लोगों की ओर से परमेश्वर के संदेश की हठपूर्वक अस्वीकृति की भी आशा कर सकते हैं, जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर की इच्छा जानना तो चाहते हैं लेकिन उसका पालन करने की कोई इच्छा नहीं रखते हैं।

फिर भी, यिर्मयाह के उद्देश्य का एक भाग अति दूर भविष्य पर केंद्रित है, जब नई वाचा पुरानी वाचा का स्थान लेगी (31:31–37), और एक परिवर्तित प्रजा, जो पाप के स्थान पर आज्ञाकारिता के प्रति समर्पित होगी, परमेश्वर के प्रतिज्ञा किए गए राज्य को प्राप्त करेंगे।

शिक्षा

राष्ट्रीय पाप राष्ट्रीय दण्ड लाता है। कोई भी सत्य इतनी स्पष्टता से नहीं चमकता। अन्यजातियों के साथ-साथ यहूदी भी एक ही न्याय के अधीन हैं, क्योंकि परमेश्वर केवल इस्राएल का परमेश्वर नहीं है।

राष्ट्रों पर ईश्वरीय न्याय में व्यक्तियों को नजरअंदाज नहीं किया जाता है। परमेश्वर प्रत्येक के सामने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग निर्धारित करते हैं (21:8) और प्रत्येक से जीवन चुनने की अपील करते हैं (27:13)।

यिर्मयाह मनुष्य की भ्रष्टता को इस प्रश्न के माध्यम से दर्शाता है कि क्या कूशी अपना चमड़ा, या चीता अपने धब्बे बदल सकता है (13:23)। भ्रष्टता की गहराई मनुष्य की मापने की क्षमता से परे है (17:9–10)। लोग झूठ से भी प्रेम करते हैं (5:30–31)। फिर भी परमेश्वर अपनी इच्छा से उन प्रजा को बदलने का वादा करता है जो उसे पुकारते हैं (33:3), उन्हें एक "नया हृदय" (24:7; 32:38–41) देकर, जो कि नई वाचा (31:33–35) का उत्कर्ष प्रावधान है। मसीह, जो उद्धार का कार्य पूरा करते हैं, उन्हें हमारा प्रभु, हमारी धार्मिकता, राजा, धार्मिक डाली, दाऊद की डाली कहा जाता है (23:5–6; 33:15–16)।

एक भविष्य का देश उन व्यक्तियों से बना होगा जो इस उद्धार को स्वीकार करते हैं। प्रसव पीड़ा की रात से गुजरते हुए (30:6–7), यहूदी अपने मसीह की सच्ची पहचान को समझेंगे, विश्वास करेंगे और पश्चातापी दुःख के साथ उन्हें स्वीकार करेंगे, शुद्ध होंगे (33:8), और सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा सभी देशों से पुनः एकत्रित किए जाएंगे (32:37) (पद 27)।

रूपरेखा और विषय-वस्तु

हालांकि कई लोग कोई तार्किक संरचना नहीं देखते हैं, यिर्मयाह का सावधानीपूर्वक अध्ययन सामग्री के आधार पर एक समूह को प्रकट करेगा, जैसा कि निम्नलिखित रूपरेखा द्वारा सुझाया गया है:

I. परिचय (1)

II. यहूदियों के विरुद्ध भविष्यद्वाणियाँ (2–25)

III. इतिहास—घेराबंदी से पहले यिर्मयाह के संकेत और कष्ट (26–29)

IV. घेराबंदी के समय लिखी गई आशा की पुस्तक (30–33)

V. इतिहास—घेराबंदी के बाद यिर्मयाह के संकेत और कष्ट (34–45)

VI. जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वाणियाँ (46–51)

VII. निष्कर्ष (52)

भविष्यद्वक्ता अपनी सेवकाई की शुरुआत यरूशलेम के पापों के खिलाफ एक श्रृंखला के उच्चारणों के साथ करते हैं (2:1–3:5), इसके बाद समान संदेश (अध्याय 4 तक) आते हैं, जो न्याय के शब्दों के साथ समाप्त होते हैं (अध्याय 5–6)। मन्दिर फाटक में संदेश (अध्याय 7–10) वाचा तोड़ने वालों के खिलाफ घोषणा की ओर ले जाता है (अध्याय 11–13)। सूखा पड़ने पर विलाप (अध्याय 14) और उसके बाद की दुखद घटनाएँ (अध्याय 15) कई समान शोक अभिव्यक्तियों के साथ तुलना की जाती हैं। यिर्मयाह वस्तु पाठों के उपयोग में अन्य भविष्यद्वक्ताओं से भिन्न नहीं था। सड़ा हुआ सनी का कमरबंद (अध्याय 13), टूटा हुआ घड़ा (अध्याय 19), अंजीर (अध्याय 24), और बैल का जूआ (अध्याय 27–28) को मनुष्य वस्तु पाठों द्वारा पूरक किया जा सकता है (अध्याय 35), और यहां तक कि स्वयं भविष्यद्वक्ता भी, जिसकी अविवाहित जीवन (16:1–4), सहानुभूतिपूर्ण सांत्वना का प्रतिरोध (16:5–7), और प्रीतिभोजों से वापसी (16:8–9) सभी ने उनके संदेश को चित्रित और पुष्टि करने का कार्य किया।

वे स्थान जहां यिर्मयाह ने अपने संदेशों की घोषणा की, उन्हें अपनी बात समझाने में मदद मिली। वह सार्वजनिक द्वार पर खड़ा था, जहाँ राजा आते-जाते थे, यह घोषणा करने के लिए कि न्याय (अग्नि) द्वार से आएगा (17:19, 27; 39:3)। फिर

वह कुम्हार के घर गया (अध्याय 18), और फिर हिन्नोम या तोपथ, जिसे वध की तराई कहा जाएगा (अध्याय 19)।

यिर्मयाह द्वारा झेले गए उत्पीड़न का पहले संकेत दिया गया (1:8), फिर भविष्यद्वाणी की गई (पद 19), अपने गृह गांव से निजी तौर पर अपना विष व्यक्त करता है (11:19–23)। भविष्यद्वक्ता के रिश्तेदार विरोध में शामिल हो जाते हैं (12:6)। सार्वजनिक विरोध पिटाई और काठ में डालना लाता है (20:2–3)। यिर्मयाह बोलने और पीड़ित होने की बजाय चुप रहना पसंद करता है (9), लेकिन वह उस शब्द को रोक नहीं सकता जो उसकी हड्डियों में आग की तरह है। परिणामस्वरूप, उसके सभी परिचित उसे फटकारते, उपहास करते, आतंकित करते, और उसकी निंदा करते हैं, फिर उसकी मृत्यु की मांग करते है (7–18)। यिर्मयाह ने याजकों, भविष्यद्वक्ताओं, और लोगों के हाथों मृत्यु से बचाव किया केवल इसलिए क्योंकि उसके पास कुछ विश्वासयोग्य मित्र थे (26:8–24)। जब उसकी भविष्यद्वाणियाँ साकार होने लगीं, तो नफरत बढ़ गई। उसे पीटा गया और झूठे आरोप में कई दिनों तक कारागार में रखा गया (37:14–17)। पहरे के आँगन में अस्थायी राहत (21) केवल कुछ दिनों तक चली। अधिकारी फिर से उसकी मृत्यु की मांग करने लगे (38:4) और उसे एक गड्ढे में डाल दिया, जहां वह कीचड़ में धँस गया (6)। उसका बचाव (10) उसके जीवन को सुरक्षित रखता है, लेकिन पहरे के आँगन में उसकी कैद जारी रहती है (28)। उसकी लेखनियों को काटा और जलाया गया (36:23); उसके शब्दों को नकारा और अस्वीकार किया गया (43:1–7; 44:16)।

"आशा की पुस्तक" (अध्याय 30–33) में कुछ न्याय के शब्द शामिल हैं (32:28–35), और भविष्यद्वाणी के अन्य भागों में कुछ उज्ज्वल बिंदु हैं (3:11–18; 16:14–16; 23:2–8; 29:10–14), लेकिन एक अन्यथा अंधकारमय खंड में, यह चार अध्याय सुखद राहत प्रदान करते हैं। आशा का चरमोत्कर्ष, जैसा कि यिर्मयाह से सबसे लंबी नए नियम उद्धरण में भी संकेतित है (देखें इब्रा 8:8–12), एक नई वाचा की भविष्यद्वाणी करता है (31:31–40)। अन्य भविष्यद्वाणियाँ भी मूसा की व्यवस्था और संस्कार के अंत (उदाहरण के लिए, 3:16) और नई वाचा (32:40; 33:19–26) का वर्णन करती हैं।

यिर्मयाह की गतिविधियों या संदेशों के बारे में 594–589 ईसा पूर्व के आसपास बहुत कम जानकारी है। सिदकिय्याह के सलाहकारों ने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ गठबंधन करके बेबीलोन के जूए को हटाने की गुप्त योजनाएँ बनाईं। संभवतः किसी गद्दार ने बेबीलोन को षड्यंत्र की सूचना दी हो सकती है (शायद एदोम)। बेबीलोन के हमले के बाद, सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से एक आशावादी विवरण माँगा, लेकिन उसे नहीं मिली।

नाज़री शपथ (अध्याय 35) के प्रति रेकाबी विश्वासयोग्य थे और यह यहोयाकीम के दिनों की बात है, परन्तु एक शिक्षाप्रद उदाहरण के रूप में यह घेराबंदी के संदर्भ में उपयुक्त बैठती है। रेकाबियों ने एक मनुष्य की आज्ञा का पालन किया जिसे उन्होंने माना; यहूदियों ने एक ईश्वरीय आज्ञा प्राप्त की जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। रेकाबी लोग धन्य होंगे (35:18–19); यहूदा का न्याय किया जाएगा (पद 15–17)। यहोयाकीम का कुण्डलपत्र पढ़ना और उसका तिरस्कारपूर्ण अस्वीकार (अध्याय 36) भविष्यद्वाणी के कथन को दर्शाता है (35:15) कि विनाश परमेश्वर के संदेश को अस्वीकार करने के बाद आता है, जो भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दिया गया था।

अध्याय 37 में घेराबंदी पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें सिदकिय्याह की एक और पूछताछ शामिल है (गैर-कालानुक्रमिक अध्याय 35–36 एक उदाहरणात्मक कोष्ठक के रूप में कार्य करते हैं)। यिर्मयाह 37:11 589 ईसा पूर्व की घेराबंदी के समाप्त होने के समय की ओर बढ़ता है जब नबूकदनेस्सर ने फ़िरौन होप्रा की सेना को मिस्र वापस खदेड़ दिया। इस राहत के दौरान, यिर्मयाह ने पारिवारिक मामलों को सुलझाने के लिए अनातोत के पास या उसके पास रिश्तेदारों की एक बैठक में भाग लेने का प्रयास किया। शायद इस यात्रा में उस खरीद की शुरुआत शामिल थी जो दो साल बाद की जाएगी (32:6–15)। हालाँकि, जब वह शहर छोड़ रहा था, तो उसे बाबेलियों के पास भागने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और तब तक जेल के कालकोठरी में रखा गया जब तक कि सिदकिय्याह ने उसे विशेषाधिकार प्राप्त कैदी का दर्जा नहीं दे दिया।

राजा के अधिकारियों के पास राजद्रोह का आरोप लगाने के लिए पर्याप्त कारण थे: यिर्मयाह ने पलायन को प्रोत्साहित किया था (21:9; 38:2)। गद्दारों को मृत्यु का हकदार माना जाता था, और यह यिर्मयाह के खिलाफ उनका निर्णय था (38:4–5)। उस समय की हिंसा ने अधिकारियों को क्रूर तरीके से प्राणदण्ड देने के लिए प्रेरित किया: यिर्मयाह को भूखा रहने दे और उसे एक परित्यक्त कुंड के तल में कीचड़ में दफन कर दे। एक सहानुभूतिपूर्ण कूशी, एबेदमेलेक ने बचाव किया। तुरंत, यिर्मयाह के होंठों से फिर से निर्मल न्याय की भविष्यद्वाणियाँ निकलीं, जिसमें राजा के लिए एक संदेश शामिल था जो यिर्मयाह के अपने हालिया अनुभव को दर्शाता था: "तेरे मित्रों ने तुझे बहकाया, और उनकी इच्छा पूरी हो गई; और जब तेरे पाँव कीच में धँस गए तो वे पीछे फिर गए हैं" (38:22)।

यिर्मयाह 39:1–43:7 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन से लेकर मिस्र में पलायन तक के इतिहास को दर्ज करता है, जिसमें यिर्मयाह की मुक्ति (अध्याय 39), गदल्याह की नियुक्ति और हत्या (अध्याय 40–41), मिस्र जाने के खिलाफ परमेश्वर की चेतावनी (अध्याय 42), और लोगों की हठीली अवज्ञा (43:1–7) शामिल है।

यिर्मयाह की नवीनतम लेखनी अध्याय 44 में पाई जाती हैं। श्रोता मूर्तिपूजक यहूदी थे (44:4–6), जो मिस्र के विभिन्न हिस्सों से यहां तक कि असवान (पत्रोस) तक एकत्रित हुए थे। यिर्मयाह ने पूर्ववर्ती नबियों की अपील को दोहराया कि वह झूठे देवताओं को छोड़कर यहोवा को अपनाएं, लेकिन इसका कोई लाभ नहीं हुआ (44:15–16)।

बारूक के लिए संदेश (अध्याय 45), जो लगभग 605 ईसा पूर्व लिखा गया था, पुस्तक के मुख्य भाग को पूरा करने के लिए यहां रखा गया है। यह "तोड़ने" और "उखाड़ने" के आदेश से शुरू होता है (1:10) और वही इब्रानी शब्दों के साथ समाप्त होता है (45:4)। यदि बारूक को अपने भाई सरायाह (51:59) की तरह यहूदिया के दरबार में दर्जा पाने की महत्वाकांक्षा थी, तो उसे सलाह दी गई थी कि यह बेकार होगा क्योंकि आपदा आएगी, जैसा कि पिछले अध्यायों में संकेत मिलता है।

जातियों के खिलाफ भविष्यद्वाणियाँ (46–51), एक शीर्षक परिचय (46:1) द्वारा प्रस्तुत की गई हैं, जो एक विशिष्ट शैलीगत विभाजन का निर्माण करती हैं, जो यशायाह 13–23, यहेजकेल 25–32, और आमोस 1:3–2:16 के समान है।

यिर्मयाह में विदेशी राष्ट्रों के खिलाफ कुछ भविष्यद्वाणियाँ तिथियों के साथ आती हैं, जो यह दर्शाती हैं कि वे उनकी सेवकाई के दौरान विभिन्न समय पर लिखी गई थीं, लेकिन पुस्तक के लिए उन्हें एकत्रित किया गया था।

मिस्र के खिलाफ भविष्यद्वाणी कर्कमीश से मिस्र के निष्कासन (605 ईसा पूर्व) के जीवंत वर्णन के साथ शुरू होती है (यिर्म 46:1–12)। दूसरा संदेश (वचन 13–26) 601 ईसा पूर्व में मिस्र पर हमले की तस्वीर प्रस्तुत कर सकता है जब नको ने नबूकदनेस्सर को सीमा पर रोका; 589 ईसा पूर्व में हमला जब होप्रा सिदकिय्याह की सहायता करने के प्रयास में हार गए; या (सबसे अधिक संभावना) 568 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर द्वारा मिस्र पर आक्रमण, जब बेबीलोन ने मिस्र की कमजोरी का फायदा उठाकर इसे अधीन कर लिया। उस समय नबूकदनेस्सर ने अपनी न्याय सिंहासन स्थापित की जैसा कि भविष्यद्वाणी की गई थी (43:10) और सभी विद्रोहियों को मृत्यु दंड दिया, जिसमें वे यहूदी भी शामिल थे जो संभवतः बेबीलोन विरोधी साजिशों में शामिल थे। मिस्र की भविष्यद्वाणी का निष्कर्ष आशा की पुस्तक के एक भाग को दोहराता है (46:27–28, पुष्टि करें 30:10–11)।

एदोम, अरब, फीनीके शहरों, और अम्मोन के खिलाफ संदेश आमतौर पर घमंड, क्रूरता, और मूर्तिपूजा के लिए दोषी ठहराते हैं। एलाम के खिलाफ भविष्यद्वाणी अद्वितीय है। कोई अन्य भविष्यद्वक्ता इन लोगों के खिलाफ न्याय की बात नहीं करता, जिनका निवास बेबीलोन के पूर्व में था, जिनका यहूदा के साथ दुर्लभ संपर्क था। यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि एलाम बर्बाद होगा, फिर बहाल होगा। यहेजकेल अधोलोक के निवासियों में एलामियों को गिनते हैं (यहे 32:24)।

अंतिम निर्णय भविष्यद्वक्ता के निष्पक्ष दृष्टिकोण को दर्शाता है। उसके संदेशों ने उसे बेबिलोनियों के साथ एक लाभकारी स्थिति में रखा, जिन्होंने उसके साथ आदर और दयालुता से व्यवहार किया, जो अन्य यहूदियों के प्रति उसकी क्रूरता के विपरीत था। लेकिन जब परमेश्वर ने बेबीलोन के खिलाफ बोला, तो यिर्मयाह ने परमेश्वर के शब्दों को बिना अपने आराम की परवाह किए, निडरता से कहा, जैसे उसने मिस्र के खिलाफ बोला था जब आत्म-संरक्षण के लिए चुप रहना तर्कसंगत होता।

अध्याय 51 "यिर्मयाह के वचनों" को समाप्त करता है।

अध्याय 52 उन ऐतिहासिक तथ्यों को दोहराता है जो पहले यिर्मयाह द्वारा भविष्यद्वाणी के रूप में बताए गए थे, और आंशिक रूप से अध्याय 39 में इतिहास के रूप में भी दर्ज हैं (पुष्टि करें 2 रा 25 और 2 इति 36)। यिर्मयाह के संपादक ने स्पष्ट रूप से यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी की ऐतिहासिक पुष्टि के साथ पुस्तक को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाना चाहा, लेकिन उसने अन्यत्र शामिल तथ्यों से परे तथ्य भी शामिल किए।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; यिर्मयाह (व्यक्ति) #1; भविष्यद्वानी; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिन।

यिशपान

यिशपान

शाशक के पुत्र और बिन्यामीन के गोत्र में एक अगुवा (1 इति 8:22)।

यिशबह

यिशबह

फिरौन की बेटी बित्या से मेरेद का पुत्र (1 इति 4:17)।

यिशबाक

कतूरा के द्वारा अब्राहम के पुत्रों में से एक (उत 25:2; 1 इति 1:32)।

यिशबोबनोब

यिशबोबनोब

विशालकाय जिसने लगभग दाऊद को मार डाला। पलिश्तियों के साथ अपनी कई लड़ाइयों में से एक के दौरान,

दाऊद कमजोर हो गए और यिशबोबनोब द्वारा लगभग मारे गए। अबीशै ने विशालकाय को मार डाला और दाऊद का जीवन बचाया (2 शमू 21:16)।

यिशमरै

यिशमरै

एल्पाल का पुत्र और बिन्यामीन के गोत्र में एक प्रमुख व्यक्ति (1 इति 8:18)।

यिशमायाह

यिशमायाह

1. बिन्यामीन के गोत्र का योद्धा जो राजा शाऊल के विरुद्ध सिकलग में दाऊद के साथ शामिल हुआ। यिशमायाह दाऊद के उन योद्धाओं में से एक थे जो दोनों हाथों से तीर और गोफन चलाने में निपुण थे (1 इति 12:4)।

2. ओबद्याह के पुत्र, दाऊद के समय में जबूलून के गोत्र में एक प्रधान अधिकारी थे (1 इति 27:19)।

यिशी

यिशी

1. अप्पैम के पुत्र, शेशान का पिता और यरहमेल की वंशावली के माध्यम से यहूदा का वंशज (1 इति 2:31)।

2. यहूदा के गोत्र से पुरुष, जिनके वंशज जोहेत और बेनजोहेत थे (1 इति 4:20)।

3. शिमोनियों के चार पुत्रों ने 500 लोगों का नेतृत्व किया और सेईर पर्वत पर गए, जहाँ उन्होंने बचे हुए अमालेकियों को नष्ट कर दिया और अपने लोगों को बसाया (1 इति 4:42)।

4. यरदन के पूर्व मनश्शे के आधे गोत्र के मुख्यों में से एक (1 इति 5:24)।

5. परमेश्वर का नाम, जिसका अर्थ है "मेरे पति," जिससे इस्राएल एक दिन उनका संबोधन करेगा (होश 2:16)।

यह भी देखें परमेश्वर का नाम।

यिशै (व्यक्ति)

ओबेद का पुत्र और रूत और बोअज का पोता (रूत 4:17, 22)। यिशै बैतलहम का एक चरवाहा था। उसके आठ बेटे थे, जिनमें दाऊद सबसे छोटा था। उसकी कम से कम दो बेटियाँ थीं, सरूयाह और अबीगैल, जो प्रसिद्ध योद्धाओं की माताएँ बनीं।

जब शमूएल यिशै के घर एक राजा की खोज और अभिषेक करने गए, तो यिशै ने पहले दाऊद को परीक्षा के लिए बुलाना उचित नहीं समझा (1 शमू 16:11)। बाद में उसने दाऊद को शाऊल के लिए वीणा बजाने के लिए भेजा (पद 19–21)। जब दाऊद शाऊल से भागने लगा, तब यिशै और परिवार के अन्य सदस्य अदुल्लाम की गुफा में दाऊद के पास आए। फिर दाऊद अपने पिता और माता को मोआब के मिस्पा में लाया (22:3)। यिशै के बारे में आगे कुछ नहीं सुना गया।

शाऊल के दाऊद से अलग होने के बाद, वह आमतौर पर दाऊद को तिरस्कारपूर्वक "यिशै का पुत्र" कहकर पुकारता था ताकि उसके विनम्र मूल को रेखांकित किया जा सके (1 शमू 20:31; 22:7)। यिशै के जीवन में इस विनम्र पद पर यही जोर यशायाह 11:1 और 10 जैसे मसीहाई संदर्भों में पाया जाता है, जो "यिशै के ठूँठ से डाली" और "यिशै की जड़" की बात करते हैं।

यह भी देखें दाऊद; यिशै की जड़।

यिशै की जड़

यशायाह द्वारा उपयोग की गई एक अलंकारिक अभिव्यक्ति (यशा 11:10), जो दाऊद की वंशावली से आने वाले मसीही राजा (messianic king) की आशा को व्यक्त करती है। किसी परिवार की "जड़" उसका पहला सदस्य होता है। यिशै, जो दाऊद का पिता है, मसीह का पूर्वज है (यशा 11:1, 10; मत्ती 1:5–6; लूका 3:32; प्रेरि 13:22–23)। यशायाह, अश्शूर पर परमेश्वर के न्याय को एक जंगल के काटे जाने के रूप में वर्णित करता है (यशा 10:33–34)। यहूदा भी काटा जाएगा और दाऊद की राजशाही का गर्वीला "वृक्ष" गिर जाएगा, लेकिन एक छोटा टुकड़ा बचेगा, जिसे यशायाह एक ठूँठ से निकलने वाली शाखा के रूप में वर्णित करता है (यशा 6:13)। मसीही-शाखा (messianic shoot) यिशै के ठूँठ से अंकुरित होगी। प्रभु का आत्मा वास इसमें करेगा, जो लोगों के लिए एक संकेत होगा, ताकि सभी प्रभु की महिमा की खोज करें (यशा 11:1–10; देखें यशा 53:2; यिर्म 23:5; 33:15; यहेज 17:22–23; जक 3:8; 6:12)।

प्रेरित पौलुस ने यशायाह की भविष्यवाणी का उद्धरण देते हुए कहा कि यीशु "यिशै की जड़" है जिसमें अन्यजातियों की आशा है (रोम 15:12)। मसीह केवल "यिशै के ठूंठ से एक अंकुर" (यशा 11:1) ही नहीं है, बल्कि स्वयं "यिशै की जड़" है (यशा 11:10; रोम 15:12; देखें प्रका 5:5; 22:16, "दाऊद की जड़")। इसका अर्थ यह है कि यीशु केवल यिशै की वंशावली से नहीं आया, बल्कि यिशै (और दाऊद) यीशु से आए। दूसरे शब्दों में, यिशै की जड़ की छवि यीशु की दिव्यता

की ओर संकेत करती है। यीशु, दाऊद का पुत्र था, पर यीशु, दाऊद का "प्रभु" भी था। यही बात यीशु ने अपने समय के धार्मिक प्रधानो के साथ अपनी बहस में कही, जो सोचते थे कि मसीह केवल दाऊद का मानव वंशज है। मत्ती 22:42–45 में लिखा है: “मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किसकी सन्तान है?” उन्होंने उससे कहा, “दाऊद की।” यीशु ने उनसे कहा, “तो दाऊद आत्मा में होकर उसे 'प्रभु' क्यों कहता है? क्योंकि वह कहता है: ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दाहिने बैठ जब तक मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ।’" तो यदि दाऊद उसे ‘प्रभु’ कहता है, तो वह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?”

यह भी देखें मसीह संबंधी शास्त्र; दाऊद; यीशु मसीह की वंशावली; यिशै (व्यक्ति); यीशु मसीह की शिक्षाएँ।

यिशै की जड़

यिशै की जड़

देखें यिशै की जड़।

यिश्मा

यिश्मा

यहूदा के गोत्र से एताम के पुत्र (1 इति 4:3)।

यिश्वा

यिश्वा*

आशेर के पुत्र यिश्वा की केजेवि वर्तनी, जो उत्पत्ति 46:17 में है। *देखें* यिश्वा।

यिश्वा

यिश्वा

आशेर का पुत्र (उत 46:17; 1 इति 7:30)।

यिश्वी

आशेर के पुत्र, यिश्वी के वंशज (गिन 26:44)। *देखें* यिश्वी #1।

यिश्वी

यिश्वी

1. आशेर का तीसरा पुत्र (उत 46:17; 1 इति 7:30) और यिश्वीयों के कुल का संस्थापक (गिन 26:44)।

2. ईशबोशेत का एक रूपांतर, राजा शाऊल के पुत्रों में से एक (1 शमू 14:49)।

यिश्वी

यिश्वी*

उत्पत्ति 46:17 में आशेर के पुत्र यिश्वी का केजेवी प्रतिपादन। *देखें* यिश्वी #1।

यिश्वी, यिश्वी

यिश्वी और यिश्वियों का केजेवी रूप, गिनती 26:44 में आशेर के वंशजों में से एक और उसका परिवार। *देखें* यिश्वी #1।

यिश्शियाह

यिश्शियाह

हारीम के पुत्र, जिन्होंने एज्रा के अन्यजाति पत्नी को तलाक देने के उपदेश का पालन किया (एज्रा 10:31)।

यिश्शियाह

यिश्शियाह*

एज्रा 10:31 में हारीम के पुत्र यिश्शियाह का वैकल्पिक प्रस्तुतिकरण। *देखें* यिश्शियाह।

यिश्शिय्याह

यिश्शिय्याह

1. इस्साकार के गोत्र से यिज्रह्याह के पुत्र (1 इति 7:3)।

2. बिन्यामीन के गोत्र से योद्धा, जो राजा शाऊल के खिलाफ संघर्ष में दाऊद के साथ शामिल हुए। यिश्शिय्याह उन

योद्धाओं में से एक थे जो दोनों हाथों से तीरंदाजी और गोफन चलाने में निपुण थे (1 इति 12:6)।

3. उज्जीएल के पुत्र, जो लेवी के गोत्र से हैं (1 इति 23:20; 24:25)।

4. लेवी के गोत्र से रहब्याह के पुत्र और मूसा के वंशज (1 इति 24:21)।

यिसहार

यिसहार

1. कहात के पुत्रों में से एक, जो लेवी के गोत्र से था (निर्ग 6:18, 21; गिन 3:19; 16:1; 1 इति 6:2, 18, 38; 23:12, 18), और यिसहारियों के कुल का पिता (गिन 3:27; 1 इति 24:22; 26:23, 29); इसे 1 इतिहास 6:22 में अम्मीनादाब भी कहा गया है। यिसहार के पुत्रों में से एक कोरह था, जिसने मूसा और हारून के खिलाफ बलवे का नेतृत्व किया (गिन 16:1–11)।

2. यहूदा के गोत्र से हेला का पुत्र (1 इति 4:7)।

यिसहार, यिसहारी

कहात के पुत्र यिसहार और उनके वंशजों की केजेवी वर्तनी (गिन 3:19, 27)। *देखें*यिसहार #1।

यिसहारी

लेवी के गोत्र से यिसहार के वंशज (गिन 3:27; 1 इति 24:22; 26:23, 29)। *देखें*यिसहार #1।

यिस्का

यिस्का

हारान की बेटी और मिल्का की बहन (उत 11:29)।

यिस्पा

बिन्यामीन के गोत्र से बरीआ के पुत्र (1 इति 8:16)।

यिस्मक्याह

यिस्मक्याह

हिजकिय्याह के सुधार के दौरान परमेश्वर के भवन में समर्पित चीजों के लेवियों के अधिकारी थे (2 इति 31:13)।

यिस्री

यिस्री

मन्दिर के संगीतकारों और 24 याजकों के विभागों में से चौथे विभाग के प्रमुख, जो निवासस्थान में संगीतकारों के रूप में सेवा करते थे (1 इति 25:11)। उन्हें 1 इतिहास 25:3 में सरी कहा गया है।

यीएल

यीएल

1. 1 इतिहास 9:35 में राजा शाऊल के पूर्वज यीएल की एक वर्तनी। *देखें*यीएल #2।

2. होताम के पुत्र यीएल की एक वर्तनी जिसका उल्लेख 1 इतिहास 11:44 में है। *देखें*यीएल #3।

3. एक लेवी संगीतकार, जिसने दाऊद द्वारा नियुक्त अन्य लेवियों के साथ, यरूशलेम में सन्दूक के स्थानांतरण के समय वीणा बजाई (1 इति 15:18–20)। बाद में, उसे पवित्रस्थान में संगीत की स्थायी सेवकाई के लिए नियुक्त किया गया (1 इति 16:5)।

4. गेर्शोन के परिवार के लेवियों में लादान के घर का प्रधान (1 इति 23:8)। वह दाऊद के शासनकाल के दौरान मंदिर के खजाने का अधिकारी था—एक पद जो परिवार में जारी रहा प्रतीत होता है (29:8)—और यहोएली या यहोएलियों नामक एक याजकीय परिवार का संस्थापक था (26:21–22)।

5. हकमोनी का पुत्र, जिसे दाऊद के चाचा योनातान (जो एक सलाहकार और शास्त्री था) के साथ, राजा के पुत्रों की देखभाल के लिए एक शिक्षक और सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया था (1 इति 27:32)।

6. यहूदा के राजा यहोशापात का पुत्र, जिसे उसके पिता ने यहूदा के एक किलेबंद शहर पर नियुक्त किया था (2 इति 21:2)। जब यहोराम राजा बना, तब उसने उसको और उसके पांच भाइयों को मार डाला।

7. हेमान के परिवार के कहातियों में से एक लेवी, जिसने राजा हिजकिय्याह के सुधारों में सहायता की (2 इति 29:14, "यहुएल")। वह वही लेवी हो सकता है जिसे पवित्र भेंटों के

स्वागत और वितरण की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया गया था (2 इति 31:13)।

8. योशिय्याह के धार्मिक सुधारों के समय मंदिर के प्रधान अधिकारियों में से एक (2 इति 35:8); उसने महान फसह सेवा के लिए कई बलिदान प्रस्तुत किए।

9. योआब के घराने से ओबद्याह का पिता; वह एज्रा के साथ बाबेल से लौटा (एज्रा 8:9)।

10. एलाम के पुत्रों में से एक और शकन्याह का पिता। वह एज्रा के विवाह सुधारों से जुड़ा था (एज्रा 10:2) और संभवतः वही यहीएल था जिसने अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक दिया था (पद 26)।

11. वह याजक जो उन लोगों में से था जिन्हें एज्रा ने अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक देने के लिए राजी किया था (एज्रा 10:21)।

यीएल

यीएल

1. रूबेन के गोत्र में प्रमुख (1 इति 5:7)।

2. बिन्यामिन वंशी जो गिबोन में रहता था और इस्राएल के पहले राजा, शाऊल का पूर्वज था (1 इति 8:29; 9:35)।

3. दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक (1 इति 11:44)। वह संभवतः ऊपर वर्णित #1 के समान है।

4. पवित्रस्थान में लेवी द्वारपाल। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने एक संगीतकार के रूप में भी सेवा की थी (1 इति 15:18, 21; 16:5b)। 1 इतिहास 16:5अ का यीएल संभवतः एक अलग संगीतकार है।

5. लेवियों में से आसाप का वंशज और एक भविष्यद्वक्ता का पूर्वज, जिसका नाम यहजीएल था (2 इति 20:14)।

6. राजा उज्जियाह की सेना के लिए मुंशी, जो राजा की सेना की सैन्य "सूचियाँ" या "गिनती" तैयार करता या रखता था (2 इति 26:11)।

7. 2 इतिहास 29:13 में यूएल, एलीसापान के वंशज की वर्तनी। *देखें*यूएल #2।

8. लेवी अगुवा जिसने राजा योशियाह के शासनकाल के दौरान फसह के भेंट में योगदान दिया (2 इति 35:9)।

9. एज्रा 8:13 में अदोनीकाम के वंशज यूएल की केजेवी वर्तनी। *देखें*यूएल #3।

10. नबो का वंशज, जिसको बँधुआई के युग के दौरान विदेशी पत्नियों को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:43)।

यीशु

1. यह नाम "उद्धारकर्ता" या "यहोवा [याहवे] उद्धार है" का अर्थ देता है, जो मसीहा को दिया गया। देखें यीशु मसीह।

2. यहोशू, नून के पुत्र का केजेवी अनुवाद, प्रेरितों के काम 7:45 और इब्रानियों 4:8 में। *देखें*यहोशू (व्यक्ति) #1।

3. यहूदी मसीही, जिनका उपनाम यूस्तुस था, जिन्होंने कुलुस्सियों के विश्वासियों को पौलुस के पत्र में नमस्कार भेजा (कुल 4:11)।

यीशु का कुँवारी से जन्म

मत्ती 1 और लूका 1–2 की जन्म कथाओं से लिया गया सिद्धांत, जिसमें कहा गया है कि यीशु मसीह पवित्र आत्मा से गर्भ में आए और कुँवारी मरियम से जन्मे। देहधारण की पूरी अवधारणा (साथ ही यीशु की परमेश्वरीय और मानव प्रकृति) इस ऐतिहासिक घटना पर अपनी नींव के रूप में केंद्रित है। साथ ही, तर्कवादी और साहित्यिक आलोचक इस चमत्कार को नकारते हैं, यह कहते हुए कि इसे प्रारंभिक मसीहियों द्वारा बनाया गया था।

पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ

यशायाह 7:14 कहता है कि एक “कुमारी” “गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी . . इम्मानुएल,” और मत्ती 1:22–23 स्पष्ट रूप से बताता है कि यह यीशु के जन्म में पूरा हुआ। इस अंश पर बहुत बहस हुई है, खासकर जब से रिवाइज्ड स्टैण्डर्ड संस्करण ने किंग जेम्स संस्करण “कुँवारी” को “युवा महिला” में बदल दिया, जो मूल हस्तलिपियों में शब्द की अस्पष्टता पर आधारित है। इब्री ‘अल्माह' आमतौर पर एक युवा लड़की को संदर्भित करता है जो यौवन पार कर चुकी है और विवाह योग्य उम्र की है। एक अन्य इब्री शब्द *(*बेतुलाह*)* एक महिला को निर्दिष्ट करता है जो एक कुँवारी है। फिर भी, सेप्टुआजिंट अनुवादकों ने ‘अल्माह' का अनुवाद पार्थेनोस किया, जो एक कुँवारी को दर्शाता है।

इन भाषाई विचारों से निम्नलिखित चार व्याख्याएँ उत्पन्न होती हैं:

1. “कुमारी” (यशा 7:14) आहाज की नई पत्नी थी और उनका पुत्र हिजकिय्याह था। जब आहाज ने शासन करना शुरू किया, तब हिजकिय्याह नौ वर्ष का था, इसलिए यह भविष्य की भविष्यवाणी होनी चाहिए।

2. वह यशायाह की पत्नी थी और उनके पुत्र महेर्शालाल्हाशबज थे। कई विद्वान इस व्याख्या का समर्थन करते हैं क्योंकि 'अल्माह' के साथ निश्चित लेख यह संकेत देता है कि "महिला" यशायाह और आहाज को ज्ञात थी और

क्योंकि यशायाह 7:14–16 यह संकेत देता है कि भविष्यद्वाणी यशायाह के समय में पूरी होनी थी। कठिनाई यह है कि यशायाह की पत्नी के पहले से ही एक पुत्र था, इसलिए उन्हें 'अल्माह' नहीं कहा जा सकता था।

3. यह भविष्यवाणी पूरी तरह से मसीहाई है। यह पारंपरिक सुसमाचारी दृष्टिकोण है, जो बालक इम्मानुएल के नाम, "परमेश्वर हमारे साथ" और संदर्भ (यशा 9:6–7; 11:1–5) पर आधारित है, जो एक दिव्य व्यक्ति की ओर संकेत करता है।

4. हाल ही में कई इंजीलवादियों ने चौथी व्याख्या का विकल्प चुना है, जो ऐतिहासिक पूर्ति (यशायाह के दिनों में) और भविष्य की पूर्ति के तर्कों को स्वीकार करता है। यह दृष्टिकोण यशायाह 7:15–16 में निहित ऐतिहासिक पूर्ति को ध्यान में रखता है, जबकि भविष्य को यीशु के कुँवारी जन्म के माध्यम से पूरा होते हुए देखता है, जैसा कि मत्ती 1:22–23 में इंगित है।

सुसमाचार अभिलेख

न तो मरकुस और न ही यूहन्ना मसीह के जन्म का विवरण देते हैं; वास्तविक घटना केवल मत्ती और लूका में वर्णित है। दोनों इस बात पर सहमत हैं कि एक "कुँवारी," मरियम पवित्र आत्मा से गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र, यीशु को जन्म दिया। मत्ती का विवरण सरल और अधिक प्रत्यक्ष है, जो मसीहा के जन्म को परमेश्वरीय उत्पत्ति से जोड़ता है और मसीही महत्व को उजागर करता है। यीशु को "मसीह [या मसीहा]" दाऊद की सन्तान (मत्ती 1:1) कहा गया है, जो परमेश्वर के राज्य का उद्घाटन करने आते हैं। यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति (पद 22–23) और उनकी गर्भधारण की प्रकृति (पद 18–20) दोनों से प्रमाणित होता है कि यीशु "परमेश्वर हमारे साथ" हैं, जो अब "अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करने" के लिए आए हैं (पद 21)। वह दृश्य, जिसमें यूसुफ ने मरियम को गुप्त रूप से तलाक देने का निर्णय लिया, चमत्कारी गर्भधारण को और अधिक बल देने के लिए जोड़ा गया है।

लूका ने मरियम के दृष्टिकोण से जन्म की कहानी सुनाई। स्वर्गदूत गब्रिएल ने उनसे मुलाकात की और घोषणा की कि वे मसीह को जन्म देंगी (लूका 1:26–38)। उन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा चमत्कारिक रूप से गर्भ धारण किया, जैसा कि स्वर्गदूत गब्रिएल ने भविष्यद्वाणी की थी: "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा" (पद 35)। लूका ने मरियम को परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रति भक्ति से समर्पित होने के रूप में चित्रित किया।

कलीसिया के लिए धर्मशास्त्रीय महत्व

कलीसिया की शुरुआत से ही, कुँवारी जन्म का सिद्धांत एक उच्च मसीह संबंधी धर्मविज्ञान की नींव बन गया। कुछ शुरुआती कलीसिया के पिताओं ने इसे यीशु के जीवन की किसी भी अन्य घटना से अधिक महत्व दिया, क्योंकि यह यीशु के देहधारण और परमेश्वरत्व का प्रमाण था। जस्टिन मार्टियर और इग्नाटियस ने दूसरी शताब्दी की शुरुआत में विरोधियों के खिलाफ कुँवारी जन्म का बचाव किया और उस शुरुआती समय में भी यह एक निश्चित सिद्धांत प्रतीत हुआ। अगली तीन शताब्दियों की बहसों में, कुँवारी जन्म एक प्रमुख मुद्दा बन गया। मार्सियन जैसे गूढ़ज्ञानवादियों ने तर्क दिया कि मसीह सीधे स्वर्ग से उतरे थे इसलिए वे कभी भी वास्तव में मानव नहीं थे। दूसरी ओर, एरियन जैसे उनके परमेश्वरत्व को नकारने वाले समूहों ने भी कुँवारी जन्म को नकारा, यह कहते हुए कि उनके बपतिस्मे के समय यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में "गोद लिया" गया था। 325 ई. में निकिया की सभा ने पुष्टि की कि यीशु वास्तव में परमेश्वर थे और फिर 451 ई. में चाल्सीडॉन की सभा ने कहा कि यीशु एक ही समय में मानव और दिव्य थे, जो उनके इन सच्चे प्रकृतियों का एक "हाइपोस्टेटिक यूनियन" था। इन्हें पाँचवीं सदी के प्रेरितों के धर्म-सिद्धांत में संक्षेपित किया गया है, जो घोषणा करता है, "मैं विश्वास करता हूँ ... यीशु मसीह, उनके इकलौते पुत्र, हमारे प्रभु, पवित्र आत्मा से गर्भित, कुँवारी मरियम से जन्मे।" अधिकांश धर्म-सिद्धांतों में कुँवारी जन्म को भी यीशु की पापहीनता से जोड़ा गया है, क्योंकि उनका देहधारी और दिव्य स्वभाव उनकी पापहीनता का स्रोत है।

शुरुआत ही से, जैसा कि मत्ती और लूका में और प्रारंभिक पितृसत्तात्मक लेखकों में प्रमाणित है, कुँवारी जन्म कलीसिया का एक केंद्रीय सिद्धांत रहा है। इस प्रकार, यह यीशु की दोहरी प्रकृति का एक जीवंत प्रतीक है: पवित्र आत्मा और स्त्री से जन्मा, वह देहधारी परमेश्वर-मनुष्य हैं।

देखें मसीह संबंधी धर्मविज्ञान; देहधारण; यीशु मसीह का जीवन और उनकी शिक्षाएँ; कुँवारी।

यीशु की शिक्षाएँ

देखें यीशु मसीह का जीवन और उनकी शिक्षाएँ।

यीशु के सात अन्तिम वचन

यीशु के वे वचन जो उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने और उनकी मृत्यु के बीच दर्ज किए गए थे। ये सात वाक्य किसी एक सुसमाचार में नहीं पाए जाते हैं। इसके बजाय, पहले दो और सातवां केवल लूका में पाए जाते हैं; तीसरा, पाँचवाँ, और छठा, केवल यूहन्ना में; और चौथा, मत्ती और मरकुस दोनों में। क्रम

पारम्परिक है; क्योंकि कोई भी सुसमाचार उन सभी को दर्ज नहीं करता है, यह अनिश्चित है कि वे वास्तव में किस क्रम में आए थे। यह भी अज्ञात है कि क्या यीशु ने क्रूस से अन्य बातें कही थीं या क्या सात कथन लंबे कथनों का सारांश हैं। लेकिन सूली पर चढ़ाए जाने के आघात को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि उन्होंने केवल यही कहा हो।

1."हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं" (लूका 23:34)।

यह सात अन्तिम वचनों में से एकमात्र ऐसा है जिसकी प्रामाणिकता पर सवाल उठाया गया है, क्योंकि कई बेहतरीन यूनानी पांडुलिपियों में यह शामिल नहीं है। भले ही संदेह का एक तत्व मौजूद हो (सबूत काफी हद तक संतुलित है), यह निश्चित रूप से यीशु और उनके प्रेम के बारे में ज्ञात तथ्यों के अनुरूप है, चाहे लूका ने इसे मूल रूप से दर्ज किया हो या नहीं। कुछ ही पदों के पहले, यीशु ने अपने से अधिक दूसरों की चिंता दिखाई (लूका 19:41; 22:50–51; 23:28)। यीशु ने अपनी खुद की शिक्षा का पालन किया और उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो उसे प्रताड़ित कर रहे थे (लूका 6:27–28)—मानवजाति को ऐसा करने के लिए इससे बड़ा कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता था। निश्चित रूप से सैनिक और यहूदी प्रधान पूरी तरह से अनजान नहीं थे कि वे क्या कर रहे थे (cf. प्रेरितों के काम 3:17), लेकिन क्योंकि वे अपने कार्य के वास्तविक महत्व को नहीं जानते थे, वे अज्ञानी थे। मसीह लोगों के लिए, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर" अनुरोध कारण से ज़्यादा महत्वपूर्ण है, जैसा कि स्तिफनुस ने अपने शहीद होने पर इसे पुनः कहा (प्रेरि 7:60)। अंत में, क्षमा किसी कारण की मांग नहीं करती; यह अनुग्रह है।

2. "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा" (लूका 23:43)।

लूका इस कथन को मृतकों के निवास के बारे में सिखाने के लिए नहीं, बल्कि विश्वास के प्रति प्रभु की प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए दर्ज करते है। एक अपराधी समझदारी से उपहास करने वाली भीड़ में शामिल हो जाता है और केवल मौन प्राप्त करता है (लूका 23:40), लेकिन दूसरा आश्चर्यजनक रूप से न केवल यीशु की निर्दोषता को पहचानता है बल्कि यह भी समझता है कि क्रूस राज्य के लिए केवल एक प्रस्तावना थी (वचन 40–42)। यीशु ने उस व्यक्ति से वादा किया कि वह उसके साथ स्वर्ग में रहेगा। यहाँ फिर से अनुग्रह है, जिसे माँगा गया और प्राप्त किया गया।

3. "हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है! ... देख, यह तेरी माता है!" (यूहन्ना 19:26–27)।

यूहन्ना यीशु को पूरी तरह से स्थिति पर नियंत्रण में चित्रित करता है। इस बिंदु पर वह नियंत्रण स्पष्ट है, क्योंकि वह अपने स्वयं के कष्ट पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय शांति से अपनी माता की देखभाल करता है। मरियम भी पीड़ित थी क्योंकि "तलवार" ने उनके हृदय को छेद दिया (लूका 2:35)। यीशु, जो अब उनके पुत्र से कहीं अधिक उनके प्रभु है, अपने स्वाभाविक और आत्मिक सम्बन्धों को याद करते है। यह ज्ञात नहीं है कि यीशु के भाई मरियम की देखभाल के लिए क्यों नहीं थे, या उन्होंने फसह का पर्व क्यों नहीं मनाया। यह भी अज्ञात है कि प्रिय चेले को क्यों चुना गया, लेकिन सम्भवतः उसे इसलिए चुना गया क्योंकि वह वहां कलवरी में था और वह विश्वसनीय था।

4."हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)।

यह अब पहले तीन वचनों की तुलना में घंटों बाद है, गहरे अंधेरे में जो पिछले तीन घंटों से कलवरी में छाया हुआ था। अचानक यीशु ने भजन संहिता 22 के पहले वचन पुकारकर कहे। मरकुस ने उन्हें यीशु की मातृभाषा अरामी में दर्ज किया, जबकि मत्ती ने उन्हें इब्रानी में बदल दिया। पुकारने का अर्थ (जिसे छोड़ दिये जाने का पुकारना कहा जाता है) विभिन्न रूपों में समझाया गया है जैसे कि मानवीय भावना की अभिव्यक्ति है यह कथन कि परमेश्वर ने उन्हें नहीं बचाया, परमेश्वर से अलग होने की अभिव्यक्ति क्योंकि वह पाप को सहन कर रहे थे, या पूरे भजन का हवाला देते हुए इसके विजयी अन्त का इरादा किया गया है। हालांकि इस पुकार की पूरी गहराई रहस्य है जिसे केवल यीशु और उनके पिता जानते हैं, यह सम्भव है कि, क्योंकि यह भजन परमेश्वर से न्याय की पुकार है, यीशु यहाँ उसी की मांग कर रहे हैं।वह परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि वह दिखाए कि वह वास्तव में परमेश्वर का चुने हुए है। याचिका का उत्तर इस प्रकार दिया गया कि परमेश्वर ने तीन दिन बाद अपने पुत्र को मृतकों में से जीवित किया।

5. "मैं प्यासा हूँ" (यूहन्ना 19:28)।

सूली पर चढ़ाए जाने की शुरुआत में, यीशु को क्रूस की पीड़ा को कम करने के लिए गन्धरस मिला हुआ दाखरस पेश किया गया था। उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया (मत्ती 27:34; मरकुस 15:23)। अब, गंभीर रूप से निर्जलित, यीशु सिपाही के सिरके को स्वीकार करते हैं (यूह 19:29), जो उनकी अन्तिम पुकार के लिए उनकी इंद्रियों को तेज कर देगी। उन्हें इसकी आवश्यकता थी, क्योंकि वे छह घण्टे से वहाँ लटके हुए थे। शायद यीशु के जीवन में कहीं भी हम उनकी पूरी मानवता को इतनी स्पष्टता से नहीं देख पाते हैं जितना यहाँ पर। यूहन्ना ने इस कार्य को भजन संहिता 22:15 (और शायद भजन 69:21) की पूर्ति के रूप में देखा।

6. "पूरा हुआ" (यूह 19:30)।

यूहन्ना इस सरल कथन के साथ क्रूस पर चढ़ाने का विवरण पूरा करते हैं (यूनानी में एक ही वचन)। वाक्य स्वाभाविक रूप से राहत और सन्तुष्टि प्रकट करता है कि दर्द और पीड़ा समाप्त हो गई है, कि मृत्यु जल्द ही उसे मुक्त कर देगी, लेकिन यूहन्ना का संदर्भ इस वचन को एक गहरा अर्थ देता है। यूहन्ना के अनुसार, यीशु पूरे क्रूस पर चढ़ाए जाने की प्रक्रिया को

नियंत्रित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कोई भी उनका जीवन उनसे नहीं छीन सकता—वह अपनी इच्छा से इसे त्याग देंगे (यूह 10:18; 19:10–11)। इसलिए यहाँ, यह जानते हुए कि उन्होंने अपने पिता की इच्छा को पूरी तरह से पूरा कर लिया है, उन्होंने स्वेच्छा से अपना जीवन दे दिया। जो पूरा हुआ है, वह केवल उनकी मृत्यु नहीं है, न ही उनका जीवन, न ही छुटकारे का कार्य, बल्कि संसार में उनके होने का कुल कारण है। आज्ञाकारिता का अन्तिम कार्य पूरा हो गया है; अन्तिम पवित्रशास्त्र पूरा हो गया है। यीशु अपने जीवन को "पूरा हो गया"(समाप्त) घोषित करते हैं और पुनरुत्थान तक एक नया कार्य शुरू होने तक मंच से बाहर चले जाते हैं।

7. “हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ” (लूका 23:46)।

लूका के पास अन्त का एक अलग चित्र है, जो यूहन्ना और अन्य सुसमाचार प्रचारकों के पास नहीं है। मत्ती और मरकुस केवल "एक बड़ी पुकार" का विवरण करते हैं, जो त्याग की पुकार के बाद होती है और एक अंधकारमय अन्त पर समाप्त होती है। यूहन्ना अन्त में पूर्ण कार्य का उल्लेख करते हैं। लूका, जो त्याग की भावना का विवरण नहीं करते है, हमें यह बताकर समाप्त करते है कि बड़ी पुकार भजन संहिता 31:5 का उद्धरण था (प्रेरि 7:59 स्तिफनुस से पुष्टी करें)। उद्धरण की शुरुआत "पिता" से की गई है, जो परिचित अब्बा है, जो यीशु की विशेषता वाले परमेश्वर को संबोधित करने का एक रूप है। परमेश्वर से उनका रिश्ता अन्त तक अटूट है। यीशु अंधेरे में छलांग नहीं लगा रहे हैं या अज्ञात के खिलाफ नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि खुद को उसी पिता के हाथों में मृत्यु के घाट सौंप रहे हैं जिनकी उन्होंने जीवन में सेवा की थी।

*यह भी देखें*क्रूसीकरण; एली, एली, लमा शबक्तनी।

यीशु बिन सिराख

सिराख के पुत्र और यीशु बिन सिराख की बुद्धि के लेखक (जिसे प्रवक्ता-ग्रन्थ के नाम से भी जाना जाता है)।

*देखें*यीशु बिन सिराख की बुद्धि ।

यीशु मसीह का स्वर्गारोहण

इसमें यीशु के पुनरुत्थित शरीर का इस संसार से स्वर्ग की ओर प्रस्थान करना है। नए नियम के लेखकों में, केवल लूका ने यीशु के स्वर्गारोहण का वर्णन किया। प्रेरितों के काम 1:9–11 एक दृश्य का चित्रण करता है जिसमें यीशु "ऊपर उठा लिए गए" और एक बादल में अदृश्य हो गए। लूका 24:50–51 और प्रेरितों के काम 1:12 उस अंतिम घटना को बैतनिय्याह के पास निर्धारित करते हैं, जो यरूशलेम के पूर्व में जैतून के पर्वत पर है।

मत्ती ने अपना इतिहास पिन्तेकुस्त से पहले समाप्त किया, लेकिन यूहन्ना ने यीशु की अपनी टिप्पणियों में स्वर्गारोहण का सुझाव दिया: यीशु प्रस्थान कर चुके हैं, लेकिन वे लौटेंगे (यूह 21:22); उन्हें छुआ नहीं जा सकता, क्योंकि उन्हें स्वर्गारोहण करना है (20:17); कई लोग बिना देखे ही विश्वास करेंगे (20:29)। इस प्रकार, सुसमाचार यह मानते हैं कि (1) पुनरुत्थान के बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए; (2) किसी समय पर वे प्रकट होना बंद हो गए; और (3) यद्यपि शारीरिक रूप से अनुपस्थित है, यीशु अभी भी अपनी कलीसिया में आत्मिक रूप से उपस्थित है। इससे अन्य नए नियम के लेखक भी सहमत हैं। प्रेरित पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जिलाया "और स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर बैठाया" (इफि 1:20) या, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने कहा, "ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा" (इब्रा 1:3)।

हालांकि, स्वर्गारोहण केवल एक अतीत की घटना ही नहीं, इससे कहीं अधिक है। इसका नए नियम में और भी महत्व है जिसे दो शीर्षकों के अंतर्गत संक्षेपित किया जा सकता है: (1) मसीह के लिए इसका अर्थ और (2) मसीहियों के लिए इसका अर्थ।

यीशु मसीह के लिए, स्वर्गारोहण उनके स्वर्गीय "महिमा" में प्रवेश के लिए आवश्यक है जिसमें वह पिता के दाहिनी ओर पर तब तक बैठते हैं जब तक कि उनके शत्रु उनके चरणों की चौकी न हो जाए। (भज 110:1—जो पुराने नियम का सबसे अधिक नए नियम में उद्धृत पद है)। स्वर्गारोहण उनके महिमान्वित होने और दाऊद जैसे पुराने नियम के नायकों पर उनकी श्रेष्ठता का प्रमाण है (प्रेरि 2:33–36)। अपने स्वर्गारोहण द्वारा वह सब पर प्रकट होते हैं और सबको परिपूर्ण करते हैं (इफि 4:10), "उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है" (फिलि 2:9–11)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के लिए, स्वर्गारोहण मसीह की स्वर्गदूतों से श्रेष्ठता का भी प्रमाण है; वह सिंहासन पर विराजमान हैं जबकि स्वर्गदूत लगातार सेवा करने के लिए भेजे जाते हैं (इब्रा 1:13–14)। स्वर्गदूत, अधिकारी, और शक्तियां सभी स्वर्गारोहित मसीह के अधीन हैं (1 तीमु 3:16; 1 पत 3:22)।

मसीहियों के लिए, यीशु मसीह का स्वर्गारोहण चार तरीकों से महत्वपूर्ण है। पहला, इसके बिना पवित्र आत्मा का वरदान नहीं होता, वह तब तक नहीं आता जब तक यीशु स्वर्गारोहण करके भेजते नहीं (यूह 16:7)। स्वर्गारोहण के बिना, कलीसिया के पास यीशु एक स्थान पर स्थानीय रूप से होते, न कि आत्मिक रूप से “जहाँ दो या तीन इकट्ठे होते हैं” (मत्ती 18:20; पुष्टि करें 28:20)।

दूसरा, चूंकि वास्तव में मानव रूप में यीशु स्वर्गारोहण कर चुकें हैं, तो मनुष्य भी वहाँ स्वर्गारोहण कर सकते हैं। यीशु

अपने अनुयायियों के लिए "स्थान तैयार करने" गए (यूह 14:2)। जो "मसीह में" हैं उनकी आशा यह है कि वे अंततः उनके साथ वहां जाएंगे (2 कुरि 5:1–10)।

तीसरा, स्वर्गारोहण यह साबित करता है कि यीशु मसीह का बलिदान पूरा हो गया है और परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। यीशु स्वर्गों के पार चले गए (इब्रा 4:14) और उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया है (इब्रा 6:20), जिसे स्वर्गीय मंदिर के आंतरिक पवित्र स्थान के रूप में वर्णित किया गया है, जो वास्तविक मंदिर है जिसका पृथ्वी पर एक प्रतिरूप था (इब्रा 9:24)। परमेश्वर को एक ही बार बलिदान चढ़ाने के बाद (इब्रा 9:12), यीशु मसीह बैठ गए (इब्रा 1:3; 10:12; 12:2), यह दिखाते हुए कि उनके बलिदान की पुनरावृत्ति आवश्यक नहीं है।

चौथा, स्वर्गारोहण का अर्थ है कि स्वर्ग में एक मानव हैं जो मानवता के प्रति सहानुभूति रखते हैं, इसलिए मानवता की ओर से मध्यस्थता कर सकते हैं (1 यूह 2:1)। यीशु ने वह सब कुछ अनुभव किया है जो मनुष्य अनुभव करते हैं—जन्म, वृद्धि, प्रलोभन, कष्ट और मृत्यु— इसलिए वह स्वर्ग में परमेश्वर के सामने प्रभावी रूप से मध्यस्थ के रूप में सेवा कर सकते हैं (इब्रा 2:17; 5:7–10)। यीशु मसीह का स्वर्गारोहण कलीसिया को यह आश्वासन देता है कि परमेश्वर मानव स्थिति को समझते हैं इसलिए मसीही उनसे अपनी प्रार्थनाओं में निर्भीकता से संपर्क कर सकते हैं (इब्रा 4:14–16)।

इस प्रकार यीशु मसीह का स्वर्गारोहण नए नियम की शिक्षा का एक अनिवार्य पहलू है। यह मसीह की महान दर्जे की पहचान और मसीहियों के आत्मविश्वास और आशा का आधार है।

*यह भी देखें*मसीह संबंधी धर्मविज्ञान; यीशु मसीह, जीवन और शिक्षाएँ।

यीशु मसीह की आत्मा

आत्मा की पहचान यीशु मसीह से की गई है।

आत्मा के बारे में प्रारंभिक मसीहियों की समझ में सबसे महत्वपूर्ण विकास और तत्व यह है कि आत्मा अब यीशु मसीह की आत्मा है (प्रेरि 16:7; रोमि 8:9; गला 4:6; फिलि 1:19; 1 पत 1:11; देखें यूह 7:38; 15:26; 16:7; 19:30; प्रका 3:1; 5:6)। आत्मा को यीशु की गवाही देने वाली आत्मा के रूप में पहचाना जाना चाहिए (यूह 15:26; 16:13–15; प्रेरि 5:32; 1 कुरि 12:3; 1 यूह 4:2; 5:7–8; प्रका 19:10), परन्तु साथ ही, और अधिक गहराई से, उस आत्मा के रूप में जिसने स्वयं यीशु को प्रेरित और सशक्त किया। मसीह के पुनरुत्थान के बाद आत्मा विश्वासियों के लिए उपलब्ध हो गया।

प्रेरित यूहन्ना और पौलुस पुनरुत्थान के माध्यम से मसीह के आत्मा बनने के बारे में अपने लेखों में बिल्कुल स्पष्ट थे। यूहन्ना द्वारा लिखित मुख्य पद हैं यूह 6:63; 7:37–39; 14:16–18; 20:22; और 1 यूह 3:24; 4:13। पौलुस द्वारा लिखित महत्वपूर्ण पद हैं रोम 8:9–10; 1 कुरि 15:45; 2 कुरि 3:17–18; और 1 कुरि 6:17।

यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु की आत्मा के बारे में प्रकाशन प्रगतिशील है। यूहन्ना हमें शुरुआत से नहीं बताता कि लोग वास्तव में अनंत जीवन तब तक प्राप्त नहीं कर सकते थे जब तक कि मसीह की महिमा का समय नहीं आ जाता। पूरे सुसमाचार में, यीशु विभिन्न लोगों से घोषणा करते हैं कि वे उन लोगों को अनंत जीवन दे सकते हैं जो उन पर विश्वास करेंगे। वे लोगों से जीवन का जल, जीवन की रोटी, और जीवन का प्रकाश देने का वादा करते हैं। परन्तु प्रभु के पुनर्जीवित होने तक कोई भी वास्तव में इनमें भाग नहीं ले सकता था। एक अग्रिम स्वाद के रूप में, एक नमूने के रूप में, वे प्रभु के वचनों के माध्यम से जीवन प्राप्त कर सकते थे क्योंकि उनके वचन स्वयं आत्मा और जीवन थे (यूह 6:63); लेकिन यह तब तक संभव नहीं था जब तक आत्मा उपलब्ध न हो जाए, जिससे विश्वासियों को वास्तव में दिव्य और अनन्त जीवन का भागी बनने का अवसर मिल सके। यूह 6 में प्रभु के प्रवचन के बाद, यीशु ने कहा, "आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं" (पद 63)। शरीर में यीशु उन्हें जीवन की रोटी नहीं दे सकते थे, लेकिन जब आत्मा उपलब्ध हो गया, तो वे जीवन प्राप्त कर सकते थे। फिर से, यीशु ने झोपड़ियों के पर्व पर एकत्रित यहूदियों को जीवन का जल—जीवित जल की नदियों की तरह बहने वाला जीवन—पेश किया। उन्होंने लोगों से कहा कि वे उनके पास आएं और उनसे पिएं। परन्तु कोई भी, उसी समय, उनसे आकर पी नहीं सकता था। इसलिए यूहन्ना ने टिप्पणी जोड़ी: "उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था" (7:39)। एक बार जब यीशु पुनरुत्थान के माध्यम से महिमान्वित हो जाएगा, तो महिमान्वित यीशु का आत्मा लोगों के लिए पीने के लिए उपलब्ध होगा। यूह 6 में, यीशु ने स्वयं को लोगों द्वारा खाने के लिए जीवन की रोटी के रूप में पेश किया; और यूह 7 में, उन्होंने स्वयं को पुरुषों को ताजगी देने के लिए जीवन के जल के रूप में पेश किया। परन्तु जब तक वह आत्मा नहीं बन गया, तब तक कोई भी उसे खा या पी नहीं सकता था, जैसा कि यूह 6:63 में बताया गया था और फिर यूह 7:39 में स्पष्ट रूप से कहा गया था।

यूह 14:16–18 में, यीशु ने आत्मा के साथ अपनी पहचान कराने में एक कदम और आगे बढ़ाया। उन्होंने शिष्यों से कहा कि वे उन्हें एक और सहायक देंगे। फिर उसने उनसे कहा कि उन्हें जान लेना चाहिए कि यह सहायक कौन है, क्योंकि वह उसी समय उनके साथ था और निकट भविष्य में भी उनके बीच रहेगा। उस समय उनके साथ और कौन हो सकता था सिवाय यीशु के? फिर शिष्यों से यह कहने के बाद कि

सहायक उनके पास आएगा, उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारे पास आता हूँ।" पहले उन्होंने कहा कि शान्ति देनेवाला उनके पास आएगा और उनमें रहेगा, और फिर उसी सांस में उन्होंने कहा कि वे भी उनके पास आएंगे और उनमें रहेंगे (देखें 14:20)। संक्षेप में, शिष्यों के पास शान्ति देनेवाले का आना और यीशु का शिष्यों के पास आना एक ही बात थी। वह शान्ति देनेवाला जो उस रात शिष्यों के साथ निवास कर रहा था, वह मसीह में आत्मा था; वह शान्ति देनेवाला जो शिष्यों में होगा (पुनरुत्थान के बाद) वह आत्मा में मसीह होगा।

पुनरुत्थान की साँझ को, प्रभु यीशु शिष्यों के सामने प्रकट हुए और फिर उनमें पवित्र आत्मा का श्वास फूंका। यह श्वास, परमेश्वर के आदम में जीवन की श्वास फूंकने की याद दिलाता है (उत 2:7), यूहन्ना के सुसमाचार में पहले से किए गए सभी वादों और अपेक्षाओं की पूर्ति बन गया। इस आत्मदान के माध्यम से, शिष्य पुनर्जीवित हो गए और वे यीशु मसीह की आत्मा से परिपूर्ण हो गए। इस ऐतिहासिक घटना ने नई सृष्टि की उत्पत्ति को चिह्नित किया। यह ऐतिहासिक घटना नई सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक बनी। अब यीशु को जीवन की रोटी, जीवन का जल, और जीवन का प्रकाश के रूप में पहचाना जा सकता था। विश्वासियों के पास अब उनका ईश्वरीय, अनन्त, पुनर्जीवित जीवन था। उस समय से, मसीह ने आत्मा के रूप में अपने विश्वासियों में वास किया। इस प्रकार, अपनी पहली पत्री में यूहन्ना कह सकता था, "और जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें, और परमेश्वर उनमें बना रहता है, और इसी से, अर्थात् उस पवित्र आत्मा से जो उसने हमें दिया है" (1 यूह 3:24), और फिर, "इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपनी आत्मा में से हमें दिया है" (4:13)।

प्रेरितों को मसीह के पुनरुत्थान के बाद काफी समायोजन करना पड़ा। वे उनकी शारीरिक उपस्थिति के इतने आदी हो गए थे कि उनके लिए उनकी आत्मिक, अन्तर्निवास उपस्थिति के साथ जीना सीखना कठिन था। उनके पुनरुत्थान के बाद के 40 दिनों के दौरान, जब से प्रेरितों ने आत्मा का श्वास ग्रहण किया, मसीह शिष्यों को यह परिवर्तन करने के लिए सिखा रहे थे। वे शारीरिक रूप से प्रकट होते और फिर बीच-बीच में गायब हो जाते। शुरुआत में उनका प्रकट होना बहुत बार हुआ और फिर वे धीरे-धीरे कम होती गईं। उनका उद्देश्य प्रेरितों को उनकी अदृश्य उपस्थिति में जानने के लिए मार्गदर्शन करना था। हालाँकि, यह उनके लिए इतना नया था कि लोगो को मजबूत और आश्वस्त करने के लिए उन्हें बार-बार प्रकट होना पड़ा। लेकिन उनकी वास्तविक इच्छा थी कि वे विश्वास से जीना सीखें, न कि दृष्टि से। जब वे दूसरी बार शिष्यों के साथ प्रकट हुए, जब वे सब एक साथ थे, और थोमा भी उपस्थित था, तो उन्होंने थोमा को उसके अविश्वास के लिए डांटा। फिर उन्होंने यह आशीष दी, "धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।" (यूह 20:29)।

यीशु मसीह की आत्मा

प्रेरित पौलुस ऐसा "धन्य" व्यक्ति था।। वह मसीह को देह में नहीं जानता था। वह केवल जी उठे मसीह को जानता था (2 कुरि 5:15–16)। इस संबंध में, उन्हें प्रारंभिक प्रेरितों पर लाभ था। उन्हें एक बड़ा समायोजन करना पड़ा, परन्तु आरम्भ से ही पौलुस पुनर्जीवित मसीह को आत्मा के रूप में जानता था। पौलुस उन सभी मसीहियों के अग्रदूत बन गया जिन्होंने कभी यीशु को देह में नहीं देखा और जो उसे आत्मा में अनुभव करने आए हैं। हाँ, पौलुस ने जी उठे प्रभु को देखा था; वह ऐसा करने वाला अंतिम व्यक्ति था (1 कुरि 15:8)। और उस समय से उसने महसूस किया कि यीशु महिमामय मनुष्य थे, जो सब से ऊपर उठाए गए थे। पौलुस ने इस विषय में बहुत कुछ लिखा, परन्तु उसके लेखन ने सर्वोच्च यीशु को दूर नहीं छोड़ा, क्योंकि पौलुस ने ऐसा अनुभव नहीं किया था। किसी भी अनुभवी मसीही को यह गवाही देने में सक्षम होना चाहिए कि जो मसीह स्वर्ग में है, वही मसीह हृदय में भी है।

अपने लेखों में, पौलुस अक्सर आत्मा और मसीह को समानार्थी रूप में वर्णित करता है। यह रोम 8:9–10 में स्पष्ट है। "परमेश्वर का आत्मा," "मसीह का आत्मा," और "मसीह" शब्दों का परस्पर उपयोग किया गया है। परमेश्वर का आत्मा मसीह का आत्मा है, और मसीह का आत्मा मसीह हैं। इन पदों में, यह स्पष्ट है कि पौलुस ने आत्मा को मसीह के साथ पहचाना क्योंकि मसीही अनुभव में वे बिल्कुल समान हैं। आत्मा से अलग मसीह का अनुभव जैसी कोई चीज़ नहीं है। त्रिएकेश्वरीय धर्मशास्त्रीये में विभाजन और/या भेद मौजूद होता है—और बहुत अच्छे कारणों से—लेकिन वास्तविक अनुभव में यह विभाजन लगभग न के बराबर है। पौलुस के कई कथन अनुभव के दृष्टिकोण से लिखे गए हैं।

1 कुरि 15:45 में, पौलुस कहते हैं कि पुनर्जीवित यीशु जीवनदायक आत्मा बन गए। ध्यान दें कि यह पद यह नहीं कहता कि यीशु आत्मा बन गए, जैसे कि त्रिएकेश्वरीय का दूसरा व्यक्ति तीसरा बन गया, बल्कि यह कहता है कि यीशु आत्मा बन गए इस अर्थ में कि उनका नश्वर अस्तित्व और रूप आत्मिक अस्तित्व और रूप में परिवर्तित हो गया। यीशु का व्यक्तित्व पुनरुत्थान के माध्यम से नहीं बदला, केवल उनका रूप बदला। इस परिवर्तित आत्मिक रूप के साथ, यीशु ने उस आवश्यक अवस्था को पुनः प्राप्त किया जिसे उन्होंने मनुष्य बनने में खाली कर दिया था। मनुष्य बनने से पहले, वे परमेश्वर के स्वरूप थे (फिल 2:6), जो स्वरूप आत्मा है और इस प्रकार आत्मा (त्रिएकेश्वरीय के तीसरे) से एक हो गया, जबकि अभी भी अलग बना हुआ है। इस प्रकार, जब पवित्रशास्त्र कहता है कि प्रभु "जीवन देने वाली आत्मा बन गए," तो इसका मतलब यह नहीं है कि पुत्र पवित्र आत्मा बन गया। लेकिन यह दर्शाता है कि मसीह ने पुनरुत्थान के माध्यम से नया, आत्मिक रूप ग्रहण किया (जबकि अभी भी देह—महिमामय देह) जिसने उन्हें नई आत्मिक अस्तित्व शुरू करने में सक्षम बनाया (देखें 1 पत 3:18)।

2 कुरि 3 में, पौलुस समझाता है कि नए नियम की सेवकाई जीवित परमेश्वर का आत्मा द्वारा संचालित सेवकाई है (पद 3), जो जीवन देने वाला आत्मा है (पद 6)। वास्तव में, पूरा नया नियम अर्थव्यवस्था "आत्मा की सेवकाई " के रूप में वर्णित है (पद 8)। साथ ही, पौलुस इस बात पर जोर देता है कि नए नियम की सेवकाई का कार्य परमेश्वर के लोगों को महिमान्वित मसीह को देखने और अनुभव करने के लिए लाना है (3:3, 14, 16–18; 4:4–6)। इसी संदर्भ में है कि पौलुस साहसपूर्वक घोषणा करते हैं, "प्रभु तो आत्मा है" (3:17)। वह जो अपना हृदय प्रभु की ओर मोड़ता है, वह वास्तव में अपना हृदय आत्मा की ओर मोड़ता है। यदि प्रभु विश्वासियों में रहने वाली आत्मा न होते, तो वे अपना हृदय उनकी ओर कैसे मोड़ सकते थे? और वे उसी छवि में कैसे परिवर्तित हो सकते थे? दूसरा कुरिन्थियों 3:18 कहता है, "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।" यूनानी भाषा के अनुसार, इस पद के अंतिम वाक्यांश का अनुवाद "प्रभु, आत्मा" या "प्रभु, जो आत्मा है" किया जा सकता है क्योंकि अभिव्यक्ति "आत्मा" सीधे "प्रभु" के विपरीत है (अर्थात, यह प्रभु का एक और वर्णन है)। इस प्रकार, प्रभु आत्मा हैं।

निष्कर्ष में, जब पवित्रशास्त्र आत्मा को मसीह के साथ और मसीह को आत्मा के साथ पहचानते हैं, तो यह पहचान में कोई संदेह नहीं है। मसीह पवित्र आत्मा नहीं हैं। मसीह और आत्मा त्रिएक-परमेश्वर के अलग-अलग व्यक्ति हैं, जैसा कि वचन की समग्र शिक्षा द्वारा पुष्टि की गई है। परन्तु पवित्रशास्त्र मसीह और आत्मा को मसीही अनुभव के संदर्भ में पहचानते हैं। यह कहना सही होगा कि मसीही लोग मसीह का अनुभव उनके आत्मा, मसीह के आत्मा के माध्यम से करते हैं। कोई भी यीशु को आत्मा के बिना या आत्मा के माध्यम के अलावा नहीं जान सकता।

पुनरुत्थान *भी देखें*

यीशु मसीह की वंशावली

यीशु के मानव वंश का विवरण। नए नियम में यीशु की वंशावली का दो बार विस्तार से वर्णन किया गया है: मत्ती 1:1–17 और लूका 3:23–38 में।

पूर्वावलोकन

- मत्ती की वंशावली
- लूका की वंशावली
- दोनों अभिलेखों के बीच सम्बंध

मत्ती की वंशावली (1:1–17)

मत्ती 1:1 यीशु मसीह को "दाऊद की सन्तान, अब्राहम की सन्तान" के रूप में प्रस्तुत करता है। इन दो नामों के द्वारा, मत्ती यीशु के अब्राहम-वाचा (उत् 17:1–8) और दाऊद-वाचा (2 शमू 7:12–16) के साथ सांसारिक सम्बंध को उजागर करते हैं। फिर कुलपति अब्राहम से शुरू करके, मत्ती यीशु की मानव वंशावली को राजा दाऊद के माध्यम से यूसुफ तक ले जाते हैं, "जो मरियम का पति था, और मरियम से यीशु उत्पन्न हुआ जो मसीह कहलाता है" (मत्ती 1:16)। मत्ती अपने विवरण का सारांश प्रस्तुत करते हैं: "अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई, और दाऊद से बाबेल को बन्दी होकर पहुँचाए जाने तक चौदह पीढ़ी, और बन्दी होकर बाबेल को पहुँचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई" (वचन 17)।

मत्ती द्वारा इस वंशावली तथ्य के प्रस्तुतिकरण की जाँच कई रोचक विशेषताओं को उजागर करती है:

1. नामों को 14–14 की तीन समूहों में विभाजित करना एक कृत्रिम प्रणाली प्रतीत होती है।

2. दूसरे समूह में 14 नाम रखने के लिए, मत्ती ने तीन राजाओं—अहज्याह, योआश, और अमस्याह—को योराम और उज्जियाह के बीच से हटा दिया (वचन 8), और एक, यहोयाकीम, को योशिय्याह और यकुन्याह के बीच से (वचन 11)।

3. पहले समूह में मत्ती तीन स्त्रियों का उल्लेख करते हैं—तामार, राहाब, और रूत; और दूसरे समूह में, वे बतशेबा की ओर संकेत करते हैं। वंशावलियों में स्त्रियों का उल्लेख करना एक असामान्य प्रथा है, और यह तब और भी विचित्र प्रतीत होता है जब यह देखा जाए कि ये चारों दाऊद-वंश के इतिहास में नैतिक कलंक के रूप में देखी जा सकती हैं—तामार, जो अनाचार की शिकार थीं; राहाब, एक वेश्या; रूत, एक मोआबी; और बतशेबा, जो व्यभिचारिणी थीं।

4. पहले समूह में मत्ती यहूदा के भाइयों और जेरह, पेरेस के भाई का उल्लेख करते हैं। दूसरे समूह में वे यकुन्याह के भाइयों का उल्लेख करते हैं।

5. वचन 6 में दाऊद को "राजा" कहा गया है।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि मत्ती एक सही रीति से वंशावली प्रस्तुत करने का उद्देश्य नहीं रखते; व्यवस्था कृत्रिम है, और अतिरिक्त तथ्य शामिल की गई है, जो सम्भवतः केवल यीशु के पूर्वजों को प्रस्तुत करने से कहीं अधिक उद्देश्य के लिए हो। मत्ती द्वारा नामों को 14 के समूहों में व्यवस्थित करना, सम्भवतः यहूदी लोगों के लिए यीशु को इस्राएल के प्रतिज्ञा किए गए राजा और दाऊद के सही उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत करने की रुचि से प्रेरित है, वंशावली को तीन समयावधि में विभाजित करके एक निश्चित ऐतिहासिक चलन प्रदान करता है। ये क्रमशः दाऊद के घराने की उत्पत्ति,

अधिकार में उत्थान, और पतन को स्पष्ट करते हैं, जिसका अन्तिम आशय नासरत के बढ़ई के घर में जन्मे प्रतिज्ञा किए हुए वारिस के विनम्र जन्म से प्रतीत होता है।

प्रत्येक समूह में 14 नामों का होना सम्भवतः मत्ती का प्रयास है, जो मरियम के पुत्र के तीन बार राजसी पात्र पर ध्यान आकर्षित करने के लिए दाऊद के नाम (d=4, v=6, d=4) के इब्रानी अक्षरों के संख्यात्मक मान 14 पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह संख्या सात के पवित्र संख्या का दुगना है, इस प्रकार पूरी सूची तीन संग्रह में दो-दो सात से बनी हुई है। हालाँकि, यह भी हो सकता है कि कृत्रिम समूह केवल स्मरण में सहायता करने के उद्देश्य से बनाए गए थे।

दूसरी विशेषता—तीसरे समूह में "गुम नाम"—के सन्दर्भ में, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि या तो दाऊद या यकुन्याह को दो बार गिना जाना चाहिए, क्योंकि ये तीन समूहों को अलग करने वाले केंद्रीय नाम हैं, या फिर मत्ती के मूल सुसमाचार की एक प्रति में गलती से कोई नाम छोड़ दिया गया था।

तीसरी विशेषता में कोई कठिनाई नहीं है। पवित्र शास्त्र में कई वंशावलियाँ कुछ नामों को छोड़ देती हैं। प्राचीन पश्चिमी एशिया के लेखक कई बार "की सन्तान" या "उत्पन्न किया" शब्दों का बदल-बदल कर उपयोग करते थे, जैसे पोते या परपोते को, बिना प्रत्येक मध्यवर्ती पूर्वज को दर्शाए, पहले के पूर्वजों से जोड़ना। आधुनिक मानसिकता को प्राचीन अभिलेख में उस प्रकार की सटीकता की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, जिसे प्राचीन लेखक स्वयं नहीं चाहते थे।

वंशावली में सूचीबद्ध स्त्रियाँ—चौथी विशेषता—यह दिखाने के लिए हो सकती हैं कि यीशु के जन्म (1:18–25) के बारे में यहूदी आलोचना को शान्त किया जाए, यह दर्शाते हुए कि अनियमित सम्बंध मसीह की न्यायिक वंशावली के लिए अयोग्य नहीं थे।

वंशावली में तीन स्थानों पर कई भाइयों को शामिल करने का कारण—पाँचवीं विशेषता—आसानी से पहचाना नहीं जा सकता। "यहूदा और उसके भाई" का उल्लेख (1:2) सम्भवतः 12 कुलपतियों को एक साथ बोलने की प्रमाणित प्रथा का पालन कर रहा है।

अन्ततः, दाऊद का वर्णन "राजा" के रूप में (1:6) सूची के दाऊद या राज व्यक्तित्व को उजागर करता है।

वंशावली के पहले समूह को संकलित करने में उपयोग किए गए स्रोत 1 इति 1:27–2:15 और रूत 4:18–22 में संरक्षित अभिलेखों पर आधारित थे। दूसरा समूह 1— 2 राजा और 2 इतिहास में पाए गए अभिलेखों पर आधारित था। तीसरे समूह ने मुख्य रूप से अंतरनियम काल के सार्वजनिक या निजी अभिलेखों पर निर्भर किया; अबीहूद से याकूब तक के नौ नाम पवित्र शास्त्र में कहीं और उल्लिखित नहीं हैं।

इस वंशावली के आधार पर, यदि यूसुफ के समय में दाऊद का सिंहासन होता, तो वह साधारण बढ़ई उसका न्यायिक वारिस होता, और यीशु उनके बाद उस राजगद्दी के उत्तराधिकारी के रूप में खड़े होते।

मत्ती की वंशावली की इस व्याख्या के विरुद्ध यह तर्क दिया गया है कि सूची में यकुन्याह का होना (मत्ती 1:11), यदि पूरी तरह से नकारता नहीं है तो दाऊद के सिंहासन पर उसके सीधे वंशजों के न्यायिक अधिकार को खतरे में डालता है। इसका कारण यह है कि यहोवा ने उनके बारे में कहा: "इस पुरुष को निर्वंश लिखो, . . . और न उसके वंश में से कोई समृद्ध होकर दाऊद की गद्दी पर विराजमान या यहूदियों पर प्रभुता करनेवाला होगा" (यिर्म 22:30)। इसलिए, कहा जाता है कि मत्ती का उद्देश्य शालतीएल से लेकर यूसुफ तक के पुरुषों को सिंहासन के न्यायिक वारिस के रूप में प्रस्तुत करना नहीं हो सकता था।

यह एक ऐसा तथ्य है जो यह मानने वाली दृष्टिकोण को नाश कर सकता है कि सूची दाऊद के वंशजों को प्रस्तुत करती है, यदि यह तथ्य न हो कि शालतीएल, जो मत्ती के अभिलेख में यकुन्याह के सन्तान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लूका की वंशावली में नेरी के सन्तान के रूप में भी दिखाई देता है (लूका 3:27)। नेरी का नाम लूका के सुसमाचार में विशिष्ट है, इसलिए शालतीएल की असली पैतृकता का पता करना इसके उपयोग को किसी और स्थान पर जाँचना असम्भव है। लेकिन यिर्म 22:30 के प्रकाश में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उसे दोनों विवरण में अलग-अलग माता-पिता के साथ सूचीबद्ध किया गया है। नेरी सम्भवतः शालतीएल के असली पिता थे, और जबकि यह जानना असम्भव है कि नेरी का यकुन्याह से सटीक सम्बंध क्या था, यह हो सकता है कि दाऊद का सिंहासन के न्यायिक उत्तराधिकारियों के अभिलेख को निर्धारित करने और बनाए रखने के लिए जिम्मेदार लोगों ने नेरी की सहायक वंश को देखा और शालतीएल को न्यायिक रूप से उस वंश में गोद लेने के लिए चुना और वही व्यक्ति था जिसके माध्यम से वह वंश जारी रहती। शालतीएल सम्भवतः बिना किसी पुरुष वंशज के मर गए होंगे, जिससे यह आवश्यक हो गया कि जरुब्बाबेल, पदायाह के पुत्र, शालतीएल के गोद लिए भाई को दाऊद के सिंहासन का न्यायिक उत्तराधिकारी माना जाए। इस दोहरी गोद लेने के माध्यम से यकुन्याह पर जो श्राप था, वह पूरा हुआ, जबकि यकुन्याह का वास्तविक पोता वंश को जारी रखे हुए था, क्योंकि पोता न्यायिक रूप से शालतीएल का पुत्र था, जो बदले में नेरी का असली पुत्र था। वंशावली में यकुन्याह की उपस्थिति कमजोरी नहीं, बल्कि एक ताकत है, उस व्याख्या के लिए जो यह मानती है कि मत्ती का सुसमाचार दाऊद के सिंहासन के न्यायिक उत्तराधिकारियों को प्रस्तुत करने का उद्देश्य रखता था, क्योंकि केवल एक लेखक जो यकुन्याह की वंशावली से सम्बंधित समस्याओं के प्रति जागरूक थे, लेकिन साथ ही एक व्याख्या से परिचित थे, वही एक यहूदी दर्शकों

को यह वंशावली प्रस्तुत करेंगे, जिसे वह यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि यीशु वास्तव में राज-मसीहा हैं।

लूका की वंशावली (3:23–38)

लूका की वंशावली में भी विशेषताएँ हैं।

1. कुछ व्याख्याकारों ने यह महत्वपूर्ण माना है कि लूका की वंशावली सुसमाचार की शुरुआत में नहीं, बल्कि यीशु की सेवकाई की शुरुआत में दिखाई देती है।

2. लूका का विवरण, मत्ती के विपरीत, यीशु से शुरू होता है और उनकी वंशावली को पुराने नियम के इतिहास के माध्यम से वापस ले जाता है। यह असामान्य प्रतीत होता है, क्योंकि अधिकांश वंशावलियाँ उत्तराधिकार के क्रम का पालन करती हैं।

3. लूका का वर्णन, इसके अलावा, अब्राहम पर समाप्त नहीं होता बल्कि "वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था" तक जाता है (लूका 3:38).

कुछ लोगों ने पहली विशेषता को लूका की यह इच्छा मानते हुए देखा है कि वह पवित्र इतिहास की एक अवधि को समाप्त करना चाहते थे, और यीशु के व्यक्ति और विशेष रूप से उनकी सेवकाई के साथ एक नई अवधि की शुरुआत का संकेत देना चाहते थे। वंशावली, जैसा कि वह है, मसीह के कार्य को उनके जन्म और तैयारी के विवरण से अलग करती है।

कई लोगों ने यह सुझाव दिया है कि वंशावली में प्रतिगामी क्रम सम्भवतः लूका का एक निमित्त है, जिससे वह ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं यीशु पर। यह तथ्य कि लूका ने यीशु की वंशावली को आदम तक, "परमेश्वर का पुत्र," के रूप में व्यक्त किया, सम्भवतः इसका कारण यह था कि उन्होंने रोमियों और यूनानियों के लिए इसे लिखा था। आदम तक यीशु की वंशावली का पता करके, वह यह दिखाते हैं कि यीशु पूरे मानव जाति से सम्बंधित हैं। लूका की वंशावली में यीशु और आदम दोनों "परमेश्वर के पुत्र" हैं; यीशु, स्वाभाविक रूप से, परमेश्वर के पुत्र हैं; आदम, परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने के कारण, परमेश्वर के पुत्र हैं।

उनके स्रोतों के बारे में, यह काफी निश्चित है कि लूका ने उत्पत्ति 11:12 के सेप्टुआजिंट संस्करण (प्राचीन यूनानी संस्करण) जिसमें शेलह और अर्पक्षद के बीच केनान का नाम डाला गया है (लूका 3:36), और 1 इतिहास 1–3 के अभिलेखों का उपयोग किया है, जो दाऊद तक की इतिहास को दर्शाते हैं। दाऊद से लेकर यीशु तक की अवधि के लिए, अधिकांश व्याख्याकार इस पर सहमत हैं कि लूका ने सम्भवतः सीधे मरियम से या उनके निकटतम व्यक्तियों से जानकारी प्राप्त की। यह एक सामान्य प्रथा थी यहूदी लोगों के बीच कि वंशावली के अभिलेखों को सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों रूप से रखा जाता था। दाऊद की वंशावली से सम्बंधित परिवारों में विशेष चिन्ता थी कि वे अपनी पूर्वजों के अभिलेख को संरक्षित रखें, क्योंकि पुरानी अभिलेखों में यह भविष्यद्वाणियाँ की गई थी कि मसीहा दाऊद के घर में जन्मेगा।

लूका, अपनी सूची से यीशु के पूर्वजों की संख्या का प्रदर्शन करने से कहीं अधिक परिणाम हासिल करने का उद्देश्य निश्चित किया था। चूँकि लूका ने अपनी सूची में दाऊद को महत्वपूर्ण नहीं बनाया, इस पर माना जा सकता है कि वह दाऊद के सिंहासन के न्यायिक वारिसों की सूची प्रस्तुत करने के प्रति उत्साही नहीं थे—ऐसा नहीं है कि यह बात उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है (पुष्टि करें लूका 1:27, 32, 69; 2:4, 11)। बल्कि, लूका के पूरे सुसमाचार में एक चिन्ता यह रही है कि—मसीह को रोमियों और यूनानियों का उद्धारक के रूप में चित्रित किया जाए—वास्तव में, पूरे संसार के। इसलिए, यद्यपि लूका ने यीशु की वंशावली को यूसुफ के पूर्वजों के वंश के माध्यम से दाऊद तक चलाया, उन्होंने दाऊद के बाद आदम तक इसका विस्तार किया। यीशु उस मानव जाति के सदस्य हैं जिससे सभी लोग सम्बंधित हैं।

दोनों अभिलेखों के बीच सम्बंध

यीशु की दोनों वंशावलियों का सरसरी अध्ययन भी कई भिन्नताएँ दिखाता है। उदाहरण के लिए, मत्ती की वंशावली में 41 पीढ़ियाँ शामिल हैं, जबकि लूका 76 सूचीबद्ध करते हैं। लूका आदम से लेकर अब्राहम तक की अवधि को शामिल करते हैं; मत्ती ऐसा नहीं करते। अब्राहम से लेकर दाऊद तक दोनों सूचियाँ लगभग समान हैं, लेकिन दाऊद से यीशु तक के काल में ये अलग हो जाती हैं, मत्ती ने यीशु की वंशावली दाऊद से सुलैमान के माध्यम से 27 पीढ़ियों में दी है, जबकि लूका ने दाऊद से नातान, जो दाऊद का एक और पुत्र था, के माध्यम से 42 पीढ़ियों में दी है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान केवल एक स्थान पर ये वंश मिलते हैं: शालतीएल और जरुब्बाबेल के नाम पर, जो निस्संदेह दोनों सूचियों में वही व्यक्ति हैं। अन्त में, मत्ती यूसुफ को याकूब का पुत्र बताते हैं (मत्ती 1:16), जबकि लूका के वर्णन में वह एली का पुत्र है (लूका 3:23)।

इन भिन्नताओं को कैसे समझाया जाए? इन सूचियों के बीच भिन्नताएँ उनके तैयार किए जाने के उद्देश्यों और उनके माध्यम से व्यक्त किए जाने वाले अर्थों से उत्पन्न होती हैं।

एक व्यापक रूप से स्वीकृत व्याख्या यह है कि मत्ती ने यीशु की वंशावली यूसुफ के माध्यम से देते हैं, जबकि लूका ने इसे मरियम के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस व्याख्या के अनुसार याकूब यूसुफ के वास्तविक पिता थे, और एली (सम्भवतः मरियम के पिता) यूसुफ के पालक पिता बने, अर्थात् मरियम से विवाह के कारण यूसुफ एली के "पुत्र" या वारिस थे, यदि मान लें कि एली के कोई पुत्र नहीं थे (देखें गिन 27:1–11; 36:1–12)। यह दृष्टिकोण निश्चित रूप से एक सम्भावना है और इसे बिना विचार के खारिज नहीं किया जाना

चाहिए। यदि मरियम दाऊद की प्रत्यक्ष वंशज थीं, तो उनके किसी भी पुत्र के बारे में शाब्दिक रूप से कहा जा सकता है, "वह दाऊद का बीज है।"

दूसरी ओर, कई विद्वान लूका की वंशावली को मरियम की बजाय यूसुफ की वंशावली मानने को प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि लूका पाठक का ध्यान यूसुफ की वंशावली की ओर केन्द्रित करते हैं (लूका 1:27; 2:4)। इसके अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र में कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि मरियम दाऊद की वंशज थीं। यदि यह तथ्य कि यूसुफ यीशु के वास्तविक पिता नहीं थे, किसी वास्तविक पुत्र के लिए यूसुफ की वंशावली के महत्व को शून्य कर देता है, तो लूका ने यूसुफ की वंशावली की ओर दो बार क्यों संकेत किया, जबकि मरियम की वंशावली की ओर एक बार भी नहीं?

दोनों वंशावलियों को यूसुफ की मानने वाले दृष्टिकोण के लिए एक प्रमुख कठिनाई यूसुफ के दो पिताओं से सम्बंधित है। एक समाधान यह है कि मत्ती दाऊद के न्यायिक वंशजों को प्रस्तुत करते हैं, जबकि लूका दाऊद के वास्तविक वंशजों को प्रस्तुत करते हैं, जिससे यूसुफ सम्बंधित थे। इसका अर्थ यह होगा कि एली यूसुफ के वास्तविक पिता थे और याकूब उनके कानूनी पालक पिता थे। यह कैसे सम्भव हो सकता है, इसका स्पष्टीकरण आसानी से दिया जा सकता है। यदि मान लिया जाए कि याकूब के पिता, मत्तान (मत्ती 1:15), और एली के पिता, मत्तात (लूका 3:24), एक ही व्यक्ति हैं, तो याकूब (जो बड़े हैं) की मृत्यु बिना किसी पुरुष वंशज के हो गई होगी, जिससे उनके भतीजे, भाई एली के पुत्र उनके वारिस बन गए होंगे।

यदि मत्तान और मत्तात एक ही व्यक्ति नहीं हैं, तो यह मान लिया जा सकता है कि याकूब, जो सिंहासन के न्यायिक वारिस थे, बिना किसी वंशज के मर गए और एली के पुत्र यूसुफ, एली की मृत्यु के तुरन्त बाद न्यायिक वारिस बन गए और उन्हें सिंहासन के न्यायिक वारिसों की सूची में याकूब का पुत्र गिना गया। सम्भवतः एली, जो एक सम्बंधी थे, ने याकूब की विधवा से विवाह किया, जिससे विधुर विवाह के नियम के तहत, उस संयोग से उत्पन्न यूसुफ एली के पुत्र और याकूब के पुत्र बन गए। दूसरे शब्दों में, इस अन्तर के कई सम्भावित स्पष्टीकरण हो सकते हैं।

यह विचार कि दोनों वंशावलियाँ यूसुफ की हैं, इसके प्रति एक और मुख्य आपत्ति यह है कि यीशु के कुँवारी जन्म के कारण, किसी भी प्रकार से यीशु को शाब्दिक रूप से दाऊद का वंशज नहीं कहा जा सकता—एक तथ्य जिसे पवित्र शास्त्र मानो जोर देता प्रतीत होता है। इस आपत्ति का पर्याप्त खण्डन किया गया है: (1) यहूदी जिस यथार्थवादी तरीके से लेपालक पितृत्व को देखते थे; और (2) यीशु और यूसुफ के सम्बंध साधारण लेपालक ग्रहण से अधिक निकट थे, क्योंकि कोई भी सांसारिक पिता यूसुफ के पितृत्व सम्बंध को चुनौती देने के लिए उपस्थित नहीं था। यीशु को यूसुफ के पुत्र और वारिस के रूप में पूरी तरह उचित माना जा सकता था और माना गया होगा, जिससे यह हर बाइबल की अपेक्षा पूरी होती है कि वे "दाऊद का बीज" हों। इसलिए, यह प्रश्न कि क्या मरियम भी यूसुफ की तरह दाऊद की वंशज थीं, इस मुद्दे को लेकर निश्चित उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु की दाऊद-वंशावली का बचाव किया जा सके।

यह मनुष्य की क्षमता से परे है कि वह यीशु की दोनों वंशावलियों में अन्तर का पूरा समाधान या यीशु का उनके साथ वास्तविक सम्बंध निश्चित रूप से खोज सके। इतना अवश्य कहा गया है कि यह सम्भव है कि इन दोनों वंशावलियों में सामंजस्य स्थापित किया जा सके। यहाँ बताए गए प्रत्येक वंशावली के उद्देश्यों से यह स्पष्ट होता है कि उपरोक्त सुझाए गए किसी भी तरीके से यीशु की दाऊद के वंशावली, उनके पूर्वजों के वाचा-सिंहासन के अधिकारपूर्ण वारिस के रूप में, और मरियम के द्वारा उनके कुँवारी जन्म, दोनों के साथ पूरा न्याय किया जाता है।

यह भी देखें वंशावली; देहधारी; यीशु मसीह, जीवन और शिक्षाएँ; कुँवारी से यीशु का जन्म।

यीशु यूस्तुस

यीशु यूस्तुस

एक यहूदी मसीही व्यक्ति।

*देखिए*यीशु #3।

युगांतशास्त्र

युगांतशास्त्र

धर्मविज्ञान की वह शाखा जो अंतिम घटनाओं या अंत समय का अध्ययन करती है, चाहे वह व्यक्ति से संबंधित हो या दुनिया से।

युगांतशास्त्र के विषय

मृत्यु

बाइबल सिखाती है कि सभी मनुष्यों की मृत्यु होगी (इब्रा 9:27)। केवल वे ही अपवाद होंगे जो मसीह के लौटने पर जीवित होंगे (1 थिस्स 4:17)। शारीरिक मृत्यु या "पहली मृत्यु" आत्मा का देह से अलग होना है। संसार में पाप की उपस्थिति के कारण, सभी को मरना आवश्यक है (रोम 5:12)।

मध्यवर्ती अवस्था

यह मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच व्यक्ति की स्थिति को संदर्भित करता है। पारंपरिक रूढ़िवादी दृष्टिकोण यह है कि विश्वासियों को प्रभु की उपस्थिति में एक सचेत आनंद की स्थिति का अनुभव होता है, जबकि अविश्वासियों को परमेश्वर की उपस्थिति से अलगाव के कारण पीड़ा होती है। हालांकि, यह प्रत्येक की अंतिम नियति की तुलना में अपेक्षाकृत अधूरी स्थिति है। कु "छ समूह, जैसे कि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट्स, मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच एक प्रकार की "आत्मा की नींद" या अचेतनता में विश्वास रखते हैं। फिर भी अन्य, विशेष रूप से रोमन कैथोलिक, भविष्य के जीवन की तैयारी में शुद्धिकरण के स्थान में विश्वास करते हैं।

दूसरा आगमन

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि समय के अंत में मसीह व्यक्तिगत, शारीरिक रूप में लौटेंगे (प्रेरि 1:11)। कोई नहीं जानता कि यह कब होगा, और यह कुछ लोगों को आश्चर्यचकित करेगा, जैसे रात में चोर का आना (लूका 12:39–40)। यद्यपि समय ज्ञात नहीं है, यह तथ्य कि यह होगा, बहुत निश्चित है। यीशु के कई दृष्टांत (विशेषकर मत्ती 24–25 में) इस तथ्य और सतर्क, विश्वासयोग्य, और गहन गतिविधि की उपयुक्तता को संदर्भित करती हैं।

पुनरुत्थान

सभी जो मर चुके हैं, वे जीवित हो जाएँगे। यह एक शारीरिक पुनरुत्थान होगा, प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक अस्तित्व का पुनः आरंभ। विश्वासियों के लिए, यह मसीह के दूसरे आगमन के संबंध में होगा और इसमें इस वर्तमान मांस के शरीर को एक नए, पूर्ण शरीर में परिवर्तित करना शामिल होगा (1 कुरि 15:35–56)। बाइबल अविश्वासियों के पुनरुत्थान की भी ओर संकेत करती है, जो अनंत मृत्यु की ओर होगा (यूह 5:28–29)।

न्याय

न्याय का एक समय आएगा जिसमें प्रभु उन सभी की आत्मिक स्थिति का निर्धारण करेंगे, जो परमेश्वर के साथ उनके संबंधों के आधार पर है। इन आधारों पर कुछ को अनंत प्रतिफल के लिए भेजा जाएगा और अन्यों को अनंत दंड के लिए। कुछ धर्मशास्त्री विश्वासियों और अविश्वासियों के न्याय के समय के बीच अंतर करते हैं। कुछ सात विभिन्न न्यायों को होते हुए देखते हैं।

अंतिम अवस्थाएँ

बाइबल स्वर्ग के अस्तित्व की शिक्षा देती है, जो एक अनन्त आनंद का स्थान है, जहाँ मसीही लोग परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं। बाइबल नरक (विशेष रूप से गहन्ना या आग की झील) के बारे में भी बताती है, जो अविश्वासियों की परमेश्वर की उपस्थिति से पीड़ादायक अलगाव की स्थिति है। ये स्थायी अवस्थाएँ हैं, जो इस जीवन में किए गए निर्णयों द्वारा निर्धारित होती हैं।

सहस्राब्दी

कई मसीही लोग मानते हैं कि यीशु मसीह का पृथ्वी पर एक शासन होगा, जिसे सहस्राब्दी कहा जाता है, जो अंतिम न्याय से ठीक पहले होगा। यह विश्वास प्रका 20:4–7 पर आधारित है। जो लोग मानते हैं कि मसीह व्यक्तिगत रूप से इस अवधि की शुरुआत करने के लिए लौटेंगे, उन्हें प्रीमिलेनियलिस्ट कहा जाता है। अन्य, जो सिखाते हैं कि परमेश्वर का राज्य सुसमाचार के प्रगतिशील सफल प्रचार के माध्यम से स्थापित होगा, उन्हें पोस्टमिलेनियलिस्ट कहा जाता है। फिर भी अन्य, जिन्हें अमिलेनियलिस्ट कहा जाता है, यह नहीं मानते कि मसीह का कोई पृथ्वी पर शासन होगा, वे प्रका 20 के 1,000 वर्षों की प्रतीकात्मक व्याख्या करते हैं।

महाक्लेश

बाइबल एक महान संकट या क्लेश के समय की बात करती है, जो पृथ्वी पर आएगा और यह किसी भी पहले हुई घटना से अधिक होगा। कुछ लोग, इसे दानिय्येल 9:24–27 के 70वें सप्ताह से जोड़ते हुए मानते हैं कि यह सात वर्षों की अवधि का होगा। कुछ मानते हैं कि कलीसिया इस समय का अनुभव करेगी क्योंकि प्रभु इस अवधि के अंत तक वापस नहीं आएंगे। इन्हें पश्चात्क्लेशवादी कहा जाता है। अन्य, जिन्हें पूर्वक्लेशवादी कहा जाता है, मानते हैं कि प्रभु का दूसरा आगमन दो चरणों में होगा: (1) मसीह अपनी कलीसिया के लिए आएंगे और विश्वासियों को महान क्लेश से पहले ले जाएंगे; (2) मसीह फिर अपनी महिमा को पूरे संसार के सामने प्रकट करेंगे। और कुछ अन्य, जिन्हें मध्यक्लेशवादी कहा जाता है, मानते हैं कि कलीसिया पहले साढ़े तीन वर्ष के लिए उपस्थित रहेगी लेकिन क्लेश के और अधिक बढ़ने से पहले हटा दी जाएगी।

यह भी देखें अंतकालीन; प्रभु का दिन; मृत्यु; अनंत जीवन; स्वर्ग; नरक; मध्यवर्ती अवस्था; न्याय; अंतिम दिन; अंतिम न्याय; सहस्राब्दी; पुनरुत्थान; मसीह का दूसरा आगमन; दानिय्येल की पुस्तक; महाक्लेश; परमेश्वर का क्रोध।

युत्ता

हारून के वंशजों के लिए ठहराए गए शरण के नगरों में से एक (यहो 21:16)। यह यहूदा के क्षेत्र के पहाड़ी देश में और माओन के क्षेत्र में स्थित था (15:55)। इसे आधुनिक यट्टा के साथ पहचाना गया है, जो हेब्रोन के दक्षिण-पश्चिम में लगभग साढ़े पाँच मील (8.8 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है।

यह भी देखें शरण नगर।

युद्ध

जिस साधन से एक देश बलपूर्वक अपनी इच्छा दूसरे पर थोपने का प्रयास करता है, प्राचीन काल में युद्ध की महत्ता का एक संकेत उनका तकनीकी कौशल था, जो विनाश और रक्षा के उपकरणों को पूर्ण करने के लिए निर्देशित किया गया था।

युद्ध की विधियाँ

मानक तुलना

द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत और प्रथम के आरंभ में घुड़सवार टुकड़ियों की शुरुआत हुई। घुड़सवार सेना का आक्रमण महान सेनाओं को शक्तिशाली बल प्रदान करता था, और घुड़सवार टुकड़ियों की गतिशीलता निर्णायक बिंदुओं पर अग्निशक्ति की एकाग्रता के लिए सहायक थी। जब अश्शूरीयों ने अपनी पैदल सेना, घुड़सवार सेना, और रथ दल को एक शक्तिशाली युद्ध मशीन में समन्वित किया, तो छोटे पड़ोसी राष्ट्र अधिक से अधिक किलाबंदी कर पीछे हटने के लिए मजबूर हो गए। वे खुले मैदान में विशाल अश्शूरी सेना से मानक युद्ध में मुकाबला करने की उम्मीद नहीं कर सकते थे। लौह युग II के अलावा किसी भी युग मे सर्वाधिक बहुमूल्य चित्रित स्मारकों की उपलब्धता नहीं है; अश्शूरी युद्ध से संबंधित उभरी हुई नक्काशी उनके विजय और किलेबंद शहरों के आकार का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करती हैं। खुले मैदान में सामान्य युद्ध को दर्शाने वाले कुछ दृश्य दिखाते है कि रथ सभी दिशाओं से आक्रमण कर रहे हैं और युद्ध के सभी चरणों में शत्रु से मुकाबला कर रहे है। अन्य संरचनाओं में शत्रु की प्रतिरोधोक टुकड़ियाँ रथ आक्रमण के बाद शत्रुओ का खातमा कर शेष रह जाती थी।

भूभाग का महत्व हमेशा से अत्यधिक था। खुले भूभाग पर सामान्य युद्ध में, पंक्ति के दाहिनी ओर सबसे अच्छे सैनिकों को रखना पारंपरिक हो गया था। एक यूनानी सेनापति, एपामिनोडास (मृत्यु 362 ईसा पूर्व), ने एक मजबूत बाएं शाखा द्वारा तिरछे हमले का एक तरीका प्रस्तुत किया, जिससे स्पार्टन सेना पूरी तरह से अचंभित हो कर पराजित हो गई। मकदूनिया के फिलिप्पुस और उनके पुत्र सिकन्दर ने फालानक्स के हमले की योजना पर आधारित, अपने हमलों मे विभिन्नताओं के साथ प्रयोग कर अपने दुश्मनों को अचंभित करना जारी रखा।

खुले मैदान में युद्धः द्वंद्व

प्राचीन पश्चिमी एशिया के कुछ कालखंडों में, द्वंद्वयुद्ध, एक सामान्य युद्ध के एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया। द्वंद्वयुद्ध दो विजेताओं के बीच एक प्रतियोगिता थी, जो प्रतिद्वंद्वी सेनाओं का प्रतिनिधित्व करते थे। दोनों सेनाएं पहले से इस बात पर सहमत होती थी कि वे लड़ाई के परिणाम का पालन करेंगे। द्वंद्वयुद्ध का उद्देश्य पूर्ण पैमाने पर युद्ध के भारी मात्र में मृत्यु से बचना था। इस अनोखे युद्ध का प्रारंभिक विस्तृत लिखित विवरण 'सिनुहे की कथा' में मिलता है। 12वीं वंश के शाही कचहरी में एक चेम्बरलेन(राजकीय अधिकारी), सिनुहे स्वेच्छा से बँधुआई में चला गया और उत्तरी फिलिस्तीन और सीरिया की यात्रा की, जहाँ वह सेमिटिक (यहूदी) जनजातियों के बीच रहा। वहाँ उन्हें एक स्थानीय योद्धा द्वारा द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी गई, जिसे उन्होंने हराया और उसका सामान लूट लिया।

हालांकि अन्य सेनाओं के बीच द्वंद्वयुद्ध बाद की अवधियों में आम था, और यह इस्राएल के लिए, दाऊद और गोलियत के बीच मुठभेड़ से पहले स्पष्ट रूप से अज्ञात था (1 शमू 17) । पलिश्ती सेना यहूदा में सोको तक घुस गई थी और एक पहाड़ी पर तैनात थी। उनके खिलाफ विपरीत पहाड़ी पर शाऊल की सेना तैनात थी। एला की तराई ने दोनों शिविरों को अलग कर दिया था। इस्राएलियों को प्रतिदिन पलिश्ती विजेता गोलियत द्वारा चुनौती दी जाती थी, जिसने प्रस्ताव दिया कि युद्ध का निर्णय दो योद्धाओं के बीच मुकाबले के माध्यम से किया जाए। दाऊद ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, लेकिन जब उन्होंने गोलियत को मार डाला, तो पूर्व समझौते की शर्तों का आदर करने के लिए अनिच्छुक पलिश्ती भाग गए। इसके बाद इस्राएली सेना ने प्रतियोगिता में प्रवेश किया, पलिश्तियों का पीछा किया और भारी मात्रा मे क्षति पहुंचाई।

किलेबंद शहरों पर आक्रमण

प्राचीन पश्चिमी एशिया के अधिकांश शहर उन स्थानों पर स्थित थे जिन्हें हमले से सुरक्षित रह सकते थे और जिनके पास आर्थिक लाभ होते थे। एक किलेबंद शहर पर हमला करने से हमलावर और रक्षक के लिए विपरीत समस्याएं उत्पन्न होती थीं। एक की प्रतिक्रिया दूसरे की क्रियाओं पर आधारित होती थीं। रक्षा प्रणालियों का उद्देश्य हमले के तरीकों को विफल करना होता था, जो बदले में रक्षा प्रणालियों को भेदने के लिए संरचित किए जाते थे।

एक किलेबंद शहर को जीतने के पांच संभावित तरीके थे: किलेबंदी के ऊपर से प्रवेश करना; किलेबंदी के माध्यम से सीधे प्रवेश करना; किलेबंदी के नीचे से प्रवेश करना; घेराबंदी करना; और चालाकी से प्रवेश करना। कई मौकों पर, रक्षात्मक संजाल को तोड़ने के लिए दो या अधिक तरीकों का संयोजन आवश्यक होता था।

बाइबिल में शेकेम पर अबीमेलेक द्वारा विजय की कथा (न्या 9) न्यायियों के काल में (लौह युग I) एक किलेबंद शहर पर हमले का वर्णन करती है। जब शेकेम के लोगों और उनके सहयोगी अबीमेलेक के खिलाफ विद्रोह कर उठे, तो उसने शहर पर हमला करके जवाब दिया, अपने संगवालों को रात में आगे बढ़ाया और भोर में घातक हमला किया (9:32–35) । शेकेम के पुरुष शहर के द्वारों के बाहर खुले युद्ध में लड़ते रहे लेकिन उन्हें शहर की दीवारों की सुरक्षा से पीछे हटने के

लिए मजबूर होना पड़ा। अगले दिन अबीमेलेक ने सीधे शहर पर हमला किया। अपनी सेना को तीन समूहों में विभाजित करते हुए, उन्होंने एक का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया, जिसे उन्होंने युद्ध के निर्णायक क्षण में शहर के फाटकों पर हमले के लिए समर्पित किया (पद 43–44) । फाटक को तोड़ दिया गया और मुख्य फाटक पर कब्जा कर लिया गया, लेकिन शहर के बचे हुए रक्षक एक आंतरिक दुर्ग मे स्थित, बाल-बरीत के मंदिर में भाग गए।

कई उभड़ी हुई नक्काशी सैनिकों के समूहों को शहर की दीवार टूटने के पश्चात, आंतरिक गढ़ की रक्षा करते हुए दर्शाते हैं। शेकेम में पुरातात्विक उत्खनन पुष्टि करते हैं कि इसका मंदिर, अन्य कनानी शहरों की तरह, एक किलेबंद मीनार के रूप में बनाया गया था, जो प्रवेश द्वार के पास मजबूत गढ़ो द्वारा सुरक्षित था। शेकेम की मीनार इस प्रकार से मजबूत किलेबंद थी और जो केवल एक छोटे क्षेत्र पर थी, जिसके द्वारा रक्षक अबीमेलेक की सेना पर अपनी गोलाबारी की शक्ति से अपना बचाव कर सकते थे। चूंकि इसे तुरंत तूफानी तरीके से नहीं जीता जा सकता था, अबीमेलेक ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे अपनी युद्ध-कुल्हाड़ियों का उपयोग करके पेड़ काटें, जिसे गढ़ पर डाला गया और आग लगा दी गई (न्या 9:48–49)। मीनार के भीतर सभी रक्षक मारे गए।

आंतरिक गढ़ पर हमला हमेशा एक आक्रमणकारी सेना के लिए खतरनाक कार्य होता था, जैसा कि शेकेम के मीनार पर कब्जे के बाद के घटनाक्रम में दिखाया गया है। अबीमेलेक ने अगला ध्यान तेबेस के शहर पर केंद्रित किया और उसी हमले की योजना का पालन किया जो शेकेम में सफल साबित हुई थी। लेकिन जब वह उन फाटकों को जलाने की तैयारी कर रहा था, जहाँ रक्षक भाग गए थे, तो उसकी खोपड़ी एक महिला द्वारा उस पर गिराए गए चक्की के टुकड़े से कुचल दी गई (न्या 9:50–53)। यह घटना एक मिसाल बन गयी और यह एक कहावत बन गई कि एक किलेबंद मीनार की दीवारों के बहुत करीब जाने का खतरा होता है (2 शमू 11:19–21) ।

संचार और गुप्तचर

पितृसत्तात्मक काल (मध्य कांस्य काल) से, हमारे पास युद्धकाल में संचार प्रणालियों के उपयोग की विस्तृत लिखित जानकारी उपलब्ध है। फरत नदी पर मारी, से प्राप्त दस्तावेज़ संचार पर आधारित एक अच्छी तरह से विकसित संचार प्रणाली के प्रमाण मिलते हैं। संकेतों को रात में मशालों या अग्निबाणों द्वारा एक पूर्व निर्धारित संकेत-लिपि के अनुसार चमकाया जाता था। इस प्रणाली का मेसोपोटामिया और अन्य स्थानों के किसी शहर पर हमला होने पर या तत्काल सहायता के लिए बुलाने के लिए व्यापक रूप से प्रयोग होता था ।

हाल ही के कांस्य युग में घुड़सवारों को कभी-कभी विभिन्न संचार कार्यों के लिए नियुक्त किया जाता था। खुफिया सेवाओं ने सैन्य अभियानों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाइबल मे वर्णनीत कनान की भूमि की विजय, जासूसी का महत्वता और जासूसों या भेदि के प्रयोग पर जोर देती है। देश में प्रवेश करने से पहले, मूसा ने पुरुषों को जासूसी करने भेजा। उन्होंने उन्हें भूमि की स्थलाकृति की जानकारी इकट्ठा करने, उसके निवासियों की सापेक्ष शक्ति का अवलोकन करने, यह निर्धारित करने के लिए कि भूमि उपजाऊ है या बंजर, शहरों का सर्वेक्षण करने और यह देखने के लिए कि वे किलेबंद हैं या नहीं, और भूमि कैसी है उसका भेद लाने का निर्देश दिया—क्या यह बड़ी आबादी को बनाए रखने में सक्षम थी (गिन 13:17–20) ।

बुद्धि एवं चतुराई से प्राप्त की जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण थी। यहोशू ने यरीहो और आई के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू करने से पहले भेदीओं को भेजा (यहो 2:1; 7:2) । कनानियों के आक्रामक तरीके और ताकत के बारे में प्राप्त खबर ने उन्हें एक आक्रमण योजना तैयार करने में सक्षम बनाया। न्यायियों के काल में बेतेल की विजय (न्या 1:22–26) सीधे तौर पर भेदियों के एक समूह के द्वारा एकत्रित खुफिया जानकारी के कारण हुई थी। यूसुफ के गोत्रों ने शहर पर नजर रखने के लिए भेदी भेजे। यह शहर मजबूत किलेबंदी वाला था और अभेद्य प्रतीत होता था। भेदियों ने एक पुरुष को पकड़ा जो शहर से बाहर निकला—संभवतः मुख्य फाटक से नहीं, जो कि कसकर बंद था, बल्कि एक छिपे हुए द्वार या सुरंग के माध्यम से। अपने जीवन और अपने परिवार की सुरक्षा के बदले, उसने दीवारों के नीचे से गुजरने वाले मार्ग का स्थान बताया। शहर को सुरंग के माध्यम से भेदकर कब्जा कर लिया गया।

हमला और प्रवेश: अतिक्रमण

प्राचीन शहर की किलेबंदी में सीधी पैठ का अर्थ था फाटक या मुख्य दीवारों को हथौड़े, कुल्हाड़ी, भाले, तलवारो, या मोठे तख्त का उपयोग करके तोड़ते थे। चित्रित स्मारक और लिखित दस्तावेज संकेत करते है कि मध्य कांस्य युग की शुरुआत में किलेबंद शहरों पर मोटे भित्ति पातक के साथ हमला किया जाता था। भित्ति पातक का सबसे पुराना ज्ञात चित्रण बेनी हसन (20वीं शताब्दी ईसा पूर्व) की दीवार चित्रों में एक घेराबंदी दृश्य में दिखाई देता है। चित्रित भित्ति पातक एक अपेक्षाकृत सरल उपकरण है, जिसमें एक झोपड़ी जैसी संरचना होती है जिसमें एक हल्की नुकीली छत होती है, जिसे दो समानांतर आड़ी पट्टी की सहायता से किलो के पास ले जाया जा सकता था। यह संरचना दो या तीन सैनिकों के लिए आवरण प्रदान करती थी जो हाथ से एक बहुत लंबा ध्रुव संचालित करते थे, जिसका नुकीला सिरा धातु का होता था।

मारी दस्तावेज़ इस अवधि के 200 साल बाद की जानकारी प्रदान करते है। वे मुख्य रूप से लकड़ी से निर्मित भित्ति पातक की प्रभावशीलता का उल्लेख करते हैं। हालांकि यह बहुत भारी था, यह घेराबंदी हथियार लंबी दूरी तक ले जाया जा सकता था। एक दस्तावेज़ में एक गाड़ी का उपयोग करने का उल्लेख है जिसे भारवाहन करनेवाले जानवरों द्वारा खींचा

जाता था और एक नाव का उपयोग तख्त को एक घिरे हुए शहर के स्थान पर ले जाने के लिए किया जाता था।

एक भित्ति पातक को स्थिति में ले जाने के लिए विध्वंस इकाई हमेशा ऊपर की दीवारों पर रक्षकों की भारी आक्रमण के शिकार होते थे। इसके भारीपन के कारण इसे ले जाना कठिन था। इसके अलावा, दीवारों के पास की जमीन आमतौर पर खुरदरी, चट्टानी और खड़ी होती थी। जब प्रवेश करने का चुना हुआ स्थान दीवार का एक हिस्सा होता था, तो एक आक्रमण बल को एक मिट्टी की ढलान बनाना पड़ता था, जिसे कभी-कभी ऊपरी सतह और किनारों को लकड़ी के तख्तों या पत्थरों से मजबूत किया जाता था। ढलान एक मार्ग प्रदान करता था जिसके साथ भित्ति पातक को ढलान के तल से बाहरी दीवार तक ले जाया जा सकता था। एक बार कार्यशील स्थिति में ले जाने के बाद, भित्ति पातक को पीछे लुढ़कने से रोकने के लिए रोधक लगाना पड़ता था। बेत-माका में हाबिल के शहर की किलेबंद के लिए योआब के अभियान में इस तरह की ढलान के निर्माण की स्पष्ट रूप से आवश्यक थी (2 शमू 15) । बाइबिल के विवरण से पता चलता है कि प्रारंभिक राजशाही के दौरान दाऊद के अधीन इस्राएल में किसी प्रकार का भित्ति पातक उपयोग में था।

प्राचीन अश्शूरी नक्काशी दर्शाती है कि प्रवेश द्वारों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विचार था। लकड़ी से बने ऊँचे, गतिशील आक्रमण मीनारें को भित्ति पातक के साथ मिलाकर संचालित किया जाता था। इन मीनारों को एक अतिक्रमण कार्यवाही के स्थान के समीप ले जाया जाता था और तीरंदाजों द्वारा संचालित किया जाता था, जो दीवार पर रक्षकों के खिलाफ सुरक्षा आक्रमण प्रदान करते थे। घेराबंदी मीनारों ने रक्षकों की गोलाबारी के लाभ को निष्क्रिय कर, दीवारों को तोड़ने में लगे दल को आग से रक्षा प्रदान करता था।

अश्शूरी नक्काशी के विवरण मे यरूशलेम के भविष्य का वैसे ही स्पष्ट रूप से चित्रण मिलता है, जैसे यहेजकेल भविष्यद्वक्ता द्वारा घोषित किया गया था (यहे 4:1–3; 21:22)। फाटक हमले का मुख्य केंद्र था क्योंकि यह दीवार का सबसे कमजोर बिन्दु था। इसके अलावा, फाटक तक जाने वाला रास्ता विशेष ढलान के निर्माण को अनावश्यक बना देता था। फाटक को गिराने के लिए, दरवाजों को ढीला करने और काजों को तोड़ने के लिए कभी-कभी तलवारों का उपयोग किया जाता था। धातु से अप्रतिरक्षित लकड़ी के दरवाजों को अक्सर आग लगा दी जाती थी।

यूनानीकृत-रोमी काल में दीवारों को तोड़ने के लिए भित्ति पातक का उपयोग एक यंत्र के रूप में किया जाता था। 63 ईसा पूर्व में रोमी सेनापति पोम्पेई ने यरूशलेम के रक्षकों के खिलाफ सोर से भित्ति पातक लाए, और उनके माध्यम से मंदिर को घेरने वाली किलेबंद दीवार में प्रवेश किया। ट्राजन के स्तंभ पर दिखाए गए घेराबंदी यंत्र में एक लट्ठा था जिसमें एक लोहे का सिर था जो एक भित्ति पातक के आकार का था। इसे एक दृश्य में दीवार तक ले जाया गया जो मिट्टी या खाल से ढकी लकड़ी की छत से सुरक्षित था। दीवार में छेद करने के लिए 70 ईस्वी में सुसज्जित एक प्रकार का हथियार तितुस द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी करते समय इस्तेमाल किया गया था।

भित्ति पातक एकमात्र उपकरण नहीं था जिसका उपयोग दीवार में सेंध लगाने के लिए किया जाता था। सैनिक, जो सैपर्स (खंदक खोदने वाले सैनिक) के रूप में प्रशिक्षित होते थे, वे तेज सिर वाले लोहे के नुकेले उपकरण (भाले, तलवारें, भाले) या यहाँ तक कि घन का उपयोग करके दीवार के एक हिस्से को गिरा देते थे (तुलना करें यहे 26:8–9) । अशुर्नासिरपाल की सेना में ऐसे लोगों को उनके पूरे शरीर को ढकने के लिए पूरी लंबाई के कवच दिए जाते थे। बाद के अश्शूरी राजाओं के अधीन, उन्हें गोल और आयताकार दोनों प्रकार की ढालों से संरक्षित किया गया था, जिन्हें वे विध्वंस में लगे होने पर अपनी पीठ पर ले जाते थे। बाद में, अशुर्बनिपाल ने एक किलेबंद शहर में सीधे प्रवेश के लिए विशेष रूप से ऐसे सैपर्स पर भरोसा किया। उन्होंने उनकी सुरक्षा के लिए एक विशाल ढाल बनवाई, जिसका घुमावदार सिर दीवार के खिलाफ टिकाया जा सकता था, जिससे सैपर को नीचे काम करते समय बर्छा से बचाया जा सके।

दीवारों पर चढ़ाई करना

ऊपरी मिस्र के दशाशे में अंटा की कब्र में चूना पत्थर पर चित्रित एक युद्ध दृश्य (24वीं शताब्दी ईसा पूर्व) घेराबंदी गतिविधियों का सबसे प्रारंभिक ज्ञात चित्रण प्रदान करता है। यह मिस्रवासियों को एक किलेबंद शहर की दीवारों के खिलाफ एक सीढ़ी उठाते हुए दिखाता है। सर्गोन के समय तक, दीवारों की मोटाई काफी बढ़ा दी गई थी, जिससे बहुत ऊंची दीवारों का निर्माण संभव हो गया, जो चढ़ाई के लिए अधिक प्रतिरोधी थी। ऐसी ठोस, विशाल दीवारे भित्ति पातक की प्रभावशीलता को भी कम करने की प्रवृत्ति रखती थी। सर्गोन, और विशेष रूप से उनके उत्तराधिकारी अश्शूरबनीपाल ने, लंबी सीढ़ियों का निर्माण इसका समाधान निकाल, जिनमें से कुछ 25 से 30 फीट (7.6 से 9.1 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंच सकती थी, जिसे पायदान की संख्या से अनुमान लगाया जा सकता है।

दीवारों के नीचे से प्रवेश

एक सुरंग निर्माण का अभियान किसी भी हथियार की सीमा से परे रक्षकों द्वारा शुरू किया जा सकता था। एक बार भूमिगत होने पर, प्रवेश इकाई शत्रु की आग से सुरक्षित होती थी। सुरंग निर्माण को रात्री में गुप्त रूप से पूरा किया जा सकता था, ताकि अचंभित करने के तत्व का अधिकतम लाभ उठाया जा सके। हालांकि, यह एक लंबी प्रक्रिया थी जिसमें काफी तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती थी। इसके अलावा, यदि रक्षकों द्वारा कार्यवाही को इसके पूरा होने से

पहले पता चल जाता, तो वे सुरंग से उभरने पर प्रवेश इकाई को नष्ट कर सकते थे। दीवारों के नीचे सुरंग बनाकर किलेबंद शहरों में प्रवेश करने का प्रयास लौह युग II में युद्ध की एक विशेषता थी। इसकी नक्काशी चित्रों, लिखित दस्तावेजों और इस अवधि की तारीखों वाले स्थलों की पुरातात्विक खुदाई से पुष्टि होती है, जहाँ हमले मे सुरंगों के अवशेष खोजे गए है।

घेराबंदी

विशेष रूप से जब दीवारों वाला एक शहर किसी ऊँची पहाड़ी पर स्थित होता था, तो एक विस्तारित घेराबंदी इसे जीतने का एक वैकल्पिक तरीका प्रदान करती थी। शहर को घेरकर और उसके रक्षकों तक सहायता या आपूर्ति पहुँचने से रोककर, आक्रमणकारी सेना निवासियों को भूखा मार सकती थी। यह प्रक्रिया आक्रमणकारी सेना के लिए जोखिम के तत्व को कम करती थी। इसकी सफलता इस पर निर्भर करती थी कि वे बाहरी सहायता को शहर तक पहुँचने से रोक सकें और रक्षकों को इसे छोड़ने से रोक सके। एक सेना आमतौर पर घेराबंदी का सहारा तब लेती थी जब एक शहर की किलेबंदी सीधे प्रवेश के लिए बहुत शक्तिशाली होती थी। असीरियों द्वारा सामरिया की घेराबंदी तीन वर्षों तक चली (2 रा 18:9–10) ।

घेराबंदी की विशेष परिस्थितियों ने शिला प्रक्षेपक का निर्माण किया, जो यूनानी तोपखाने का एक प्रमुख खोज था और धनुष और गोफन का तार्किक सुधार था। मूल रूप से इसे एक मजबूत धनुष के रूप में संरचना किया गया था जो एक स्तंभ पर लगाया गया था और केवल तीर चलाने के लिए उपयोग किया जाता था। इसे लगभग 400 वर्ष ईसा पूर्व दिमेत्रियुस I द्वारा पहली बार उपयोग किया गया था। उन्होंने यह विचार संभवतः कार्थेज में फोनीशियनों से लिया होगा।

समय के साथ इस उपकरण में सुधार किया गया। आदर्श हथियार, जिसे पृष्ठीय तनाव वाला शिला प्रक्षेपक कहा जाता है, इसकी शक्ति कई कसकर मुड़ी हुई लोचदार सामग्री की धारियों से प्राप्त होती थी, जिसकी अक्सर महिलाओं के बालों से आपूर्ति की जाती थी, जिन्हें एक पवनचक्की के साथ कसकर फिर अचानक से छोड़ा जाता था। 200 गज (182.9 मीटर) की प्रभावी सीमा के साथ तीर, बड़े पत्थर, या आग की टोकरी फेंकते हुए, एक शिला प्रक्षेपक एक दीवार को ध्वस्त कर सकता था जबकि एक भित्ति पातक उसे तोड़ता या एक चलायमान मीनार से एक आक्रमणकारी दल हमला करता था।

एक घिरे हुए शहर में, भोजन और पानी की आपूर्ति महत्वपूर्ण समस्याएं थीं। अकाल की भयावहता को बाइबल के सामरिया की घेराबंदी के वर्णन में विशेष रूप से दर्शाया गया है, जो सीरियाई बेन्हदद द्वारा भविष्यद्वक्ता एलीशा के दिनों में हुई थी। उस अवसर पर महिलाए अपने बच्चों को खाने के लिए विवश हो गईं (2 रा 6:26–29) । एक घेराबंदी करने वाली सेना ऐसी स्थितियों को और बिगाड़ने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देती थी। अशुर्नासिरपाल द्वितीय के समय एक घेराबंदी राहत चित्र में, एक रक्षक ने दीवार से एक बाल्टी नीचे की है ताकि नीचे की धारा से पानी खींच सके; एक अश्शूरी सैनिक को अपने खंजर से रस्सी काटते हुए दिखाया गया है।

चालें और रणनीतियाँ

विभिन्न चालें और रणनीतियाँ रक्षकों को एक शहर से बाहर निकाल सकती थी या सैनिकों को शहर में प्रवेश करा सकती थी। यदि एक छोटी सेना एक चतुर रणनीति द्वारा एक शहर में प्रवेश कर सकती थी, तो वह पहरेदारों को परास्त कर सकती थी और एक आक्रमणकारी सेना के लिए शहर के द्वार खोल सकती थी। एक बार जब कोई शत्रु शहर में प्रवेश कर जाता थे, तो शहर की किलेबंदी का कोई मूल्य नहीं रह जाता था। इसके अलावा, किसी एक केंद्र पर शहर की रक्षा प्रणाली में प्रवेश करने से अक्सर पूरी रक्षा प्रणाली ध्वस्त हो जाती थी। ट्रोजन घोड़े की कहानी शायद एक मजबूत किलेबंद प्राचीन शहर की रक्षा को दरकिनार करने वाली रणनीति का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है।

बेन्हदद द्वारा सामरिया की घेराबंदी का बाइबल विवरण में, सीरियाई घेराबंदी के अचानक हटने से योराम, इस्राएल के राजा को एक चाल का संदेह हुआ। उन्होंने चार कोढ़ियों की खबर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि सीरियाई, अपने पीछे बड़ी भोजन आपूर्ति छोड़कर चले गए थे (2 रा 7:12) । यह उसी प्रकार की रणनीति थी जो यहोशू ने आई में अपनाई थी (यहो 8:3–8) ।

अन्य अवसरों पर, शक्तिशाली सेनाओं ने मनोवैज्ञानिक युद्ध के माध्यम से प्रतिरोध को तोड़ने का प्रयास किया, जैसे कि सन्हेरीब द्वारा हिजकिय्याह के समय में यरूशलेम पर कब्जा करने के असफल प्रयास में (2 रा 18–19) । अश्शूरी सेनापति और हिजकिय्याह के प्रतिनिधियों के बीच संवाद से यह स्पष्ट होता है कि अश्शूरी शहर के रक्षकों का आत्मविश्वास कमजोर करने की कोशिश कर रहे थे।

घात एक प्रकार की चाल थी जिसका उपयोग शत्रु को फंसाने और नष्ट करने के लिए किया जाता था, जब वह अचानक और अप्रत्याशित प्रहार का सामना करने में सबसे कम सक्षम होता था। इसकी प्रभावशीलता लगभग पूरी तरह से आश्चर्य के तत्व पर निर्भर करती थी। अच्छी खुफिया जानकारी, इलाके का ज्ञान, और रात के आवरण का लाभ उठाकर, एक छोटी सेना विशाल रूप से श्रेष्ठ संख्या के खिलाफ एक विनाशकारी घात लगा सकती थी।

घात लगाना कनान की विजय के दौरान, युद्ध की एक मानक विधि थी। उदाहरण के लिए, आई का पतन सीधे एक घात की सामरिक सफलता के कारण हुआ था (यहो 8:1–23) । रात के अंधेरे में, यहोशू एक बड़ी सेना को शहर के पीछे एक छिपी हुई स्थिति में ले जाने में सक्षम थे। फिर उन्होंने इस्राएली सेना के शेष हिस्से को किलेबंद शहर के उत्तर में एक तराई के

किनारे पर ले गए, जिससे शहर पर एक नियोजित हमला प्रतीत हुआ। जैसा कि योजना बनाई गई थी, अराबाह के मैदान पर इस्राएल के साथ लड़ाई करने के लिए आई की मुख्य सेना को शहर से दूर खींच लिया गया। जब इस्राएली पीछे हट गए, तो ऐसा प्रतीत हुआ कि वे बुरी तरह से पराजित हो गए है, शहर के शेष रक्षकों को यहोशू की भागती सेना का पीछा करने के लिए बुलाया गया। जब शहर बिना रक्षा के रह गया, तो इस्राएली के मुख्य हमला बल अपनी घात की स्थिति से उठ खड़ा हुआ, शहर में घुस गया, और उसे आग लगा दी। बहुत देर बाद, आई के लोगों ने अपने जलते हुए शहर से धुआं देख इस चाल को समझा। यहोशू की सेना ने उनके पीछा करने वालों पर पलटवार किया, जो खुद को इस्राएली बलों के दो समूहों के बीच फंसा हुआ पाया। आगे और पीछे दोनों से हमला किया गया, आई की सेना का राजा एक प्रभावी रूप से लगाए गए घात का शिकार होकर नष्ट हो गया।

किलेबंदी और सुरक्षा

दुनिया में ज्ञात सबसे प्रारंभिक किलेबंदी, जिसे कुछ लोग लगभग 7000 ईसा पूर्व मानते है, जिसकी खोज 1954 में यरीहो में हुई थी। वह अवधारणा और निर्माण में प्रभावशाली थीं। रक्षा प्रणाली का मूल एक दीवार थी, जिसका एक हिस्सा, प्राचीन शहर के पश्चिमी किनारे पर, अभी भी 21 फीट (6.4 मीटर) की ऊंचाई पर खड़ा था। आगे की खुदाई में एक बड़ी खाई का पता चला, जिसे दीवार के आधार पर ठोस चट्टान से काटा गया था, 27 फीट (8.2 मीटर) चौड़ा और 9 फीट (2.7 मीटर) गहरा। यह उपलब्धि कैसे हासिल की गई, यह एक पूर्ण रहस्य है क्योंकी उस वक्त उपलब्ध उपकरण केवल पत्थर के बने होने की संभावना थी। यरीहो की रक्षा प्रणाली का तीसरा घटक एक विशाल पत्थर की गोल मीनार थी, जो 30 फीट (9.1 मीटर) ऊंची थी, जो कभी पश्चिमी दीवार के अंदरूनी हिस्से से जुड़ी हुई थी। मीनार का सटीक उद्देश्य अभी तक निर्धारित नहीं किया गया है, लेकिन नवपाषाण यरीहो मे एक किलेबंद शहर जो एक दीवार , मीनार, और खाई के सहारे था का प्रारंभिक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

मध्य कांस्य युग तक, एक मानक रक्षा प्रणाली में चार घटक होते थे: एक खाई, एक अग्रिम (बाहरी) दीवार, मुख्य (आंतरिक) दीवार, और एक अच्छी तरह से संरचित किलेबंद फाटक। खाई, अग्रिम दीवार, और सहायक किलेबंदी के ढलान की रक्षा करने वाली खाई जो मुख्य दीवार का हिस्सा थी जिसका कार्य रक्षा भित्ति पातक द्वारा किए जाने वाले घुसपैठ को रोकना था।

नगर की दीवारें

एक साधारण दीवार का निर्माण एक शत्रुतापूर्ण घुसपैठ को केवल अस्थायी रूप से रोक सकता था, क्योंकि दीवारों को पार किया जा सकता था या तोड़ा जा सकता था। इसलिए दीवारें एक गोलाबारी करने का मंच प्रदान करती थी ताकि रक्षक हमलों को रोक सकें। दीवार प्रणाली तीन मुख्य घटकों से बनी होती थी: स्वयं दीवार, जो अवरोध का निर्माण करती थी; एक ऊपरी संरचना, जो रक्षकों के लिए गोलाबारी करने का मंच और आवरण प्रदान करती थी; और दीवार के सामने खड़ी की गई बाधाओं और जालों की एक श्रृंखला, जो तीरंदाजों को दूर रखने और भित्ति पातक के संचालन को रोकने के लिए होती थी।

गुम्मट—दीवार के बाहरी शीर्ष किनारे के साथ बनाया गया एक परकोटा—रक्षकों को थोड़ी सुरक्षा, गतिशीलता की स्वतंत्रता, और खुले स्थान जिनके माध्यम से निशाना लगा कर आक्रमण को निर्देशित किया जा सकता था। दूरी से, वर्गाकार कटाव एक पंक्ति के दांतों की तरह दिखते थे जिनके बीच में अंतराल होते थे। दांत, जिन्हें कंगूरा कहा जाता है, शत्रुओ के बर्छे के खिलाफ एक सुरक्षात्मक बाधा प्रदान करते थे। अंतराल, जिन्हें झारोखा या कंगूरा कहा जाता है, ऐसे खुले स्थान जिनके माध्यम से रक्षक अपने हथियारों का इस्तेमाल कर सकते थे। विशेषकर दीवार से निकली बाहरी मीनारे, जिनकी दूरी धनुष की दोहरी सीमा से अधिक नहीं होती थी। ऐसे टावर रक्षकों को उन सैनिकों पर आक्रमण करने में सक्षम बनाते थे जो दीवारों तक पहुंचने में सफल होते थे। मुख्य दीवार की सुरक्षा का एक तरीका यह था कि एक बाहरी या अग्रिम दीवार का निर्माण किया जाए, जिसे मुख्य दीवार पर स्थित रक्षात्मक इकाइयों द्वारा भारी आक्रमण के मध्य ही तोड़ा या चढ़ा जा सके। एक अन्य विधि मुख्य दीवार के आधार के चारों ओर एक चौड़ी, गहरी खाई खोदना था। एक खाई शत्रु को भित्ति पातक का उपयोग करने से रोकती थी जब तक कि वे रक्षकों की केंद्रित आक्रमण के मध्य खाई पर पुल न बना ले या इसे कुछ जगहों पर भर न लें।

मोखा किलेबंदी, जो मध्य कांस्य युग में प्रस्तुत की गई थी, तराशे हुए पत्थरों से बनी दोहरी दीवारों से विकसित हुई थी। दीवारों के बीच की जगह को कक्षों या मोखा में विभाजित किया गया था, जिनका उपयोग भंडार स्थल या निवास के लिए किया जाता था। हित्ती मोखा प्रणाली, जो कम से कम शाऊल के समय में फिलिस्तीन में प्रस्तुत की गई थी, सीरिया और फिलिस्तीन में व्यापक रूप से अपनाई गई थी। गिबा में एक अच्छा उदाहरण खोजा गया है, जहाँ शाऊल का गढ़ स्थित था, जो 11वीं शताब्दी ईसा पूर्व के अंत का है। दोहरी दीवारों की कुल मोटाई, जिसमें मोखा शामिल हैं, 15 फीट (4.6 मीटर) तक पहुंचती है। इसी प्रकार की निर्माण शैली तीन सुलैमान के शहर —हासोर, गेजेर, और मगिद्दो (cf. 1 रा 9:15)—की खुदाई में पाया गया, जहाँ मोखा दीवारों की कुल मोटाई 18 फीट (5.5 मीटर) है।

हालांकि यहूदा और इस्राएल के विभाजित राज्य आक्रामक युद्ध में तकनीकी प्रगति के लिए प्रसिद्ध नहीं थे, उनके कई राजाओं ने किलेबंदी और रक्षा के साधनों में सुधार करने का प्रयास किया। उज्जियाह को विशेष रूप से रक्षात्मक युद्ध में उनकी उपलब्धियों के लिए याद किया जाता है। अन्य उपायों

के साथ, "उन्होंने यरूशलेम की दीवारों पर मशीनें बनाईं, जिन्हें प्रतिभाशाली लोगों द्वारा तीर चलाने और मीनारों और दीवार के कोनों से पत्थर फेंकने के लिए बनाया गया था" (2 इति 26:15)। वे "यंत्र" विशेष सुरक्षात्मक संरचनाएं थीं जो तीरंदाजों के कार्य को सुगम बनाने और आक्रमणकारी सैनिकों के सिर पर विशाल पत्थर गिराने की अनुमति देने के लिए बनाई गई थी।

फाटक

यह अपरिहार्य था कि किसी किलेबंद शहर पर हमले में फाटक कार्यवाही का केंद्र होगा। इसलिए शहर के फाटक इस तरह से निर्मित किए गए थे कि वे हमलावर सेना को अधिकतम जोखिम में डालते हुए रक्षकों को अधिकतम सुरक्षा प्रदान करें। पहाड़ी पर स्थित शहर की ओर जाने वाली सड़क ढलान पर ऊपर की ओर चढ़ती हुई बाईं या दाईं ओर मुड़ती थी। ऐसी सड़कें आमतौर पर दाईं ओर से फाटक तक पहुंचने के लिए बनाई जाती थीं, ताकि हमलावर को दीवार पर मौजूद रक्षकों के सामने अपने शरीर के दाहिने ओर को उजागर करना पड़े। चूंकि वह अपनी ढाल बाएं हाथ में रखते थे, इसलिए वह अधिक असुरक्षित हो जाते थे।

भारी लकड़ी के फाटक को आग से बचाने के लिए, उन्हें आमतौर पर धातु से मढ़ा जाता था। रथों के लिए पर्याप्त चौड़ा फाटक दोहरे दरवाजों की आवश्यकता होती थी, जिससे केंद्र में वह रेखा जहाँ दोनों दरवाजे मिलते थे, बाधा का सबसे कमजोर बिंदु बन जाता था। इसलिए दोहरे दरवाजों को बड़े कुलाबे (सिटकिनी) के साथ जोड़ा जाता था और दोनों फाटकों पल्लों के पीछे एक भारी लट्ठा लगाकर मजबूत किया जाता था, जो दरवाजों के खंभों में लगे खाँचों द्वारा जगह पर रखा जाता था।

एक अन्य घटक जो फाटक के रक्षा परिसर पर बना था वो मीनार था, जो फाटक के दोनों ओर खड़े किए जाते थे और दीवार के बाहरी हिस्से से बाहर निकले रहते थे। शत्रु सैनिक जो दरवाजों को कुल्हाड़ियों से तोड़ने या मशालों से आग लगाने का प्रयास करने पर, वे इस प्रकार के मीनारों पर रक्षात्मक इकाइयों से भारी आक्रमण के लिए उजागर हो जाते थे। फाटक के ऊपर एक छत से, जिसमें एक छज्जा होता था, से हमलावरों के सिर को केंद्रित कर आक्रमण किया जा सकता था। ऐसी सहायक संरचनाओं के जुड़ने से एक फाटक एक छोटे किले में परिवर्तित हो जाता था।

आंतरिक दुर्ग

एक शहर की दीवारों और फाटक की एक प्रमुख कमजोरी उनकी परिधि विशालता थी। एक औसत आकार के शहर की परिधि आधे कोस (.8 किलोमीटर) की हो सकती थी; एक बड़े शहर की परिधि एक कोस (1.6 किलोमीटर) से अधिक हो सकती थी। फिर भी पूरी दीवार को टूटने, चढ़ाई या सुरंग बनाने से बचाना आवश्यक था। एक आक्रमणकारी सेना रक्षकों को पूरी परिधि पर बिखेरने के लिए भ्रामक रणनीति का उपयोग करती थी, लेकिन अपने मुख्य आक्रमण को दीवार के एक बिंदु पर केंद्रित करती थी। एक बार जब दीवार टूट जाता, तो परिधि की किलेबंदी का कोई और रक्षात्मक उद्देश्य नहीं रह जाता था। इसलिए, आंतरिक दीवारें अक्सर शहर को कई खंडों में विभाजित करने के लिए जोड़ी जाती थी, जिनमें से प्रत्येक स्वतंत्र रूप से रक्षा करने में सक्षम होते थे। इसके अलावा, शहर के भीतर भूमि के सबसे ऊंचे स्थान पर एक गढ़ का निर्माण किया जाता था, जो एक आत्मनिर्भर रक्षात्मक इकाई के रूप में कार्य करता था।

ऐसे किलेबंदी के सबसे प्रारंभिक उदाहरण, जिन्हें मिग्दोल कहा जाता है, हाल के कांस्य युग में पाया जाता है। वे मूल रूप से छोटे गढ़ थे जो महत्वपूर्ण सैन्य लक्ष्यो जैसे जल स्रोतों, रणनीतिक मार्गों, खेती योग्य कृषि भूमि, या सीमाओं की रक्षा के लिए बनाए गए थे। इस प्रकार का एक मिग्दोल 1960 में इस्राएल में, अश्दोद के करीब , खोजा गया था। यह योजना में वर्गाकार था, आयताकार गढ़ो के साथ, और जो दो मंजिला ऊँचा था, मिस्री नक्काशियों जैसी संरचनाएं जो उसी अवधि से चित्रित की गई थी। वही बनावट शहरों के अंदर मंदिरों को किलेबंद करने के लिए उपयोग किया गया था। ऐसे किलेबंद मंदिर जब उसकी दीवारें भेद दी जाती थी, तब शरण स्थलों के रूप में और एक शहर की अंतिम रक्षा के रूप में कार्य करते थे (तुलना करें न्या 9:45–51).

बाद के समय में एक आंतरिक दुर्ग एक जटिल संरचना को समेट सकता था जिसमें राज्यपाल का किला, उनके प्रधान मंत्रियों के निवास, और कभी-कभी मंदिर शामिल होते थे। ऐसे दुर्ग किलेबंद शहरों के समान होते थे, जिनमें एक मुख्य दीवार, एक फाटक, एक बाहरी दीवार, और कभी-कभी एक खाई होती थी। क्षेत्र में छोटे और भारी किलेबंद होने के कारण, दुर्ग को राज्यपाल और शेष निवासियों द्वारा अंतिम प्रयास में बचाया जा सकता था। यदि वह इस में आग लगाकर आत्महत्या न की होती तो संभवतः जिम्री, तिर्सा के दुर्ग में ओम्री की सेना के खिलाफ लंबे समय तक टिक सकते थे (1 रा 16:17–18)।

घेराबंदी में पानी की आपूर्ति

जब तक एक शहर के निवासियों के लिए लंबे समय तक घेरेबंदी के दौरान भोजन और पानी की आपूर्ति के प्रावधान नहीं किए जाते, तब तक कोई भी रक्षा प्रणाली प्रभावी नहीं हो सकती थी। कई यहूदी राजाओं ने भोजन-संग्रहण की समस्या को हल करने के प्रयास किए। उदाहरण के लिए, रहबाम ने अपने राज्य की पश्चिमी, पूर्वी, और दक्षिणी सीमाओं पर स्थित कई शहरों को मजबूत किया और उन्हें भोजन, तेल, और दाखरस के भंडारण के केंद्र बनाए (2 इति 11:5–11).

भोजन का भंडारण पानी के भंडारण की तुलना में सरल था। वर्षा जल को इकट्ठा करने के लिए बनाए गए टंकी एक आंशिक समाधान थे, लेकिन टंकी अक्सर सूख जाती थी,

विशेष रूप से सूखे के समय में। शहरों का निर्माण कभी-कभी एक धारा या नदी के किनारे किया जाता था, और धारा का उपयोग शहर की रक्षा प्रणाली के हिस्से के रूप में किया जाता था। लेकिन एक पहाड़ी पर बने शहर के लिए, पानी का स्रोत ढलान के तल पर और शहर की दीवारों के बाहर स्थित एक झरना हो सकता था। कभी-कभी झरने के मुंह को बंद किया जा सकता था और उसकी स्थिति को शत्रु से छुपाया जा सकता था, परंतु निवासियों को जाने की अनुमति दी जाती थी। मगिद्दो में एक ऊर्ध्वाधर खोदा गया गड्ढा 100 फीट (274.3 मीटर) गहरा था, जो एक क्षैतिज सुरंग द्वारा लगभग 200 फीट (548.6 मीटर) लंबा था, जो शहर के पश्चिमी छोर पर, किलेबंदी से दूर जल आपूर्ति से जुड़ा था। यह काम सुलैमान या अहाब के समय में किया गया था।

घेराबंदी के समय ताजे पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सबसे प्रसिद्ध उपाय यरूशलेम में हिजकिय्याह द्वारा किए गए थे। इस अभियांत्रिकी उपलब्धि को उनके शासनकाल की सभी संक्षेपणों में याद किया जाता है, चाहे वह बाइबल में हो या अप्रमाणिक पुस्तक इकलिसियास्टिकस में "प्रसिद्ध पुरुषों की स्तुति" में (2 रा 20:20; 2 इति 32:30; इक्लस 48:17)। उन संदर्भों में स्मरणीय अद्भुत कार्य गीहोन के झरने को सील करना और शहर में एक जलाशय में पानी लाने के लिए ठोस चट्टान के माध्यम से 1,800 फुट (548.6 मीटर) की नहर काटना था। इसे कैसे पूरा किया गया था, यह हिजकिय्याह ने स्वयं प्रसिद्ध शीलोह के शिलालेख में बताया था। दो दल, हथौड़े, कीलें और फावड़ों के साथ काम करते हुए, विपरीत छोरों से शुरू हुए। झरने से शुरू करने वाला दल पुराने सुरंग का लाभ उठा सका (तुलना करें यशा 11)। वे शहर की दिशा में दक्षिण की ओर मुड़ गए। जलाशय से शुरू करने वाला दूसरा दल उत्तर-पूर्व दिशा में शुरू हुआ। फिर उन्होंने दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर झरने से सुरंग बनाने वाले दल द्वारा अनुसरण की गई उत्तर-दक्षिण रेखा तक पहुंच गए, जब उन्होंने उनसे मिलने के लिए सीधे उत्तर की ओर मुड़ लिया। दोनों दल लगभग एक-दूसरे को पार कर गए, लगभग पांच फीट (1.5 मीटर) की दूरी पर थे, लेकिन एक की आवाज़ चट्टान में एक दरार के माध्यम से दूसरे द्वारा सुनी गई। दोनों दल दाईं ओर तेजी से मुड़े, और सुरंग पूरी हो गई। हिजकिय्याह का एहतियाती कदम, जो सन्हेरीब के यहूदा पर आक्रमण से पहले उठाया गया था, यह समझाने में मदद करता है कि असीरियन यरूशलेम को घेराबंदी की रणनीति से क्यों नहीं जीत सके, जिसने पहले सर्गोन के समय में सामरिया को जीत लिया था।

इब्री सेना का संगठन

गोत्रों की सेना

मिस्र से उनके निर्गमन के समय इस्राएली गोत्रों और दलों मे संगठित थे। जंगल के माध्यम से उनकी यात्रा के लिए यह व्यवस्थित व्यवस्था सैन्य संगठन के लिए एक मिसाल प्रस्तुत करती थी। सीनै पर्वत पर प्रवास के बाद, 12 गोत्रों को दलों या सेना कोर में विभाजित किया गया, और सैन्य श्रेणी में कुछ वर्ग दिखाई देने लगे। "सेना के अधिकारी" (गिन 31:14) के पास 1,000 या 100 पुरुषों की इकाइयों का कमान था, जो यह सुझाव देता है कि गोत्रों की सेना को दशमलव इकाइयों में विभाजित किया गया था। बाद की अवधि में 1,000 (विभाजन), 100 (संगठन), 50 (पलटन), और 10 (खंड) की इकाइयों का संदर्भ मिलता है। लेवियों को छोड़कर, जिन्हें तंबू की देखभाल के लिए एक गोत्र के रूप में नियुक्त किया गया था (गिन 2:33), 20 वर्ष की आयु के पुरुष जो शारीरिक रूप से लड़ने में सक्षम थे, उन्हें गोत्रों की सेना में एक इकाई में नियुक्त किया गया। हालांकि, कुछ व्यक्तियों को सैन्य सेवा से छूट दी गई थी (तुलना करें व्य.वि. 20:5–9; 24:5; न्या 7:3)।

कनान की विजय के बाद तक, गोत्रों की सेना मूल रूप से एक नागरिक सेना थी जो आपातकाल में भर्ती की जाती थी। नागरिक सेना का आंतरिक संगठन गोत्र की जिम्मेदारी थी; प्रत्येक गोत्र और परिवार ने अपने योद्धाओं का भाग भेजा जब गोत्रों के नेताओं द्वारा युद्ध के लिए बुलाया गया। क्योंकि गोत्र बुनियादी इकाई का गठन करता था, भर्ती की जिम्मेदारी स्वयं के नेताओं के अधीन होते थे। उदाहरण के लिए, दाऊद के भाई, अपने गोत्र के अन्य लड़ाकों के साथ बनाई एकाई में एक कप्तान के अधीन सेवा करते थे (1 शमू 17:18; 18:13)। जब आपातकाल समाप्त हो जाता था, तो नागरिक सेना को भंग कर दिया जाता था और सैनिक अपने गृह जिलों में लौट जाते थे।

क्योंकि भूमि को गोत्रों के बीच विभाजित किया गया था, शाऊल से पहले कोई भी गोत्र या घराना अगुवा पूरे गोत्रों के संघ का नेतृत्व नहीं करता था (तुलना करें 1 शमू 11:1–11)। वास्तव में, गोत्रों मे ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता राष्ट्रीय एकता को खतरे में डालती थी और यहाँ तक कि एक महत्वपूर्ण अवधि में संयुक्त कार्रवाई को भी खतरे में डालती थीं। हालांकि, कुछ अवसरों पर, संकट की गंभीरता ने विभिन्न गोत्रों की सेनाओं को एक सामान्य कार्रवाई में एकजुट कर दिया। बहु-गोत्र सेनाओं को 1,000, 100, और 50 की कंपनियों में विभाजित किया गया था, और नियुक्त अधिकारियों के अधीन परिवारों में और भी आगे विभाजित किया गया था। हथियारों के अनुसार इकाइयों में संगठन के प्रमाण हैं (1 इति 12:24–38). बिन्यामीन का गोत्र धनुष और गोफन में विशेषज्ञ था। गाद, यहूदा, और नप्ताली के गोत्र बरछे और ढाल में निपुण थे।

गोत्रों की सेना का प्रबंध करना प्रत्येक गोत्र की जिम्मेदारी थी (न्या 20:9–10)। हर दस सैनिकों में से एक को दूसरों के लिए भोजन सुरक्षित करने के लिए नियुक्त किया गया था, या तो धनी जमींदारों से (तुलना करें 1 शमू 25) या भूमि के प्राकृतिक संसाधनों से। सैन्य संगठन के उस प्रारंभिक चरण में, एक सैनिक का वेतन आमतौर पर केवल आपूर्ति और युद्ध की लूट के हिस्से से ही होता था (तुलना करें 30:21–25)।

पेशेवर सैन्य बल

संयुक्त राजशाही के समय तक इस्राएल के पास एक नियमित सेना नहीं थी। लोगों की नागरिक सेना से एक पेशेवर सेना में परिवर्तन शाऊल के अधीन हुआ, जिनके शासन ने गोत्रों के संघ को एक राजशाही में बदल दिया (1 शमू 13:2)। इस्राएल पर पलिश्तियों के उत्पीड़न ने एक मजबूत स्थायी सेना की स्थापना को प्रोत्साहित किया। हालांकि, सेना बड़ी नहीं थी; यह 3,000 पुरुषों से बनी थी, जिन्हें तीन 1,000 की संरचनाओं में संगठित किया गया था (1 शमू 13:2; 24:2)। उन पेशेवर सैनिकों के लिए वेतन कभी-कभी भूमि अनुदान (8:14) के रूप में और लूट के हिस्से के रूप में होता था। शाऊल की सेना के संगठन में, अब्नेर, योनातान, और दाऊद को विशेष जिम्मेदारियाँ दी गईं। अब्नेर को सेना का सेनापति नियुक्त किया गया था (17:55) और संभवतः उन्हें एक खंड की प्रत्यक्ष कमान भी दी गई थी। दाऊद के वीर पुरुषों का समूह, जो "तीस," थे ने जब वे राजा बने तब उनके अपने सैन्य संगठन के लिए नेतृत्व का मूल प्रदान किया।

दाऊद ने एक पेशेवर सेना बनाए रखने की परंपरा को जारी रखा। उन्होंने 12 पलटन की एक राष्ट्रीय नागरिक सेना भी विकसित की, जिनमें से प्रत्येक को पेशेवर अधिकारियों के अधीन वर्ष के एक महीने के लिए कार्य पर बुलाया जाता था (1 इति 27:1–15)। प्रत्येक पलटन, जो गोत्रों की सीमाओं के पार भर्ती की जाती थी, में 24,000 सैनिक होते थे। दाऊद के नवीनीकरण ने उन्हें एक बड़ा आरक्षित बल प्रदान किया जिसे आपातकाल के समय युद्ध के लिए बुलाया जा सकता था। आरक्षित, और संभवतः पेशेवर सेना भी, 1,000, 100, 50, और 10 की इकाइयों में संगठित की गई थी। योआब, जो घेराबंदी युद्ध में विशेषज्ञ थे (2 शमू 20:15), पेशेवर सेना का नेतृत्व करते थे, और अमासा नागरिक सेना के प्रभारी थे। दाऊद, हालांकि, सैन्य संगठन के प्रधान सेनापति बने रहे।

राजा दाऊद की पेशेवर सेना इस्राएली दल का विस्तार थी, जो उन छोटे लड़ाकों के समूह से बनी थी जिन्होंने शाऊल के साथ संघर्ष के दौरान उनकी सेवा की थी। यह अनुभवी दल दाऊद के परिवार और घराने के लोगों से बना था, और अन्य लोग जो शाऊल के केंद्रीय अधिकार से उत्पीड़ित महसूस करते थे (1 शमू 22:1–2)। इसका आकार 400 से 600 पुरुषों के बीच था (1 शमू 22:2; 23:13; 2)। दाऊद की सेना में भाड़े के सैनिकों की उपस्थिति स्पष्ट रूप से दर्ज है। ऊरिय्याह हित्ती और गत के इत्तै इसके प्रमुख उदाहरण हैं, साथ ही पलिश्ती मूल के कई पेशेवर सैनिक, जैसे कि करेती और बनायाह के अधीन पलेति (2 शमू 8:18; 15:19–22; 23:22–23)।

दाऊद के वंश ने 701 ईसा पूर्व तक एक स्थायी भृतक सेना बनाए रखी, जिसके बाद इसे अत्यधिक महंगा माना गया। एक पेशेवर सेना को बनाए रखने की अत्यधिक लागत, जो भारी करों और जबरन श्रम द्वारा वित्तपोषित थी, वास्तव में सुलैमान की मृत्यु के बाद राजशाही के विघटन में योगदान देने वाला एक प्रमुख कारक थी (तुलना करें 1 रा 10:26–29; 12:4–19)। 701 ईसा पूर्व में सन्हेरीब के आक्रमण के बाद, यहूदा के दक्षिणी राज्य ने अपनी रक्षा के लिए पूरी तरह से नागरिकों की सेना पर निर्भर किया। आमतौर पर माना जाता है कि इस्राएल के उत्तरी राज्य ने पेशेवर सेना का उपयोग नहीं किया, लेकिन यह स्पष्ट है कि राजा अहाब ने सीरिया के बेन्हदद के खिलाफ अपनी रक्षा में कम से कम कुछ भाड़े के सैनिकों का उपयोग किया (1 रा 20:15–20) ।

*यह भी देखें*कवच और शस्त्र।

युनानवादी

यह नाम प्रेरितों के काम 6:1, 9:29, और संभवतः 11:20 जो प्रारंभिक कलीसिया की एक विशिष्ट शाखा के लिए था, जो यूनानी सोच के तरीकों से पहचानी जाती थी। उनकी वास्तविक पहचान विवादित है, और निम्नलिखित संभावनाएं प्रस्तुत की गई हैं: (1) यूनानी बोलने वाले यहूदी बजाय अरामी बोलने वाले यहूदी (लेकिन "इब्रानी," जैसा कि 6:1 में है, भाषा के संदर्भ में शायद ही कभी प्रयोग हुआ था); (2) "यूनानी" धर्मांतरित, जो सच्चे यहूदियों के विपरीत हैं (प्रेरितों के काम 6:5 में सेवकों की सूची इसे संदिग्ध बनाती है, क्योंकि यह असंभव है कि वे सभी धर्मांतरित ही थे); (3) फिलिस्तीन में रहने वाले प्रवासी यहूदी (यह 6:1–6 के लिए उपयुक्त है लेकिन अन्य संदर्भों में नहीं); (4) यहूदी धर्म में प्रो-युनानवादी संप्रदाय (यह सभी संदर्भों के पूरे स्वरूप में उपयुक्त नहीं बैठता); (5) वे अन्यजाती जो प्रारंभिक कलीसिया में शामिल हुए (यह वास्तव में तीनों अनुच्छेदों के संदर्भ में उपयुक्त नहीं बैठता); (6) एक सामान्य, न कि विशिष्ट, शब्द, जो केवल यूनानी बोलने वाले या यूनानी रीतियों का पालन करने वाले (या दोनों) को संदर्भित करता है। जैसा कि संदर्भ के अध्ययन से पता चलता है, यह सबसे अच्छा उत्तर है।

6:1 में जो समूह है वो संभवतः उन युनानीय यहूदियों से बना था जो उस समय फिलिस्तीन में रह रहे थे। यह 6:5 में चुने गए सेवकों में देखा जाता है। लूका ने सभी के लिए यूनानी नामों का उपयोग किया, शायद इसलिए नहीं कि वे यूनानी थे, बल्कि प्रेरितों की अलग-अलग समूहों को एकीकृत करने की इच्छा को दर्शाने के लिए। प्राचीन दुनिया के अधिकांश यहूदियों के तीन नाम होते थे - एक यहूदी, एक यूनानी, और एक रोमी नाम - और वे अवसर के अनुसार किसी एक का उपयोग करते थे। 6:9 में विविधता और भी स्पष्ट है। युनानीय यहूदी अपनी पृष्ठभूमि और उपासना की आदतों में पर्याप्त रूप से भिन्न थे, विशेष रूप से सेवा में यूनानी के उपयोग में, कि उनके लिए अलग-अलग सभागृह होते थे (केवल यरूशलेम में ही ऐसे सात थे)। इसने प्रारंभिक कलीसिया के लिए एक संभावित विभाजनकारी स्थिति उत्पन्न की, और यहाँ विभाजन का यही परिणाम था। "इब्रानी" स्वाभाविक रूप से उस सामान्य पूल को उन लोगों को आवंटित करने की प्रवृत्ति रखते थे जिन्हें वे

जानते थे, और इसलिए समूहों के बीच अलगाव समस्या को बढ़ा देता।

9:29 में "युनानवादी" उसी समूह के सदस्य हैं। पौलुस, जो स्वयं एक प्रवासी यहूदी थे, अपने परिवर्तन के बाद यरूशलेम की अपनी पहली यात्रा पर स्वाभाविक रूप से अपने पुराने साथियों के पास जाते। 11:20 में पांडुलिपि प्रमाण "युनानवादी" और "यूनानी" के बीच समान रूप से विभाजित है। जैसा कि 11:20 में "युनानवादी" का उपयोग किया गया है, यह अन्ताकिया के यूनानी-भाषी जनसंख्या को दर्शाता है और इसलिए सामान्य रूप से गैर-यहूदियों को। यह 6:1 और 9:29 में उपयोग से भिन्न है।

यह भी देखें प्रेरितों के काम की पुस्तक, यूनानवाद; यहूदी धर्म।

युरेसियन मृग

युरेसियन मृग

देखें जानवर (हिरन; चिकारे)।

यूएरगेट्स

दो टॉलेमी शासकों से संबंधित सम्मान की उपाधि। यूनानी शब्द का अर्थ है "उपकारक", यह उपाधि उन शासकों को दी जाती थी जो अपने परोपकारी कार्यों के लिए जाने जाते थे। *देखें* टॉलेमी साम्राज्य।

यूएल

यूएल

1. यहूदा के वंशज जो बँधुआई के बाद यरूशलेम में निवास कर रहे थे (1 इति 9:6)।

2. हिजकिय्याह के सुधारों में भाग लेने वाले लेवी (2 इति 29:13)।

3. एक परिवार का मुखिया जो एज्रा के साथ बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (एज्रा 8:13)।

यूओदिया, यूओदियास

फिलिप्पियों की कलीसिया की प्रमुख स्त्री, जिनसे पौलुस ने सुन्तुखे के साथ उनके मतभेदों को सुलझाने का अनुरोध किया था (फिलि 4:2)। उनके मतभेद का कारण ज्ञात नहीं है, परन्तु यह इतना गम्भीर था कि यह रोम में पौलुस तक पहुँच गया। दोनों स्त्रियों ने सुसमाचार के कार्य में उनके साथ परिश्रम किया था (4:3)।

यूकल

यूकल*

यिर्मयाह 38:1 में शेलेम्याह के पुत्र यूकल के लिए एक अन्य नाम। *देखें* यहूकल।

यूखारिस्ट

यह शब्द "यूकारिस्ट" यूनानी शब्द *यूकारिस्टिया* से आता है, जिसका अर्थ "धन्यवाद" होता है। यह मसीही धर्म के केंद्रीय रहस्य में से एक की ओर इशारा करता है: रोटी और दाखरस के माध्यम से मसीह की देह और लहू में सहभागिता करना। यूकारिस्ट को पवित्र भोज या प्रभु भोज भी कहा जाता है।

देखें प्रभु भोज।

यूतुखुस

दास का सामान्य नाम, जिसका उल्लेख केवल प्रेरि 20:9 में किया गया है। यह यूतुखुस का दुर्भाग्य था कि वह प्रेरित पौलुस का उपदेश सुनते हुए खिड़की पर बैठे-बैठे नींद में चले गया। वह गहरी नींद में डूब गया और तीसरी अटारी पर से गिर गया। प्रेरित पौलुस ने उसे मृतकों में से जीवित किया (पद 7–12)।

यूदीत की पुस्तक

यूदीत की पुस्तक एक धार्मिक कथा है जो इसके मुख्य पात्र, यूदीत, के नाम पर है। इसे द्वितीयकानोनिक माना जाता है, अर्थात यह एक पुस्तक है जिसे कुछ मसीही समूह बाइबल का हिस्सा मानते हैं, लेकिन सभी नहीं।

अधिकांश विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि यह पुस्तक मूल रूप से इब्री भाषा में लिखी गई थी। हालांकि, इसे कभी भी इब्री बाइबल (यहूदियों के पवित्र ग्रन्थ) में सम्मिलित नहीं किया गया।

कुछ मसीही समूहों ने बाद में यूदीत की पुस्तक को अपनी बाइबल का हिस्सा मान लिया। उदाहरण के लिए:

- ईस्वी सन् 397 में कार्थेज की तीसरी परिषद (मसीही अगुओं की एक बैठक) ने इसे बाइबल का हिस्सा स्वीकार किया।
- ईस्वी 1545 में ट्रेंट की परिषद (मसीही अगुओं की एक और महत्वपूर्ण बैठक) ने भी इसे बाइबल का हिस्सा माना।

इन निर्णयों का अर्थ है कि कुछ मसीही समूह यूदीत की पुस्तक को अपनी बाइबल का आधिकारिक हिस्सा मानते हैं, जबकि अन्य इसे नहीं मानते।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यूदीत की पुस्तक सम्भवतः यहूदियों के लिए कठिन समय के दौरान लिखी गई थी। कई विद्वानों का मानना है कि यह मक्काबी काल के दौरान लिखी गई थी, जो यहूदियों के इतिहास का एक समय था, लगभग 167 से 63 ईसा पूर्व। विशेष रूप से, उनका विश्वास है कि यह एन्टीओकस एपिफनेस के शासनकाल के दौरान लिखी गई हो सकती है, जो 175 से 164 ईसा पूर्व तक था। एन्टीओकस एपिफनेस एक विदेशी शासक थे जिन्होंने यहूदियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। उन्होंने उन्हें उनके धार्मिक नियमों और परम्पराओं का पालन करने से रोकने की कोशिश की।

फिलिस्तीन (इस्राएल की प्राचीन भूमि का नाम) में रहने वाले एक यहूदी व्यक्ति ने सम्भवतः इस पुस्तक को लिखा। लेखक अन्य यहूदियों को उनके दुश्मनों के खिलाफ मजबूती से खड़े रहने और परमेश्वर के नियमों का पालन करते रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते थे।

पुस्तक की मुख्य पात्र यूदीत हैं। उन्हें एक नायिका के रूप में दिखाया गया है जो परमेश्वर के नियमों का अत्यंत सावधानी से पालन करती हैं और महान खतरे का सामना करते समय साहसी और चतुर होती हैं।

सारांश

नबूकदनेस्सर, अश्शूर के राजा, मादियों के खिलाफ युद्ध में सहायता के लिए कई राष्ट्रों से सहायता माँग रहे थे, जिसमें फिलिस्तीन भी शामिल था। लेकिन उन्होंने सहायता करने से इनकार कर दिया (यूदी 1:7–11)। परिणामस्वरूप, उन्होंने पूरे क्षेत्र से बदला लेने की कसम खाई (यूदी 1:12)। मादियों को हराने और उनकी भूमि पर विजय प्राप्त करने के बाद, वे अपनी सेना को मजबूत करने के लिए चार महीने के लिए अपनी राजधानी लौटीं (यूदी 1:12–16)।

नबूकदनेस्सर ने अवज्ञाकारी राष्ट्रों के खिलाफ एक महान सेना भेजी (यूदी 2)। तट के साथ नगर तुरन्त आत्मसमर्पण कर गए और अश्शूरियों ने स्थानीय मन्दिरों को नष्ट कर दिया। उन्होंने लोगों को नबूकदनेस्सर की आराधना करने के लिए मजबूर किया (यूदी 3)। यहूदिया के लोगों ने इस विनाश के बारे में सुना, तो उन्होंने चतुर रणनीतियों के माध्यम से उनकी प्रगति को रोकने का निर्णय लिया, और ईश्वरीय कृपा की तलाश की (यूदी 4:1–15)।

नबूकदनेस्सर के सेनापति, होलोफेर्नेस, क्रोधित हो गए। जब वह उनके खिलाफ लड़ाई की तैयारी कर रहे थे, तो उन्हें बताया गया कि इस्राएल को नहीं हराया जा सकता अगर परमेश्वर उनके पक्ष में हैं (यूदी 5:5–21)। होलोफेर्नेस ने यहूदिया की जल आपूर्ति काट दी और उनके आत्मसमर्पण का इंतजार किया (यूदी 7:1–18)। इस्राएल के अगुओं ने अपने राजा, उज्जियाह, से अश्शूरियों के सामने आत्मसमर्पण करने की विनती की, लेकिन उन्होंने उन्हें पाँच और दिन इंतजार करने के लिए मना लिया (यूदी 7:19–32)।

यूदीत एक धर्मपरायण विधवा स्त्री थीं, जो धनी और सुन्दर थीं। उन्होंने अगुओं की आलोचना की क्योंकि वे परमेश्वर पर सन्देह कर रहे थे और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि परमेश्वर उनके माध्यम से उन्हें छुड़ाएँगे (यूदी 8:2–36)। यूदीत ने प्रार्थना की, अपने सबसे अच्छे वस्त्र पहने, और शत्रु के शिविर की ओर तराई में चली गईं।

उसने अश्शूरियों से कहा कि वह नगर से भाग रही हैं और वह होलोफेर्नेस को दिखाना चाहती हैं कि इस्राएलियों को कैसे हराया जाए (यूदी 10:11–13)। होलोफेर्नेस ने यूदीत का स्वागत किया और उनकी बात सुनने लगा (यूदी 10:14–11:4)। चतुराई से, उन्होंने संकेत दिया कि घेराबंदी इस्राएलियों को पाप करने पर मजबूर करने वाली है। उन्होंने होलोफेर्नेस से वादा किया कि जब लोग पाप करेंगे तो वह उन्हें बताएँगी ताकि वह उन्हें हरा सकें (यूदी 11:11–19)।

जब होलोफेर्नेस ने उनके लिए भोजन का आदेश दिया, तो उन्होंने मना कर दिया। चौथी रात, होलोफेर्नेस नशे में हो गया और यूदीत ने उसका सिर काट दिया (यूदी 12:5–13:2)। उन्होंने उसका सिर अपनी थैली में रखा और लोगों के पास ले गईं (यूदी 13:3–11)।

जब लोगों ने सुना कि उन्होंने क्या किया, तो वे आनन्द से भर गए। राजा और लोगों ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और यूदीत की प्रशंसा की कि उन्होंने क्या किया (यूदी 13:12–20)। इस्राएल ने अगले दिन के लिए एक हमले की योजना बनाई (यूदी 14:1–4)। अश्शूरी आतंक और भ्रम में भाग गए, और इस्राएल ने उनका पीछा दमिश्क तक किया (यूदी 14:11–15:7)।

यूदीत की बहादुरी के लिए उन्हें सम्मानित करने के लिए यरूशलेम से याजक आए और सभी ने उनकी प्रशंसा की (यूदी 15:8–13)। यूदीत ने परमेश्वर की स्तुति में एक भजन गाया, जिन्होंने उनकी रक्षा की (यूदी 16:1–17)। इसके बाद, सभी यरूशलेम गए और तीन महीने तक प्रभु की आराधना की (यूदी 16:18–20)।

पुस्तक यूदीत की बेथुलिया वापसी के साथ समाप्त होती है, जहाँ उनकी मृत्यु 105 वर्ष की आयु में हुई और उन्हें उनके पति के साथ दफनाया गया, और सात दिनों तक शोक मनाया गया (यूदी 16:21–25)।

यूनान, यूनानी

यूनान और यूनानी लोगों के बारे में बाइबल में दिए गए संदर्भ अक्सर अस्पष्ट हैं। पुराने नियम में, कुछ अंश यूनान या यूनानियों को "यावान" या "यावान के पुत्र" कहते हैं। यावान, येपेत का चौथा पुत्र था, जो उत्पत्ति 10 में "राष्ट्रों की तालिका" में आता है। जिस प्रकार इस्राएल नाम याकूब से आया है, उसी प्रकार यावान नाम उसके वंशजों के लिए प्रयुक्त होता है।

यावान और उसके पुत्रों के बारे में बाइबल में दिए गए विवरण दर्शाते हैं कि वे यूनान देश में रहते थे और यूनानी थे (1 इति 1:5, 7; यशा 66:19; यहेज 27:13)। दानिय्येल की पुस्तक में सिकंदर महान के साम्राज्य का भी वर्णन है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि यावान का अर्थ यूनान है। जब यहूदी विद्वानों ने इब्रानी बाइबल का यूनानी (सेप्टुआजेंट) में अनुवाद किया, तो उन्होंने अक्सर यावान नाम के स्थान पर "यूनानी" शब्द का प्रयोग किया। ऐसा दानिय्येल 8:21; 10:20; 11:2; जकर्याह 9:13; और योएल 3:6 जैसे वचन भागों में होता है।

नया नियम में "यूनानी" शब्द का विशेष अर्थ यूनानवादी का प्रतीत होता है, अर्थात, यहूदी जो यूनानवादी नगरों में रहते थे (प्रेरि 6:1; 9:29; 11:20)। यूहन्ना 12:20, प्रेरितों के काम 14:1, और 16:1–3 में यह शब्द विशेष रूप से यूनानियों को सन्दर्भित करता है। लेकिन अक्सर नया नियम में "यूनानी" शब्द का उपयोग गैर-यहूदियों के लिए किया जाता था क्योंकि यहूदी केवल यहूदी और गैर-यहूदी शब्द को ही जानते थे। इसलिए यह शब्द लगभग गैर-यहूदियों का पर्यायवाची था (रोम 1:16; 10:12; 1 कुरि 1:22, 24; गला 2:3; 3:28)।कभी-कभी "यूनानी" शब्द भाषा को सन्दर्भित करता है (यूह 19:20; प्रेरि 21:37; प्रका 9:11)। सुरूफिनीकी स्त्री के लिए "यूनानी" शब्द का उपयोग (मर 7:26) एक सांस्कृतिक शब्द हो सकता है। प्रेरितों के काम में, आराधनालयों में पर्यवेक्षकों के रूप में यूनानियों का उल्लेख किया गया है। ये यूनानी हो सकते थे, हालांकि निश्चितता सम्भव नहीं है (प्रेरि 14:1; 17:4; 18:4)।

भूगोल

प्राचीन यूनानी मातृभूमि में बाल्कन प्रायद्वीप का दक्षिणी छोर शामिल था। लेकिन कभी-कभी यूनानी वक्ता एजियन सागर के द्वीपों, पश्चिमी एशिया उपद्वीप, दक्षिण इटली, और सिसिली में पाए जाते थे।

यूनानी संस्कृति का उदय

फारसी युद्धों के समाप्त होने के बाद (497 ईसा पूर्व), एथेंस ने महानता की एक उल्लेखनीय अवधि में प्रवेश किया। एथेंस का पुनर्निर्माण किया गया और इसके पिरायस बन्दरगाह को किलेबंद किया गया। जब एथेनियन नागरिकों ने असीमित लोकतंत्र की राह पकड़ी, तो ऐसा लगा कि अराजकता का खतरा मंडरा रहा है, लेकिन पेरिक्लेस, एक प्रतिभाशाली अगुवे ने राज्य की स्थिरता को बहाल किया और एथेंस ने जल्द ही अपनी महिमा फिर से प्राप्त कर ली। अक्रोपोलिस पर विशाल इमारतें बनाई गईं, विशेष रूप से पार्थेनन (जो एथेंस की देवी एथेना को समर्पित है)। आंशिक रूप से डेलियन लीग में योगदान के कारण एथेंस धनवान हो गया। एथेनियाई समुद्री शक्ति बढ़ी। एथेंस में गुलाम, कारीगर, शिल्पकार, विदेशी व्यापारी, कलाकार, कवि, दार्शनिक, शिक्षक, अभिनेता, एथलीट, वैज्ञानिक, चिकित्सक, इतिहासकार, धार्मिक शिक्षक, और सैन्य और नौसैनिक मामलों के विशेषज्ञ बहु मात्रा में उपस्थित थे। पांचवीं और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के महान लेखक नाटककार जैसे एस्किलस, सोफोक्लेस, और यूरेपिडिस, इतिहासकार जैसे थ्यूसीडीडीस और हिरोडोटस, और दार्शनिक जैसे सोक्रेटिस, प्लेटो, और एरिस्टोटल शामिल थे। वहाँ कला और वास्तुकला का एक फूल खिल गया। यह कला, विचार, साहित्य, और वास्तुकला में शानदार उपलब्धियों का स्वर्ण युग था।

यूनानवाद का युग

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के समाप्त होने से पहले एथेंस की महान महिमा मुरझा गई थी। मकिदुनिया के फिलिप ने साम्राज्य की महत्वाकांक्षाओं के साथ पश्चिम की ओर रुख किया, और 338 ईसा पूर्व तक एथेंस और थेब्स पराजित हो गए—यूनान एक मकिदुनिया साम्राज्य में एकीकृत हो गया। फिलिप की हत्या 366 ईसा पूर्व में कर दी गई थी, लेकिन उनके पुत्र सिकंद्दर, जो एथेनियन परम्परा में शिक्षित थे, उन्होंने अपने पिता का काम सम्भाला और अपनी मृत्यु से पहले 323 ईसा पूर्व में फारस को जीत लिया और भारत में पंजाब तक पहुंच गए। अंत में उसने ककोशस से लेकर लीबियाई रेगिस्तान और इथियोपिया की सीमाओं तक अपना नियंत्रण स्थापित किया। सिकंद्दर की मृत्यु पर, उसके विशाल क्षेत्रों को चार सेनापतीयों के बीच विभाजित कर दिया गया। कुछ समायोजनों के बाद तीन विभाजन उभरे—मिस्र टॉलेमी के अधीन; एशिया का उपद्दीप, सीरिया, मकिदुनिया और पूर्व सेल्युकस के अधीन; और मकिदुनिया एंटीगोनस के अधीन।

अंततः पूरे यूनानी क्षेत्र पर रोमियों का नियंत्रण हो गया, जिन्होंने 198 ईसा पूर्व में यूनानी क्षेत्रों में प्रवेश किया और वर्षों के दौरान कई रोमी प्रांतों की स्थापना की, जैसे कि अखाया (प्रेरि 18:12) । यह युनानवाद की उस दुनिया में था, जो अब रोम के अधीन थी, जहाँ पहली सदी ईस्वी में मसीहियों ने सुसमाचार का सन्देश लेकर गए।

पलिश्तीन में यूनानी

खुदाई से पता चला है कि कई सदियों से पलिश्तीन और एजियन क्षेत्रों के बीच सम्पर्क था। मध्य कांस्य युग (पितृसत्तात्मक युग) से, मध्य मिनोअन II मिट्टी के बर्तन कई स्थलों पर पाए गए हैं। पलिश्तीन, जो 13वीं शताब्दी ईसा पूर्व में समुन्दर के लोगों का हिस्सा थे, उन्होंने तटीय पलिश्तीन के क्षेत्रों में बसकर अपनी संस्कृति विकसित की और वहाँ अपनी विशिष्ट मिट्टी के बर्तनों का एक बड़ा हिस्सा छोड़ा। 1370–1200 ईसा पूर्व के आसपास की अवधि के दौरान, एजियन और पश्चिमी एसिया उपद्वीप के विभिन्न लोग पलिश्तीन पहुंचे। माइसीनियन मिट्टी के बर्तन कई स्थानों में पाए गए हैं। बाद के समय से, छठी शताब्दी ईसा पूर्व की एटिक काले चित्रकला वाले बर्तन और लगभग 530–300 ईसा पूर्व की अवधि के एटिक लाल चित्रकला वाले बर्तन के कई उदाहरण खुदाई में पाए गए हैं। इसी अवधि से एटिक ड्राक्मास के अनुकरण में बनाई गई चांदी की मुद्राएँ भी मिली हैं। युनानवाद के उदय और टोलेमियस और सेल्युसिड शासकों द्वारा पलिश्तीन के कब्जे के साथ, युनानी प्रभाव बहुत बढ़ गया। पलिश्तीन में युनानी प्रभाव के महत्व को रेखांकित करने के साथ-साथ पूरे लेवेंट क्षेत्र और आंतरिक भूमि में युनानी मिट्टी के बर्तन, जैसे रोडियन जार, और इमारतों में युनानी वास्तुकला विशेषताओं का प्रभाव दिखाई देता है। रोमियों के आगमन के साथ, ये प्रभाव जारी रहे। युनानी वाणिज्य की भाषा थी। वास्तव में, नया नियम साधारण लोगों की युनानी में लिखा गया था, और रोमी समय से युनानी शिलालेखों की एक विस्तृत विविधता प्रकाश में आई है।

*यह भी देखें*सिकंदर #1; सिकंदरिया; युनानवाद; युनानवादी; यहूदी धर्म.

यूनानवाद

यूनानी सांस्कृतिक, दार्शनिक, और नैतिक विचारों का वह अनोखा मिश्रण है जिसने भूमध्यसागरीय विश्व में संस्कृति के विकास पर गहरा प्रभाव डाला। जबकि आंदोलन की पृष्ठभूमि बहुत पहले घट चुकी थी, अधिकांश लोग मानते हैं कि यूनानवाद का युग 323 ई.पू. में, सिकंदर की मृत्यु के साथ शुरू मानते हैं, और यह या तो 30 ई.पू. तक, जब रोम ने मिस्र को जीत लिया, या (अधिक संभावना) 300 ई. तक जारी रहा। रोम को सांस्कृतिक रूप से यूनानवाद द्वारा जीत लिया गया था।

पूर्वावलोकन

- यूनानिय युग
- यूनानवाद और यहूदी धर्म
- यूनानवाद और मसीहत

यूनानिय युग

सिकन्दर महान केवल एक सैन्य विजेता नहीं थे। उन्होंने अपने साम्राज्य में यूनानिय संस्कृति को सामान्य बना दिया। उन्होंने विजित लोगों को यूनानी भाषा और रीति-रिवाज सिखाए, और उन्होंने नए यूनानी नगरों का निर्माण किया (कुल 34), जैसे मिस्र में सिकन्दरिया, जो यूनानवाद के गढ़ बन गए। उनका प्रमुख उपलब्धि क्षेत्रीय नहीं बल्कि सांस्कृतिक थी; उनके बाद, यूनानवाद ने सदियों तक पश्चिमी दुनिया पर नियंत्रण किया। यह सिकन्दर ही थे जिन्होंने एटिक कोइने (सामान्य) बोली की विजय का नेतृत्व किया, जो अन्य यूनानी बोलियों पर हावी हो गई, और यह पूर्व के युनानिकरण में मुख्य शक्ति बन गई। कोइने बोली अधीनस्थ लोगों द्वारा यूनानवाद की स्वीकृति का आधार बनने वाली थी। उनकी मृत्यु के बाद का पहला काल उनके साम्राज्य के विघटन और टोलेमी, जिन्होंने मिस्र और फिलिस्तीन पर नियंत्रण किया; सेल्यूकस, जिन्होंने बाबेल और एशिया का उपद्वीप (एशिया उपद्वीप) पर शासन किया; और एंटिपेटर (जिनके बाद एंटिगोनस आए), जिन्होंने मकिदुनिया और हेल्लेसपोंत पर शासन किया, के बीच शक्ति संतुलन के उभरने से चिह्नित होगा।

पूर्व में, अगले शताब्दी में टोलेमी और सेल्यूसिड्स के बीच रुक-रुक कर होने वाली झड़पों से विशेषता थी, जिसके परिणामस्वरूप फिलिस्तीन दोनों के बीच एक रोकने वाला राज्य बन गया। एक महत्वपूर्ण अंतर यह था कि टोलेमी के पास एक एकीकृत साम्राज्य था और इसलिए वे परिवर्तन में रुचि नहीं रखते थे; उनके शासन के तहत, फिलिस्तीन सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से स्वायत्त था। हालांकि, सेल्यूसिड्स ने कई विभिन्न समूहों को नियंत्रित किया और इसलिए उन्हें यूनानीकरण थोपकर एकजुट करने की कोशिश की। अंततः इसने मकाबियों के अधीन यहूदियों के सफल विद्रोह और दोनों साम्राज्यों के विघटन की ओर अग्रसर किया। पश्चिम में, रोम धीरे-धीरे यूनानी मामलों में शामिल हो गया और 149 ई.पू. तक यूनानी भूमि को राजनीतिक रूप से नियंत्रित कर लिया, जबकि वे स्वयं सांस्कृतिक रूप से यूनानी आदर्शों से प्रभावित हो गए।

इस अवधि के दौरान, एक बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग था, जो आंशिक रूप से इस कारण से हुआ कि सिकन्दर की विजय ने विजित भूमि में यूनानियों का व्यापक वितरण किया। इसने जो धन का पुनर्वितरण किया, वह यूनानी शिक्षा और यूनानिय आदर्शों की स्वीकृति पर आधारित था। "सभ्य" शब्द यूनानी जीवन शैली के साथ पहचाना जाने लगा। शिक्षा को सुदृढ़ वक्तृत्व के विचार द्वारा नियंत्रित किया गया, ताकि शैली सत्य पर विजय प्राप्त कर सके। यूनानी नाटक ने कॉमेडी की ओर रुख किया, जिसने मानव भावनाओं में यथार्थवाद पर जोर दिया, और यूनानिय कला शास्त्रीय काल की तुलना में और भी अधिक प्राकृतिक हो गई।

दार्शनिकता भी विकसित हुई, जिसके साथ कम से कम तीन विद्यालयों ने अगले कुछ शताब्दियों के लिए यूनानी विचार पर

नियंत्रण किया। दिलचस्प बात यह है कि सभी तीन व्यावहारिक नैतिकता पर केंद्रित थे, न कि सत्य और ज्ञान की पारंपरिक खोज पर। डायोजनीज द्वारा स्थापित सिनिक्स ने एक पूर्ण आत्मनिर्भरता पर जोर दिया जो एक व्यक्ति को सामाजिक शून्यता में छोड़ देती थी लेकिन उसे मानव दुःख से निपटना सिखाती थी। दो सबसे प्रभावशाली विद्यालय इपिकूरी और स्तोईकी थे। एपिकुरुस ने चिंता या भय से मुक्ति की खोज की और सिखाया कि आत्मा की शांति केवल सुखों के अनुशासित, मध्यम अनुभव से ही प्राप्त हो सकती है। परिणामस्वरूप एक व्यक्ति समाज से अपने आत्मत्व में पीछे हट जाता था। स्टोइकवाद, जो ज़ेनो द्वारा स्थापित किया गया था और एथेंस के स्टोआ (ओसारे) के नाम पर रखा गया था जहाँ उन्होंने शिक्षा दी, आत्मनिर्भरता पर जोर देने में सिनिक्स के समान था, लेकिन यह मानवता के भाईचारे पर जोर देने के साथ इसे जोड़ता था। हर व्यक्ति को सद्गुण की खोज करनी चाहिए और जीवन की विपत्तियों से ऊपर उठकर जीना चाहिए। यह अंतिम दर्शन मसीह के समय तक यूनान्वाद का केंद्र बन चुका था।

यूनानवाद और यहूदी धर्म

यहूदी धर्म लगभग एकमात्र संस्कृति थी जिसने यूनानवाद के आक्रमण का विरोध किया। इसलिए, इस आंदोलन की शक्ति यह देखने में आती है कि यह यहूदी धर्म में कितनी गहराई से समाहित हुआ।

यूनानवाद का आकर्षण हमेशा मुख्य रूप से उच्च वर्ग के कुलीनों द्वारा महसूस किया जाता था, और यह प्रवासी यहूदी समुदायों में सबसे अधिक था। हालांकि, सेल्यूसिड्स के अधीन, मन्दिर के पुजारी यूनानवादी के पक्ष में थे, इसलिए यह धनी वर्ग पर आर्थिक दबाव के साथ एक धार्मिक आयाम जोड़ता था। शुरू से ही फिलिस्तीन दो गुटों में विभाजित हो गया था: शहरी अभिजात वर्ग, जिन्होंने यरुशलम को एक अन्य शहर, या यूनानिय नगर-राज्य बनाने का प्रयास किया, जैसे कि व्यायामशाला और यूनानी नाटक; और कृषि-आधारित, निर्धन किसान, जिन्होंने यूनानवाद को मूसा की प्रणाली के अस्तित्व के लिए खतरा देखा।

यहूदियों को व्यापारिक लेनदेन करने और कानूनी मामलों में भाग लेने के लिए कोइने यूनानी सीखनी पड़ी। पुरातत्वशास्त्र यह दिखाता है कि तीसरी शताब्दी ई.पू. से फिलिस्तीन में लगभग सभी शिलालेख यूनानी में थे, और सेप्टुआजिंट में तोराह का यूनानी में अनुवाद यह दर्शाता है कि फिलिस्तीन के बाहर यहूदी समुदायों में यह भाषा कितनी व्यापक थी (प्रवासी समुदाय)। यूनानिय शहरों में क्रीडा कसरत स्कूल था, और यूनानी शिक्षा नागरिकता की कुंजी थी। इस संदर्भ में, मिस्र के सिकन्दरिया ने यूनानी दुनिया का बौद्धिक केंद्र बनकर यहूदी समुदाय पर गहरा प्रभाव डाला। प्रवासी देश और यरूशलेम में समृद्ध यहूदियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे क्रीडा कसरत शिक्षा प्राप्त करें। कई लोगों ने नग्न होकर खेलों में भाग लेने की यूनानी प्रथा का पालन किया, जैसा कि अंतरनियम काल के साहित्य से देखा जा सकता है, जो एक सदी बाद (यहूदी समाज के इस सार्वजनिक प्रदर्शन के प्रति प्रतिकूलता के कारण) अत्यधिक विरोधाभासी है। यहूदी प्रार्थना स्थल के विद्यालयों ने व्यायामशालाओं के साथ प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप यूनानी रीति-रिवाजों को अपनाया। वास्तव में, ग्रंथकार परंपरा का विकास आंशिक रूप से इसी अंतःक्रिया का परिणाम है; यह आंदोलन मन्दिर युग के ओलिगार्की प्रणाली से लोकतांत्रिक शिक्षा की ओर बढ़ा।

यहूदी साहित्य और दर्शन यूनानिय शैली से प्रभावित हो गए। यह 1 और 2 मक्काबियों में देखा जा सकता है, जो यूनानी इतिहासलेखन को दर्शाते हैं। और यूनानिय प्रभाव इस अवधि के लगभग हर यहूदी कार्य में देखा जा सकता है। मुख्य प्रवक्ता, निश्चित रूप से, सिकन्दरिया के फिलो थे, जिनकी पुरानी वाचा की रूपक व्याख्या यहूदी शिक्षाओं को हेलीनी दुनिया के लिए और इसके विपरीत स्वीकार्य बनाने के लिए बनाई गई थी। यह दृष्टिकोण काफी सामान्य था। यहूदी प्रलय लेखन के प्रतीकवाद को यूनानिय और पूर्वी (मुख्य रूप से फारसी) विषयों के संयोजन से प्रभावित किया गया था, और यहां तक कि अति-रूढ़िवादी एस्सीन आंदोलन ने भी विचार रूपों का उपयोग किया जो यहूदी धर्म के यूनानिय और फारसी विचारों के प्रवेश के माध्यम से ढाले गए थे। "अनंत ज्ञान" और "प्रकट रहस्य" पर जोर और उद्धार इतिहास और मानवशास्त्र के द्वैतवादी संयोजन इसके प्रमाण हैं। निश्चित रूप से, प्रभाव केवल एकतरफा नहीं था। यूनानी दर्शन के विकास पर सेमिटिक रूपों, विशेष रूप से फोनीशियन, का गहरा प्रभाव पड़ा; और मजबूत यहूदी भक्ति यूनानी मन को बहुत आकर्षक लगी।

यह कहना सही होगा कि पहली शताब्दी ई.पू. में फिलिस्तीन का यहूदी धर्म भी एक यूनानिय यहूदी धर्म था। कोइने यूनानी की सार्वभौमिकता, यूनानी शिक्षा और विचार प्रणाली का प्रवेश, यूनानी में यहूदी साहित्य की उपस्थिति, और विरोधी आंदोलन के साहित्य में भी यूनानिय अलंकारिक उपकरणों का प्रसार, फिलिस्तीन में यूनानवाद की शक्ति को दर्शाता है।

यूनानवाद और मसीहत

कुछ विद्वानों ने प्रारंभिक मसीहत को विभिन्न चरणों में विभाजित करने का प्रयास किया है, जिनमें से एक फ़िलिस्तीनी, यूनानिय-यहूदी, और यूनानिय दृष्टिकोण शामिल हैं। हालांकि, जैसे ऊपर दिए गए प्रमाण से स्पष्ट है, यह कार्य इतना सरल नहीं है, क्योंकि यहां तक कि यहूदिया भी यूनानी विचारधाराओं से प्रभावित था। निश्चित रूप से, यहूदी धर्म में यूनानवाद के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी रुख प्रेरि 6 के यूनानिय-इब्री संघर्ष और अन्यजाती उद्देश्य के समानांतर है। हालांकि, प्रारंभिक चरणों से ही, कलीसिया पर यूनानवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। इसके अलावा, यह जानना लगभग असंभव हो जाता है कि कोई वाक्यांश फिलिस्तीनी स्रोतों से

लिया गया है या हेलेनिस्टिक स्रोतों से, क्योंकि दोनों का परस्पर प्रभाव फिलिस्तीन में ही था, और कलीसिया की द्विभाषी प्रकृति प्रारंभ से ही थी।

इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई भिन्नताएँ नहीं थीं। स्तिफनुस की यूनानिय पृष्ठभूमि ने उन्हें देश और मन्दिर के मसीह का प्रतीक होने के तार्किक परिणामों को देखने की अनुमति दी (पुष्टि करें प्रेरि 6–7), जबकि अधिक रूढ़िवादी यरूशलेम कलीसिया ने ऐसा नहीं किया। इसके अलावा, प्रेरितों के काम में भाषणों का अध्ययन यह दिखाता है कि यह प्रचार यहूदी और गैर-यहूदी श्रोताओं के लिए अलग-अलग तरीके से विकसित हुआ। पहला पुराना नियम की पूर्ति पर केंद्रित था और दूसरा एकमात्र सच्चे परमेश्वर द्वारा इतिहास में सक्रिय प्रवेश पर, जो मृत मूर्तियों के विपरीत, मानव के मामलों में स्वयं को शामिल करते हैं।

यह तथ्य कि नया नियम को कोइने यूनानी में लिखा गया था, प्रभाव को बहुत प्रत्यक्ष बनाता है। यहूदी-उन्मुख रचनाएँ, जैसे कि इब्रानियों या याकूब, परिष्कृत यूनानी में लिखी गई हैं, और यहां तक कि सुसमाचार, जो यहूदी परिवेश में यीशु के जीवन का वर्णन करते हैं, यूनानिय इतिहासलेखन को प्रतिबिंबित करते हैं (उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक घटनाओं के धार्मिक अर्थ में रुचि)। सबसे स्पष्ट रूप से यूनानिय, निश्चित रूप से, पत्रियों में पाए जाने वाले विचार हैं जो गैर-यहूदी उद्देश्य से उत्पन्न होते हैं। प्रारंभिक भजन जैसे कुल 1:15–22 यीशु की अद्वितीय श्रेष्ठता को वर्णित करने के लिए यूनानिय परिवेश से शब्दावली का उपयोग करते हैं। सार्वभौमिक उद्देश्य पर जोर, जो यीशु की शिक्षाओं पर आधारित था, गैर-यहूदी उद्देश्य के दौरान विकसित हुआ; प्रारंभिक कलीसिया ने इसे यहूदी धर्मांतरण धर्मशास्त्र के अनुरूप व्याख्या की, जो यह था कि गैर-यहूदी यहूदी बनने के बाद मसीही बन गए।

यह भी देखें इपिकूरी; ग्नोस्टिकवाद; यूनान, यूनानी; यूनानवादी; यहूदी धर्म; स्तोईकवाद, स्तोईकी।

यूनिकॉर्न

अधिकांश आधुनिक अनुवादों में "जंगली साँड़" कहे जाने वाले जानवर के लिए एक अनुवाद (गिन 24:8; व्य.वि. 33:17)। यूनिकॉर्न एक अनुचित अनुवाद है (सेप्टुआजेंट का अनुसरण करते हुए) क्योंकि पशु के दो सींग थे, एक नहीं।

*देखें*पशु (जंगली बैल)।

यूनियास

एक यहूदी जिसे अन्द्रुनीकुस के साथ पौलुस द्वारा रोम की कलीसिया को लिखे गए पत्र में अभिवादन दिया गया था। यह कुछ पांडुलिपियों के अनुसार है (रोम 16:7) । पौलुस ने यूनियास को एक प्रेरित के रूप में पहचाना, जो सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ कैद में रहे थे। विद्वानों को यह निश्चित नहीं है कि यूनियास एक महिला थीं या पुरुष।

*देखें*यूलिया #2।

यूनीके

तीमुथियुस की माता, लोइस की पुत्री (2 तिमु 1:5), और एक मूर्तिपूजक यूनानी की पत्नी थी। वह एक यहूदी मसीही थी (प्रेरि 16:1)। उन्होंने अपने पुत्र को "बालकपन से" पवित्रशास्त्र सिखाए (2 तिमु 3:15) और जब पौलुस पहली बार लुस्त्रा में उसके घर आया, उस समय उसका मसीही मत में रूपान्तरण हुआ, जो प्रेरि 16:1 में उल्लिखित उसकी यात्रा से पहले की बात है।

यूपेटर

यह अन्तिओकस V का पारिवारिक नाम है। वह सिलूकिया के साम्राज्य के एक राजा थे (एक राज्य जिसने लगभग ईसा पूर्व 312 से ईसा पूर्व 63 तक मध्य पूर्व और आसिया के कुछ हिस्सों पर शासन किया)। यूपेटर नाम का अर्थ है "महान पिता का पुत्र।" *देखें*अन्तिओकस V

यूपोलेमस

यह यहूदी राजदूत यहूदा मक्काबी द्वारा एलीआजर के पुत्र जेसन के साथ रोम में संधि स्थापित करने के लिए भेजा गया था। 1 मकाब्बियों 8:17 में उसकी पहचान अक्कोस के पुत्र, यूहन्ना के पुत्र के रूप में की गई है।

यूबाल

यूबाल

आदा का पुत्र, लेमेक की पत्नी ,कैन के वंशज। उन्हें पहले संगीतकार के रूप में जाना जाता है, वीणा और बाँसुरी के आविष्कारक (उत 4:19–21)।

यूबूलुस

रोमी मसीही जिसने प्रेरित पौलुस के रोम में दूसरी बार कैद होने के दौरान तीमुथियुस को अभिवादन भेजा (2 तीमुथियुस 4:21)। चूँकि यूबूलुस यूनानी नाम है, इसलिए यह उनके अन्यजाति (गैर-यहूदी) मूल का संकेत हो सकता है।

यूमेनीस

पिरगमुन के एक राजा यूमेनीस II (ई.पू. 197–158) का पदनाम, जिसका उल्लेख 1 मक्काबियों 8:8 में यहूदा मक्काबी द्वारा उसके अन्तियोकस महान के साथ युद्ध के दौरान रोमी लोगों के साथ किए गए गठबंधन के संबंध में किया गया है।

यूरकुलीन

किंग जेम्स वर्जन (केजेवी) में पौलुस की रोम की यात्रा के दौरान प्रेरि 27:14 में उल्लेखित उत्तर-पूर्वी हवा के लिए यूनानी शब्द का लिप्यन्तरण है। *देखें*उत्तर-पूर्वी हवा।

यूरकुलीन

यूरकुलीन

तूफानी हवा का नाम प्रेरितों के काम 27:14 में दिया गया है, जिसका सामना पौलुस ने रोम की यात्रा के दौरान किया था। पौलुस की सलाह के विरुद्ध, जहाज ने लसया के पास के बन्दरगाह से लंगर उठाया। उनका मार्ग क्रेती के तट के साथ "करीब" था, क्योंकि हल्की हवा उन्हें आगे बढ़ा रही थी। शायद नौ मील (14.5 किलोमीटर) से अधिक दूर नहीं थे, कि अचानक भयंकर तूफान आया, जिसने उनके छोटे जहाज को संकट में डाल दिया। लूका इसे आंधी ("बड़ी आँधी") कहते हैं, जिसका नाम यूरकुलीन है, जिसका अर्थ है "दक्षिण-पश्चिमी हवा, जो लहरों को उठाती है।"

यूलिया

यूलिया

1. प्रेरित पौलुस द्वारा अभिवादन प्राप्त करने वाली महिला (रोम 16:15)। उनका नाम फिलुलुगुस के बाद आता है, जो संभवतः उनके भाई या पति हो सकते थे।

2. एक अन्य पाठ के अनुसार, एक महिला का उल्लेख पौलुस ने अपने सहकर्मियों में से एक के रूप में किया है, और उन्हें एक प्रतिष्ठित प्रेरित भी कहा गया है (रोम 16:7)। संभवतः वह अन्द्रुनीकुस की पत्नी थी। यह जोड़ी, अक्विला और प्रिस्किल्ला की तरह, एक प्रेरिताई दल का गठन करते थे। अन्य पांडुलिपियों में, पाठ यूनियास है - जो यूनानी में उच्चारण के आधार पर एक पुरुष या महिला नाम के रूप में समझा जा सकता है। हालांकि, सबसे प्राचीन पांडुलिपियों में इस नाम पर कोई उच्चारण चिह्न नहीं है; इसलिए, व्याख्याता को यह निर्णय लेना होगा कि यह प्रेरित पुरुष थे या महिला।

यूलियुस

रोमी सूबेदार जो औगुस्तुस सैन्य-दल का हिस्सा था, यह प्रेरित पौलुस और अन्य कैदियों को फिलिस्तीन से रोम तक ले अपनी पहरेदारी में ले गया (प्रेरि 27:1)। यरूशलेम के यहूदी अगुवों ने पौलुस पर झूठी शिक्षा देने और मंदिर को अपवित्र करने का आरोप लगाया। चूँकि दो लगातार रोमी राज्यपालों की अनिर्णयता के कारण पौलुस को दो से अधिक वर्षों तक जेल में रखा गया, तो अंततः उसने कैसर के पास अनुरोध किया। यूलियुस एक दयालु व्यक्ति था। उसने पौलुस को सीदोन में जहाज छोड़ने की अनुमति दी ताकि उसके मित्र उसे सांत्वना दे सकें (वचन 3)। हालांकि, अपने कैदियों को रोम ले जाने की उत्सुकता में, यूलियुस ने पौलुस की सलाह को नज़रअंदाज़ कर दिया कि वे सर्दियों में शुभलंगरबारी में रुकें। इसके बजाय, उसने जहाज को फीनिक्स, जो कि क्रेते में एक और बंदरगाह था, जो सर्दियों में बंदरगाह के लिए अधिक उपयुक्त था, वहां जाने का आदेश दिया (वचन 9–12)। यात्रा के दौरान, एक तूफान ने जहाज को नष्ट कर दिया। जहाज पर सवार सैनिक कैदियों को मार डालना चाहते थे ताकि वे भाग न सकें, लेकिन यूलियुस ने उस जनसंहार को रोक दिया, सभी को जहाज से कूदकर किनारे तक तैरने का आदेश दिया। इस निर्णय ने पौलुस का जीवन बचाया (वचन 42–44)। कुछ विद्वानों ने अनुमान लगाया है कि यूलियुस वह सैनिक था जो रोम में पौलुस के साथ रहा (28:16)।

यूश

1. एसाव और कनानी अना की पुत्री ओहोलीबामा से उत्पन्न तीन पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र था। वह एदोम में एसाव के वंशजों में एक अधिपति था (उत 36:5–18; 1 इति 1:35)।

2. यदीएल के घर से बिल्हान का पुत्र और बिन्यामीन के गोत्र में एक अगुवा (1 इति 7:10)।

3. बिन्यामिन गोत्र के, एशेक के पुत्र और शाऊल के वंशज (1 इति 8:39)।

4. गर्शोन के परिवार से एक लेवी थे और शिमी के चार पुत्रों में से तीसरे थे। चूँकि उनके और उनके सबसे छोटे भाई बरीआ के पुत्र कम थे, इसलिए दाऊद के राज्य काल में उन्हें एक ही घराना माना गया था (1 इति 23:10–11)।

5. राजा रहबाम और महलत के तीन पुत्रों में सबसे बड़े, एलीआब की पोती (2 इति 11:19)।

यूशब-हेसेद

जरूब्बाबेल के सात पुत्रों में से एक (1 इति 3:20)। यूशब-हेसेद का अर्थ है "प्रेम-दया लौटाई जाती है।"

यूस

यूस

बिन्यामीन के गोत्र से, शहरैम का उसकी पत्नी होदेश से उत्पन्न पुत्र (1 इति 8:10)।

यूसुफ बरसब्बास

यूसुफ बरसब्बास

*देखें*यूसुफ #12।

यूस्तुस

यूस्तुस

1. यूसुफ बरसब्बास का उपनाम (प्रेरि 1:23)। *देखें*यूसुफ #12।

2. कुरिन्थि परमेश्वर-भक्त (संभवतः पौलुस का अनुयायी), जिन्होंने यहूदी आराधनालय को पौलुस के प्रचार के लिए बंद कर दिए जाने के बाद पौलुस और मसीहियों के लिए अपने घर के द्वार खोल दिए थे (प्रेरि18:7)। पाण्डुलिपियों में उनके नाम के सही रूप को लेकर असहमति है। विभिन्न पाठों में उनका नाम यूस्तुस या तीतुस यूस्तुस बताया गया है। उन्हें रोम 16:23 के गयुस के रूप में भी पहचाना गया है।

3. यीशु नाम के एक विश्वासी का उपनाम, एक यहूदी मसीही (कुलु 4:11)। *देखें*यीशु #3।

यूहदा (व्यक्ति)

1. मरकुस 6:3 में यहूदा, यीशु के भाई का वैकल्पिक वर्तनी। यहूदा को यहूदा 1 में यहूदा भी कहा जाता है। *देखें*यहूदा (व्यक्ति)।

2. लूका 3:26 में योदाह, यूहन्ना के पुत्र का वैकल्पिक केजेवी वर्तनी। *देखें*योदाह।

3. लूका 3:30 में यहूदा, यूसुफ के पुत्र का वैकल्पिक केजेवी वर्तनी। *देखें*यहूदा (व्यक्ति) #8।

4. लूका 3:33 में यहूदा, याकूब के पुत्र का वैकल्पिक केजेवी वर्तनी। *देखें*यहूदा (व्यक्ति) #1।

5. यहूदा के गोत्र के लिए वैकल्पिक केजेवी वर्तनी (इब्रा 7:14; प्रका 5:5; 7:5). *देखें*यहूदा, गोत्र।

यूहन्ना

यीशु के पूर्वज, जिनका लूका 3:27 में उल्लेख किया गया है।

*देखिए*यीशु मसीह की वंशावली।

यूहन्ना

1. लूका 3:27 में यूहन्ना का एक अंग्रेजी संस्करण रूप।
   *देखें*यूहन्ना।
2. यहूदिया के हाकिम हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी। वह उन लोगों में से थी जिन्हें यीशु ने दुष्टात्माओं और बीमारियों से चंगा किया था। वह उन महिलाओं में से भी एक थी जिन्होंने उसका साथ दिया (लूका 8:2–3)। उसने संभवतः यीशु की क्रूस पर मृत्यु देखी थी और शरीर के लिए मसाले तैयार किए थे। बाद में, उसने यीशु की कब्र खाली पाई (लूका 23:55–24:10)।

यूहन्ना (व्यक्ति)

1. शमौन पतरस और अन्द्रियास के पिता (यूह 1:40–42; 21:15–17)। मत्ती 16:17 के अनुसार, पतरस के पिता का नाम योना (*योनास, योना*) था। योना या तो 'यूहन्ना' नाम का दूसरा संस्करण था या फिर उनके नाम के बारे में दो कहानियाँ प्रचलित थीं।

2. महायाजक परिवार का सदस्य जिसने हन्ना, कैफा और सिकन्दर के साथ मिलकर पतरस और यूहन्ना से पूछताछ की जब इन दोनों प्रेरितों ने एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा किया था (प्रेरि 4:6)।
3. प्रारंभिक कलीसिया के धर्माध्यक्ष पापियास के अनुसार, यूहन्ना यीशु के चेलों के बड़े समूह के सदस्य थे जो बारह चेलों के बाहर थे (तुलना करें लूका 10:1)। उन्हें "प्राचीन यूहन्ना" के नाम से जाना जाता है, उन्हें अक्सर 2 और 3 यूहन्ना के लेखक माना जाता है (2 यूह 1:1; 3 यूह 1:1)। शब्द "प्राचीन" संभवतः प्रेरित यूहन्ना को सन्दर्भित करता है।
4. प्रेरित।
   *देखें*प्रेरित यूहन्ना।
5. बपतिस्मा देने वाले।
   *देखें*यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले।
6. यूहन्ना मरकुस के नाम से प्रसिद्ध प्रारंभिक चेला, दूसरे सुसमाचार के लेखक हैं।
   देखें मरकुस, यूहन्ना।

यूहन्ना का प्रकाशन

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का एक अन्य नाम।

*देखें*प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

यूहन्ना के पत्रियाँ

यूहन्ना के द्वारा लिखे गए तीन संक्षिप्त पत्रियाँ। उनकी संक्षिप्तता भ्रामक है, क्योंकि वे मसीही आत्मिक अनुभव की मूल प्रकृति के बारे में गहरे और महत्वपूर्ण प्रश्नों को संबोधित करते हैं। यूहन्ना के पत्री पहले शताब्दी के अंत में कलीसिया की स्थिति में दिलचस्प अंतर्दृष्टि भी प्रदान करते हैं। विधर्म अपना कुरूप सिर उठा रहा है। स्वायत्तता और कलीसिया संगठन परिलक्षित होते हैं। मसीह के माध्यम से परमेश्वर के प्रति एक प्रतिबद्ध और आज्ञाकारी संबंध की वास्तविक प्रकृति को शक्तिशाली और गर्मजोशी से चित्रित और निर्देशित किया गया है।

समीक्षा

- यूहन्ना की पहली पत्री
- यूहन्ना की दूसरी पत्री
- यूहन्ना की तीसरी पत्री

यूहन्ना की पहली पत्री

समय और उद्देश्य

यूहन्ना की पहली पत्री कलीसिया को खतरे में डालने वाले विधर्म के प्रति एक सरल किन्तु गहन प्रतिक्रिया है। इसमें मसीह में पाए जाने वाले सत्य की सावधानीपूर्वक और स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। दो अलग-अलग स्थितियाँ—सही और गलत—स्पष्ट रूप से विपरीत हैं। विभाजन की रेखाएँ स्पष्ट रूप से खींची गई हैं।

हालाँकि, पत्री का एक सकारात्मक उद्देश्य भी है। लेखक चाहते हैं कि उनके "बालक" सत्य को जानें और परमेश्वर के साथ संबंध में प्रतिक्रिया दें, जो मसीह में प्रकट हुआ था: "और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। जो समाचार हमने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं।" (1 यूह 1:4–5)। सकारात्मक उद्देश्य को 5:20 में और स्पष्ट किया गया है: "और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।" मसीह की स्पष्ट समझ—जो परमेश्वर और मनुष्य दोनों के रूप में—लेखक के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विश्वासियों को यह जानना है और इस सत्य में बने रहना आवश्यक है, ताकि वे परमेश्वर के पुत्र में बने रहें और विधर्मी शिक्षाओं द्वारा उनसे दूर न हो जाएँ।

विरोध की प्रकृति

यह मानते हुए कि यह पत्री विधर्मियों के दावों का विरोध करने के लिए लिखा गया है, उनकी पहचान के बारे में दिलचस्प जानकारी मिलती है। 2:19 के अनुसार, विरोधी पहले मसीही समुदाय के सदस्य थे, लेकिन बाद में अपने स्वयं के विश्वासों का प्रचार करने के लिए अलग हो गए।

विधर्मियों की मुख्य मसीह संबंधी त्रुटि यीशु की मानवता को नकारना थी, जिसका अर्थ था कि वह मसीहा नहीं थे। संसार में झूठे भविष्यद्वक्ताओं की पहचान यीशु के विषय उनके अंगीकार से की जा सकती है: "परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।" (4:2)। पत्री की आरंभिक पद यीशु की मानवता के इनकार का तीव्रता से विरोध करती है। 2:22 में झूठे को उस व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है "जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है।"

इन पदों का व्यावहारिक परिणाम नैतिक गैरजिम्मेदारी थी जो पापपूर्ण जीवन और दूसरों के प्रति उपेक्षा की वकालत करती

थी। इसलिए, यूहन्ना को इन धर्मत्यागियों को मसीह में नैतिकता और भाईचारे के प्रेम के जीवन की ओर वापस बुलाने की आवश्यकता है।

विरोध की पहचान विभिन्न तरीकों से की गई है। गुप्त और गूढ़ ज्ञान पर जोर एक गूढ़ ज्ञानवादी-प्रकार के विधर्म की ओर इशारा करता है। यीशु की मानवता का इनकार रूपाभासवादी विधर्म की ओर इशारा करता है। एशिया का उपद्वीप सेरिंथस (इरेनियस द्वारा उल्लेखित) को अक्सर 1 यूहन्ना में विपक्ष के साथ जोड़ा गया है।

लेखक:

1 यूहन्ना का चौथे सुसमाचार के साथ सावधानीपूर्वक तुलना करने पर शब्दावली, शैली और विचार में एक स्पष्ट समानता दिखाई देती है। दोनों कार्यों द्वारा उपयोग किए गए विशिष्ट शब्दों में "प्रेम," "जीवन," "सत्य," "प्रकाश," "पुत्र," "आत्मा," "सहायक," "प्रकट," "पाप," "संसार," "शरीर," "बने रहना," "जानना," "चलना," और "आज्ञाएँ" शामिल हैं। शब्दों के संयोजन जैसे "सत्य की आत्मा," "परमेश्वर से उत्पन्न," "परमेश्वर की सन्तान," और "संसार पर जय प्राप्त करना" भी एक ही लेखक की ओर संकेत करते हैं। व्याकरणिक उपयोग और अभिव्यक्ति के प्रतिरूप में भी समानताएँ हैं। धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण में भी स्पष्ट समानताएँ हैं।

दोनों लेखनों के निकट संबंध को नकारना कठिन है। जिन्होंने दोनों के बीच अंतर करने का प्रयास किया है, उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा है कि शैली और धर्मशास्त्रीय विधि में भिन्नताएं अवश्य ही उस व्यक्ति से आई होंगी जो दूसरे के लेखक से निकटता से संबंधित थे और गहराई से प्रभावित थे।

लेखकत्व पर पारंपरिक दृष्टिकोण यह रहा है कि प्रेरित यूहन्ना ही सुसमाचार और पत्री दोनों के लेखक थे। 1 यूहन्ना के आरंभिक शब्द स्पष्ट रूप से इस दिशा में संकेत करते हैं: "उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन् जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से छुआ" (1:1)। यह स्पष्ट रूप से पाठकों को यह बताने के लिए है कि लेखक घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी था।

पारंपरिक स्थिति पर पापियास के एक उद्धरण के आधार पर सवाल उठाया गया है, जो एशिया के उपद्वीप हियरापुलिस के बिशप थे (ईस्वी 100–140)। उनकी टिप्पणी, जो इरेनियस के माध्यम से यूसेबियस द्वारा प्रेषित की गई है, यह है: "यदि कहीं भी कोई ऐसा व्यक्ति मेरे रास्ते में आता जो प्राचीनों का अनुयायी रहा हो, तो मैं प्राचीनों के शब्दों के बारे में पूछताछ करता—अन्द्रियास और पतरस ने क्या कहा था, या थोमा या याकूब या यूहन्ना या मत्ती या प्रभु के किसी अन्य शिष्य ने क्या कहा; और मैं उन चीजों के बारे में पूछताछ करता जो अरिस्टियन और प्राचीन यूहन्ना, प्रभु के शिष्य, कहते हैं।" कई महत्वपूर्ण टिप्पणीकारों ने एशिया के उपद्वीप में एक प्राचीन या प्रिस्बिटर यूहन्ना के अस्तित्व के लिए तर्क दिए हैं जो प्रेरित यूहन्ना से भिन्न है। हालाँकि, इरेनियस ने अगेंस्ट हेरेसीज़ और मुराटोरियन फ्रैगमेंट (दोनों ही दूसरी शताब्दी के अंत से), 1 यूहन्ना को प्रेरित यूहन्ना को सौंपते हैं।

प्रत्यक्षदर्शी होने का उनका दावा और उनका अधिकारपूर्ण व्यवहार निश्चित रूप से प्रेरित यूहन्ना को पहली पत्री के लेखक के रूप में इंगित करता है। परंपरा प्रेरित की उन्नत आयु के बारे में बताती है जब उन्होंने इफिसुस में शिक्षा दी, और अपने जीवन के अंतिम समय तक मसीहियों के बीच प्रेम पर उनके जोर के बारे में भी बताती है। पहली यूहन्ना की पत्री ऐसी ही स्थिति को दर्शाता है।

तिथि

1 यूहन्ना की रचना की तिथि आमतौर पर पहली शताब्दी के अंत के पास मानी जाती है। इस तिथि की पुष्टि उस विधर्म की प्रकृति से होती है जिसकी निंदा की गई है और पॉलीकार्प और इरेनियस में इसके संदर्भों से होती है। उपलब्ध प्रमाणों के साथ तिथि को अधिक सटीकता से निर्धारित करना संभव नहीं है।

पाठ

1 यूहन्ना के पाठ को बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है। इसकी शब्दावली की सरलता और विचारों की स्पष्टता ने इस संरक्षण में योगदान दिया है। पाठ की चर्चा में तीन अंश उल्लेखनीय हैं।

शब्द "सब सत्य" (2:20) कुछ पांडुलिपियों में कर्ता कारक में और अन्य में कर्म या उद्देश्य कारक में पाए जाते हैं। आई.आर.वी इस पद का अनुवाद "तुम सब सत्य जानते हो" करता है। कर्ता कारक का उपयोग, जो फिर "तुम" को संशोधित करता है - "तुम सब सत्य जानते हो - शायद एक बेहतर अनुवाद है। 'ज्ञान' के वितरण की व्यापकता पर जोर दिया गया है, इसकी पूर्णता पर नहीं।

4:19 की सबसे पुरानी पांडुलिपियों में क्रिया "प्रेम" के लिए कोई वस्तु नहीं है। कुछ बाद की पांडुलिपियों में इस वाक्य में या तो "उसने" या "परमेश्वर" जोड़ा गया है, और अनेक अनुवाद इन पांडुलिपियों पर निर्भर है।

1 यूहन्ना में सबसे प्रसिद्ध भिन्नता 5:7–8 में पाई जाती है। "यह तीनों स्वर्ग में एक हैं: पिता, वचन, और पवित्र आत्मा ..."(आई.आर.वी में यह "और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्मा, पानी, और लहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं" के रूप में अनुवादित है।) यह स्पष्ट रूप से एक अंतःक्षेप है जो पाठ में काफी देर से जोड़ा गया था। सबसे प्रारंभिक संदर्भ स्पेनिश विधर्मी प्रिस्किलियन से आता है, जिनकी मृत्यु ईस्वी 385 में हुई थी। बाद में इसे वल्गेट में स्वीकार कर लिया गया। एरास्मस, जिन्होंने पहली यूनानी टेस्टामेंट का संपादन किया था, उन्होंने यूनानी पांडुलिपियों में उनकी अनुपस्थिति के आधार पर इन शब्दों को शामिल नहीं किया। केवल दो यूनानी

पांडुलिपियां हैं जिनमें यह शब्द शामिल हैं, और वे उस तारीख के बाद तैयार की गई थीं। इस प्रकार आधुनिक अनुवादों ने इस पद को हटा दिया है।

विषय सूची

टिप्पणीकार पहले पत्री की विशिष्ट योजना और संरचना पर सहमत नहीं हो पा रहे हैं। सरल शब्दावली, शब्दावली की संकीर्ण सीमा, विचारों की पुनरावृत्ति, और लगभग नीरस व्याकरणिक निर्माण रूपरेखा और संरचना के संदर्भ में तार्किक विश्लेषण को चुनौती देते हैं। टिप्पणीकारों ने पत्री के तर्क को "घुमावदार" के रूप में वर्णित किया है। यह एक सम्मानित और प्रतिष्ठित प्राचीन का चित्रण है जो समुदाय में बिना किसी तर्कपूर्ण तर्क के अपने ज्ञान को साझा कर रहा है।

हालाँकि अध्याय पदनाम 1228 ईस्वी नए नियम के पाठ में पेश नहीं किए गए थे और अक्सर विचारों के भ्रामक विभाजन होते हैं, वे पत्री के विषय का सर्वेक्षण करने के लिए एक सुविधाजनक विधि प्रदान करते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि यह पत्री भी पहली शताब्दी की सामान्य पत्री शैली से भिन्न है, जो पौलुस के पत्रियों में जीवंत रूप से प्रस्तुत की गई है।

पहला अध्याय परिचय और ज्योति में चलने की चर्चा से बना है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच के रिश्ते पर बहुत ध्यान दिया गया है।

परिचय चौथे सुसमाचार की प्रस्तावना और इब्रानियों के पत्री की प्रस्तावना की प्रतिष्ठित परंपरा में स्थित है। गहन गहराई के साथ सुसमाचार संदेश की बुनियादी विश्वसनीयता को घोषित किया जाता है। लेखक स्वयं को उस व्यक्ति का प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा करते हैं जिसके माध्यम से पिता ने स्वयं को प्रकट किया। वे दावा करते हैं कि वे केवल उन घटनाओं की घोषणा कर रहे हैं जिनमें उन्होंने स्वयं भाग लिया। सुनने, देखने और छूने पर जोर (पूर्ण काल का लगातार उपयोग निरंतर परिणामों पर जोर देता है) प्रकटिकरण को अमूर्त और सैद्धांतिक क्षेत्र से बाहर निकालकर सीधे अनुभव के संसार में स्थापित करता है।

घोषणा का उद्देश्य सहभागिता है (यूनानी शब्द कोइनोनिया है)। यह सहभागिता विश्वासियों के बीच क्षैतिज तल पर और विश्वासियों और पिता और पुत्र दोनों के बीच ऊर्ध्वाधर तल पर दोनों काम करती है (1:3)। उद्देश्य का दूसरा तत्व "तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" है (4)।

पत्री के मुख्य भाग में लेखक तुरंत (1:5–10) ज्योति के रूप में परमेश्वर की निश्चित प्रकृति की ओर बढ़ता है। परमेश्वर की प्रकृति के रूप में ज्योति के कई महत्वपूर्ण प्रभाव हैं। पहला, अंधकार का परमेश्वर में कोई स्थान नहीं है (पद 5)। दूसरा, जो लोग अंधकार में चलते हैं (जीवन व्यतीत करते हैं, आचरण करते हैं) वे परमेश्वर के साथ सहभागिता में नहीं हो सकते (पद 6)। तीसरा, परमेश्वर के साथ संबंध (ज्योति में चलना) अन्य विश्वासियों के साथ सहभागिता और उनके पुत्र यीशु द्वारा सभी पापों से शुद्धिकरण का परिणाम है (पद 7)। चौथा, सभी ने पाप किया है, और उस तथ्य का इनकार सत्य को नहीं बदलता (पद 8)। पाँचवाँ, पाप की स्वीकृति विश्वासयोग्य और धार्मिक परमेश्वर से क्षमा और शुद्धिकरण लाती है (पद 9)। अंततः, पाप करने से इनकार करना परमेश्वर पर एक प्रतिबिंब है और यह साबित करता है कि उसका वचन उसमे मौजूद नहीं है (पद 10)।

केवल वे लोग जो परमेश्वर की उपस्थिति के ज्योति में चलते हैं, उन्हें आनंद और सहभागिता प्राप्त होती है। परमेश्वर—जो अपने पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से ज्योति हैं (हमें चौथे सुसमाचार की प्रस्तावना की याद दिलाई जाती है, कि वचन ने सभी मनुष्यों के लिए ज्योति प्रकट किया)—पाप और अधर्म की समस्या को क्षमा और शुद्धिकरण के माध्यम से हल करते हैं।

दूसरा अध्याय अध्याय 1 के अंतिम अनुच्छेद के विचार को जारी रखता है - पाप की समस्या का समाधान - और फिर नई आज्ञा और मसीह विरोधी के खतरे की चर्चा की ओर मुड़ता है।

2:1–6 में शुद्ध परमेश्वर की उपस्थिति में पाप की समस्या का समाधान विस्तृत रूप से बताया गया है। यीशु मसीह न केवल पापों को क्षमा करते हैं और अधर्म को शुद्ध करते हैं, बल्कि वे परमेश्वर के सामने हमारे सहायक भी हैं (वही शब्द यूह 14–16 में उपयोग किया गया है और "पैराक्लीट" के रूप में लिप्यंतरित किया गया है)। यीशु ने परमेश्वर और मानवता के बीच पूर्ण मेल-मिलाप के लिए आवश्यकताओं को पूरा किया है।

प्रतिक्रिया में, विश्वासियों को उनकी आज्ञाओं का पालन करना है। तीसरे पद कई पदों में से पहली है जो एक प्रश्न का उत्तर देती है: विश्वासी कैसे जान सकते हैं कि यह सब सत्य है? पहला परीक्षण आज्ञाकारिता का है। आज्ञाकारिता के परीक्षण के निहितार्थ को सकारात्मक रूप से पद 3 और 5 में और नकारात्मक रूप से पद 4 में बताया गया है। पद 6 स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि विश्वासियों की जीवनशैली का आदर्श यीशु में पाया जाना है।

विश्वास करने की दूसरी परीक्षा ("उसमें बने रहना") पद 7–17 में वर्णित है। दूसरा प्रमाण समुदाय में भाइयों और बहनों के प्रति प्रेम है। लेखक स्पष्ट रूप से कहते हैं कि परमेश्वर के ज्योति में चलना और अपने मसीही भाई या बहन से घृणा करना एक साथ असंभव है। यह आरंभिक पदों में पाए गए ज्योति में सहभागिता के विचार का विस्तार है।

तीन अलग-अलग आयु समूहों को प्रोत्साहित करने के बाद (2:12–14—संदर्भ संभवतः कालानुक्रमिक आयु समूहों के बजाय मसीही जीवन के चरणों का हो सकता है), वे उन्हें संसार से प्रेम करने की मूर्खता के बारे में चेतावनी देते हैं (पद 15–17)। संसार अस्थायी अभिलाषाओं और जीविका के घमण्ड से बना है और यह पिता की ओर से नहीं है, जो कि

ज्योति हैं। जो परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होता है केवल वही जीवित रहता है।

फिर लेखक मसीह विरोधी के प्रकटीकरण के साथ अंत समय की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करता है (2:18–27)। मसीह विरोधी (बहुवचन के उपयोग पर ध्यान दें) एक बार संगति के सदस्य थे (पद19)। जो कोई भी इस बात से इनकार करता है कि यीशु मसीह हैं, वह उस श्रेणी में आता है। लेखक आगे यह घोषणा करता है कि मसीह का इनकार करना और परमेश्वर को अपनाना एक साथ असंभव है (पद 23)। जो लोग परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं, उनके पास उनसे एक अभिषेक होता है जो उन्हें मसीह विरोधियों के झूठ को पहचानने में सक्षम बनाता है (पद 27)।

इस बिंदु तक पूरी पत्री परमेश्वर के साथ चलने के निहितार्थों के इर्द-गिर्द घूमता रहा है, जो ज्योति है। यीशु में परमेश्वर का स्वयं का प्रकाशन सत्य को पहचानने और असत्य को पहचानने के लिए स्पष्ट दिशा और समझ प्रदान करता है।

अध्याय 2 की अंतिम दो पद अध्याय 3 के नए विषय का परिचय देती हैं, जो "परमेश्वर से जन्मे" होने के बारे में है (2:29)। परमेश्वर के बच्चे परमेश्वर के अंतिम प्रकाशन के समय द्वितीय आगमन पर भयभीत नहीं होते। इसके बजाय, वे इसकी प्रतीक्षा करते हैं, क्योंकि उनके नए जन्म की पूरी गुणवत्ता प्रकट होगी (3:2)। लेखक परमेश्वर के प्रेम के हमारे जीवन में उनके बच्चों के रूप में कार्य पर आनंदित होने के लिए रुकते हैं (पद 1)।

लेखक जल्दी ही परमेश्वर की सन्तान के रूप में हमारी स्थिति पर विचार करने के आनंद से वापस उस दुनिया की कठोर वास्तविकताओं की ओर लौटते हैं जिसमें हमें जीना है। हमारे चारों ओर का संसार पाप द्वारा वर्णित है, जिसे अब व्यवस्था के विरोध के रूप में परिभाषित किया गया है (3:4)। पाप की उत्पत्ति शैतान में होती है, जो "आरम्भ ही से पाप करता आया है" (पद 8)। शैतान की सन्तान अपना मूल स्वभाव को व्यवस्था का विरोध जीवन जीकर प्रकट करते हैं—कैन को एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया गया है (पद 10–12)।

यीशु, जिनका दूसरा आगमन आरंभिक पदों में उल्लेखित है, पहली बार पापों को दूर करने (3:5) और शैतान के कामों को नाश करने के लिए आए थे (पद 8)। जो लोग यीशु में रहते हैं, उन्हें अपने पिता के आदर्श के अनुसार जीना चाहिए, जो धार्मिक हैं (पद 7)। धार्मिक जीवनशैली पवित्रता (पद 3) और पाप के समाप्ति (पद 7–9) द्वारा चिह्नित होती है। दोनों जीवनशैलियों के बीच का अंतर स्पष्ट है (पद 10)।

अध्याय 3 का अंतिम भाग धार्मिकता की अभिव्यक्तियों में से एक की ओर मुड़ता है — मसीही समुदाय में दूसरों के प्रति प्रेम। नकारात्मक पहलू पहले ही पद 12 (कैन) में प्रस्तुत किया गया था। भाई से बैर रखना हत्या के समान है (3:15)। भाई या बहन की आवश्यकता के प्रति उदासीनता भी निंदा की जाती है (पद 17–18)। भाइयों के प्रेम का आदर्श यीशु हैं, जिन्होंने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया (पद 16)। सकारात्मक बात यह है कि अपने भाइयों और बहनों के प्रति प्रेम परमेश्वर से जन्म लेने, मृत्यु से जीवन में प्रवेश करने का प्रमाण है (पद 14)। फिर से, परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान के बीच का अंतर स्पष्ट है।

अध्याय 3 के अंतिम भाग में यूहन्ना के पसंदीदा जोर में से एक को उजागर किया गया है। "हम जानते हैं" को 14, 16, 19, और 24 पदों में दोहराया गया है। अनिश्चितताओं से भरे संसार में, यूहन्ना आश्वासन की महान आवश्यकता को पहचानते हैं। इसलिए, वे परमेश्वर की सन्तान के लिए आश्वासन स्थापित करने और बनाए रखने के लिए विभिन्न परीक्षणों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं।

अध्याय 4 की ओर परिवर्तन अध्याय 3 के अंत में होता है: "उस पवित्र आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है" (पद 24)। जिनके पास पवित्र आत्मा है, उन्हें सत्य के आत्मा और भ्रम की आत्मा के बीच भेद करना चाहिए। फिर सिद्धांत परीक्षण का वर्णन किया गया है। जिनके पास परमेश्वर का आत्मा है, वे पहचानते हैं कि यीशु परमेश्वर हैं जो शरीर में आए हैं (4:2–3)। झूठे भविष्यद्वक्ता जो इसे नकारते हैं, उनके पास मसीह विरोधी का आत्मा है (पद 3)। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता परमेश्वर की सन्तान को परमेश्वर की भाषा को पहचानने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है (पद 4–6)।

पद 7–12 में यूहन्ना प्रेम की उत्पत्ति के बारे में बताते हैं जो परमेश्वर से आती है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम हैं (4:8)। जब उन्होंने पाप की समस्या को हल करने के लिए निर्देश दिए तब यह प्रेम यीशु में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुआ था (पद 9–10)। परमेश्वर की सन्तान की स्वाभाविक प्रतिक्रिया एक-दूसरे से प्रेम करना है (पद 11), ताकि परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध हो सके (अपना निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर सके) (पद 12)। इस अनुच्छेद में परमेश्वर से जन्म लेना, परमेश्वर से प्रेम करना और परमेश्वर को जानना एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

पद 13 में 3:1 से आश्वासन टिप्पणी उठाया गया है: "इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपनी आत्मा में से हमें दिया है"। जो लोग यह पहचानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र और संसार का उद्धारकर्ता है, उन्हें और भी आश्वासन दिया जाता है, जो हमें परमेश्वर के प्रेम को जानने की ओर ले जाता है। परमेश्वर का प्रेम हमसे होकर दूसरों तक बहता है और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का प्रमाण है (4:14–21)। वर्तमान आश्वासन इतना स्पष्ट है कि न्याय के दिन का डर भी दूर हो जाता है (पद 17–18)।

अंतिम अध्याय में, यूहन्ना प्रेम और धार्मिकता के बीच के संबंध की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। जो परमेश्वर से जन्मे हैं, उन्हें परमेश्वर की आज्ञाएँ बोझ नहीं लगतीं (5:3)। परमेश्वर की

सन्तान का विश्वास उन्हें संसार पर विजय पाने में सक्षम बनाता है, जो आज्ञाओं की पूर्ति में बाधा डाल सकता है (पद 4)। यह विश्वास यीशु में परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्थित है (पद 5)। फिर से, सही विश्वास चित्र में आता है: यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य थे (पद 6), और आत्मा यीशु की वास्तविकता की साक्षी देती है (पद 7–8)। इसका परिणाम एक महान आंतरिक निश्चय है "कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है" (पद 11)। फिर से, जिसके पास जीवन है और जिसके पास नहीं है, उसके बीच की सीमा रेखा को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया गया है (पद 12)।

पद 13–16 अनन्त जीवन के अधिकार से प्रार्थना में निश्चय की ओर ले जाते हैं। परमेश्वर में एक ठोस विश्वास प्रार्थना का उत्तर लाता है (पद 14–15)। विश्वास उन लोगों की ओर से प्रार्थना करने तक भी विस्तारित होता है जो पाप कर रहे हैं (अब यूहन्ना पाप को मृत्यु की ओर ले जाने वाले पाप के बजाय अधर्म के रूप में परिभाषित करते हैं, पद 12); परमेश्वर उस विनती का आदर करेंगे और पापी को जीवन देंगे (पद 16)।

अंतिम पद पत्री के प्रमुख विषयों की पुनरावृत्ति करता है। सच्चे परमेश्वर के द्वारा परमेश्वर से जन्म लेने वाले की जीत जो यीशु में हमारे पास आया है, स्पष्ट रूप से परमेश्वर की सन्तान को दुष्ट की शक्ति के अधीन दुनिया के जीवन से अलग करती है। आश्वासन की चमकती हुई ध्वनि पत्री के अंत तक बनी रहती है।

यूहन्ना की दूसरी पत्री

लेखक, स्थान, और तिथि

यूहन्ना की दूसरी पत्री 1 यूहन्ना के समान परिस्थिति में लिखा गया था। लेखक खुद को "प्राचीन" के रूप में पहचानते हैं और अपने श्रोताओं को "चुनी हुई महिला और उसके बच्चों" के रूप में संबोधित करते हैं (2 यूह 1:1)। "चुनी हुई महिला" संभवतः एक कलीसिया है और "बच्चों" उसके सदस्य हैं। "तेरी चुनी हुई बहन" (पद 13) का समापन अभिवादन इस विश्लेषण की पुष्टि करता है। यह कलीसिया उन्हीं विधर्मों से परेशान थी जिन पर पहले यूहन्ना में चर्चा की गई थी। विधर्मों की निंदा की जाती है, और कलीसिया को विधर्म के संदेशवाहकों का स्वागत न करने की चेतावनी दी जाती है।

2 यूहन्ना की व्याकरण, शैली, और शब्दावली 1 यूहन्ना से बहुत निकटता से मेल खाती है। दूसरी पत्री के 13 पदों में से आठ 1 यूहन्ना के पदों के लगभग समान हैं।

लेखन की तिथि के बारे में जानकारी किसी भी निर्णय के लिए अपर्याप्त है। 1 यूहन्ना की समानता एक समान युग का संकेत देती है।

संदेश

पत्री का संदेश दोहरा है। सबसे पहले, मसीही समुदाय के सदस्यों से एक दूसरे से प्रेम करने के लिए प्रेरित किया गया है (पद 5)। प्रेम की प्रकृति को उनके आदेशों का पालन करने के रूप में परिभाषित किया गया है (पद 6)। दूसरा, और अधिक प्रभावशाली तत्व, उन धोखेबाजों के खिलाफ चेतावनी है जो मसीह को स्वीकार करने से इनकार करते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब मसीह को स्वीकार करने से इनकार करने वालों को आश्रय देने की बात आती है तो प्रेम की वास्तव में अपनी सीमाएँ होती हैं (पद 8–11)। धोखेबाज संभवतः पहले पत्री में पहचाने गए वही विधर्मी हैं।

पत्री का समापन व्यक्तिगत रूप से आगे भी संवाद करने के वादे के साथ होता है। इस मुलाकात का उद्देश्य एक-दूसरे की खुशी को पूरा करना होगा (पुष्टि करें 1 यूह 1:4)।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

लेखक, स्थान, और तिथि

यूहन्ना की तीसरी पत्री भी एक समान परिस्थिति में लिखा गया है। हालाँकि, इस समय विधर्म का खतरा नहीं है। अब समस्या एक निश्चित दियुत्रिफेस की है, जो "प्राचीन" के अधिकार को अस्वीकार कर रहे हैं और उनके नेतृत्व को विफल करने की कोशिश कर रहे हैं। यह पत्री गयुस को संबोधित है, जो अभी भी प्राचीन के प्रति वफ़ादार है। प्राचीन गयुस से उन सच्चे मिशनरियों की देखभाल करने के लिए कहता है जो वहाँ से गुज़र रहे हैं। धन्यवाद अनुभाग में गयुस को सत्य के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता के लिए विशेष रूप से प्राचीन के "प्रिय" के रूप में सराहा गया है।

फिर से, हमारे पास तिथि या अतिरिक्त पतिस्थिति स्थापित करने के लिए अपर्याप्त जानकारी है। परिचित शब्दावली और लेखन शैली इसे अन्य दो पत्रियों से निकटता से जोड़ती है; इस प्रकार, लेखक संभवतः प्रेरित यूहन्ना थे।

संदेश

पत्री का बोझ भी दोहरा है। पहला अनुच्छेद (3 यूह 1:5–8) गयुस की उसके अतिथि सत्कार के लिए प्रशंसा करता है, जो यात्री मिशनरियों को "नाम के लिए" (पद 7), अर्थात, प्रभु यीशु मसीह के लिए यात्रा कर रहे हैं। मिशनरियों ने गयुस के कलीसिया के प्रति प्रेम की अच्छी बातें कही हैं।

पत्री का मुख्य भाग एक निश्चित दियुत्रिफेस की अवज्ञा के खिलाफ चेतावनी देता है। शक्ति और अधिकार के प्रति उनका प्रेम न केवल उन्हें प्राचीनों के अधिकार को चुनौती देने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि दूसरों को उनकी अवज्ञा का पालन करने या बहिष्कृत होने के लिए भी प्रेरित करता है। उन्होंने वास्तविक यात्री उपदेशकों का स्वागत करने से

इनकार कर दिया है। गयुस को दियुत्रिफेस के उदाहरण से प्रभावित न होने की चेतावनी दी जाती है।

निष्कर्ष में तत्काल व्यक्तिगत मुलाकात की प्रत्याशा को दर्शाया गया है। सामान्य अभिवादन इस छोटे पत्री को समाप्त करते हैं।

यह भी देखें यूहन्ना, प्रेरित।

यूहन्ना मरकुस

देखें यूहन्ना मरकुस।

यूहन्ना रचित सुसमाचार

चौथा सुसमाचार।

समीक्षा

- लेखिक
- तिथि, उत्पत्ति और गंतव्य
- पृष्ठभूमि
- उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षा
- विषय-वस्तु

लेखक

इस सुसमाचार के अंत में हमें बताया गया है कि इसे उस चेले ने लिखा था "जिससे यीशु प्रेम रखता था" (यूह 21:20, 24), लेकिन खेदजनक रीति से पुस्तक में कहीं भी यह नहीं बताया गया है कि यह चेला कौन था। साक्ष्य से पता चलता है कि सबसे संभावित पहचान प्रेरित यूहन्ना है। जिसकी हम उम्मीद करते हैं कि यूहन्ना अन्य सुसमाचारों से जो हम जानते उन रिक्त स्थानों को भरेगा, यूहन्ना उन स्थानों को भरता है। (प्रेरित यूहन्ना पर चर्चा देखें।)

ऐसा लगता है कि सुसमाचार को ऐसे व्यक्ति ने लिखा है जो यीशु के समय के यहूदियों और फिलिस्तीन को अच्छी तरह जानता था। वह यहूदियों की मसीहाई अपेक्षाओं से परिचित था (जैसे, यूह 1:20–21; 4:25; 7:40–42; 12:34)। वह यहूदियों और सामरियों के बीच शत्रुता (4:9) और फरीसियों के अंदर "देश के लोगों" के प्रति घृणा (7:49) को जानता था। वह धार्मिक विद्यालयों को दिए जाने वाले महत्व को जानता था (पद 15)। वह जानता था कि सब्त का पालन किस तरह किया जाता है और वह इस प्रावधान से अवगत था कि आठवें दिन खतना करने का दायित्व सब्त के नियमों को दरकिनार कर देता है (पद 22–23)। पूरे सुसमाचार में वह यहूदी विचारों और रीति-रिवाजों की व्यापक श्रृंखला में निश्चितता के साथ आगे बढ़ता है।

स्थलाकृति के साथ भी ऐसा ही है। लेखक ने कई स्थानों का उल्लेख किया है, और उसके स्थान-नाम सभी सही ढंग से उपयोग किए गए प्रतीत होते हैं। उन्होंने काना का उल्लेख किया, एक ऐसा गाँव जिसका उल्लेख हमें पहले के किसी भी सुसमाचर में नहीं मिलता है, जिसका अर्थ है कि संदर्भ लगभग निश्चित रूप से किसी ऐसे व्यक्ति से आया था जो वास्तव में उस स्थान को जानता था। उन्होंने बैतनिय्याह को यरूशलेम से लगभग 15 स्टेडिया (लगभग 2 मील, या 3.2 किलोमीटर, 11:18) की दूरी पर कुछ सटीकता के साथ स्थित किया है। उन्होंने यरूशलेम में या उसके पास कई स्थानों का उल्लेख किया है, जैसे बैतहसदा (5:2), शीलोह (9:7), और किद्रोन के नाले (18:1)। बेशक, यह यूहन्ना के समकालीन किसी व्यक्ति की संभावना को खारिज नहीं करता है, लेकिन इससे यह सोचना मुश्किल हो जाता है कि लेखक बहुत बाद में फिलिस्तीन से दूर रहकर लिख रहा था। हमारे पास मौजूद सबूत बताते हैं कि लेखक यीशु के दिनों के फिलिस्तीन में रहने वाला एक यहूदी था।

कई सतर्क पाठकों के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि सुसमाचार एक प्रत्यक्षदर्शी की छाप को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, यीशु "भण्डार घर" पर शिक्षा दे रहे थे (8:20)। इस बिंदु पर कुछ नहीं बनाया गया है; घटना को इसके बिना आसानी से बताया जा सकता था। यह किसी ऐसे व्यक्ति की याद की तरह लगता है जो लिखते समय अपने मन की आंखों में दृश्य देखता है। यह तथ्य कि जब महिला ने इत्र की बोतल तोड़ी तो घर सुगंध से भर गया (12:3) इस विवरण को भौतिक रूप से प्रभावित नहीं करता है, लेकिन यह एक ऐसा विवरण है जिसे वहाँ मौजूद व्यक्ति याद रख सकता है। लेखक ने उल्लेख किया कि भीड़ को खिलाने में इस्तेमाल की गई रोटियाँ जौ की रोटियाँ थीं (6:9) और यीशु का अंगरखा बिना जोड़ का था, ऊपर से नीचे तक एक ही टुकड़े में बुना हुआ था (19:23)। उसने हमें बताया कि जिन शाखाओं से यीशु का स्वागत किया गया था वे खजूर की शाखाएँ थीं (12:13), और यहूदा के बाहर जाने पर रात हो चुकी थी (13:30)। इस तरह के तथ्य पूरे सुसमाचार में पाए जाते हैं, और उन्हें सत्यता बनाने के प्रयास से ज़्यादा कुछ नहीं मानना अनुचित लगता है। वे इस बात के संकेत की तरह लगते हैं कि लेखक उन घटनाओं के बारे में लिख रहा था जिनमें उसने स्वयं भाग लिया था।

प्रारंभिक कलीसिया ने, बिना किसी प्रश्न के, यूहन्ना के लेखकत्व को स्वीकार किया। इरेनियस, सिकन्दरिया के क्लेमेंस और टर्टुलियन सभी प्रेरित को लेखक के रूप में देखते हैं। इस सुसमाचार को नाम से उद्धृत करने वाला पहला व्यक्ति लगभग 180 ई. में अन्ताकिया के थियुफिलुस थे।

जो लोग यूहन्ना के लेखन का विरोध करते हैं, वे इस सुसमाचार और समदर्शी सुसमाचार के बीच के अंतर पर जोर देते हैं। उनका तर्क है कि यदि यीशु मत्ती, मरकुस, और लूका द्वारा चित्रित मसीह के समान होते, तो वे चौथे सुसमाचार के मसीह के समान नहीं हो सकते। इस तथ्य को अनदेखा करते हुए कि कोई भी महान व्यक्ति अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग दिखाई देगा, यह पूरी तरह से व्यक्तिपरक तर्क है। सदियों से कलीसिया का निर्णय रहा है कि यीशु इतने महान थे कि वे दोनों चित्रों को प्रेरित कर सकते थे। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, हमारे पास यह मानने का कोई कारण नहीं है कि पहले तीन सुसमाचार लेखक हमें यीशु के बारे में सब कुछ बता देते हैं। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। यूहन्ना बस यीशु के जीवन और शिक्षाओं के अन्य पहलुओं को उजागर करते हैं।

यद्यपि हम इस बात को पूरी तरह से प्रमाणित नहीं कर सकते कि प्रेरित यूहन्ना ही इसका लेखक था, फिर भी हम यह कह सकते हैं कि इस दृष्टिकोण को अपनाने के पीछे किसी भी अन्य दृष्टिकोण की अपेक्षा अधिक कारण पाए जाते हैं।

तिथि, उत्पत्ति, और गंतव्य

रूढ़िवादी और उदारवादी दोनों के लिए यह सामान्य बात रही है कि इस लेख को पहली सदी के आखिरी दशक या दूसरी सदी की शुरुआत में लिखा गया था। कुछ उदारवादी विद्वानों ने इसे दूसरी सदी के बाद का बताया है, लेकिन यह आम बात नहीं है, और यह उल्लेखनीय है कि इस पर काफी हद तक सहमति है।

ऐसा कहा जाता है कि यह सुसमाचार, समदर्शी सुसमाचार पर निर्भर है, जिसका अर्थ है कि इसे उनके बाद के एक समय का होना चाहिए। लेकिन हाल के दिनों में इस तर्क को व्यापक रूप से त्याग दिया गया है। यूहन्ना में बहुत कुछ ऐसा है जो अन्य तीन सुसमाचारों में समानांत नही है, और इसके विपरीत अन्य तीन में इतना कुछ है अगर यूहन्ना को पता होता तो वे इस्तेमाल उसका उपयोग करते, तो यह मानना वास्तव में बहुत मुश्किल है कि इस लेखक के पास लिखने से पहले कोई अन्य सुसमाचार था, या यहाँ तक कि उसने उन्हें पढ़ा भी था। ऐसी समानताएँ मौखिक परंपरा के सामान्य उपयोग से बेहतर तरीके से समझाई गई लगती हैं।

यह भी तर्क दिया जाता है कि यूहन्ना में एक बहुत ही विकसित धर्मशास्त्र है और हमें इसके विकास के लिए समय देना चाहिए। माना कि इस सुसमाचार का धर्मशास्त्र गहरा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें पहली सदी के अंत तक इसका इंतजार करना चाहिए। रोमियों को लिखे गए पत्र का धर्मशास्त्र भी गहरा है, और उस लेखन को 50 के दशक से बाद लिखे जाने का कोई कारण नहीं है। विकास के आधार पर, फिर, यूहन्ना को रोमियों की पत्री से बाद में रखने का कोई कारण नहीं है। विकास एक जटिल तर्क है, क्योंकि यह आमतौर पर असमान अनुमान पर होता है, और हमारे पास यह जानने का कोई साधन नहीं है कि यह उस क्षेत्र में कितनी तेजी से हुआ जहाँ लेखक रहता था।

बाद की तिथि के लिए अन्य तर्क अब निर्णायक नहीं हैं। उदाहरण के लिए, यह तर्क दिया जाता है कि सुसमाचार द्वारा पूर्वकल्पित कलीसिया प्रणाली प्रेरित यूहन्ना के समय के लिए बहुत देर हो चुकी है, और अध्याय 3 और 6 की संस्कार प्रणाली को विकसित होने में समय लगा होगा। लेकिन यूहन्ना किसी संस्कार का उल्लेख नहीं करता है। यह सच है कि कई विद्वान सोचते हैं कि ये अध्याय बपतिस्मा और प्रभु के भोज का उल्लेख करते हैं, लेकिन तथ्य यह है कि यूहन्ना इनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं करता है।

पारंपरिक तर्कों के बिखर जाने के बाद यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हाल के दिनों में बहुत से लोग यह तर्क दे रहे हैं कि यूहन्ना की रचना 70 ई. में यरूशलेम के पतन से पहले लिखी गई होगी। अगर यह बाद में लिखी गई थी, तो यूहन्ना के पास इसका कोई संदर्भ क्यों नहीं है? उनकी कुछ भाषाएँ पहले की प्रतीत होती हैं। 5:2 में वे कहते हैं कि बैतहसदा नामक एक स्थान पर कुण्ड "है" (न कि "था")। और वे अक्सर बारहों को यीशु के शिष्य, या "उनके" शिष्य, या इसी तरह के रूप में संदर्भित करते हैं। और वह अक्सर बारह को यीशु के शिष्य, या "उसके" शिष्य, या इसी तरह के रूप में संदर्भित करता है। बाद के समय में ईसाइयों ने आमतौर पर "शिष्य" कहा, क्योंकि उन्हें यह कहने की कोई जरूरत नहीं थी कि शिष्य किसके थे। लेकिन शुरुआती दिनों में, जब ईसाई, रब्बियों के संपर्क में थे (जिनमें से प्रत्येक के अपने शिष्य थे), यह दिखाना महत्वपूर्ण था कि यीशु के शिष्यों को ध्यान में रखा गया था। यह भी महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना ने किसी भी समकालिक सुसमाचार का संदर्भ नहीं दिया। सबसे सरल व्याख्या यह है कि उसने उन्हें नहीं देखा था। वे अभी तक व्यापक रूप से प्रसारित नहीं हुए थे।

इनमें से कोई भी हमें इस सुसमाचार की सटीक तिथि निर्धारित करने में सक्षम नहीं बनाता। लेकिन प्रमाणों का भार इसके आरंभिक काल (70 ई. से पहले) की ओर इशारा करता है।

लेखक प्रेरित यूहन्ना थे, जो एक यहूदी थे। हालांकि, लेखन यूनानी विचार से संपर्क का प्रमाण देता है, जैसे कि अध्याय 1 में मसीह को "वचन" के रूप में संदर्भित करना और "रब्बी" जैसे शब्दों का अनुवाद (1:38)। यह लगभग सार्वभौमिक रूप से माना जाता है कि ऐसे विचार हमें इस कार्य को यूनानी संस्कृति के केंद्र में उत्पन्न होने के रूप में देखने के लिए प्रेरित करते हैं, और इफिसुस को पारंपरिक रूप से प्राथमिकता दी गई है। दूसरी सदी के अंत से पहले हमारे पास इरेनियस का लेखन है कि यूहन्ना ने इफिसुस में अपने निवास के दौरान सुसमाचार प्रकाशित किया।

कुछ विद्वान यूहन्ना और सुलैमान के स्तोत्र के बीच समानताओं की ओर इशारा करते हैं, जो उन्हें लगता है कि सीरिया से

आया था। चूंकि दूसरी शताब्दी की शुरुआत में अन्ताकिया के बिशप इग्नेशियस की भाषा में भी कुछ समानताएँ हैं, इसलिए यह दिखाने के लिए माना जाता है कि यूहन्ना के सुसमाचार को सीरिया में लिखा गया था, संभवतः अन्ताकिया में। अन्य लोग यह सोचते हैं कि मिस्र वह स्थान था, और वे इस बात का समर्थन करते हुए बताते हैं कि इस सुसमाचार की पांडुलिपि का सबसे पुराना टुकड़ा वहाँ पाया गया था। कोई वास्तविक सबूत नहीं है, और हमारे पास संभावनाएँ ही बची हैं। इरेनियस के प्रमाण को स्वीकार करने और इफिसुस को मूल स्थान के रूप में देखने के लिए बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हम शायद ही इससे अधिक कुछ कह सकें।

अभिप्रेत गंतव्य का कोई वास्तविक संकेत नहीं है। 20:31 से हमें पता चलता है कि पुस्तक इसलिए लिखी गई थी ताकि पाठक विश्वास कर सकें कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने से उन्हें जीवन मिले। तो, सुसमाचार का एक प्रचारात्मक उद्देश्य है। लेकिन यह भी संभव है कि "विश्वास" का अर्थ "विश्वास करते रहना" है - "विश्वास में बने रहना," न कि "विश्वास करना शुरू करना।" कहने का तात्पर्य यह है कि पुस्तक का उद्देश्य शुरू से ही लोगों को विश्वास में बढ़ाना रहा होगा। संभवतः हमें इन उद्देश्यों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं करना चाहिए। दोनों ही उद्देश्य लेखक के मन में हो सकते हैं।

पृष्ठभूमि

सुसमाचार के लिए कई संभावित पृष्ठभूमि सुझाई गई हैं। यूनानी रुचि स्पष्ट है, और इस लेखन को कभी-कभी यूनानवादीयो का सुसमाचार कहा जाता है। सुझाव यह है कि हमें यूनानी लेखन, शायद दार्शनिकों या सिकन्दरिया के फिलो के कार्यों को देखना चाहिए, ताकि यूहन्ना ने जो लिखा है उसे समझने के लिए सही पृष्ठभूमि मिल सके। यह दृष्टिकोण रूडोल्फ बुल्टमैन के काम में देखा जा सकता है, जिन्होंने विशेष रूप से गूढ़ ज्ञानवाद के बारे में विचार किया था।

वास्तव में, बुल्टमैन के लिए इस सुसमाचार का एक स्रोत एक प्रवचन स्रोत था जिसे उन्होंने गैर-मसीही ज्ञानवाद से लिया हुआ माना था। बहुत से लोग बुल्टमैन का अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं हैं, लेकिन हाल ही में कई टिप्पणीकारों ने यूहन्ना की पृष्ठभूमि के रूप में गूढ़ ज्ञानवाद के किसी न किसी रूप को पहचाना है।

जबकि इस तरह के विचारों को गंभीरता से आगे रखा जाता है, लेकिन इसमें कुछ महत्वपूर्ण आपत्तियाँ हैं। एक यह है कि, कुछ विद्वानों के आत्मविश्वासपूर्ण दावों के बावजूद, गूढ़ ज्ञानवाद को कभी भी ईसाई धर्म से पहले नहीं देखा गया है। इतिहास में जिस रूप में यह हमारे सामने आता है, वह एक मसीही विधर्म है, और निश्चित रूप से, मसीही विश्वास पहले आना चाहिए ताकि एक मसीही विधर्म संभव हो सके। दूसरी आपत्ति यह है कि दोनों प्रणालियों के बीच एक मूलभूत अंतर है। गूढ़ ज्ञानवाद ज्ञान से संबंधित है (यह शब्द यूनान शब्द ग्नोसिस, "ज्ञान" से लिया गया है)।

इसका "उद्धारकर्ता" वह है जो ज्ञान के साथ स्वर्ग से आता है। लेकिन यूहन्ना इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं है कि मनुष्य ज्ञान के द्वारा बचाया जाता है। उद्धारक संसार के पाप को दूर करने के लिए आता है (1:29)। गूढ़ ज्ञानवाद लोगों को बताता है कि जीवन एक ऊपर की ओर जाने के लिए संघर्ष है; ईसाई धर्म एक उद्धारकर्ता के बारे में बताता है जो उन्हें ऊपर उठाने के लिए नीचे आया। ईसाई धर्म के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि के रूप में गूढ़ ज्ञानवाद के किसी भी रूप को देखना आसान नहीं है।

यूहन्ना की यहूदी पृष्ठभूमि बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ विशेष रूप से पुराना नियम महत्वपूर्ण है, जिसे यहूदी और ईसाई दोनों ही पवित्र शास्त्र के रूप में स्वीकार करते हैं। यह यूहन्ना के कथनों के पीछे लगातार मौजूद है, और अगर यूहन्ना को समझना है तो इसका सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि यूहन्ना समदर्शी सुसमाचार को जानता था और उससे (सेप्टुअजीन्ट) प्यार करता था, जो इब्रानी पुराने नियम का यूनानी में अनुवाद है। बार-बार, समदर्शी सुसमाचार को यूहन्ना की बातों के पीछे देखा जा सकता है।

आधुनिक समय में मृत सागर के आसपास के कुमरान में महत्वपूर्ण खोजें की गई हैं। इस क्षेत्र की गुफाओं में खोदे गए कुण्डलपत्रों में से कई ऐसे हैं जो यूहन्ना से संबंधित हैं। वास्तव में, कुण्डलपत्रों के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि वे नए नियम के किसी भी अन्य भाग की तुलना में यूहन्ना के साथ अधिक समानता रखते हैं, एक तथ्य जिसे समझाना मुश्किल है अगर यूहन्ना को बाद में और फिलिस्तीन से दूर लिखा गया था। कुमरान लेखन के साथ समानताओं को सावधानी से देखा जाना चाहिए, क्योंकि अक्सर भाषाई समानता होती है जहां सोच काफी अलग होती है। उदाहरण के लिए, दोनों ही असामान्य अभिव्यक्ति "सत्य की आत्मा" का उपयोग करते हैं। लेकिन जहाँ यूहन्ना का अर्थ त्रिएकत्व के व्यक्तियों में से एक है, वहीं कुण्डलपत्र लोगों की आत्माओं में "सत्य की आत्मा" और "भ्रामक आत्मा" के संघर्ष की बात करते हैं। संबंध वास्तविक है, लेकिन यूहन्ना स्पष्ट रूप से अपनी सोच के लिए कुण्डलपत्रों पर निर्भर नहीं है। मृत सागर कुण्डलपत्रों का योगदान यह है कि वे अतिरिक्त सबूत देते हैं कि यह सुसमाचार मूल रूप से फिलिस्तीनी है और इसे पहली सदी के फिलिस्तीन की पृष्ठभूमि के आधार पर समझा जाना चाहिए।

अन्य पृष्ठभूमियों का सुझाव दिया गया है, जैसे कि हर्मेटिक साहित्य। यह लेखन का एक समूह है जो हर्मीस ट्रिस्मेगिस्टस ("हरमीस थ्रीस-ग्रेटेस्ट") के नाम से जाना जाता है, जो मिस्री देवता थॉथ का एक पदनाम है। यूहन्ना के साथ कुछ संपर्क बिंदु अवश्य हैं, लेकिन वे फिलिस्तीन में जड़ें जमाने वाले

लेखनों की तुलना में बहुत कम हैं। ऐसे सुझावों को गंभीरता से लेना कठिन है। यूहन्ना मूल रूप से फिलिस्तीनी हैं।

धर्मशास्त्रीय शिक्षाएँ और उद्देश्य

लेखक ने हमें बताया कि यीशु ने कई "चिह्न" (या चमत्कार) किए जिन्हें उसने दर्ज नहीं किया था, लेकिन "ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है, और उस पर विश्वास करने से तुम्हें जीवन मिलेगा" (यूह 20:31)। यूहन्ना ने यह दिखाने के लिए लिखा कि यीशु ही मसीहा है। लेकिन उसने यह सिर्फ़ रोचक जानकारी देने के उद्देश्य से नहीं किया। वह चाहता था कि उसके पाठक इस ज्ञान को विश्वास के लिए एक चुनौती के रूप में देखें; जब वे विश्वास करेंगे, तो उन्हें जीवन मिलेगा। यूहन्ना पुरुषों और महिलाओं को मसीह के पास लाने की कोशिश कर रहा था; उसका एक सुसमाचार प्रचार करने का उद्देश्य था। वह जो करने की कोशिश कर रहा था, वह यहीं तक सीमित नहीं है, क्योंकि उसके शब्द विश्वासियों के लिए अर्थ रखते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि विश्वासियों को यीशु के बारे में सही ज्ञान हो और वे विश्वास करना जारी रखें।

इस सुसमाचार की मुख्य धर्मशास्त्रीय शिक्षा यह है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा है। वह परमेश्वर के पुत्र हैं, और वे जीवन देने के लिए आए हैं (3:16)। हालांकि यीशु ने कुएं पर महिला से कहा कि वे मसीह हैं, यह अक्सर इतनी स्पष्टता से नहीं कहा जाता है। इस शब्द के उपयोग से बचने का कारण यह हो सकता है कि यह यहूदियों के बीच राजनीतिक अर्थों से जुड़ गया था। वे एक मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे जो रोमियों से लड़ेगा। वह उन्हें हराएगा और यरूशलेम में अपनी राजधानी के साथ एक पराक्रमी साम्राज्य स्थापित करेगा। यीशु का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था, और यह महत्वपूर्ण था कि वे ऐसी भाषा से बचें जो इस प्रकार की धारणा देते हैं। लेकिन हालांकि पारंपरिक मसीहाई शब्दावली से बचा गया है, यूहन्ना ने कोई शंका नहीं छोड़ी कि यीशु परमेश्वर के चुने हुए थे। बार-बार उसने यीशु को मसीहाई कार्यों को पूरा करते हुए चित्रित किया। उदाहरण के लिए, अध्याय 6 में लंबे प्रवचन के बाद हम यीशु को स्वर्ग से रोटी के रूप में देखते हैं, जो इस उम्मीद को पूरा करता है कि जब मसीहा आएगा, तो वह मन्ना को नवीनीकृत करेगा; और अंधे व्यक्ति को दृष्टि देने में (अध्याय 9) हमारे पास एक और मसीहाई कार्य है (यशा 35:5)।

यीशु की इस महानता के साथ, यूहन्ना ने उनकी विनम्रता के बारे में भी शिक्षा दी। यूहन्ना की शिक्षा की एक निरंतर, हालांकि अप्रकट, विचारधारा यह है कि यीशु हर चीज के लिए पिता पर निर्भर हैं। यीशु ने कहा, पिता के बिना वे कुछ नहीं कर सकते (यूह 5:30)। उसका भोजन पिता की इच्छा पूरी करना है (4:34)। वे पिता के कारण जीवित रहते हैं (6:57)। यह पिता ही हैं जो उन्हें उनके शिष्य देते हैं (6:37, 44; 17:6)। यह पिता ही हैं जो उनके लिए गवाही देते हैं (5:32, 37)। यूहन्ना जोर देते हैं कि यीशु किसी भी अर्थ में पिता से स्वतंत्र नहीं हैं। यीशु के कार्य में, यूहन्ना पिता के उद्देश्य को पूरा होते हुए देखता है।

विषय सूची

परिचय और अध्याय 1

यूहन्ना एक प्रस्तावना (1:1–18) के साथ शुरू होता है जो किसी भी अन्य सुसमाचार में नहीं है। इसमें वह यीशु को "वचन" के रूप में संदर्भित करता है, एक शब्द जो यूनानी और इब्रीनी सोच के साथ संपर्क बिंदु रखता है। जैसा कि यूहन्ना इसका उपयोग करता है, यह इस विचार को व्यक्त करता है कि यीशु पिता के मन की अभिव्यक्ति है। यूहन्ना वचन को परमेश्वर के रूप में बताता है (1:1), उसे सृष्टि में सक्रिय रूप में देखता है (1:3–5), यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा दी गई गवाही पर आगे बढ़ता है (1:6–8), वचन के दुनिया में आने की बात करता है (1:9–14), और वचन की महानता पर एक खंड के साथ समाप्त होता है (1:15–18)। इस प्रस्तावना में वह कुछ महान विषयों का संक्षिप्त परिचय देता है जिन्हें पूरे सुसमाचार में विकसित किया जाएगा। यह संपूर्ण का एक शानदार परिचय है।

इसके बाद हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत देखते हैं (1:19–51)। यीशु के कार्य से पहले यूहन्ना बपतिस्मा ने कार्य किया था, और सुसमाचार प्रचारक हमें पहले उस प्रकार के गवाही के बारे में बताते हैं जो बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के विषय में दिया था। गवाही उनकी महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है, और गवाही ही वह सब है जो यूहन्ना बपतिस्मादाता इस सुसमाचार में करता है। इस गवाही से हम उस तरीके की ओर बढ़ते हैं जिस तरह से पहले शिष्य यीशु के पास आए। हम कुछ सीखते हैं कि कैसे अन्द्रियास और पतरस ने प्रभु पहचाना। हम फिलिप और नतनएल के बारे में भी पढ़ते हैं, जिनके बारे में हम अन्य सुसमाचारों में बहुत कम या कुछ भी नहीं सीखते हैं।

चिन्ह और उपदेश (2:1–12:50)

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई इस सुसमाचार में बहुत विशिष्ट तरीके से वर्णित की गई है। यूहन्ना के पास एक लंबा खंड है (अध्याय 2–12) जिसमें वे यीशु द्वारा किए गए कई चमत्कारों के बारे में बताते हैं, और अपनी कथा में वार्तालापों की एक श्रृंखला को जोड़ते हैं। कभी-कभी ये समूहों को दिए गए संबोधन होते हैं, और कभी-कभी ये व्यक्तियों के साथ बातचीत होती हैं। कुछ विद्वान इस सुसमाचार के इस खंड को चिन्हों की पुस्तक कहते हैं, इस प्रकार सात चमत्कारों को दिए गए प्रमुख स्थान पर जोर देते हैं। यूहन्ना के लिए वे केवल आश्चर्य नहीं हैं। वे अर्थपूर्ण हैं; इस शब्द के शाब्दिक अर्थ में वे *चिन्ह* हैं।

उनमें से पहला है काना के गलील में एक विवाह में पानी को दाखरस में बदलना (2:1–11)। पानी यहूदियों के शुद्धिकरण के अनुष्ठानों से जुड़ा है (पद 6), और यह कहानी निश्चित रूप से हमें यह सिखाने के लिए है कि यीशु जीवन को रूपांतरित करते हैं। वे पानी के नियम को सुसमाचार के दाखरस में बदल देते हैं। इस "चिन्ह" के परिणामस्वरूप, उनके शिष्यों ने उन पर विश्वास किया (पद 11)। यूहन्ना ने आगे बताया कि यीशु यरूशलेम गए और मंदिर से व्यापारियों को बाहर निकाल दिया। वे बलिदान के लिए जानवर बेच रहे थे और रुपये-पैसे का लेन-देन कर रहे थे। परन्तु उनका काम अन्यजातियों के आँगन में हो रहा था, जो मन्दिर में एकमात्र स्थान था जहाँ अन्यजाति आकर ध्यान और प्रार्थना कर सकते थे।

पहला उपदेश नए जन्म पर है (3:1–21)। यीशु ने एक प्रमुख फरीसी, नीकुदेमुस से बात की, कि यदि कोई परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहता है तो उसे नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है। यीशु परमेश्वर की पुनर्जीवित करने वाली गतिविधि की बात कर रहे थे, न कि किसी मनुष्य के सुधार की। इसके बाद, यूहन्ना ने बपतिस्मा के विषय पर यूहन्ना के कुछ शिष्यों और एक यहूदी के बीच विवाद का वर्णन किया। यह एक खंड के लिए रास्ता खोलता है जो बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की अपनी स्वीकारोक्ति द्वारा यीशु की श्रेष्ठता को दिखाता है (3:22–36)।

दूसरा उपदेश वास्तव में सामरिया की महिला के साथ यीशु की लंबी बातचीत है, जिससे वह एक कुएँ के पास मिला था (4:1–42)। यह "जीवन के जल" पर केंद्रित है, और एक ऐसा शब्द जिसकी इस अध्याय में पूरी तरह से व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन जिसे हम बाद में जीवन देने वाली आत्मा की ओर इशारा करते हुए पाते हैं (7:38–39)। यह दूसरे चिन्ह की कहानी की ओर ले जाता है, जो कुलीन व्यक्ति के पुत्र की चंगाई है (4:46–54), जो इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय है कि यीशु ने दूरी से ही चंगा किया।

तीसरा चिन्ह बैतहसदा के कुण्ड के पास बीमार पुरुष की चंगाई है (5:1–18)। इस पुरुष ने कई वर्षों तक पानी के हिलने पर चंगाई की प्रतीक्षा की थी। यीशु ने उसे उठकर चलने के लिए कहा, और उसने ऐसा किया। फरीसियों ने आपत्ति की क्योंकि यह सब्त के दिन था। यह यीशु के तीसरे प्रवचन की ओर ले जाता है, जो परमेश्वर के पुत्र पर है (5:19–47)। यहाँ यीशु और पिता के संबंध की निकटता पर जोर दिया है, और न्याय में उनकी भूमिका को उजागर किया गया है। यीशु से मिलने वाले गवाहों की विविधता पर भी जोर दिया गया है, जो यह दिखाता है कि उन्हें परमेश्वर के अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करना कितना उचित है।

यूहन्ना का चौथा चिन्ह एक चमत्कार है (पुनरुत्थान के अलावा) जो चारों सुसमाचारों में पाया जाता है: 5,000 लोगों को भोजन कराना (6:1–15)। इसके बाद यीशु का पानी पर चलना (पद 16–21) आता है, जिसे पाँचवाँ चिन्ह माना जाता है (हालाँकि कुछ विद्वान ऐसा नहीं सोचते हैं; अगर वे सही हैं, तो केवल छह चिन्ह हैं)। फिर चौथा उपदेश आता है, जीवन की रोटी पर महान उपदेश (पद 22–59)। यीशु यह रोटी है, जिसे वह उन सभी पुरुषों और महिलाओं को देता है जो उस पर विश्वास करते हैं। उसके मांस खाने और उसका खून पीने के संदर्भ हैं (पद 50–58), जो उसकी मृत्यु की ओर इशारा करते हैं। कुछ लोगों ने उनमें भोज का संदर्भ देखा है, लेकिन यह देखना कठिन है कि यीशु को इस तरह से एक अभी तक अस्तित्वहीन संस्कार का उल्लेख क्यों करना चाहिए। इसके अलावा, उसी उपदेश में विश्वास करने के लिए लगभग समान प्रभाव को जिम्मेदार ठहराया गया है (पद 35, 47)। यीशु को इस अर्थ में समझना सबसे बेहतर लगता है कि लोगों को उस पर विश्वास करना चाहिए कि वह उनके लिए मरेगा ताकि उन्हें जीवन मिले।

एक भाग में पतरस द्वारा स्वामी से दूर जाने वाले कुछ लोगों के प्रति वफादारी की पुष्टि का विवरण दिया गया है (6:67–71)। फिर हम पाँचवें प्रवचन पर आते हैं, जो जीवन देने वाली आत्मा पर है (7:1–52)। यूहन्ना के पास अपना एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक बिंदु है जब वह हमें बताता है कि उस समय आत्मा नहीं दी गई थी क्योंकि यीशु तब तक अपनी महिमा में प्रवेश नहीं किए थे (पद 39)। आत्मा की परिपूर्णता मसीह के कार्य की मृत्यु और पुनरुत्थान में पूर्णता पर निर्भर करती है।

छठा उपदेश जगत की ज्योति के बारे में बताता है (8:12–59)। यीशु के व्यक्तित्व और सेवकाई के इस पहलू को छठे संकेत में नाटकीय रूप से सामने लाया गया है, जन्म से अंधे व्यक्ति की चंगाई (पद 9)। यह एक जीवंत कथा है, क्योंकि चंगा हुआ व्यक्ति यीशु को नीचा दिखाने वाले फरीसियों के खिलाफ एक उत्साही बचाव करता है।

यीशु के अपने लोगों के साथ संबंधों के सभी उदाहरणों में से एक सबसे सुंदर उदाहरण है जिस पर वह सातवें उपदेश में ध्यान केंद्रित करता है, जहाँ वह खुद को अच्छा चरवाहा कहता है (अध्याय 10)। यह स्पष्ट सत्य है कि भेड़ें पूरी तरह से अपने चरवाहे पर निर्भर करती हैं, लेकिन यीशु कुछ और कहते हैं। जबकि सांसारिक चरवाहे अपनी भेड़ों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जीते हैं, यीशु ने अपनी भेड़ों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

अंतिम चिह्न लाज़र का पुनरुत्थान है (11:1–44), एक व्यक्ति जो चार दिनों से मरा हुआ था। कहानी स्पष्ट रूप से यीशु की मृत्यु पर शक्ति और जीवन का दान देने की उनकी तत्परता को दर्शाती है। यीशु खुद को "पुनरुत्थान और जीवन" के रूप में बोलते हैं (पद 25); मृत्यु उन्हें पराजित नहीं कर सकती। वह मृतकों को जीवन देते हैं, आध्यात्मिक रूप से मृत और साथ ही शारीरिक रूप से मृत लाज़र को भी। यूहन्ना इस चमत्कार पर प्रतिक्रिया को दर्ज करता है: कुछ लोगों ने विश्वास किया, लेकिन कुछ ने यीशु का विरोध किया (पद 45–57)। वह महायाजक कैफा के एक उल्लेखनीय कथन को

शामिल करता है, कि एक व्यक्ति को लोगों के लिए मरना चाहिए (पद 50–52)। कैफा एक सनकी राजनीतिज्ञ के रूप में बोल रहा था (एक व्यक्ति की मृत्यु बेहतर है, चाहे वह कितना भी निर्दोष क्यों न हो, बजाय इसके कि पूरा राष्ट्र परेशान हो)। लेकिन यूहन्ना ने शब्दों में गहरा अर्थ देखा कि यीशु की मृत्यु कई लोगों को उद्धार दिलाएगी।

यूहन्ना ने सेवकाई के अपने विवरण को बैतनिय्याह में एक स्त्री द्वारा यीशु का अभिषेक, यरूशलेम में विजयी प्रवेश, कुछ यूनानियों का यीशु के पास आना, तथा जो कुछ उसने सिखाया था उसका अंतिम सारांश (अध्याय 12) की कहानी के साथ समाप्त किया।

प्रभु भोज

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की रात ऊपरी कोठरी में जो कुछ हुआ, उसका विवरण चारों सुसमाचारों में सबसे पूर्ण विवरण इस सुसमाचार में है। दिलचस्प बात यह है कि यूहन्ना भोज की स्थापना के बारे में कुछ नहीं कहता, एक ऐसा तथ्य जिसे कभी भी संतोषजनक ढंग से नहीं समझाया गया। लेकिन वह हमें बताता है कि कैसे यीशु ने शिष्यों के पैर धोए (13:1–17), एक ऐसा कार्य जो क्रूस पर जल्द ही दिखाई जाने वाली दीन सेवा की भावना का शानदार उदाहरण है। फिर विश्वासघात की भविष्यवाणी आती है, एक ऐसा कार्य जिसने उन घटनाओं को गति दी जो क्रूस की ओर ले जाएंगी (पद 18–30)।

इसके बाद के लंबे प्रवचन में, यीशु ने अपने अनुयायियों द्वारा पूछे गए कुछ सवालों का समाधान किया और उन्हें कुछ महत्वपूर्ण सत्य सिखाए, उदाहरण के लिए, कि वह मार्ग, सत्य और जीवन है (14:6)। वह इस विचार को विकसित करता है कि यीशु सच्ची दाखलता है, शिष्य दाखलता की शाखाओं की तरह उसके साथ महत्वपूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। यदि शाखाओं को जीवन प्राप्त करना है तो उनका दाखलता में बने रहना महत्वपूर्ण है (15:1–16)। फिर पीड़ा के बारे में कुछ शब्द आते हैं जो उत्पीड़न के समय में उनकी मदद करेंगे (पद 17–25)। यीशु पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हैं (15:26–16:15)। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंश है, क्योंकि इसमें आत्मा के बारे में बहुत कुछ है जो हमें यीशु के शब्दों में कहीं और नही मिलती है। यीशु आत्मा को "सहायक" कहते हैं, एक ऐसा शीर्षक जिसे समझना आसान नहीं है। यह मूल रूप से एक कानूनी शब्द है, और कम से कम हम यह कह सकते हैं कि यह इंगित करता है कि आत्मा मित्रता, प्रोत्साहन और सहायता लाती है। यीशु ने शिष्यों से अपने निकट स्वर्ग में उठाये जाने के बारे में बात की और उन्हें आने वाले कठिन समय के लिए तैयार रहने के लिए कहा (16:16–33)। सुसमाचार का यह भाग यीशु की महान महायाजकीय प्रार्थना के साथ समाप्त होता है। उसने शिष्यों के एक होने के लिए प्रार्थना की, क्योंकि उसने उन्हें स्वर्गीय पिता की देखभाल के लिए सौंप दिया (अध्याय 17)।

क्रूस और पुनरुत्थान

जब सैनिक यीशु को गिरफ्तार करने आए, तो वह उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा और वे जमीन पर गिर पड़े (18:1–11)। उसने खुद को उनके हवाले कर दिया; उन्होंने उसे अपने कब्जे में नहीं लिया। अपने दुखभोग की कथा की शुरुआत में, यूहन्ना यह मुद्दा उठा रहा था कि यीशु संप्रभु है। वह घटनाओं के क्रम से पराजित नहीं हो रहा था, बल्कि संप्रभुता से पिता की इच्छा पूरी कर रहा था। यूहन्ना ही एकमात्र व्यक्ति है जो हमें बताता है कि यीशु को हन्ना के सामने ले जाया गया, जो कैफा का ससुर था, जो कि शासन करने वाला महायाजक था (18:12–14, 19–24)। वह पतरस के तीन बार यीशु को नकारने के बारे में भी बताता है (पद 15–27)। उसने यहूदियों के मुकदमे पर ज्यादा समय नहीं बिताया, लेकिन रोमी मुकदमे के अपने विवरण में वह अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में अधिक स्पष्ट था। स्पष्ट रूप से, उसे पिलातुस के सामने जो कुछ हुआ, उसके बारे में कुछ विशेष जानकारी थी। वह यीशु द्वारा पिलातुस के साथ राजत्व के विषय में बातचीत का एक शानदार चित्र प्रस्तुत करता है - जो पिलातुस के साथ राजत्व के बारे में बात कर रहे हैं—परमेश्वर के पुत्र कैसर के प्रतिनिधि के साथ संप्रभुता के अर्थ पर चर्चा कर रहे हैं (पद 33–40)।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के अपने वृत्तांत में यूहन्ना ने कई बातें कही हैं, विशेष रूप से जिस तरह यीशु ने मरियम को अपने प्रिय शिष्य की देखभाल में सौंपा (19:26–27), यह तथ्य कि यीशु ने मरते समय जो पुकार लगाई वह थी "पूरा हुआ" (पद 30), और एक सैनिक के भाले से उसकी पसली में छेद होना (पद 31–37)।

यूहन्ना दफन (पद 38–42) और खाली कब्र (20:1–10) की कहानी सुनाता है। वह मरियम मगदलीनी (पद 11–18) और शिष्यों को मृत्युंजय प्रभु के दर्शनों के बारे में बताता है - दोनों ही थोम के बिना (पद 19–23) और उसके साथ (पद 24–29)।

अंतिम अध्याय, एक उपसंहार के रूप में, एक चमत्कारी रीति से मछली पकड़ने की कहानी प्रस्तुत करता है (21:1–14) और यीशु के प्रति पतरस के तीन बार प्रेम की घोषणा और उनके पुनःस्थापन की मार्मिक कथा को आगे बढ़ाता है।

यह भी देखें यूहन्ना, प्रेरितों के कार्य।

येतेरी

येतेरी

कुल या परिवार जो किर्यत्यारीम में रहते थे (1 इति 2:53)। ईरा और गारेब नामक दाऊद के दो पराक्रमी पुरुष येतेरी थे

(2 शमू 23:38; 1 इति 11:40)। येतेरी यत्तीर या येतेर का एक व्युत्पन्न है।

येपेत

नूह के तीन पुत्रों में से एक (उत 5:32; 7:13; 9:18, 23, 27; 10:1–5; 1 इति 1:4–5), जो अपनी पत्नी के साथ बड़े जल-प्रलय से बचने वाले आठ जीवित मनुष्यों में से एक था। क्योंकि येपेत और उनके भाई शेम ने नूह के नग्नता को ढकते समय सम्मान और विनम्रता से काम लिया जब वह नशे में थे (उत 9:20–23), वे दोनों नूह की भविष्यद्वाणी में आशीषित हुए उत 9:26–27। येपेत के बारे में नूह ने कहा, "परमेश्वर येपेत के वंश को फैलाए; और वह शेम के तम्बुओं में बसे, और कनान उसका दास हो"। इस भविष्यद्वाणी के अर्थ की दो व्याख्याएँ हैं। कुछ लोग येपेत के फैलने को उसके वंशजों के बढ़ोतरी के सन्दर्भ में समझते हैं। "और वह शेम के तम्बुओं में बसे" का अर्थ है येपेत का शेम के आशीष में साझेदारी करना है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, एक समय आएगा जब परमेश्वर मुख्य रूप से शेम (इस्राएल के लोग) के साथ कार्य करेंगे, लेकिन बाद में, येपेत को इस्राएल के विश्वास से जोड़ दिया जाएगा और उसके वादों में भागीदार बनाया जाएगा। इस दृष्टिकोण से, यह नए नियम कलीसिया की शुरुआत में गैर-यहूदियों के लिए सुसमाचार के द्वार खुलने में पूर्ण होता दिखाई देता है। अन्य लोग "येपेत का फैलना" को देश में फैलने के सन्दर्भ में समझते हैं, और "शेम के तम्बुओं में बसे" को येपेत के लोग द्वारा शेम के लोग देश की विजय के रूप में समझते है। इस दृष्टिकोण में, यह पूरा होना यूनानी और रोमी साम्राज्य द्वारा फिलिस्तीन पर विजय में पाया जाता है।

उत 10:2 में "जातियों की तालिका" में, येपेत को गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक, और तीरास का पिता बताया गया है। ये वे लोग हैं जिनके पूर्वज इस्राएल के उत्तर और पश्चिम में रहते थे और जो आज के समय में भारोपीय भाषाओं में बोलते थे।

यह भी देखें देश; नूह #1।

येरह

योक्तान के पुत्र और पेलेग के भतीजे, जिनके दिनों में पृथ्वी बँट गई थीं, सम्भवतः यह बाबेल के बाद हुए तितर-बितर का सन्दर्भ है। येरह सम्भवतः एक अरबी गोत्र या जिले का नाम भी हो सकता है (उत 10:25–26; 1 इति 1:20)।

येरेद

महललेल के पुत्र और शेत के वंशज। वे हनोक के पिता थे (उत 5:15–20; 1 इति 1:2; लूका 3:37)। *देखें* यीशु मसीह की वंशावली।

येरेद

येरेद

1. 1 इतिहास 1:2 में येरेद की केजेवी वर्तनी। *देखें* येरेद।

2. यहूदा के गोत्र से एज्रा का पुत्र (1 इति 4:18)।

येलेक नामक टिड्डी

येलेक नामक टिड्डी

योएल 1:4 में उल्लिखित टिड्डी की एक प्रकार है। किंग जेम्स संस्करण में इसे "कैंकरवॉर्म" कहा गया है।

देखें जानवर (टिड्डी)।

येशुअ (व्यक्ति)

1. लेवियों और 24 याजकों के विभागों में से नौवें का प्रमुख, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान बनाया गया था (1 इति 24:11)। वह संभवतः 973 वंशजों का पूर्वज था, जो जरूब्बाबेल के साथ बँधुआई के बाद यहूदा लौटा था (एज्रा 2:36; नहे 7:39)।

2. राजा हिजकिय्याह के दिनों में यहूदा के याजकों के नगरों में रहने वाले अपने साथी याजकों के बीच भेंट बाँटने में कोरे की सहायता करने वाले लेवियों में से एक (2 इति 31:15)।

3. महायाजक योसादाक (या "यहोसादाक") का पुत्र। योसादाक को नबूकदनेस्सर द्वारा बेबीलोन ले जाया गया था (1 इति 6:14–15)। महायाजक के रूप में योसादाक का उत्तराधिकारी, येशुअ, बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटा (एज्रा 2:2; नहे 7:7; 12:1)। पहुँचने पर, उसने अपने साथी याजकों का नेतृत्व किया और परमेश्वर की वेदी बनाई (एज्रा 3:2; 5:2), और अंततः मंदिर के पुनर्निर्माण के निर्माण कार्य का प्रधान बना (3:8)। हाग्गै और जकर्याह द्वारा परमेश्वर के अगुवा के रूप में पुष्टि की गई (हग्गै 1:1–14; 2:2, 4; जक 3:1–9; 6:11), येशुअ (इन अंशों में "यहोशू" के रूप में भी) ने अपने लोगों में शत्रुओं के घुसपैठ और मंदिर के काम में बाधा डालने के प्रयासों का दृढ़ता से विरोध किया (एज्रा 4:3)। योयाकीम, येशुअ का पुत्र और महायाजक के

रूप में उत्तराधिकारी था, जो नहेम्याह और एज्रा के दिनों में सेवा कर रहा था (नहे 12:12, 26)।

4. पहत्मोआब के वंशज और यहूदियों के एक परिवार के पूर्वज जो बेबीलोन की बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ यहूदा लौट आए थे (एज्रा 2:6; नहे 7:11)।

5. लेवियों के एक परिवार का पिता जो जरूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटा (एज्रा 2:40; नहे 7:43; 12:8)। वह और उसके पुत्र मंदिर का निर्माण करने वाले कामगारों की देखरेख के लिए जिम्मेदार थे (एज्रा 3:9; यह येशुअ संभवतः ऊपर #3 के समान हो सकता है)।

6. लेवियों और योजाबाद का पिता। योजाबाद ने एज्रा के दिनों में मरेमोत, एलीआजर, और नोअद्याह के साथ मिलकर मंदिर के कीमती धातुओं और बर्तनों की सूची बनाने में सहायता की (एज्रा 8:33)।

7. एजेर का पिता। एजेर मिस्पा का शासक था, जिसने नहेम्याह के दिनों में यरूशलेम की दीवार के एक भाग की मरम्मत की थी (नहे 3:19)।

8. आजन्याह का पुत्र और एज्रा और नहेम्याह के दिनों में लेवियों का एक अगुवा। येशूअ ने लोगों को व्यवस्था सिखाने में एज्रा की सहायता की (नहे 8:7) और बाद में एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (10:9)।

9. नहेम्याह 8:17 में नून के पुत्र यहोशू की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*यहोशू (व्यक्ति) #1।

येशुअ (स्थान)

येशुअ (स्थान)

नेगेव का एक नगर जो मोलादा से पहले उन नगरों में सूचीबद्ध है, जहां यहूदी बँधुआई के बाद लौटे थे (नहे 11:26; पुष्टि करें पद 20)। यह शायद शेमा के समान हो सकता है, जो मोलादा के बगल में यहोशू 15:26 में उल्लेखित है। यह नाम शायद तेल एस-सावेह में संरक्षित है, जो बेर्शेबा के उत्तर-पूर्व में स्थित है।

येशुअह

1 इतिहास 24:11 में दाऊद के समय का एक याजक येशूअ की केजेवी वर्तनी। *देखें*येशूअ (व्यक्ति) #1।

येशेर

यहूदा के गोत्र से कालेब का पुत्र (1 इति 2:18)।

येसेबाब

येसेबाब

दाऊद के शासनकाल के दौरान लेवी परिवार का अगुवा जिसको मंदिर का कर्तव्य सौंपा गया था (1 इति 24:13)।

येसेर

नप्ताली के तीसरे पुत्र और येसेरियों के कुल के संस्थापक (उत् 46:24; गिन 26:49; 1 इति 7:13)।

येहदयाह

1. शूबाएल का पुत्र, दाऊद के समय का एक लेवी (1 इति 24:20)।

2. मेरोनोत से शाही भंडारी, जो दाऊद के गदहियों का अधिकारी था (1 इति 27:30)।

येहू

येहू

1. भविष्यद्वक्ता और "दर्शी" हनानी का पुत्र (2 इति 16:7), जिसने बाशा की निंदा की क्योंकि वह यारोबाम के मार्गों का अनुसरण कर रहा था (1 रा 16:1–7)। बेतेल और दान में सोने के बछड़ों की विधर्मी आराधना जारी रखने के अलावा, बाशा ने यारोबाम के बेटे नादाब की भी हत्या कर दी (15:25–32)।

बाद में येहू ने यहूदा के राजा यहोशापात को, अरामियों के खिलाफ युद्धों में इस्राएल के राजा अहाब की सहायता करने के लिए फटकार लगाई (2 इति 19:1–2)। इस भविष्यद्वक्ता की लिखावट यहोशापात के शासनकाल के एक वृत्तान्त, *इस्राएल के राजाओं की पुस्तक* में सम्मिलित की गई थी (2 इति 20:34)।

2. अहाब और यहोराम के शासनकाल के दौरान एक महत्वपूर्ण सेना अधिकारी (2 रा 9:25), जिसे ओम्री के घर की आर्थिक और धार्मिक दुरुपयोगों के प्रतिकार में इस्राएल के उत्तरी राज्य के राजा के रूप में अभिषिक्त किया गया था (1 रा 19:16–17)। इसके बाद की क्रांति में उसने इस्राएल के शाही घराने, यहूदा के राजा, और दक्षिण से एक शाही दल का नाश किया (2 रा 9–10)। उसने इस्राएल में सच्ची आराधना को पुनर्जीवित करने के लिए बाल के उपासकों का नाश किया। राजा के रूप में, उसने सामरिया में 28 वर्षों तक

शासन किया (841–814 ईसा पूर्व) और एक वंश की शुरुआत की जो लगभग 100 वर्षों तक चला।

येहू के समय में भविष्यद्वक्ता सोर के बाल के अनुयायियों के साथ युद्ध के समतुल्य धार्मिक कार्य में लगे हुए थे। एलिय्याह ने कर्मेल पहाड़ पर कनानी पुजारियों से सामना किया और उन्हें पराजित किया (1 रा 18:17–40)। बाद में, उसने और एलीशा ने येहू को राजा के रूप में अभिषेक करने के लिए नियुक्त किया। भविष्यद्वक्ताओं ने सही समय का इंतजार किया (2 रा 9:1–10), उस समय एलीशा ने रामोत-गिलाद में येहू को राजा के रूप में नामित करने के लिए "भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र" को भेजा।

येहू उत्तरी यरदन के पार में रामोत-गिलाद की घेराबंदी छोड़कर इस्राएल के राजा से यिज्रेल में मिलने गया। वहां उसने राजा यहोराम और यहूदा के राजा अहज्याह का वध कर दिया (2 रा 9:17–28)। उसके हिंसक कार्य जारी रहे जब उसने अहाब के शाही घराने का अंत कर दिया (10:1–17) और यहूदा के 42 सद्भावना राजदूतों को भी मार डाला (जाहिर तौर पर बिना किसी उकसावे के, पद 12–14)। इस्राएल का रक्तपात अंततः सामरिया में समाप्त हुआ। वहां येहू ने चालाकी से अहाब से भी अधिक उत्साह के साथ बाल की सेवा करने की प्रतिज्ञा की। बाल के अनजान भक्त बड़ी संख्या में एक उत्सव बलिदान में शामिल होने के लिए इकट्ठे हुए। इसके बजाय, भक्त स्वयं बलिदान बन गए, और सामरिया में बाल का घर नष्ट कर दिया गया और उसके खंडहरों को शौचालय में बदलकर अपवित्र कर दिया गया (पद 18–27)।

राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं ने भी अशांति में योगदान दिया। अहाब और ईजेबेल के शासन के तहत, न्याय भ्रष्ट हो गया था। दरिद्रों ने सूखे में अपनी भूमि खो दी और उनकी संपत्ति के अधिकारों की अनदेखी की गई (1 रा 18:5–6)। अहाब और ईजेबेल के अपराध के लिए न्याय के रूप में (1 रा 21:19; पुष्टि करें पद 13) येहू ने यहोराम के शरीर को यिज्रेली नाबोत के खेत में फेंक दिया (2 रा 9:25–26)। लेकिन धार्मिक भावनाएं मुख्य कारण बनीं। येहू ने ओम्री के घराने के वध को "यहोवा के प्रति उत्साह" कहा। यहोनादाब, एक रेकाबी, सामरिया की ओर यात्रा करते समय येहू के साथ शामिल हो गया (2 रा 10:15–17)। रेकबियों ने अहाब के तहत उत्तरी राज्य में हुए सामाजिक और आर्थिक विकास का विरोध किया। उन्होंने एक सख्त नैतिक संहिता का पालन किया और एक सरल जीवन जिया (यिर्म 35)। चूंकि रेकाबी लोग यहोवा भक्ति के सबसे रूढ़िवादी तत्वों का प्रतिनिधित्व करते थे, वे येहू के सुधार के लिए स्वाभाविक सहयोगी बन गए।

येहू की क्रांति ने बाल की आराधना को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया। हालांकि सभी अनुयायी समाप्त नहीं हुए थे, बालवाद अब राज्य का आधिकारिक धर्म नहीं रहा (2 रा 10:28)। बल्कि, बालवाद यहूदी धर्म के साथ मिलकर उस खतरनाक मिश्रित धर्म का निर्माण कर रहा था जिसकी होशे ने निंदा की थी।

राजनीतिक दृष्टि से, येहू का विद्रोह विनाशकारी था। सोर, इस्राएल, और यहूदा के बीच का तिहरी गठबंधन अत्याचारों के कारण टूट गया। अब अलग-थलग पड़ा इस्राएल अश्शूर और सीरिया के लिए सहज शिकार बन गया। येहू ने शल्मनेसेर III को श्रद्धांजलि देकर अश्शूर से कुछ सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया। यह घटना 841 ईसा पूर्व के अभियान से ब्लैक ओबेलिस्क पर एक राहत चित्र में चित्रित है। एक शिलालेख में "येहू, ओम्री का पुत्र" का नाम शल्मनेसेर के सामने घुटने टेकते हुए बताया गया है।

838 ईसा पूर्व में अश्शूरी खतरा समाप्त होने के बाद, अराम-दमिश्क के राजा हजाएल ने अर्नोन तक इस्राएली यरदन के पार पर अधिकार कर लिया (2 रा 10:32–33)। 838 ईसा पूर्व में अश्शूरी खतरा समाप्त होने के बाद, अराम-दमिश्क के राजा हाज़ेल ने अर्नोन तक इस्राएली यरदन के पार भूमि पर अधिकार कर लिया।

815 ईसा पूर्व में दूसरे अभियान में, हजाएल यरदन के पार, यिज्रेल मैदान के माध्यम से, और तट के नीचे, उत्तरी शेफेला में गत तक भूमि को जीतते हुए आगे बढ़े। वहां येहू के पुत्र यहोआहाज ने हजाएल को श्रद्धांजलि अर्पित की (12:18)। क्रांति ने इस्राएल को राजनीतिक और आर्थिक रूप से कमजोर कर दिया।

बाद की पीढ़ियों ने ओम्री के घर के नरसंहार के बारे में भय के साथ चर्चा की (होश 1:4)। येहू ने यारोबाम के सोने के बछड़ों को नष्ट नहीं किया, और इस प्रकार बेतेल और दान में मिश्रित आराधना जारी रही। अंतिम विश्लेषण में, क्रान्ति, जिसका उद्देश्य इस्राएल को उत्पीड़न और झूठे धर्म से मुक्त करना था, इनमें से कोई भी कार्य करने में सफल नहीं हुई।

3. यहूदा के गोत्र का सदस्य, ओबेद का पुत्र और अजर्याह का पिता (1 इति 2:38)।

4. शिमोन के गोत्र का राजकुमार, योशिब्याह का पुत्र, जो अन्य लोगों के साथ अच्छे चरागाह की खोज में गदोर की तराई के पूर्व की ओर प्रवास कर गया था (1 इति 4:35)।

5. कुशल योद्धाओं में से एक जो दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुआ। दिलचस्प बात यह है कि वह शाऊल के गोत्र, बिन्यामीन का था और अनातोत से था, जहां बाद में एली के याजकों में से एब्यातार को निर्वासित किया गया था (1 इति 12:3)।

*यह भी देखें*बाइबिल का कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल का इतिहास।

योआब

1. दाऊद की सौतेली बहन सरूयाह का पुत्र (1 इति 2:16), जो अपने भाइयों अबीशै और असाहेल के साथ अपनी सैन्य वीरता के लिए यहूदा में प्रसिद्ध था (2 शमू 2:18; पुष्टि करें 1 शमू 26:6)। 2 शमूएल के अनुसार, योआब गिबोन की लड़ाई में उभरकर सामने आया और प्रसिद्ध हुआ, जब शाऊल की सेना अब्नेर की अगुवाई में पराजित हुई (2 शमू 2:8–32)। क्योंकि अब्नेर ने योआब के भाई असाहेल को मार डाला था (पद 23), योआब ने बाद में बदला लेने के लिए अब्नेर को मार डाला (3:26–30), यद्यपि अब्नेर अब दाऊद के प्रति वफादार हो गया था (पद 12–19)। सम्भवतः योआब को यह लगा कि अब्नेर उसका प्रतिद्वंद्वी बन सकता है। फिर भी, दाऊद ने मारे गए सेनापति की प्रशंसा इस्राएल के प्रधान और महान व्यक्ति के रूप में की (पद 31–39) और योआब के घर पर उसकी अवज्ञा के लिए एक श्राप दिया (पद 26–29, 39)। यह घटना योआब के कभी-कभी अनैतिक और निर्दयी व्यवहार को प्रकट करती है।

योआब ने दाऊद की अगुवाई में यबूसी नगर यरूशलेम की घेराबंदी का नेतृत्व किया और जब दाऊद ने वहाँ अपना राज्य स्थापित किया, तब योआब राजा की सेना का प्रधान सेनापति बना (2 शमू 8:16; 11:1; पुष्टि करें 1 इति 11:6–8; 18:15)। उसने अरामियों और अम्मोनियों के बीच एक विद्रोह को दबाया (2 शमू 10:7–14; 1 इति 19:8–15)। रब्बा में उसने न केवल नगर को जीत लिया (2 शमू 11–12) बल्कि दाऊद की हित्ती ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना को व्यवस्थित किया ताकि दाऊद ऊरिय्याह की पत्नी, बतशेबा को ले सकें।

योआब की दाऊद के प्रति निष्ठा और सेना पर उसकी पकड़ अबशालोम के विद्रोह के समय प्रकट होती है (2 शमू 15)। योआब ने साजिश को दबा दिया (अध्याय 18), लेकिन दाऊद के अपने पुत्र को न मारने के सीधे निर्देश को नज़रअंदाज़ करते हुए (18:5), उसे बेरहमी से मार डाला (पद 10–17)। जब दाऊद शोक कर रहे थे, तो योआब ने राजा को फटकार लगाई और चेतावनी दी कि सेना में संकट उत्पन्न होने वाला है (19:5–7)। इस अवज्ञा के कारण, दाऊद ने योआब को सेनापति पद से हटा दिया और अमासा को उसका स्थान दिया (पद 13), लेकिन बाद में गिबोन में योआब ने अमासा की भी विश्वासघातपूर्वक हत्या कर दी (20:8–10)। योआब का सेना में प्रभाव बहुत अधिक रहा होगा, क्योंकि उसने पुनः अपनी पुरानी स्थिति प्राप्त कर ली और वह सेना का प्रधान बना रहा (2 शमू 20:23, 24:2; 1 रा 1:19)।

दाऊद के शासन के अन्त में, योआब ने अदोनिय्याह और एब्यातार की सिंहासन के खिलाफ साजिश का समर्थन किया (1 रा 1:7)। दाऊद का उस पर अविश्वास इतना बढ़ गया था कि उसने सुलैमान को विशेष रूप से योआब के बार-बार किए गए विश्वासघातों के बारे में सचेत किया (2:5–9)। सुलैमान को एक अविश्वसनीय सेना की समस्या को हल करना था। इसलिए, अपने पिता की मृत्यु के बाद, सुलैमान ने षड्यंत्रकारियों अदोनिय्याह (पद 23), एब्यातार (पद 26) और योआब (पद 28) का पीछा किया। सुलैमान के अधिकारी बनायाह ने योआब को वेदी के पास शरण लेते हुए पाया और उसे वहीं मार डाला (पद 28–35), इस प्रकार सुलैमान के राज्य को योआब के अन्याय से मुक्त किया।

2. केजेवी अनुवाद में ("अतारोत, योआब का घर") 1 इतिहास 2:54 में अत्रोतबेत्योआब का उल्लेख है। *देखें* अत्रोतबेत्योआब।

3. एक यहूदी व्यक्ति, जो यहूदा गोत्र से था, सरायाह का पुत्र और केनज़ के वंश से था। वह उन कारीगरों की घाटी के निवासियों का पूर्वज था (1 इति 4:14)।

4. उन यहूदी लोगों का पूर्वज, जो बंधुआई से लौटकर जरुब्बाबेल के साथ फिलिस्तीन आए थे (एज्रा 2:6; नहे 7:11)।

5. एक कुल का पूर्वज, जिसके 219 सदस्य बंधुआई के बाद एज्रा के साथ फिलिस्तीन लौटे थे (एज्रा 8:9)। सम्भवतः यह वही व्यक्ति है जो ऊपर #4 में उल्लेखित है।

योआश

दो पुराने नियम के राजाओं के नाम, जो केवल 2 राजाओं की पुस्तक में आते हैं। इन नामों का अर्थ है "प्रभु शक्तिशाली हैं" या "प्रभु ने प्रदान किया है।" योआश, नाम का संक्षिप्त रूप, अक्सर राजाओं और इतिहास की कथाओं में दिखाई देता है।

1. अहज्याह का पुत्र और यहूदा का सातवां राजा (835–796 ईसा पूर्व)। योआश सिंहासन पर तब बैठा जब दुष्ट अतल्याह को याजक यहोयादा के आदेश पर मार दिया गया था। शिशु के रूप में, उसे उसकी मौसी यहोशेबा द्वारा मन्दिर में छिपा दिया गया था और इस प्रकार अतल्याह द्वारा राजा के घराने के संहार से बच गया (2 रा 11:1–3; 2 इति 23:10–12)। मन्दिर परिसर में छह वर्ष रहने के बाद, योआश को सात वर्ष की आयु में राजा घोषित किया गया और उसने 40 वर्षों तक शासन किया (2 रा 11:21–12:1; 2 इति 24:1–3)।

अपने शासनकाल के दौरान उसकी प्रमुख गतिविधि मंदिर का नवीनीकरण करना था (2 रा 12:4–5; 2 इति 24:4–5)। जब उसके 23वें वर्ष तक थोड़ी प्रगति हुई थी (2 रा 12:6), उसने कर निर्धारण कार्यक्रम को संशोधित किया, यहूदा के लोगों को अपने योगदान सीधे यरूशलेम मंदिर में लाने का आदेश दिया, और जल्द ही प्रभु के घर को उसकी उचित स्थिति में बहाल कर दिया (2 इति 24:13)।

याजक यहोयादा की मृत्यु के बाद, योआश और यहूदा ने प्रभु को छोड़ दिया और अशेरों और मूर्तियों की पूजा करने लगे (2 इति 24:15–18)। ईश्वरीय न्याय की भविष्यद्वाणी की चेतावनी

को अनदेखा करते हुए (20), योआश और उसके लोग अरामियों द्वारा पराजित हो गए। हालाँकि योआश एक बार हजाएल को शुल्क देकर यहूदा की घेराबंदी को टालने में सफल रहा था (2 रा 12:17–18), वही रणनीति दूसरी बार सफल नहीं हुई। अरामियों ने यहूदा और यरूशलेम को लूट लिया, और लूट का माल दमिश्क में हजाएल को भेजा (2 इति 24:23–24)। योआश की हत्या उसके नौकर योजाबाद (यहोजाबाद/जाबाद) और यहोजाबाद ने की, जब वह अरामियों के साथ युद्ध में लगी चोटों से उबर रहे थे (2 रा 12:20–21; 2 इति 24:25–26)।

2. यहोआहाज का पुत्र और इस्राएल का 13वें राजा (798–782 ईसा पूर्व)। योआश ने अपने पिता को मिली सैन्य असफलताओं के विपरीत कुछ सैन्य सफलताएँ प्राप्त कीं। अराम के हजाएल के दंडात्मक सैन्य अभियानों के अधीन न रहते हुए, वह उत्तरी राज्य में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने में सक्षम था। वास्तव में, उसने यहूदा के दक्षिणी राज्य को अधीन कर लिया जबकि अमस्याह यरूशलेम में राजा था (796–767 ईसा पूर्व)। अमस्याह और योआश के बीच संघर्ष मुख्य रूप से अमस्याह द्वारा प्रेरित था। एदोम में अपनी जीत से अति आत्मविश्वास में, अमस्याह ने इस्राएल के साथ एक सैन्य संघर्ष शुरू किया (2 इति 25:17–19)। युद्ध यहूदा के शेफेला में बेतशेमेश के पास लड़ा गया। राजा योआश ने यहूदा की सेना को पराजित किया, अमस्याह को बंदी बना लिया, और यरूशलेम की ओर बढ़ा। एप्रैमी फाटक से लेकर कोनेवाले फाटक तक की बाहरी दीवार को नष्ट करते हुए, उसने राजधानी शहर में प्रवेश किया और राजभवन और मंदिर दोनों के खजानों को लूट लिया (पद 21–24)। वह यहूदा को अधीन करने के लिए प्रभु के उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ था (पद 20)।

योआश का समकालीन एलीशा भविष्यद्वक्ता था। इस्राएल में व्यापक दुष्टता और राजा के धर्मत्याग के बावजूद (2 रा 13:10–11), योआश ने फिर भी प्रभु के इस भविष्यद्वक्ता की सलाह मांगी। जब एलीशा अपने मृत्युशय्या पर था, योआश ने भविष्यद्वक्ता का आशीर्वाद मांगा (पद 14)। एलीशा ने राजा को आश्वासन दिया कि अरामियों को इस्राएल द्वारा अपेक में पराजित किया जाएगा और इस्राएल इस शत्रु पर तीन निर्णायक विजय प्राप्त करेगा (पद 15–19)। अपने 16 वर्षों के शासनकाल के दौरान, योआश ने उत्तरी राज्य में राजनीतिक स्थिरता प्राप्त की। हालांकि उसे एक दुष्ट राजा माना जाता था, उसे यहूदा के अमस्याह के खिलाफ न्याय के साधन के रूप में उपयोग किया गया और उसे अराम के खिलाफ यहोवा के आशीर्वाद का आनंद मिला।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास।

योआश

1.अबीएजेरी, जो ओप्रा में रहता था और गिदोन का पिता था। योआश ने बाल के लिए एक वेदी और अशेरा की एक मूर्ति बनाई थी, जिसे बाद में गिदोन ने नष्ट कर दिया (न्या 6:11–31; 7:14; 8:13, 29–32)।

2. इस्राएल के राजा अहाब का पुत्र (1 रा 22:26; 2 इति 18:25)।

3. अहज्याह के पुत्र और यहूदा के राजा, यहोआश (835–796 ईसा पूर्व) के लिए एक वैकल्पिक नाम, जैसा कि 2 राजाओं 11:2–3 और 1 इतिहास 3:11 में उल्लेख है। *देखें* यहोआश #1

4. इस्राएल के राजा यहोआश, जो यहोआहाज का पुत्र था, के लिए एक वैकल्पिक नाम (798–782 ई.पू.) 2 राजाओं 13:10–13। *देखें* यहोआश #2।

5. शेला के घर से यहूदी लोग (1 इति 4:22)।

6. बेकर के नौ पुत्रों में से दूसरा और बिन्यामीन के गोत्र में एक प्रमुख प्रधान (1 इति 7:8)।

7. बिन्यामिन का योद्धा जिसने सिकलग में दाऊद का समर्थन किया (1 इति 12:3)।

8. दाऊद का एक अधिकारी (1 इति 27:28)।

योआह

1. आसाप का पुत्र और राजा हिजकिय्याह के अधीन एक दरबारी (2 रा 18:18, 26; यशा 36:3, 11, 22)। वह उन अधिकारियों में से एक था जिन्हें हिजकिय्याह ने यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान अश्शूरियों से बातचीत करने के लिए भेजा था।

2. लेवी के गोत्र से जिम्मा का पुत्र (1 इति 6:21)।

3. एक लेवी ओबेदेदोम का पुत्र, जो दाऊद के समय में निवासस्थान का द्वारपाल था (1 इति 26:4)।

4. योआहाज का पुत्र और राजा योशिय्याह के अधीन अभिलेख रखने वाला अधिकारी; वह मन्दिर की मरम्मत की देखरेख करने वाले प्रतिनिधियों में से एक था (2 इति 34:8)।

योआहाज

1. 2 राजाओं 14:1 में येहू के पुत्र यहोआहाज की भिन्न वर्तनी या संक्षिप्त रूप है। *देखें* यहोआहाज #1।

2. योआह का पिता। योआह राजा योशिय्याह का इतिहास लिखने वाला था (2 इति 34:8)।

योएजेर

योएजेर उन योद्धाओं में से एक था, जिन्होंने सिकलग में दाऊद का साथ दिया, जब वह राजा शाऊल के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। वह दाऊद के उन धनुर्धारियों और गोफन चलाने वालों में से था, जो दोनों हाथों से युद्ध करने में निपुण थे (1 इति 12:6)। उसे कोरहवंशी कहा जाता था, जो सम्भवतः उसके मूल स्थान को सन्दर्भित करता है।

योएद

बिन्यामीन का एक वंशज, जो नहेम्याह के दिनों में यरूशलेम में रहता था (नहे 11:7)। उसका नाम, जिसका अर्थ है "यहोवा साक्षी है," 1 इतिहास 9:7 की समानान्तर सूची में नहीं आता है ।

योएल (व्यक्ति)

1. कहात के परिवार के लेवी थे। वह अजर्याह के पुत्र और एल्काना के पूर्वज थे, जो भविष्यद्वक्ता शमूएल के पिता थे (1 शमू 1:1; 1 इति 6:36)।

2. शमूएल भविष्यद्वक्ता के सबसे बड़े पुत्र। उन्होंने और उनके भाई अबिय्याह ने न्यायाधीश के पद को इतना भ्रष्ट कर दिया कि प्राचीनों ने एक राजा की मांग बढ़ा दी (1 शमू 8:2–5)। वह गायक हेमान के पिता थे (1 इति 6:33; 15:17)। उनके नाम का गलत अनुवाद "वश्नी" के रूप में के.जे.वी अनुवाद में 1 इति 6:28 में किया गया है।

3. गदोर की घाटी में प्रवास करने वाले शिमोनियों के परिवारों में से एक राजकुमार (1 इति 4:35)।

4. रूबेन के गोत्र के सदस्य (1 इति 5:4, 8)।

5. बाशान में रहने वाले गाद के गोत्र के मुख्य (1 इति 5:12)।

6. यिज्रह्याह के चार नामित पुत्रों में से तीसरा और दाऊद के समय इस्साकार के गोत्र के मुख्य में से एक (1 इति 7:3)।

7. नातान के भाई और दाऊद के शूरवीर पुरुषों में से एक (1 इति 11:38)। उन्हें 2 शमू 23:36 में नातान के पुत्र यिगाल के रूप में भी कहा गया है। *देखें*इगाल #2।

8. गेर्शोन के परिवार से लेवी जिन्होंने राजकीय यात्रा में भाग लिया था जो दाऊद के शासनकाल के दौरान परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम लाए थे (1 इति 15:7–11)। सम्भवतः वह यरूशलेम के मन्दिर के खज़ाने का प्रबन्ध करते थे (1 इति 26:22)।

9. पदायाह के पुत्र, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान मनश्शे के गोत्र के पश्चिमी आधे हिस्से के अगुवे के रूप में सेवा करते थे (1 इति 27:20)।

10. कहात के परिवार से लेवी, जिन्होंने यरूशलेम में मन्दिर के सुधार में राजा हिजकिय्याह की मदद की (2 इति 29:12)।

11. नबो के पुत्र, जिन्हें बँधुवाई-पश्चात काल के बाद के समय में एज्रा द्वारा अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:43)।

12. जिक्री के पुत्र और 128 बिन्यामीनियों के पर्यवेक्षक जो बँधुवाई के बाद यरूशलेम में बस गए (नहे 11:9)।

13. छोटे भविष्यद्वक्ताओं की दूसरी पुस्तक लिखने वाले भविष्यद्वक्ता। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है सिवाय इसके कि वे पतूएल के पुत्र थे (योए 1:1; प्रेरि 2:16)। *देखें* योएल की पुस्तक।

योएल की पुस्तक

पुराने नियम की पुस्तक; छोटे भविष्यद्वक्ताओं में से दूसरी।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- तिथि
- विषय-वस्तु
- संदेश

लेखक

पहले वचन में योएल की पुस्तक के विषय-वस्तु को यहोवा का “वचन” बताया गया है जो "पतूएल के पुत्र योएल के पास पहुँचा।" पवित्रशास्त्र में योएल या पतूएल के बारे में और कुछ नहीं बताया गया है। योएल नाम सामान्य था; पुराने नियम में 13 विभिन्न योएल हैं। पुस्तक में जो कहा गया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि योएल याजक नहीं थे, लेकिन मन्दिर के याजकों के साथ निकटता से जुड़े थे, और सभी सम्भावनाओं में यरूशलेम के निवासी थे। इससे अधिक हम कुछ नहीं कह सकते।

तिथि

योएल की तिथि के बारे में कई अलग-अलग दृष्टिकोण उन लोगों द्वारा लिए गए हैं जिन्होंने इस पुस्तक का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है; इसलिए यह सिद्धान्तात्मक होना कठिन है। यह पुस्तक बाबुल में रहने वाले यहूदी बन्दियों के यरूशलेम लौटने के बाद के समय की हो सकती है - अधिक सटीक रूप से, यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण के नहेम्याह के

काम के बाद के समय (लगभग 400 ईसा पूर्व)। इसके समर्थन में दिए गए कारण इस प्रकार हैं:

1. योए 3:2 कहता है कि यहूदा और यरूशलेम के लोग जाति-जाति में तितर-बितर कर दिए गए थे और उनकी भूमि विभाजित कर दी गई थी, लेकिन उन्हें वापस लाया गया है, और उनके शहर की शहरपनाह फिर से खड़ी हो गई हैं (2:9)।

2. जब प्रार्थना और उपवास के लिए बुलाहट दी जाती है, तो याजक और पुरनियों को अगुआई करनी चाहिए (1:13; 2:16–17)। पुस्तक में किसी भी जगह पर राजा का उल्लेख नहीं है। बँधुआई के समय तक राजा थे, लेकिन उसके बाद 400 वर्षों तक नहीं थे।

3. पूर्व-बँधुआई भविष्यद्वक्ताओं—आमोस, होशे, यशायाह, मीका, और यिर्मयाह—ने अक्सर लोगों की आलोचना की क्योंकि वे बलिदान चढ़ाते थे जबकि वे अपने दैनिक जीवन में प्रभु के मार्गों से भटक जाते थे। हाग्गै और मलाकी जैसे बँधुआई के बाद के भविष्यद्वक्ता बलिदान चढ़ाने के लिए प्रोत्साहन और गहरी चिंता व्यक्त करते हैं। पूर्व-बँधुआई भविष्यद्वक्ताओं में मूर्तियों की आराधना के लिए लोगों की लगातार फटकार होती थी; लेकिन बँधुआई के बाद लोगों के साथ यह कोई समस्या नहीं थी। इन दोनों दृश्यों को देखते हुए यह लगता है की योएल बँधुआई के बाद के दृश्य में पूर्व-बँधुआई की तुलना में उचित दिखाई पड़ते हैं।

4. इस पुस्तक में उत्तरी राज्य इस्राएल का कोई उल्लेख नहीं है। यहूदा और यरूशलेम के बारे में बहुत कुछ कहा गया है; जब "इस्राएल" का उल्लेख किया जाता है, तो सन्दर्भ में वही लोग प्रतीत होते हैं (2:27; 3:16)। हम 722 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य के अश्शूरियों के हाथों पतन से पहले बोलने का एक अलग तरीका खोजने की उम्मीद करेंगे।

5. जिन अन्य राज्यों का उल्लेख किया गया है वे एदोम, सोर और सीदोन, पलिश्ती और यूनानी हैं। सीरिया, अश्शूर, और बाबेल का उल्लेख नहीं है, जो पुराने समय में लोगों के कट्टर शत्रु थे जिनसे बँधुआई से पहले के दिनों में लोगों ने बहुत कष्ट सहा। जिनका उल्लेख किया गया है वे निश्चय ही बँधुआई के बाद के समय में लोगों के लिए महत्वपूर्ण थे, और केवल तभी पलिश्ती दृश्य के तुलना में यूनानी महत्वपूर्ण हैं।

कुछ विद्वान सोचते हैं कि इन तर्कों में कोई बड़ी ताकत नहीं है और पुस्तक में सब कुछ बहुत पहले की तिथि में उचित दिखाई पड़ता है। कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि इस किताब को जानबूझकर इब्रानी शास्त्रों में दो आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं होशे और आमोस के साथ रखा गया है। लेकिन भविष्यद्वाणियों के संग्रह में पुस्तकों का क्रम उनकी तारीख निर्धारित नहीं करता है। बँधुआई के बाद के ओबद्याह आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं आमोस और मीका के बीच खड़े हैं, और वास्तव में यूनानी पुराने नियम में योएल को इब्रानी बाइबल में उसकी जगह से अलग स्थान पर रखा गया था। सबसे अधिक सम्भावना है कि योएल और आमोस एक साथ खड़े हैं, क्योंकि आमो 1:2 में वही शब्द पाए जाते हैं जो योएल की पुस्तक के अन्त में पाए गए हैं (योए3:16)। जो लोग पुस्तक के लिए पूर्व-बँधुआई तिथि का समर्थन करते हैं उनमें से कुछ इसे नौवीं शताब्दी में रखते हैं, योआश के शासनकाल की शुरुआती अवधि में जब राजा वास्तव में देश के शासक के रूप में कार्य करने के लिए बहुत छोटे थे। अन्य लोग इसे उत्तर से आने वाले शत्रु के सन्दर्भ (जैसा कि यिर्मयाह में है) और लोगों से निवेदन (यिर्मयाह के निवेदन की तरह) कि वे पूरे मन से प्रभु की ओर लौटें (2:12) के सन्दर्भ को देखते हुए 609 ईसा पूर्व में योशिय्याह की मृत्यु से ठीक पहले रखते हैं।

विषय-वस्तु

1:1–12

टिड्डियों का प्रकोप, जो पिछली पीढ़ियों ने कभी नहीं देखा था, देश पर आया (पद 2–4)। दाखलता को उजड़ते और अंजीर के पेड़ों को छिलते हुए देखने के लिए दाखमधु पीने वालों को बुलाया गया (पद 5–7)। खेतों को बर्बाद होते देखकर लोगों को विलाप करने के लिए बुलाया गया — विशेष रूप से याजकों को, क्योंकि वे अब प्रभु को अन्नबलि और अर्घ अर्पण नहीं कर सकेंगे (पद 8–10)। किसानों को अपनी फसल की बर्बादी पर और देश के फलों के नुकसान पर पीड़ा में शोक करना होगा (पद 11–12)।

1:13–20

जो कुछ हुआ था, उसके कारण लोगों को प्रार्थना और उपवास के लिए बुलाया गया; याजकों को टाट ओढ़कर प्रभु के सामने आना था, इस बात पर शोक मनाना था कि कोई भेंट नहीं लाई जा सकती (पद13)। पुरनियों और लोगों को समान रूप से प्रार्थना करने के लिए मन्दिर में आना होगा (पद14)। ऐसी संकट की घड़ी, जिसमें फसलें नष्ट हो गई थीं और भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल के लिए कोई चरागाह नहीं था, इसे प्रभु के महान आने वाले दिन की पूर्वसूचना के रूप में देखा जाना चाहिए और उसके लिए सभी को तैयार रहना चाहिए (पद 15–18)। जब भविष्यद्वक्ता ने देश की तबाही देखी, तो वह स्वयं केवल परमेश्वर को ही पुकार सकता था (पद19–20)।

2:1–11

इस भाग में भविष्यद्वक्ता उस समय की बात करते हैं जब परमेश्वर का न्याय पूरे देश पर भय लाता है। यह खतरे की घन्टी बजने का समय है, जब एक बड़ी और सामर्थी 'जाति' देश पर आक्रमण करती हैं, जो कभी पहले देखे गए किसी भी शत्रु से ज़्यादा ख़तरनाक है। इसके अलावा, यह आने वाले "यहोवा का दिन" की चेतावनी है, "वह अंधकार और अंधेरे का दिन है" (पद 1–2)। भूमि आग से भस्म हो जाएगी; उसके

आगे की भूमि तो अदन की बारी के समान होगी, परन्तु उसके पीछे की भूमि उजाड़ मरुस्थल बन जाएगी (पद 3)। यह आक्रमण घुड़सवार सेना के समान है और विद्रोहियों की आवाज "रथों की गड़गड़ाहट" के समान है। उनके आगमन पर हर कोई पीड़ा में है। वे शूरवीरों के समान दौड़ते हैं, हथियारों को तोड़ते हुए, शहरपनाह पर चढ़ते हैं, और चोरों की तरह घरों में प्रवेश करते हैं (पद 4–9)।

कुछ लोगों ने इस वर्णन को उन देशों की सेनाओं की तस्वीर माना है जो इस्राएल के शत्रु हैं, जिन्हें प्रभु ने अपने ही लोगों पर न्याय करने के लिए उपयोग किया है। लेकिन क्योंकि उन्हें युद्ध में घोड़ों के रूप में वर्णित किया गया है, उनकी आवाज़ "रथों की गड़गड़ाहट" की तरह है, उनका आगे बढ़ना "युद्ध में जाने वाली बलवन्त सेना" की तरह है, ऐसा लगता है कि टिड्डियों की विपत्ति ध्यान में रखकर यह बोला गया है। फिर भी आकाश में टिड्डियों का काला बादल और भूमि पर उनका भयानक प्रभाव उस महान दिन की पूर्वसूचना देता है जब प्रभु सभी लोगों पर न्याय करने के लिए बोलेंगे और कार्य करेंगे। तब स्वर्ग और पृथ्वी कांपेंगे; सूर्य, चन्द्रमा, और तारे काले हो जाएंगे (पद 10–11)।

2:12–17

भविष्यद्वक्ता बार-बार लोगों को नम्रता और पश्चाताप के साथ प्रभु के पास बुलाते हैं ताकि उनकी दया और अनुग्रह प्राप्त हो सके। तब यह "परमेश्वर यहोवा को अन्नबलि और अर्घ दिया जाए" संभव होगा (पद14)। उपवास नियुक्त किया जाना है, युवा और वृद्धों की एक महासभा बुलाई जानी है। यहाँ तक कि नवविवाहितों को भी आना है। याजक अपने अगुवाई में लोगों को प्रार्थना करने के लिए अगुवाई करें ताकि परमेश्वर अपने लोगों को बचाए (पद 14–17)।

2:18–27

इस गद्यांश के अनुसार, ऐसा लगता है कि लोगों ने परमेश्वर की ओर रुख किया जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा था; इसके प्रत्युत्तर में, प्रभु ने उन पर तरस खाया और उन्हें उनके अन्न और नया दाखमधु और ताजा तेल देने का आश्वासन दिया, और उनकी नामधराई देते हैं (पद 18–19)। "उत्तर की ओर से आई हुई सेना" पीछे हट जाएँगी, और परमेश्वर देश के चरागाहों, उसके फलदार वृक्षों, और उसकी दाखलता को पुनःस्थापित करेंगे (पद 20–22)। लोग आनंदित होंगे, और अगली और पिछली वर्षा की आशीष से देश फिर से प्रचुर मात्रा में उपजाऊ होगा। टिड्डियों के प्रकोप से हुए नुकसान की भरपाई की जाएगी (पद 23–25)। लोग प्रचुर मात्रा में भोजन करेंगे और परमेश्वर की स्तुति करेंगे। वे जानेंगे कि महान जीवित परमेश्वर उनके बीच में हैं, और वे अब और लज्जित नहीं होंगे (पद 26–27)।

2:28–32

भविष्यद्वक्ता ने यह भी देखा कि टिड्डियों की विपत्ति के बाद इस नवीनीकरण में अनुभव किए गए आशीष आने वाले बड़े आशीषों का पूर्वाभास थे, जैसे कि अनुभव किए गए न्याय ने आने वाले प्रभु के महान और भयानक दिन की चेतावनी दी थी। परमेश्वर भविष्य में अपने लोगों के लिए महान कार्य करेंगे; विशेष रूप से, वे पुरुषों और स्त्रियों, युवा और वृद्ध, दास और स्वतंत्र पर अपनी आत्मा उंडेलेंगे (पद 28–29)। स्वर्ग और पृथ्वी पर चमत्कारी चिन्ह होंगे (पद 30–31)। जो कोई भी प्रभु के नाम को पुकारेंगे, वे उनके उद्धार को जानेंगे (पद 32)।

3:1–15

एक देश के रूप में इस्राएल के लिए प्रभु के दिन का अर्थ और सभी जातियों के लिए इसका महत्व समझना ज़रूरी है। परमेश्वर के लोग उनके पास लौटकर पुनर्स्थापना पाएंगे; जिन्होंने उन्हें तितर-बितर किया, उनकी भूमि ले ली, और उन्हें दास के रूप में बेच दिया, वे उनके न्याय के अधीन आएंगे (पद 1–3)। विशेष रूप से सोर और सीदोन और पलिश्ती जिन्होंने प्रभु के चांदी और सोने को लिया, उनके लोगों को उनकी भूमि से हटाना, और उन्हें यूनानियों को दास के रूप में बेचना, उन्हें उनके किए गए कार्यों का हिसाब देना होगा। इन दास व्यापारियों के पुत्र और पुत्रियाँ भी बदले में दास के रूप में बेचे जाएंगे (पद 4–8)। इसलिए जातियों को युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए—अपने-अपने हल की फाल को पीटकर तलवार, और अपनी-अपनी हँसिया को पीटकर बर्छी बनाओ—लेकिन यह मानव सेनाओं के बीच की लड़ाई के लिए नहीं है। जिन्होंने जीवित परमेश्वर के खिलाफ लड़ाई की है, जो लोग जीवित परमेश्वर के विरुद्ध लड़े हैं, वे उन्हें एक शक्तिशाली शूरवीर के रूप में देखेंगे (पद 9–11)। यह शक्तिशाली शूरवीर न्याय करने के लिए आ रहे हैं। दृश्य युद्धभूमि से न्यायालय में बदल जाता है; प्रभु के दिन "निबटारे की तराई" में महान भीड़ प्रभु के सामने खड़ी होगी, जो सर्वशक्तिमान के शत्रु बन गए हैं उनके लिए यह भयानक अंधकार का दिन है (पद 12–15)।

3:16–21

जब मनुष्यों ने अपनी सबसे बुरी बातें कह दी होंगी और अपने सबसे बुरे कार्य कर दिए होंगे, तब परमेश्वर बोलेंगे और कार्य करेंगे। वे अपने लोगों के लिए "शरणस्थान और गढ़" (पद16) के रूप में प्रकट होंगे। तब उनके नगर को परदेशी आक्रमण से बचाया जाएगा (पद 17)। उनकी भूमि अद्भुत रूप से उपजाऊ होगी (पद18)। मिस्र और एदोम ने यहूदा के प्रति जो हिंसा की है, उसके कारण वे उजाड़ हो जाएंगे (पद19)। इस्राएल का बदला लिया जाएगा और पुनःस्थापित किया जाएगा, और सबके लिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि प्रभु का निवास यरूशलेम में उनके लोगों के साथ है (पद 20–21)।

इस पुस्तक की विषय-वस्तु का यह विवरण इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि योएल ने अपने समय में टिड्डियों की महामारी का अनुभव किया और उन्होंने इसे आने वाले परमेश्वर के बड़े न्याय की चेतावनी के रूप में देखा। साथ ही, उन्होंने महान पुनःस्थापन और आशीष की भी बात की थी जब लोग प्रार्थना और उपवास के साथ परमेश्वर की ओर मुड़े थे। अन्य लोग पूरी पुस्तक में, कम से कम अध्याय 2 में, शत्रुओं को मानवीय शत्रु के रूप में देखते हैं। कुछ लोग पूरी पुस्तक को आने वाले युद्धों की भविष्यद्वाणी के रूप में मानते हैं, और विशेष रूप से प्रभु के अन्तिम युद्ध के रूप में उन लोगों के खिलाफ जो स्वयं को परमेश्वर के शत्रु बना चुके हैं। कुछ लोग दो भविष्यद्वक्ताओं, या पुस्तक के दो भागों के बारे में सोचते हैं जो अलग-अलग समय पर लिखे गए हैं। लेकिन ऊपर लिया गया पुस्तक का दृष्टिकोण सबसे कम कठिनाइयों से जुड़ा हुआ लगता है और पूरी पुस्तक का अच्छी समझ और अर्थ देता है।

संदेश

योएल के संदेश के स्थायी महत्व के बारे में आखिर में क्या कहा जा सकता है? उनका संदेश, अधिकांश पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की तरह, दया और न्याय का संदेश था। टिड्डियों की महामारी जैसी आपदा इतिहास के भीतर और अंततः इतिहास के पूर्णता पर प्रभु के महान दिन पर सभी मनुष्यों और जातियों के लिए परमेश्वर के न्याय की चेतावनी थी, जब सभी उनके सामने एकत्रित होंगे। योएल का संदेश, उनके समय की घटनाओं से उत्पन्न पश्चाताप की चुनौती के साथ, यीशु के उन शब्दों के साथ रखा जा सकता है जब उनसे उनके समय की आपदाओं में पीड़ित लोगों के बारे में पूछा गया था। जब उनसे पूछा गया कि क्या वे अन्य लोगों से अधिक पापी थे, तो उन्होंने चेतावनी के साथ नकारात्मक उत्तर दिया, "यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होंगे" (लूका 13:5)। योएल के माध्यम से परमेश्वर का वचन लोगों को उनकी ओर लौटने के लिए बुलाता है ताकि वे उनकी दया पा सकें; और दया के आश्वासन के साथ उन महान चीजों की आशा भी पा सकें जो परमेश्वर अपनी भलाई में करेंगे। वह अपनी आत्मा को सभी पर अधिकता से उँड़ेलेंगे। इन वचनों का वादा (योए 2:28) योएल की पुस्तक में किसी भी अन्य वचन से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं, क्योंकि पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश में इनका उल्लेख किया गया है (प्रेरि 2:16–21)। वे मसीही कलीसिया के लिए तब से सत्य हैं जब से उनकी पूर्ति की शुरुआत हुई, और उनके साथ योएल का महान आश्वासन है कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच निवास करते हैं और जो उनकी ओर लौटते हैं वे कभी लज्जित नहीं होंगे।

*यह भी देखें*इस्राएल का इतिहास; भविष्यद्वाणी; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिन ।

योएला

योएला उन योद्धाओं में से एक था, जिन्होंने सिकलग में दाऊद का साथ दिया, जब वह राजा शाऊल के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। वह दाऊद के उन तीरंदाजों और गोफन चलाने वालों में से थे, जो दोनों हाथों से युद्ध करने में निपुण थे (1 इति 12:7)।

योकदाम

यहूदा के गोत्र को विरासत में आवंटित किए गए पहाड़ियों में स्थित नगरों में से एक, जो यिज्रेल और जानोह के बीच उल्लेखित है (यहो 15:56)।

योकनाम

कर्मेल क्षेत्र में स्थित एक शाही कनानी नगर (यहो 12:22), थुतमोस तृतीय ने इसका "क्यू का कुआं" (Well of Q) के रूप में उल्लेख किया था। जबूलून की सीमा योकनाम के पास धारा को छूती थी (19:11); यह नगर जबूलून में एक लेवीय नगर बन गया (21:34)। कुछ लोग मानते हैं कि 1 राजाओं 4:12 के योकमाम को योकनाम में सन्शोधित किया जाना चाहिए, लेकिन यह निश्चित नहीं है। यूसेबियस ने इसे लेगियो (मगिद्दो के पास) से छः मील (9.7 किलोमीटर) की दूरी पर प्तोलेमैस के मार्ग पर स्थित बताया। यह टेल कैमुन है, जो वादी मिल्ह के मुहाने पर यिज्रेल घाटी के किनारे पर स्थित है।

यह भी देखें लेवियों के नगर।

योकमाम

1. एक नगर जिसका उल्लेख 1 राजाओं 4:12 में हुआ है; ऐसा प्रतीत होता है कि यह योकनाम के निकट स्थित था और सम्भवतः वही नगर था। *देखें*योकनाम।

2.एक नगर, जिसे एप्रैम की विरासत में से कोहाती लेवियों को दिया गया था (1 इति 6:68)। यहोशू 21:22 में एक समान्तर सन्दर्भ इस नगर को किबसैम के रूप में सूचीबद्ध करता है। *देखें*किबसैम।

योकीम

शेलाह के वंश के माध्यम से यहूदा का एक वंशज (1 इति 4:22)।

योकेबेद

अम्राम की पत्नी और मूसा, हारून और मिर्याम की माता थी (निर्ग 6:20; गिन 26:59)।

योक्तान

एबेर के पुत्र और पेलेग के छोटे भाई। उनसे कई अरब समूह उत्पन्न हुए (उत्प 10:25–29; 1 इति 1:19–23)।

योक्तेल

1. यहूदा के शेफेला में एक नगर, जो लाकीश के निकट स्थित है (यहो 15:38)।

2. प्राचीन एदोमी गढ़ जिसे मूल रूप से सेला कहा जाता था। अमस्याह ने एदोमियों को पराजित करने के बाद इसका नाम योक्तेल रख दिया (2 रा 14:7)।

योक्षान

अब्राहम और कतूरा के पुत्र, और शेबा और ददान के पिता (उत 25:2–3; 1 इति 1:32)।

योगबहा

गिलाद में एक शहर (यरदन के पार), जिसका निर्माण और किलेबंदी गाद के गोत्र द्वारा की गई थी (गिन 32:35)। न्यायियों के काल में, गिदोन ने मिद्यानियों का पीछा करते हुए योगबहा के पूर्व की ओर घेरा डाला ताकि कर्कोर में मिद्यान के अज्ञात शिविर पर हमला किया जा सके (न्या 8:11)। यह प्राचीन शहर अब खिरबेत अल-अजबेहात के साथ पहचाना जाता है, जो अम्मान के उत्तर-पश्चिम में सात मील (11.3 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है।

योग्ली

योग्ली

बुक्की के पिता, एक उदार अगुवा जिन्होंने यरदन के पश्चिम में प्रतिज्ञात भूमि के आवंटन की देखरेख करने में सहायता की (गिन 34:22)।

योजाकार

योजाकार

अम्मोनी शिमात के पुत्र योजाबाद का एक वैकल्पिक नाम। वह शाही सेवकों में से एक था जिसने यहूदा के मारे गए राजा योआश के खिलाफ़ साज़िश रची थी (2 रा 12:21)। उसे 2 इतिहास 24:26 में जाबाद भी कहा गया है। *देखें*जाबाद।

योजाबाद

योजाबाद

1 इतिहास 12:4 में बिन्यामिन के एक योद्धा का उल्लेख। *देखें* योजाबाद #1।

योजाबाद

योजाबाद

1. गदेरा से बिन्यामिन और उन सैन्य पुरुषों में से एक जो सिकलग में दाऊद के समर्थन में आए थे (1 इति 12:4)।

2, 3. मनश्शे के गोत्र का प्रधान और पराक्रमी योद्धा जिसने शाऊल के खिलाफ लड़ाई के लिए सिकलग में दाऊद का साथ दिया था (1 इति 12:20)।

4. उन लेवियों में से एक, जिन्होंने राजा हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान यरूशलेम में मन्दिर के योगदान के प्रशासन में सहायता की (2 इति 31:13)।

5. लेवियों के प्रधानों में से एक, जिन्होंने राजा योशियाह के शासनकाल के दौरान फसह पर्व के लिए लेवियों को उदारतापूर्वक पशु दिए थे (2 इति 35:9)।

6. लेवी, येशुअ का पुत्र और वह जिसने मरेमोत, एलीआजर और नोअद्याह के साथ एज्रा के दिनों में मन्दिर के उपहारों और बहुमूल्य धातुओं की सूची बनाने में सहायता की (एज्रा 8:33)।

7. याजक और पशहूर के छः पुत्रों में से एक, जिन्हें एज्रा द्वारा निर्वासन के बाद के युग में अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया गया था (एज्रा 10:22)।

8. लेवी के गोत्र का एक व्यक्ति, जिसे एज्रा ने अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रोत्साहित किया था (एज्रा 10:23)।

9. उन लेवियों में से एक जिन्होंने निर्वासन के बाद के काल में एज्रा को लोगों को व्यवस्था सिखाने में सहायता की (नहे 8:7)।

10. उन लेवियों में से एक, जो यरूशलेम में स्थानांतरित हो गए थे और नहेम्याह के दिनों में मन्दिर के कार्य के प्रभारी थे (नहे 11:16)।

11. 2 राजाओं 12:21 में शिमात के पुत्र के लिए वैकल्पिक रूप। *देखें*योजाकर, योजाकार।

योतबाता

जंगल में भटकने के दौरान इस्राएलियों का अस्थायी शिविर स्थल, जो होर्हग्गिदगाद और अब्रोना के बीच स्थित था (गिन 33:33–34)। बाद में, हारून की मृत्यु के पश्चात, इस्राएली गुदगोदा से इस स्थान की ओर यात्रा किए, जो अपनी जल धाराओं के लिए जाना जाता है (व्य.वि. 10:7)।

*यह भी देखें*जंगल में भटकना।

योताम

योताम

मत्ती 1:9 में यहूदा के राजा योताम का किंग जेम्स संस्करण की वर्तनी, जिसने 750 से 735 ई.पू. तक शासन किया।

*देखिए*योताम #2।

योताम

1. गिदोन के 70 पुत्रों में सबसे छोटा योताम, ओप्रा में अपने भाइयों की अबीमेलेक द्वारा हत्या से बचने वाला एकमात्र व्यक्ति था (न्यायियों 9:5)। जब योताम को शेकेमियों के साथ अबीमेलेक की योजना का पता चला, तो वह शेकेम गया। इस योजना के कारण उसके भाइयों की मृत्यु हुई। उसने पास के गिरिज्जीम पर्वत के ऊपर से लोगों को संबोधित किया। एक दृष्टान्त का उपयोग करते हुए, उसने अबीमेलेक के राजा बनने की स्थिति को दर्शाया। उसने अपनी आलोचना को अपने सौतेले भाई (न्यायियों 8:31) और शेकेम के विश्वासघाती लोगों को श्राप देकर समाप्त किया (न्यायियों 9:7)। योताम फिर बेर भाग गया क्योंकि उसे अबीमेलेक के प्रतिशोध का डर था (न्यायियों 9:21)। बाद में, परमेश्वर ने योताम के श्राप को पूरा किया। शेकेम के लोग एक विद्रोह में मारे गए। अबीमेलेक को एक स्त्री ने मार गिराया (न्यायियों 9:57)।

2. यहूदा के ग्यारहवें राजा, जिन्होंने 750 से 735 ईसा पूर्व तक शासन किया। वे यहूदा के राजा अजर्याह (जिन्हें उज्जियाह भी कहा जाता है) और सादोक की बेटी येरूसा के पुत्र थे (2 राजाओं 15:7; 2 इतिहास 26:21; 27:1)। वे आहाज के पिता थे। योताम, 25 वर्ष की आयु में, इस्राएल के राजा पेकह के दूसरे वर्ष में यहूदा के सिंहासन पर बैठे और यरूशलेम में 16 वर्षों तक शासन किया। योताम पहले, उन्होंने अजर्याह के साथ शासन किया, जिन्हें गैर-यहूदी आराधना की अनुमति देने के कारण मृत्यु तक कोढ़ हो गया था (2 राजाओं 15:5)।
योताम प्रभु की नजर में एक धर्मी राजा माने गए। हालांकि, वे मन्दिर को अन्यजाति प्रभावों से मुक्त करने में असफल रहे। इसलिए यहूदा के लोग अपनी दुष्टता में बने रहे (2 इतिहास 27:2–6)। उन्होंने निर्माण किया:

- मंदिर का मुख्य द्वार
- ओपेल की दीवार का एक भाग
- यहूदा के पहाड़ी देश के कई नगरों की सुरक्षा की गई (2 इतिहास 27:3–4)

योताम ने युद्ध में परेशान करने वाले अम्मोनियों को भी हराया (पद 5) और यरदन के पूर्व में रहने वाले गाद के परिवारों को उनके परिवारों के अनुसार लिख दिया (1 इतिहास 5:17)। अपनी मृत्यु के बाद उन्हें यरूशलेम में मिट्टी दी गई (2 इतिहास 27:9)। यशायाह, मीका, और होशे सभी उनके शासनकाल के समय सक्रिय थे। योताम को मत्ती की वंशावली में प्रभु यीशु मसीह के पूर्वज के रूप में लिखा गया है (मत्ती 1:9)।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); यीशु मसीह की वंशावली; इस्राएल का इतिहास।

1. याहदै के पाँच पुत्रों में से दूसरा (1 इतिहास 2:47)।

योत्बावासी

यहूदा के राजा आमोन की माता मशुल्लेमेत के पिता हारूस का गृहनगर (2 रा 21:19)। इस स्थान की सटीक पहचान अज्ञात है, लेकिन कुछ विद्वान इसे उस नगर से जोड़ते हैं जिसे बाद में रोमियों ने योतापाता नाम दिया। यह नगर सिप्पोरिस (आधुनिक खिरबत जफात) के छः मील (9.7 किमी) उत्तर में स्थित था।

योदाह

योदाह

यूहन्ना के पुत्र, योसेख के पिता, और यीशु मसीह के पूर्वज। वह बाबेल में बँधुआई के बाद के समय में फिलिस्तीन में रहते थे (लूका 3:26)।

देखें यीशु मसीह की वंशावली।

योनतेलेखद्दोकीम

योनतेलेखद्दोकीम

भजन संहिता 56 के शीर्षक में इब्रानी वाक्यांश, जिसका अनुवाद है "धुन पर गाया जाने के लिए, 'दूरस्थ बांज वृक्षों पर कबूतर'"; संभवतः यह एक प्राचीन परिचित धुन थी जिसके अनुसार भजन प्रस्तुत किया गया था।

यह भी देखें संगीत।

योना (व्यक्ति)

योना इस्राएल के एक भविष्यद्वक्ता थे और अमित्तै के पुत्र थे (योन 1:1), योना जबूलून के गथेपेर नगर के निवासी थे (2 रा 14:25)। इतिहासकार जिसने 2 राजाओं को लिखा, उसने दर्ज किया कि योना ने राजा यारोबाम द्वितीय (793–753 ई.पू.) के शासनकाल में एक प्रमुख भविष्यवाणिय भूमिका निभाई। योना ने इस्राएल के राजा को विस्तार को प्रोत्साहित करने वाला संदेश दिया था, जिसका शासन समृद्धि, विस्तार और दुर्भाग्यवश नैतिक पतन से चिह्नित था।

इस्राएल के सभी राजनीतिक भ्रष्टाचार के बीच, योना एक उत्साही देशभक्त बने रहे। उनका नीनवे जाने से इनकार सम्भवतः इसलिए था कि वह जानते थे कि अश्शूरी भविष्य में इस्राएल को दण्ड देने के लिए परमेश्वर का माध्यम बनेंगे। परमेश्वर ने उसी योना को नीनवे भेजा, जिसने यारोबाम को इस्राएल की समृद्धि का आश्वासन दिया था ताकि उस नगर (और इस प्रकार उस देश) के विनाश को रोका जा सके, जब तक कि अश्शूर का उपयोग 722 ई.पू. में इस्राएल को दण्डित करने के लिए नहीं किया जा सके। यह कोई आश्चर्य नहीं है कि भविष्यद्वक्ता ने अपनी नियुक्ति पर भावनात्मक प्रतिक्रिया दी।

कोई भी अन्य भविष्यद्वक्ता इतनी दृढ़ता से यहूदी नहीं था (पुष्टि करें उनकी विशिष्ट स्वीकारोक्ति, योन 1:9), फिर भी किसी अन्य भविष्यद्वक्ता की सेवकाई इतनी प्रबलता से गैर-यहूदी देशों की ओर निर्देशित नहीं थी। योना की लेखनी भी भविष्यद्वक्ताओं में असामान्य है। यह पुस्तक मुख्य रूप से ऐतिहासिक कथा है। उनका वास्तविक प्रचार केवल पाँच इब्रानी शब्दों में दर्ज है—जो अधिकान्श अंग्रेज़ी अनुवादों में आठ शब्दों में है (योन 3:4ब)।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; यारोबाम #2; योना की पुस्तक; भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्तिन।

योना के पुत्र

शमौन पतरस के अंतिम नाम का अरामी रूप, जिसका अर्थ है "योना का पुत्र" (मत्ती 16:17)। नाम का एक और संस्करण, यूहन्ना 1:42 और 21:15–17 में दिखाई देता है, जहाँ सबसे अच्छे यूनानी पाठों में "योना का पुत्र" के बदले "यूहन्ना का पुत्र" लिखा है"।

देखिए शमौन पतरस।

योना, पुस्तक का

योना, पुस्तक का

योना की पुस्तक

पुराने नियम की 12 लघु भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के पारंपरिक क्रम में यह पाँचवीं पुस्तक है। यह भविष्यद्वाणी के कथनों की श्रृंखला नहीं वरन एक साहित्यिक वर्णन है, और यह योना के अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करती है, जब उन्होंने नीनवे के लोगों को प्रचार करने के लिए प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन किया। पुस्तक में दर्ज कई अद्भुत घटनाओं ने इसकी व्याख्या को लेकर इसे बहुत विवाद का केंद्र बना दिया है।

समीक्षा

- लेखक
- प्रामाणिकता
- तिथि
- उद्देश्य
- विषय सूची

लेखक

योना की पुस्तक का लेखक पारंपरिक रूप से अमित्तै के पुत्र योना को माना गया है, जो एक महान प्रभावशाली भविष्यवक्ता थे, जिन्होंने इस्राएल के यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान सेवा की थी (2 रा 14:25)।

पुस्तक का विषय योना को एक अत्यंत देशभक्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन उनकी भ्रामक देशभक्ति ने उन्हें इस संभावना के प्रति विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया कि इस्राएल के पूर्व शत्रु परमेश्वर से क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक का एक सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा तब प्रकट होता है जब परमेश्वर योना के संकीर्ण मानसिकता और विशेषतावादी दृष्टिकोण को फटकारते हैं।(योन 4:6–11)।

यीशु ने योना के दो अनुभवों का उपयोग अपनी पीढ़ी के लिए चिन्हों के रूप में किया। महा मच्छ के पेट में योना द्वारा बिताए गए तीन दिन और रातें यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए एक उपमा के रूप में कार्य करती हैं (मत्ती 12:38–41)। इसके अलावा, योना के प्रचार करने पर नीनवे के लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रिया का उपयोग यीशु ने अपनी पीढ़ी के बहुतों के उसके ऊपर विश्वास न करने की निंदा के रूप में उपयोग किया (लूका 11:32)।

प्रामाणिकता

योना की पुस्तक में पाए जाने वाले असामान्य तत्वों ने इसके स्वभाव के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण उत्पन्न किए हैं। न केवल योना के महा मच्छ द्वारा निगल लिए जाने की घटना ने कुछ लोगों को इस पुस्तक को कल्पनात्मक मानने पर विवश किया, बल्कि नीनवे के लोगों के पश्चाताप (योन 3:5) की घटना को भी अत्यधिक असंभव माना गया है।

योना की पुस्तक के ऐतिहासिक सत्यता का समर्थन प्रमुख बाइबिल विद्वानों द्वारा किया गया है। इन विद्वानों का मूल दृष्टिकोण उन तर्कों का खंडन करना है जो इसकी ऐतिहासिकता को नकारते हैं और उन सकारात्मक प्रमाणों की ओर संकेत करना है जो यीशु के भविष्यवाणी के संदर्भों और प्रारंभिक यहूदी परंपराओं में इस पुस्तक की ऐतिहासिकता का समर्थन करते हैं।

योना की प्रामाणिकता का विरोध करने वाले निम्नलिखित कठिनाइयों की ओर संकेत करते हैं:(1)"नीनवे के राजा" (3:6) शब्द का उपयोग एक गलती प्रतीत होती है, क्योंकि नीनवे अश्शूर की राजधानी थी। उस समय के लोग राजा को "अश्शूर का राजा" कहकर संबोधित करते। (2) नीनवे नगर का वर्णन भूतकाल में किया गया है (पद 3), जो पुस्तक की परंपरागत रचना तिथि की तुलना में बहुत बाद की तिथि का संकेत देता है। (3) नीनवे नगर का आकार बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है (पद 3)।नीनवेवासियों के सामूहिक पश्चाताप का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। (4) यह अत्यधिक असंभव प्रतीत होता है कि कोई मनुष्य इतने लंबे समय तक महा मच्छ के भीतर जीवित रह सके।

"नीनवे के राजा" के उपयोग के संबंध में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इसी तरह की अभिव्यक्तियाँ पुराने नियम में देखी जा सकती हैं। अहाब, इस्राएल के राजा, को "सामरिया का राजा" कहा जाता है (1 रा 21:1), और बेन्हदद, अराम के राजा, को "दमिश्क का राजा" कहा जाता है (2 इति 24:23)। इसलिए "नीनवे के राजा" का पदनाम नियमविरूद्ध नहीं है।

नीनवे नगर का वर्णन भूतकाल में करना केवल एक साधारण कथा का भूतकाल विवरण माना जा सकता है, जो योना के भविष्यवाणी के व्यक्त नगर के आकार को दर्शाता है।

शहर के आकार का वर्णन ("तीन दिन की यात्रा") इस बात का संकेत हो सकता है कि प्रशासनिक जिले में शामिल उपनगरों से होकर गुजरने में कितना समय लगेगा।

नीनवेवासियों का पश्चाताप इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के प्रति एक सामूहिक धर्मांतरण के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। योना की पुस्तक में उनके उत्तर को एक प्रकार के पश्चाताप के रूप में वर्णित किया गया है, जो उनके ऊपर आने वाली विनाश की चेतावनी के कारण था (योन 3:4)। जबकि संसारिक इतिहास में इस घटना का कोई उल्लेख नहीं मिलता, फिर भी यह प्रमाण हैं कि ऐसा उत्तर संभव था। दस साल से भी कम समय में (765–759 ईसा पूर्व), नीनवे नगर में सूर्य ग्रहण और दो गंभीर महामारीयों का सामना किया। इससे समझा जा सकता है कि नीनवे के लोग इस भविष्यद्वक्ता की

बातों के लिए कैसे तैयार हो सकते थे, जो इतनी असामान्य तरीके से उनके पास आया।

यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि अश्शूर के एक राजा, अदद-निरारी III ने अपनी आराधना केवल देवता नेबो तक सीमित कर दी थी। यदि योना की भविष्यवाणी की सेवकाई उसके शासन (810–783 ईसा पूर्व) के दौरान था, तो यह संभव है कि योना द्वारा प्रस्तुत यहूदी एकेश्वरवाद को एक ऐसे वातावरण में अधिक अनुकूलता मिल सकती थी, जिसे सामान्यत: एक अन्यजाति समाज में नहीं देखा जाता।

योना के उपदेश के बाद जानवरों का राष्ट्रीय पश्चाताप में भाग लेना (3:7–8) इतिहास में अज्ञात नहीं है। इतिहासकार हेरेडोटस ने पारसी साम्राज्य में इसी प्रकार की एक घटना का उल्लेख किया है।

हालाँकि, सबसे बड़ी कठिनाई वह घटना है जब योना महा मच्छ के पेट में था। यह अक्सर बताया गया है कि अधिकांश व्हेल के गले इतने बड़े नहीं होते कि व्यक्ति के आकार की वस्तु को निगल निगल जाएं। लेकिन पुस्तक में यह नहीं कहा गया कि वह व्हेल थी जिसने योना को निगला, बल्कि यह कहा गया कि एक महा मच्छ (1:17) ने उसे निगला। फिर भी, यह संभव है कि एक स्पर्म व्हेल एक आदमी के आकार के समान किसी वस्तु को निगल सके।

अतीत में कई उदाहरण दिए गए हैं जिसमें व्यक्तियों को व्हेल द्वारा निगला गया था। जबकि इनमें से कई घटनाओं को काल्पनिक माना जा सकता है, लेकिन इन सभी को बिना सोच-समझे अस्वीकार करना गलत होगा। (इन अनुभवों में से एक दिलचस्प विवरण *प्रिंसटन थियोलॉजिकल रिव्यू* 25, 1927, पृष्ठ 636 पर पाया जा सकता है)। योना का महा मच्छ के पेट के अनुभव को एक पूर्ण असंभवता के रूप में नहीं देखना चाहिए। इतिहास में परमेश्वर के कार्य अक्सर असामान्य या आश्चर्यकर्मों के साथ जुड़े होते हैं।

योना की पुस्तक की कठिनाइयों ने कई लोगों को इसे एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में नहीं वरन एक भविष्यवक्ता के दृष्टांत के रूप में मानने पर मजबूर किया है। सबसे सामान्य व्याख्या यह है कि यह पुस्तक परमेश्वर की सार्वभौमिक फिक्र की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार, यह यहूदी राष्ट्रीयतावाद के खिलाफ एक संदेश देती है। कुछ लोग यह मानते हैं कि यह दृष्टिकोण विशेष रूप से बँधवाई के बाद के काल में उपयुक्त था, जब इस्राएल अपने पूर्व शत्रुओं से गहरी नफरत करता था।

लेकिन इस दृष्टिकोण में कई कठिनाइयाँ हैं। जबकि पुराने नियम में कई दृष्टांत हैं, कोई भी योना की पुस्तक जितना विस्तृत नहीं है। इसके अलावा, क्योंकि दृष्टांत के प्रमुख तत्व पात्रों, विषयों, या अवधारणाओं को प्रतीकित करते हैं जो दृष्टांत के मुख्य शिक्षा में योगदान करते हैं, इस दृष्टिकोण के समर्थकों के लिए यह दिखाना मुश्किल है कि योना के मच्छ के पेट का अनुभव दृष्टांत के मुख्य शिक्षा में कैसे योगदान करता है।

पुस्तक के लिए एक और दृष्टिकोण यह है कि इसे एक विस्तारित उपमा के रूप में देखा जाए। उपमा एक साहित्यिक रूप है, जिसके मूल तत्व वास्तविक जीवन के पहलुओं को प्रतीकात्मक रूप में समझाने के लिए होते हैं। इसके वास्तविक अर्थ को सामान्यतः लेखक द्वारा स्पष्ट किया जाता है। पुराने नियम में, उपमा छोटे साहित्यिक रूप होते हैं जो किसी घोषणापत्र को बल देने के लिए उपयोग किए जाते हैं। लेकिन योना की पुस्तक इस श्रेणी में नहीं आती, क्योंकि इसमें व्यक्तियों, विषयों, और घटनाओं का कोई स्पष्ट प्रतीकात्मक अर्थ नहीं दिया गया है।

आखिरकार, योना की पुस्तक की ऐतिहासिकता को नकारने के लिए दिए गए तर्कों के आधार पर इसे अस्वीकार करने का कोई मजबूत कारण नहीं दिखता। यीशु ने योना की घटना का उल्लेख इस प्रकार किया कि इससे यह प्रतीत होता है कि उन्होंने इसकी वैधता को स्वीकार किया था।

तिथि

यदि योना, अमित्तै का पुत्र था जिसका उल्लेख 2 राजाओं 14:25 में किया गया है, तो यह भविष्यवाणी यारोबाम द्वितीय के शासनकाल (793–753 ईसा पूर्व) की मानी जाएगी। तब योना उन महान आठवीं सदी के भविष्यवक्ताओं में से एक होगा, जिन्होंने इस्राएल के रजत युग के दौरान सेवा की।

जो लोग मानते हैं कि यह पुस्तक योना के अलावा किसी अन्य लेखक द्वारा लिखी गई है, वे इसके लेखन को विभिन्न समयों में रखते हैं—निनवे के पतन के बाद के समय से लेकर बँधवाई के बाद के काल तक।

पृष्ठभूमि

प्राचीन नीनवे के स्थल पर पुरातात्विक उत्खनन से कई कलाकृतियाँ और साहित्यिक कार्य प्राप्त हुए हैं, जो यह संकेत देते हैं कि यह अपने इतिहास के एक बड़े हिस्से के लिए एक सांस्कृतिक केंद्र था। मध्य अश्शूरी काल में, नीनवे का नगर बहुत बड़ा हो गया और एक प्रशासनिक केंद्र बन गया। कुछ सबसे शक्तिशाली अश्शूरी राजाओं ने नीनवे से शासन किया।

नीनवे के दक्षिण में स्थित कालह शहर का क्षेत्रफल नीनवे से काफी छोटा था, लेकिन इसमें लगभग 70,000 लोग निवास करते थे। योना की भविष्यवाणी में नीनवे की विशाल जनसंख्या का वर्णन इसके साथ मेल खाता है।

उद्देश्य

योना की पुस्तक का उद्देश्य यह सिखाना है कि परमेश्वर का अनुग्रह केवल यहूदी लोगों तक सीमित नहीं था। यह शिक्षा पुस्तक के अंत में स्पष्ट होती है, जब योना अपनी दुखों पर अफसोस करते हुए उस पेड़ के नष्ट होने का शोक करता है, जिसने उसे छाया दी थी। परमेश्वर योना की उस पेड़ के लिए

चिंता को निनवे के हजारों लोगों के लिए अपनी दया से तुलना करके दिखाते हैं।

यह पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि परमेश्वर की करुणा योना के समय के यहूदियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि पश्चाताप करने वाले सभी लोगों के लिए उपलब्ध थी। यहाँ तक कि इस्राएल के शत्रु भी परमेश्वर की करुणा का अनुभव कर सकते थे।

विषय सूची

योना की किताब की शुरुआत प्रभु के आदेश से होती है, जिसमें प्रभु योना को नीनवे के लोगों को उपदेश देने के लिए कहते हैं। लेकिन योना नीनवे जाने के लिए तैयार नही था क्योंकि वह जानता था कि नीनवे के लोग पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर उन पर दया करेंगे। योना को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि नीनवे अश्शूर लोगों का शहर था, और वह उन्हें पसंद नहीं करता था। इसलिए, योना ने प्रभु की उपस्थिति से भागने की कोशिश की। वह याफा गया और तरशीश जाने वाले एक जहाज पर सवार हो गया। तरशीश दक्षिणी स्पेन में था और प्राचीन भूमध्यसागरीय दुनिया में जितना दूर वह जा सकता था, उतना ही दूर था (1:1–3)।

परमेश्वर ने योना को अवज्ञा करने पर बिना दंड दिए नहीं छोड़ा (1:4–16)। परमेश्वर के प्रेम ने योना को अनुशासन सिखाना जरूरी समझा। यह अनुशासन एक बड़ी आंधी के साथ शुरू हुआ, जिसे परमेश्वर ने भेजा था (पद 4)। इस भयंकर आंधी के डर से मल्लाह लोग अपने-अपने देवताओं से प्रार्थना करने लगे और जहाज को हल्का करने के लिए सामान समुद्र में फेंकने लगे (पद 5)। सारी हलचल के बीच योना जहाज के निचले हिस्से में सो रहा था।

मल्लाह लोगों को अब तक यह ज्ञात नहीं था कि योना ही वास्तविक समस्या थे। जहाज के माँझी ने योना को जगाया और उनसे तूफान से बचने के लिए अपने परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए कहा (पद 6)।

उनकी प्रार्थनाओं का कोई उत्तर न मिलने पर, मल्लाह लोगो ने यह पता लगाने के लिए चिट्ठी डाली कि जहाज पर कौन परमेश्वर के क्रोध का कारण था जिसने उन पर तूफान लाया था (1:7); चिट्ठी ने संकेत दिया कि योना दोषी थे। फिर मल्लाह लोग यह जानना चाहते थे कि किस परमेश्वर के कारण तूफान आया और क्यों। योना की गवाही सरल और स्पष्ट थी: वे एक इब्री थे जो उस प्रभु की आराधना करते थे जिसने जल और स्थल दोनों को बनाया है (पद 9)।

मल्लाह लोगो ने योना से पूछा कि उन्हें उसके साथ क्या करना चाहिए क्योंकि समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती थीं (1:11)। माँझी ने पहले योना से कहा था कि प्रार्थना करें या नाश हो जाए। अब योना ने बताया कि प्रार्थना करने से वह नहीं होगा जो उसके नाश होने से हो सकता था (पद 12)। योना ने उनसे उसे समुद्र में फेंकने के लिए कहा।

योना की विनती मानने से पहले, मल्लाह लोगो ने जहाज को बचाने के लिए संघर्ष किया (1:13)। अपने प्रयास में असफल होने पर, उन्होंने योना को समुद्र में फेंक दिया (पद 15)। कल्पना करें कि इन मल्लाह लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा होगा जब जैसे ही योना का शरीर समुद्र में गया तूफान तुरंत थम गया। उनके अनुभव ने जहाज के दल को प्रभु का भय मानने पर मजबूर कर दिया, और उन्होंने प्रभु को बलिदान चढ़ाया और प्रतिज्ञाएँ कीं (पद 16)।

लेकिन परमेश्वर ने योना के साथ अपनी योजना समाप्त नहीं की थी, क्योंकि उन्होंने उसे निगलने के लिए एक महा मच्छ तैयार की (1:17)। योना महा मच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात रहा (तुलना करें मत्ती 12:38–41)। महा मच्छ के भीतर से योना ने परमेश्वर से प्रार्थना की (योन 2:1), और समुद्र में मृत्यु से बचाने के लिए उनकी प्रार्थना सुनने के लिए उनका धन्यवाद किया (पद 7–8)। योना के छुटकारे ने उसे परमेश्वर के प्रति एक नए आराधक के स्तर पर ला दिया (पद 9)। यह महत्वपूर्ण है कि उसकी प्रार्थना भजन संहिता के साथ गहरे व्यक्तिगत परिचय को दर्शाती है (भज 3:8; 5:7; 18:4–19; 30:2–3; 31:6, 22; 39:9; 42:6–7; 59:17; 69:1–2; 120:1; 142:3; 144:2)।

योना की प्रार्थनाओं का अंतिम उत्तर तब आया जब परमेश्वर ने उन्हें अपने आज्ञा का पालन करने और अपनी वाचाओं को निभाने का अवसर प्रदान किया। समुद्री जीव ने योना को किनारे पर उगल दिया (योन 2:10)।

अब लेखक परमेश्वर द्वारा निनवे नगर के साथ किए गए व्यवहार (अध्याय 3–4) पर ध्यान केंद्रित करता है। योना ने अपनी अनाज्ञाकारिता के लिए पश्चाताप किया और इस पश्चाताप को निनवे जाकर परमेश्वर का संदेश सुनाने के द्वारा प्रकट किया (3:1–3)। जब वह निनवे पहुंचा, तो उसने परमेश्वर का संदेश सुनाना शुरू किया। नगर के निवासियों को बताया गया कि उनके पास 40 दिन हैं (पद 4), लेकिन उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दी।

प्रजा और उनके राजा ने टाट ओढ़कर और उपवास करके पश्चाताप किया (3:5–6)। निजी रूप से पश्चाताप करने के बाद, राजा ने परमेश्वर के संदेश के प्रति प्रतिक्रिया को और मजबूत करने के लिए सार्वजनिक घोषणा की (पद 7–9)।

नीनवे के पश्चाताप (3:10) को परमेश्वर द्वारा स्वीकार करने से योना का नाराजगी भरा रवैया फिर से लौट आया और उन्होंने शिकायत की (4:1–3)। हाल ही में परमेश्वर के प्रति प्रार्थनापूर्ण स्तुति का भजन गाने वाले योना अब कड़वी शिकायत में बदल गए। योना ने फिर से परमेश्वर से प्रार्थना की (4:2), और पहले आदेश का पालन न करने का कारण बताया। उन्हें परमेश्वर के प्रेमपूर्ण और क्षमाशील स्वभाव का व्यक्तिगत ज्ञान था, और वे अपने देश के शत्रुओं के प्रति उस प्रेम और क्षमा के विस्तार से नाराज थे। मूर्खतापूर्ण तरीके से,

योना ने परमेश्वर के नीनवे के लोगों के बीच काम को देखने के बजाय मरने की इच्छा जताई (पद 3)।

परमेश्वर की करुणा नीनवे पर प्रकट हुई थी, लेकिन वे योना को भी उदाहरण और शिक्षा के माध्यम से फिर से करुणा दिखाने वाले थे (4:4–11)। परमेश्वर का शांत प्रश्न, "क्या तुम्हारा इस पर क्रोधित होना सही है?" योना के अंतर्मन को अवश्य ही छू गया होगा (पद 4)। लेकिन भविष्यद्वक्ता ने नीनवे के पूर्वी ओर एक अस्थायी छप्पर में रहना पसंद किया (पद 5) यह देखने के लिए कि क्या कुछ होगा।

परमेश्वर ने योना के साथ अपने व्यवहार में उपयोग की जाने वाली प्रकृति की वस्तुओं में एक पेड़ (कुछ बड़े पत्तों वाला) जोड़ा (4:6)। योना के आराम के लिए इस प्रावधान ने उसे आनंदित किया। लेकिन पेड़ परमेश्वर द्वारा भेजे गए एक कीड़े द्वारा नष्ट कर दिया गया (पद 7)। फिर परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, ताकि हवा को सूखा सके, गर्मी बढ़ा सके, और योना की दुर्दशा और बढ़ जाए (पद 8)। फिर से, योना ने मरने की प्रार्थना की।

दूसरी बार परमेश्वर ने योना से पूछा, “क्या यह सही है कि तुम पेड़ के मरने पर क्रोधित हो?” (4:9)। इस उदाहरण का उद्देश्य असंवेदनशील भविष्यद्वक्ता को समझाना था। योना ने हालांकि और अधिक कड़वाहट के साथ प्रतिक्रिया दी (पद 9)। योना बहुत परेशान था क्योंकि रेंड़ के पेड़ के नुकसान ने उसे व्यक्तिगत रूप से प्रभावित किया, भले ही उसका निर्माण उससे संबंधित नहीं था (पद 10)। प्रभु यहोवा ने मनुष्य को बनाया था। प्रभु नीनवे के लोगों की भलाई सोचते थे। क्या महान सृष्टिकर्ता को नीनवे के विनाश पर, जिसमें 120,000 बच्चे और सभी जानवर थे, क्रोधित होने का अधिकार नहीं था (पद 11)? जैसे योना ने पेड़ के संरक्षण की इच्छा की थी, वैसे ही परमेश्वर ने नीनवे के संरक्षण की और भी अधिक इच्छा की थी।

यह भी देखें योना (व्यक्ति); भविष्यवाणी; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिन।

योनातान

1. यहूदा के बैतलहम से एक लेवी, जो मूसा के पुत्र गेर्शोम का वंशज था (देखें 1 इति 23:14–15)। उसने पहले एप्रैम में मीका के लिए और बाद में न्यायियों के समय में दान के गोत्र के लिए याजक के रूप में सेवा की (न्या 17:7–10; 18:30)।
2. एक बिन्यामिनी जो शाऊल का ज्येष्ठ पुत्र और मरीब्बाल का पिता था (1 शमू 14:49; 1 इति 8:33–34)। योनातान एक साहसी योद्धा थे (1 शमू 13:2–4; 14:1–15; 2 शमू 1:22) और दाऊद के वफादार मित्र थे (1 शमू 18:1–5; 19:1–7)। अन्ततः पलिश्तियों ने उन्हें और उनके भाइयों को गिलबो पर्वत पर मार डाला (1 शमू 31:2; 1 इति 10:2)।
3. महायाजक एब्यातार का पुत्र और दाऊद का वफादार सेवक (2 शमू 15:27, 36; 17:17, 20; 1 रा 1:42–43)।
4. शिमआह (शिमा) का पुत्र और दाऊद का भतीजा (2 शमू 21:21; 1 इति 20:7)।
5. शागे हरारी का पुत्र और दाऊद के शक्तिशाली योद्धाओं में से एक (2 शमू 23:33; 1 इति 11:34)।
6. यहूदी, यादा का पुत्र, येतेर का भाई और पेलेत तथा जाजा का पिता (1 इति 2:32–33)।
7. उज्जियाह का पुत्र और राजा दाऊद के भण्डारियों में से एक (1 इति 27:25)।
8. दाऊद का एक रिश्तेदार जो शाही घराने में एक सलाहकार और शास्त्री के रूप में कार्यरत था (1 इति 27:32)।
9. एबेद का पिता। एबेद बाबेल की बंधुआई के बाद एज्रा के साथ यहूदा लौट आया (एज्रा 8:6)।
10. असाहेल का पुत्र। उसने और यहजयाह ने एज्रा के उस विचार का विरोध किया कि इस्राएल के पुत्र उन विदेशी महिलाओं को तलाक दें जिनसे उन्होंने बेबीलोन में बँधुआई से लौटने के बाद विवाह किया था (एज्रा 10:15)।
11. योयादा का पुत्र एक लेवी। वह यद्दू का पिता और येशुअ का वंशज था, जो महायाजक थे (नहे 12:11)। वह शायद वही व्यक्ति हो सकता है जो यहोहानान (या योहानान) है, एल्याशीब का पोता, जिसका उल्लेख एज्रा 10:6 में किया गया है (देखें नहे 12:23)। *देखें*यहोहानान #4।

12. महायाजक के रूप में योयाकीम के समय में मल्लूक के परिवार से याजक और अगुवा (नहे 12:14)।
13. एक याजक, जकर्याह का पिता और आसाप का वंशज (नहे 12:35)।
14. वह प्रधान जिसके घर में राजा सिदकिय्याह के शासनकाल में यिर्मयाह को कैदी के रूप में रखा गया था (यिर्म 37:15, 20; 38:26)।
15. कारेह के पुत्र ने गदल्याह से सुरक्षा की मांग की (यिर्म 40:8)।
16. योनातान मत्तित्याह का सबसे छोटा पुत्र और यहूदा मक्काबी का भाई था। जब यहूदा बक्कीदेस के खिलाफ युद्ध में मारा गया (1 मक्का 9:18), तो योनातान ने उसकी जगह ली (9:28–31)। तीन वर्षों तक, योनातान ने सीरिया के खिलाफ एक छोटे दल का नेतृत्व किया। उस समय सीरिया आंतरिक राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा था, जिससे योनातान को लाभ मिला। 157 ई.पू. में, सीरियाई शासकों ने योनातान के साथ संधि कर ली, जिससे उसे अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर मिला।
पाँच वर्ष बाद, योनातान यरूशलेम का महायाजक और यहूदिया का प्रशासक बना (1 मक्का 10:1–11)। उसके नेतृत्व में, यहूदियों का क्षेत्र और शक्ति बढ़ी। योनातान ने कुशलता से सीरियाई राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा किया। इन प्रतिद्वंद्वियों में से एक त्रिफोन था, जो सीरिया के सिंहासन पर अधिकार जमाना चाहता था और योनातान को अपने लिए खतरा मानता था। 143 ई.पू. में, त्रिफोन ने योनातान को धोखे से बंदी बना लिया और अन्ततः उसकी हत्या कर दी गई। इसके बाद उसके भाई शमौन ने यहूदियों का नेतृत्व किया (1 मक्का 10:12–13)।

योनादाब

1. राजा दाऊद का भतीजा, जो दाऊद के भाई शिमआह का पुत्र था। वह दाऊद के पुत्र अम्नोन का मित्र था और उसने एक षड्यंत्र रचा, जिससे अम्नोन ने अपनी सौतेली बहन तामार को बहकाया (2 शमू 13:3–5)। तामार के भाई, अबशालोम ने बदला लेने की ठानी और अन्ततः अम्नोन को मार डाला।

2. रेकाब का पुत्र; केनियों का वंशज (1 इति 2:55, nlt में यहोनादाब)। उसने रेकाबियों के धार्मिक निर्देश की स्थापना की, जिन्होंने एक घुमंतू परम्परा को बनाए रखा। उसने यहू को अहाब के घर के खूनी सुधार में प्रोत्साहित किया (2 रा 10:15, 23)।

योनान, जोनान

यीशु के एक पूर्वज, जिनका उल्लेख लूका 3:30 में है।

देखें यीशु मसीह का वंशावली।

योब

योब

इस्साकार के पुत्र, याशूब के लिए वैकल्पिक नाम, उत्पत्ति 46:13 में। *देखें* याशूब #1।

योबाब

योबाब

1. योक्तान के पुत्र एबेर की वंशावली में (उत् 10:29; 1 इति 1:23)।

2. प्रारम्भिक एदोमी राजा। वे बोस्रा के जेरह के पुत्र थे (उत् 36:33–34; 1 इति 1:44–45)।

3. मादोन के राजा, जिन्होंने अन्य कनानी राजाओं के साथ मिलकर हासोर के याबीन के साथ एक उत्तरी संघ में शामिल होकर इस्राएलियों को कनान के उत्तरी भाग पर कब्जा करने से रोकने का प्रयास किया। उन्हें मेरोम नामक ताल में युद्ध में मारा गया (यहो 11:1; 12:19)।

4. शहरैम के पुत्र उनकी पत्नी होदेश द्वारा, जो बिन्यामीन के गोत्र की सदस्य थीं (1 इति 8:9)।

5. बिन्यामीन के गोत्र से एल्पाल का पुत्र (1 इति 8:18)।

योम किप्पुर

इस्राएल के पर्वों में से एक दिन राष्ट्र के पापों के प्रायश्चित से संबंधित है (लैव्य 23:26–32)। *देखें* इस्राएल के पर्व और उत्सव।

योयाकीम

योयाकीम

लेवियों के महायाजक महायाजकों के परिवार में। येशुअ के पुत्र और एल्याशीब के पिता महायाजक, नहेम्याह के समकालीन (नहे 12:10–12, 26)।

योयादा

योयादा

1. पासेह का पुत्र, जिसने नहेम्याह के दिनों में मशुल्लाम के साथ यरूशलेम की दीवार के पुराने फाटक की मरम्मत की (नहे 3:6)।

2. लेवियों और महायाजक यरूशलेम में बँधुआई के बाद के युग के दौरान, येशुअ के परपोते, एल्याशीब के पुत्र, और योनातान के पिता ("योहानान" या "यहोहानान," नहे 12:10–11, 22)। उन्हें नहेम्याह 13:28 में योयादा भी कहा गया है, जहाँ हम पढ़ते हैं कि उनके पुत्रों में से एक को सामरिया के अधिकारी सम्बल्लत की बेटी से विवाह करने के कारण याजक के पद से निष्कासित कर दिया गया था।

योयारीब

1. यहूदी अगुवों में से एक, जिसे एज्रा ने कासिप्या में इद्दो के पास भेजा था, ताकि वह बाबुल से यहूदा लौटने वाले यहूदियों के कारवाँ के लिए लेवीय और मन्दिर सेवकों को एकत्र कर सके (एज्रा 8:16)। उसे 1 इतिहास 9:10 में यहोयारीब भी कहा जाता है।

2. जकर्याह का पुत्र, अदायाह का पिता और यहूदा के एक परिवार का पूर्वज, जो बँधुआई के बाद नहेम्याह के अधीन यरूशलेम में पुनः बस गए (नहे 11:5)।

3. यदायाह का पिता, एक याजक जिसने नहेम्याह के दिनों में मन्दिर में सेवा की (नहे 11:10)। सम्भवतः योयारीब के पूर्वज यहोयारीब थे, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान निवासस्थान में सेवा करने वाले याजकों के पहले क्रम के प्रमुख थे (1 इति 24:7; पुष्टि करें 9:10)।

4. याजकों के उन प्रधानों में से एक जो जरुब्बाबेल और येशू के साथ निर्वासन के बाद यहूदा लौटे (नहे 12:6)। अगली पीढ़ी में उनके परिवार का नेतृत्व मत्तनै ने किया (पद 19)।

योरा

योरा

एज्रा 2:18 और नहेम्याह 7:24 में हारीफ के लिए एक वैकल्पिक नाम है। *देखें*हारीफ।

योराम

1. तोई का पुत्र और हमात का राजा। तोई ने दाऊद को बधाई देने के लिए उसे भेजा जब दाऊद ने सोबा के हदादेजेर पर विजय प्राप्त की (2 शमू 8:9–12)। उसे 1 इतिहास 18:10 में हदोराम भी कहा गया है।

2. यहूदा के राजा यहोराम (853–841 ई.पू.) के लिए एक वैकल्पिक नाम है। *देखें*यहोराम #1।

3. इस्राएल के राजा यहोराम (852–841 ई.पू.) का एक वैकल्पिक नाम। *देखें*यहोराम #2।

4. लेवी के गोत्र से यशायाह के पुत्र (1 इति 26:25)।

योराह

योराह

गाद के गोत्र से गिलाद का पुत्र (1 इति 5:14)।

योरीम

यीशु के एक पूर्वज, जिनका उल्लेख लूका 3:29 में है।

*देखिए*यीशु मसीह की वंशावली।

योरेश्याह

योरेश्याह

यरोहाम का पुत्र, एक बिन्यामिनी अगुवा जो यरूशलेम में रहता था (1 इति 8:27)।

योरै

गाद के गोत्र का एक सदस्य (1 इति 5:13)।

योर्काम

रहम को यहूदा के वंशज के रूप में कालेब की वंशावली के माध्यम से पहचाना गया है (1 इति 2:44), इस नाम को शायद एक स्थान-नाम के रूप में समझा जाना चाहिए और योकदाम के साथ पहचाना जाना चाहिए (यहो 15:56)।

योशबकाशा

हेमान का पुत्र और 24 याजकीय गायक मंडलियों में से 17वीं मंडली का प्रधान, जिसे दाऊद के राज्यकाल में मन्दिर की सेवा के लिए नियुक्त किया गया था (1 इति 25:4, 24)।

योशव्याह

एलनाम का पुत्र, यरीबै का भाई और दाऊद के 30 वीर योद्धाओं में से एक (1 इति 11:46)।

योशा

शिमोन के गोत्र का प्रधान (1 इति 4:34)।

योशापात

1. मेतेनी का निवासी और दाऊद के पराक्रमी वीरों में से एक (1 इति 11:43)।

2. दाऊद की अगुवाई में जब परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम लाया गया, तब सात याजकों को इसके आगे नरसिंगा फूंकने के लिए नियुक्त किया गया था। उनमें से एक (1 इति 15:24)।

योशिब्याह

शिमोन के वंशजों का प्रधान, सरायाह का पुत्र और येहू का पिता (1 इति 4:35)।

योशियाह

1. दक्षिणी यहूदा के सोलहवें राजा (640–609 ईसा पूर्व)। एक धर्मी पुरुष, वे अपने दादा मनश्शे और अपने पिता आमोन के विपरीत थे। वास्तव में, पवित्रशास्त्र यह बताता है कि उनके पहले या बाद में कोई राजा नहीं था जो व्यवस्था के प्रति इतना आज्ञाकारी रहा (2 रा 23:25)। उनके नाम का यूनानी रूप, योशिय्याह, मत्ती 1:10–11 में प्रकट होता है।

योशिय्याह का काल

जब योशिय्याह 640 ईसा पूर्व में राजा बने, तो अंतरराष्ट्रीय स्तर में भारी बदलाव होने वाला था। महान अश्शूरी राजा अशुर्बनिपाल की 633 ईसा पूर्व में मृत्यु के बाद, उनके सिंहासन पर औसत दर्जे के शासक आए, और साम्राज्य में काफी अशांति होने लगी। नबूकदनेस्सर के पिता नबोपोलासर ने बाबेल में राजगद्दी पर कब्जा कर लिया और 626 ईसा पूर्व के अंत में नव-बाबेल साम्राज्य की स्थापना की। जल्द ही बाबेली और मादीयों ने मिलकर अश्शूरी साम्राज्य को नष्ट कर दिया और 612 ईसा पूर्व में नीनवे नगर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। जैसे-जैसे बाबेली शक्ति पूर्व में बढ़ी, अश्शूरी का इस्राएल के पूर्व राज्य पर नियंत्रण ढीला पड़ गया और यहूदा पर उनका दबाव लगभग समाप्त हो गया। नीनवे के पतन के बाद, अश्शूरी ने अपनी राजधानी हारान में स्थापित की। वहां उन्हें 610 ईसा पूर्व में बाबेली और सिथियनों द्वारा पराजित किया गया। इस समय मिस्र के फ़िरौन नेको II ने अश्शूर का समर्थन करने का निर्णय लिया। 609 ईसा पूर्व के वसंत के अंत में उन्होंने यहूदा के माध्यम से आगे बढ़कर योशिय्याह को पराजित किया और मार डाला, और अराम में गर्मियों में युद्ध किया। इस समय, अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक स्तर में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। शक्तिशाली अश्शूरी राजा अशुर्बनिपाल की 633 ईसा पूर्व में मृत्यु के बाद, कमजोर शासक उनके स्थान पर आए और साम्राज्य अशांति की स्थिति में आ गया। नव-बाबेली साम्राज्य की स्थापना 626 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर के पिता नबोपोलासर द्वारा की गई थी। बाबेली और मदीयों ने मिलकर अश्शूरी साम्राज्य को समाप्त कर दिया, अंततः 612 ईसा पूर्व में नीनवे नगर को नष्ट कर दिया। जैसे-जैसे बाबेली साम्राज्य की शक्ति बढ़ी, अश्शूरी का पूर्व राज्य इस्राएल पर नियंत्रण कमजोर हो गया और यहूदा पर उनका दबाव कम हो गया। नीनवे के पतन के बाद, अश्शूरी ने अपनी राजधानी हारान में परिवर्तित् की, जहां उन्हें बाद में 610 ईसा पूर्व में बाबेली और सिथियनों द्वारा पराजित किया गया। इसी समय मिस्र के फ़िरौन नको II ने अश्शूर का समर्थन करने का निर्णय लिया, जिससे 609 ईसा पूर्व में योशिय्याह की पराजय और अराम में उनके युद्ध का नेतृत्व हुआ।

योशिय्याह के शासनकाल से पहले, यहूदियों ने मनश्शे (697–642 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान भयंकर मूर्तिपूजा को अपना लिया था। बाल की उपासना, मोलेक आराधना, और अन्य अन्यजाति धर्म, साथ ही तंत्र-मंत्र और ज्योतिष विद्या भी पूरे भूमि में फैल गए थे। एक झूठी वेदी भी यरूशलेम के मन्दिर में खड़ी थी, और यरूशलेम के पास अन्यजाति देवताओं के लिए नर-बलि किए जाते थे। देश पूरी तरह से भ्रष्ट हो गया था। हालांकि मनश्शे के बाद के वर्षों में कुछ सुधार हुआ, लेकिन उनके पुत्र आमोन (642–640 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान स्थितियाँ फिर से अपनी पूर्व दुर्गति में लौट आईं। 640 ईसा पूर्व में आमोन के घराने के

अधिकारियों ने उनकी हत्या कर दी, और "भूमि के लोगों" ने योशिय्याह को सिंहासन पर बिठाया (2 रा 21:26; 22:1; 2 इति 33:25–34:1)।

योशिय्याह की सुधार की गतिविधियाँ

योशिय्याह केवल आठ वर्ष के थे जब वे राजा बने। ऐसा माना जाता है कि उनके उत्कृष्ट सलाहकार या हाक़िम अपने विश्वास से बहुत प्रभावित थे। जब वे 16 वर्ष के हुए, तो उन्होंने अपने पूर्वज दाऊद के परमेश्वर की खोज स्वयं शुरू की। जब वे 20 वर्ष के हुए, तो वे भूमि की मूर्तिपूजा को लेकर बहुत चिंतित हो गए और यहूदा और यरूशलेम से अन्यजातीय ऊँचे स्थानों, पेड़ों और मूर्तियों को हटाने के लिए एक बड़ा प्रयास शुरू किया। योशिय्याह को मूर्तिपूजा से इतनी अधिक नफरत थी कि उन्होंने अन्यजातीय पुजारियों के कब्रों को खोलकर उनके हड्डियों को मूर्तिपूजा की वेदियों पर जलाया, फिर वेदियों को नष्ट किया गया।

योशिय्याह ने अपने सुधार आंदोलन को यहूदा की सीमाओं से परे ले जाकर बेतेल के पूजा केंद्र के प्रति विशेष रूप से अपना क्रोध व्यक्त किया, जहां यारोबाम ने अपनी झूठी आराधना स्थापित की थी। भविष्यवाणी को पूरा करने लिए (1 रा 13:1–3), उन्होंने वेदी और उच्च स्थान को नष्ट कर दिया और स्थल को अपवित्र करने के लिए वहां के पुजारियों की हड्डियों को जला दिया (2 रा 23:15–18)। जो उन्होंने बेतेल में किया, वही उन्होंने समरिया के राज्य में भी किया (पद 19–20)।

जब योशिय्याह 26 वर्ष के थे, उन्होंने यरूशलेम में मंदिर को शुद्ध और मरम्मत करने के लिए एक योजना शुरू की (2 रा 22:3)। शापान, राजा के प्रशासनिक सहायक, ने काम का आदेश दिया; हिल्किय्याह याजक ने पुनर्निर्माण और मरम्मत की देखरेख की। मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य में, हिल्किय्याह को व्यवस्था की पुस्तक मिली, जिसकी स्वरूप और विषय अन्यथा अज्ञात थी। संभवतः मनश्शे के विपत्ति के दिनों में परमेश्वर के वचन को नष्ट करने का एक जानबूझकर प्रयास किया गया था। किसी भी स्थिति में, यहूदा में पवित्रशास्त्र का ज्ञान बहुत कम था।

जब शाफान ने व्यवस्था की पुस्तक योशिय्याह के सामने पढ़ी, तो राजा परमेश्वर से दूर होने पर दी गई दंड की चेतावनियों से गहरे चिंतित हो गए। उन्होंने देश के लिए परिणामों के बारे में पूछने हेतु भविष्यद्वक्तिन हुल्दा के पास एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। भविष्यद्वक्तिन ने उत्तर दिया कि यहूदा पर उनके पापों के कारण परमेश्वर का दंड अवश्य आएगा, लेकिन उन्होंने योशिय्याह को यह आश्वासन भी दिया कि क्योंकि उनका हृदय परमेश्वर के प्रति समर्पित है, यह दंड उनके जीवनकाल में नहीं आएगा।

शासक ने परमेश्वर की व्यवस्था के सार्वजनिक पाठ के लिए एक बड़े प्रतिनिधि समूह को बुलाया—विशेष रूप से उन भागों को जो परमेश्वर के प्रति उत्तरदायित्वों पर केंद्रित थे। शासक और लोगों ने परमेश्वर के सामने उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए एक वाचा बाँधी।

एक निर्दोष एकेश्वरवादी विश्वास बनाए रखने के महत्व को समझते हुए, राजा ने मंदिर और यरूशलेम को शुद्ध करने के लिए और भी कठोर प्रयास किए। उन्होंने बाल आराधना में उपयोग किए जाने वाले बर्तनों को नष्ट कर दिया, यहूदा के राजाओं द्वारा सूर्य आराधना के लिए दिए गए घोड़ों के स्मारक, सूर्य को समर्पित रथ, मंदिर के पास के समलैंगिक समाज, और सुलैमान द्वारा बनाए गए और उनके समय से उपयोग में आ रहे मंदिरों को नष्ट कर दिया। इसके अलावा, उन्होंने यहूदा के सभी नगरों में अन्यजाति मंदिरों और उच्च स्थानों को समाप्त करने के लिए कठोर प्रयास किए (2 रा 23:4–14)।

योशिय्याह की मृत्यु

योशिय्याह ने यहूदी क्षेत्र से होकर फ़िरौन नको की सेना के प्रस्थान का विरोध क्यों किया, इसका सटीक कारण अज्ञात है। हो सकता है कि वे घृणित अश्शूरियों तक सहायता पहुँचने से रोकना चाहते हों या अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना चाहते हों। इस संघर्ष में योशिय्याह गंभीर रूप से घायल हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। योशिय्याह के निधन पर यिर्मयाह और समस्त लोगों ने गहरा शोक व्यक्त किया (2 इति 35:25)। यह स्वाभाविक था, क्योंकि उनका धर्मपरायण राजा चला गया था, और कुछ ही वर्षों में वह न्याय, जो उनके जीवनकाल में रोका गया था, राष्ट्र पर आ पड़ा।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल का इतिहास।

2. सपन्याह का पुत्र, जो बंधुआई के बाद अन्य यहूदियों के साथ यरूशलेम लौटे (जक 6:10, 14; इब्री "हेन")।

योशेब्यश्शेबेत

योशेब्यश्शेबेत

2 शमूएल 23:8 में दाऊद के पराक्रमी पुरुषों के सेनापति, याशोबाम की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें* याशोबाम #1।

योसादाक

योसादाक

सरायाह का पुत्र और उन निर्वासितों में से एक जिन्हें नबूकदनेस्सर द्वारा बाबुल ले जाया गया था (1 इति 6:14–15)। वह येशुअ (जिसे यहोशू भी कहा जाता है) के पिता थे, जो जरूब्बाबेल के दिनों में निर्वासन के बाद यरूशलेम में महायाजक थे (एज्रा 3:2, 8; 5:2; 10:18; नहे 12:26; हग

1:1–14; 2:2–4; जक 6:11)। योसादाक को अक्सर यहोसादाक भी कहा जाता है।

योसिव्याह

योसिव्याह

शलोमीत के पिता, एक परिवार के अगुआ जिनके 160 सदस्य एज्रा के साथ पलिश्त लौटे थे (एज्रा 8:10)।

योसेख

यीशु के पूर्वज का उल्लेख केवल लूका 3:26 में मिलता है।

देखिए यीशु मसीह का वंशावली।

योसेस

योसेस*

1. मरियम के बेटे यूसुफ के लिए वैकल्पिक वर्तनी, मर 6:3 में। *देखें* यूसुफ #7।

2. यूसुफ के लिए किंजेव वर्तनी, जिसका उपनाम बरनबास है, प्रेरितों के काम 4:36 में। *देखें* बरनबास।

योहा

1. बिन्यामीन और बरीआ के नौ पुत्रों में से एक (1 इति 8:16)।

2. तीसी, यदीएल का भाई और दाऊद के पराक्रमी वीरों में से एक (1 इति 11:45)।

योहानान

योहानान नाम का अर्थ है "यहोवा अनुग्रहकारी रहे हैं।" यह यहोहानान के वैकल्पिक रूप में भी प्रकट होता है और यूहन्ना नाम इसी से उत्पन्न हुआ है। पुराने नियम में इस नाम के कई व्यक्ति मिलते हैं।

1. कारेह का पुत्र (2 रा 25:23)। वह यिर्मयाह का समकालीन यहूदी नेता था और यरूशलेम के पतन के बाद यहूदा के राज्यपाल गदल्याह का समर्थक था (यिर्म 40:8, 13)। उसने गदल्याह को इश्माएल द्वारा उसकी हत्या की योजना के बारे में चेतावनी दी (पद 13–16)। जब चेतावनी को नज़रअंदाज़ किया गया और योहानान को संभावित हत्यारे को मारने की अनुमति नहीं दी गई, तो गदल्याह की हत्या कर दी गई। बाद में योहानान ने इस्माएल से बदला लिया और उन लोगों को बचाया जिन्हें बन्दी बना लिया गया था (41:14–18), लेकिन वह इश्माएल को पकड़ नहीं सका। बाबेली प्रतिशोध के भय से, उसने मिस्र में शरण लेने की योजना बनाई। यिर्मयाह ने, जिससे योहनान ने परामर्श किया, इस कदम के खिलाफ परमेश्वर का वचन दिया (42:1–22), लेकिन योहानान सलाह मानने के लिए तैयार नहीं था (43:2–3) और यहूदियों को, जिसमें यिर्मयाह और बारूक भी शामिल थे, मिस्र ले गया (पद 5–7)।

2. यहूदा के राजा योशिय्याह का सबसे बड़ा पुत्र (1 इति 3:15)। सम्भवतः उसकी कम उम्र में मृत्यु हो गई होगी, क्योंकि वह अपने पिता के सिंहासन पर नहीं बैठा, यद्यपि वह पहिलौठा था।

3. एल्योएनै का पुत्र (1 इति 3:24), यहोयाकीन के वंशजों में से एक, जो यहूदा के अन्तिम राजाओं में से एक थे।

4. अहीमास का पोता। अजर्याह का पिता था, जिसने सुलैमान के मन्दिर में याजक के रूप में सेवा की (1 इति 6:9–10)।

5. बिन्यामीन के गोत्र का योद्धा जिसने सिकलग में दाऊद के 30 लोगों के विशेष दल में शामिल होकर उसका समर्थन किया (1 इति 12:4)। यह विशेष दल दोनों हाथों से तीर और गोफन चला सकता था (पद 2)।

6. गाद गोत्र का योद्धा, जिसने जंगल में दाऊद की सेना में शामिल होकर उनका साथ दिया (1 इति 12:8–12)। वह युद्ध के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित था, ढाल और भाला दोनों चला सकता था, कठिनाइयों को सह सकता था और दौड़ने में बहुत तेज़ था।

7. एक एप्रैमी, जिसका पुत्र उत्तरी राज्य में पेकह के शासनकाल के दौरान एक अगुवा था, उसने 200,000 यहूदियों की गुलामी के खिलाफ विरोध किया (2 इति 28:12) और अन्ततः उन्हें स्वतंत्र कर दिया गया।

8. हक्कातान का पुत्र ("छोटा" या "युवा")। पदनाम को "छोटा योहानान" के रूप में पढ़ा जा सकता है। वह उस परिवार का मुखिया था जो अपनी वंशावली अजगाद से होने का दावा करते थे (एज्रा 8:12)। वह 110 लोगों के साथ बाबुल से यहूदा जाने के लिए एज्रा के साथ शामिल हुआ।

9. योयाकीम के अधीन याजक। वह उन याजकों में से एक थे जिनकी सेवकाई के दौरान लेवियों और याजकों का औपचारिक रूप से पंजीकरण किया गया था (नहे 12:22)। उन्हें एज्रा 10:6 में वैकल्पिक रूप से यहोहानान और नहेम्याह 12:11 में योनातान कहा गया है। *देखें* यहोहानान #4।

10. नहेम्याह 6:18 में तोबियाह के पुत्र यहोहानान का एक रूप। *देखें* यहोहानान #6।

योहानान बेन जक्काई

दूसरे मन्दिर काल के अन्त में एक प्रमुख यहूदी संत। उनका जन्म स्थान ज्ञात नहीं है; वे अध्ययन के लिए यरूशलेम गए और वहाँ 18 वर्ष बिताने के बाद कुछ समय गलील में बिताया। बाद में, वे यरूशलेम लौट आए और "मन्दिर की छाया में" शिक्षा दी। उन्होंने याजक के पद पर फरीसियों को सदूकियों के बजाय प्रोत्साहित किया। एक संस्करण के अनुसार, यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान वह ताबूत में बच निकलने में सफल रहे। वे वेस्पासियन के कैदी बने, सम्भवतः ईस्वी 68 में, जिन्होंने उन्हें जमनिया में बसने की अनुमति दी। वहाँ उन्होंने यहूदी धर्म के मन्दिर के बिना अस्तित्व के लिए चुपचाप आधारशिला रखना शुरू किया।

*यह भी देखें*यहूदी धर्म; फरीसी।

यौन, यौनिकता

बाइबल का यौन और यौनिकता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

कुछ धर्मों और दर्शनशास्त्रों के विपरीत, बाइबल मनुष्य की यौनिकता को सकारात्मक रूप से देखती है। पुराने नियम के अनुसार, परमेश्वर ने लोगों को लैंगिक प्राणी के रूप में बनाया। पुरुष या स्त्री होना परमेश्वर के स्वरूप और समानता में निर्मित होने का एक हिस्सा है (उत 1:26–28)। इसलिए, यौनिकता इस बात का महत्वपूर्ण हिस्सा है कि एक व्यक्ति कौन है, न कि वे क्या करता हैं।

पुराने नियम से पता चलता है कि पुरुष और महिला शरीर के बीच अंतर के बारे में कुछ भी शर्मनाक नहीं है (उत 2:25)। यौन क्रियाकलाप के बारे में भी कुछ शर्मनाक नहीं है (नीति 5:18–19; सभो 9:9)। विशेष रूप से, श्रेष्ठगीत प्रेम के बारे में एक सुन्दर कविता है। यह शारीरिक आकर्षण के बारे में बात करता है और इसे केवल आध्यात्मिकता के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

पौलुस 1 कुरिन्थियों और 1 तीमुथियुस की पुस्तकों में भी सकारात्मक हैं। यौन अनैतिकता कुरिन्थुस और इफिसुस दोनों में आम बात थी, जहाँ ये पत्र भेजे गए थे। इसके जवाब में, कुछ मसीही सभी यौन सम्बन्धों से दूर रहने का चुनाव कर रहे थे। विवाह को निषिद्ध किया जा रहा था (1 तीमु 4:3)। विवाहित जोड़े यौन सम्बन्ध बनाना बंद कर रहे थे। उनका मानना था कि इससे वे आध्यात्मिक रूप से अधिक परिपक्व हो जायेंगे (तुलना करें 1 कुरि 7:5)।

पौलुस इन विचारों को अस्वीकार करते है। उत्पत्ति का हवाला देते हुए, उसने उन्हें परमेश्वर के उपहारों के प्रति आभारी होने की याद दिलाई (1 तीमु 4:3–5)। पौलुस ने लिखा कि पतियों और पत्नियों को एक-दूसरे की यौन आवश्यकताओं को संतुष्ट करना चाहिए (1 कुरि 7:3–4)।

परमेश्वर ने प्रजनन के लिए यौन बनाया (उत 1:28)। लेकिन यौन, सम्बन्धों को भी मजबूत करता है। उत्पति 2 में वर्णन है कि परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के लिए संगति प्रदान करने के लिए बनाया (2:18–24)। मानव यौनिकता सिर्फ़ शारीरिक संभोग से कहीं ज़्यादा है। पुरुष या महिला होना एक ऐसा तरीका है जिससे परमेश्वर हमें हर तरह के रिश्ते बनाने में मदद करता है, जिनमें कुछ ऐसे रिश्ते भी शामिल हैं जिन्हें आम तौर पर यौन संबंध नहीं माना जाता।

पाप का मनुष्य की यौनिकता पर प्रभाव

बाइबल मनुष्य के स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को स्वीकार करती है। परमेश्वर की पूर्ण योजना में यौन की भलाई का वर्णन करने के बाद, उत्पत्ति यह समझाती है कि कैसे यौन, अन्य सभी चीजों की तरह, पाप द्वारा बिगाड़ दिया गया:

- नग्नता, शर्मनाक और डरावनी हो गई।
- पुरुष और महिलाएं एक-दूसरे को व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय यौन वस्तुओं के रूप में देखते थे (उत 3:7–10)
- विश्वास और कोमलता का स्थान विश्वासघात और कठोरता ने ले लिया।

यह पक्षपात और दुर्व्यवहार की जड़ है जो आधुनिक नारीवादी विरोधों को प्रेरित करती है। प्रजनन भी बिगड़ गया क्योंकि यह दर्दनाक और कष्टदायक हो गया।

यह बाइबल में विवाह के बाहर यौन संबंधों पर प्रतिबंध लगाने का संदर्भ है। यह व्यभिचार को प्रतिबंधित करता है (निर्ग 20:14)। यह विवाह के बाहर किसी भी तरह के यौन संबंध को भी प्रतिबंधित करता है (1 कुरि 6:18; 1 थिस्स 4:3)। बाइबल अक्सर यह नहीं बताती कि कुछ खास काम क्यों वर्जित हैं। लेकिन, जब यह विवाहेतर संबंधों पर रोक लगाने के लिए कारण बताती है, तो ये कारण बहुत जानकारीपूर्ण होते हैं। यह बीमारी या अनचाहे गर्भधारण जैसे परिणामों या कार्यों के पीछे के इरादों पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है।

विवाह के बाहर सभी यौन संबंध गलत हैं क्योंकि शरीर यौन अनैतिकता के लिए नहीं बना है और जो यौन पाप करते हैं वे अपने ही शरीर को हानि पहुँचाते हैं (1 कुरि 6:13, 18)। यौन-संबंध शारीरिक रूप से संचार करने का एक ख़ास तरीक़ा है जिसे परमेश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री के बीच अनोखे, आजीवन संबंध को दिखाने और पुष्टि करने के लिए बनाया है, जिसे बाइबल "विवाह" कहती है।

बाइबल समलैंगिकता को प्रतिबंधित करती है (लैव्य 18:22; रोमि 1:26–27; 1 कुरि 6:9–10; 1 तीमु 1:9–10)। इस प्रतिबंध का एकमात्र स्पष्टीकरण रोमियों 1:24–27 में मिलता

यौन, यौनिकता

है। ये पद बताते हैं कि परमेश्वर ने उन लोगों से मुंह मोड़ लिया जिन्होंने उनकी उपासना करने के बजाय सृजित वस्तुओं की उपासना की। उन्होंने परमेश्वर को छोड़ दिया और अपने पापपूर्ण इच्छाओं में लिप्त हो गए, जिसमें समलैंगिकता भी शामिल है। इस दृष्टिकोण में, समलैंगिकता को पुरुषों और महिलाओं के लिए जीवन बनाने के लिए स्थापित प्राकृतिक व्यवस्था के विरुद्ध माना जाता है।

यौन प्रलोभन पर विजय प्राप्त करना

बाइबल यौन प्रलोभन से निपटने के लिए व्यावहारिक सलाह देती है: इससे बचें। उदाहरण के लिए, जब यूसुफ को दूसरे पुरुष की पत्नी ने लुभाया, तो वे अपना अंगरखा छोड़कर भाग गया (उत 39:12)। पौलुस अपने मसीही पाठकों से यूसुफ के अच्छे उदाहरण का अनुसरण करने के लिए कहते हैं (1 कुरि 6:18; 2 तीमु 2:22)। यह इस बात को मान्यता देता है कि कई मनुष्य यौन के लिए प्रबल लालसा अनुभव करते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नही की यह निराशाजनक है। पौलुस ने सिखाया कि पवित्र आत्मा विश्वासियों को यौन प्रलोभन पर विजय पाने की शामर्थ देता है। वे उन मसीहीयों को जानते थे जिन्होंने आत्मा की शामर्थ का उपयोग करके आत्म-नियंत्रण प्राप्त किया और अपनी सबसे कठिन आदतों पर विजय प्राप्त की (1 कुरि 6:9–11; गला 5:22–23; 2 तीमु 1:7)।

मनुष्य की यौनिकता का भविष्य

नया नियम संकेत देता है कि परमेश्वर मनुष्य की यौनिकता को निर्दोष रूप में समाप्त करेंगे जैसा उन्होंने इसे आरंभ किया था। यीशु ने सिखाया कि स्वर्ग में कोई विवाह नहीं होगा (मत्ती 22:30)। यह बाइबल की यौनिकता और यौन संबंधों पर शिक्षाओं का अप्रत्याशित लेकिन उपयुक्त निष्कर्ष है। जब मृत्यु नहीं होगी, तो प्रजनन की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। और जब संबंध पूर्ण रूप से प्रेमपूर्ण होंगे, तो उन्हें मजबूत करने के लिए यौन संबंधों की आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रकार, परमेश्वर के मनुष्य यौनिकता के दोनों मुख्य उद्देश्य अनंत काल में पूर्ण रूप से साकार होंगे।

*यह भी देखें*तलाक; परिवार जीवन और संबंध; पुरुष; विवाह, विवाह की प्रथाएं; कुँवारी; महिला।